प्राकृत स्वयं-शिक्षक

खण्ड १

डॉ० प्रेम सुमन जैन
सह आचार्य एवं अध्यक्ष
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
उदयपुर विश्वविद्यालय

प्राकृत भारती, जयपुर
१९७९

प्रकाशक
देवेन्द्रराज मेहता
सचिव प्राकृत भारती जयपुर



प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड १)
डॉ० प्रेम सुमन जैन



प्रथम आवृत्ति १९७९



मूल्य
दस रुपये (पेपर बैक)
पन्द्रह रुपये (सजिल्द)





प्राप्तिस्थान
राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान
गोलेछा हवेली मोतीसिंह भोमियो का रास्ता
जयपुर (राज०)



मुद्रक
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जौहरी बाजार जयपुर-3

PRAKRIT SVAYAM SIKSAKA/Grammar
by
Prem Suman Jain/Jaipur/1979

प्रकाशकीय

प्राकृत भाषा एव साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन एव प्राकृत भाषा का प्रचार तथा प्रसार प्राकृत भारती के प्रमुख उद्देश्य हैं। इसी दिशा मे प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड १ का इस सस्थान की तरफ से प्रकाशन करने म अत्यधिक प्रसन्नता है। डा प्रेम सुमन जैन प्राकृत के प्रमुख विद्वान् हैं। इस क्षेत्र म उनके विस्तृत ज्ञान एव अनुभव का लाभ प्राकृत के पाठकों को उपलब्ध होगा। उन्होने प्राकृत के सीखने सिखाने मे एक वैज्ञानिक एव नवीनतम शैली का प्रयोग इस पुस्तक म किया है। साधारणतया प्राकृत सस्कृत की मदद से सीखी सिखाई जाती रही है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि सामान्य हिन्दी जानने वाला पाठक भी बिना किसी कठिनाई के प्राकृत स्वय सीख सकता है। नई प्रणाली के उपरान्त भी लेखक ने प्राकृत व्याकरण की परम्परा को पृष्ठभूमि मे बनाये रखा है। इस तरह सस्थान का उद्देश्य एव पाठको की उपयोगिता के सदर्भ मे यह एक बहुत ही समसामयिक प्रकाशन कहा जा सकता है। सस्थान इस पुस्तक के लेखक के प्रति विशेष आभार प्रकट करता है कि प्राकृत के क्षेत्र म एक बहुत बड़ी कमी को उन्होंने यह पुस्तक लिखकर पूरा किया है।

प्राकृत भारती ने राजस्थान का जैन साहित्य एव कल्पसूत्र (प्राकृत मूल, हिन्दी व अग्रेजी मे अनुवाद ३६ रगीन चित्रो सहित) ये दो ग्रन्थ प्रकाशित कर दिये हैं। प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड १ के अतिरिक्त निम्न ३ और पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित और विमोचित हो रही हैं —

१ स्मरणकला—(इसमें श्री धीरज भाई टोकरसी शाह ने शतावधान की प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।)

२ आगमतीर्थ—(इसमे आगम साहित्य से उद्धरण और उनका हिन्दी म भाव्यानुवाद डा हरिराम आचार्य ने प्रस्तुत किया है।)

३ आगमदिग्दर्शन—(इसम डा० मुनि नगराजजी महाराज द्वारा सामान्य पाठको को आगम साहित्य की विषयवस्तु की जानकारी प्रस्तुत की गयी है।)

उपर्युक्त पुस्तको के अतिरिक्त निम्नाकित पुस्तकें प्राकृत भारती के अन्तर्गत प्रकाशनाधीन हैं —

४ इसिभासियाइ—(यह पुस्तक प्राकृत मूल व हिन्दी तथा अग्रेजी अनुवाद सहित महोपाध्याय विनयसागर व श्री कलानाथ शास्त्री द्वारा प्रस्तुत की जा रही है, जिसम हिन्दू, बौद्ध और जन ऋषियो के सारगर्भित उद्बोधन हैं।)

प्रकाशक
देवेन्द्रराज मेहता
सचिव प्राकृत भारती जयपुर



प्राकृत स्वयं-शिक्षक (खण्ड १)
डा० प्रेम सुमन जैन



प्रथम आवृत्ति १९७९



मूल्य
दस रुपये (पेपर बैक)
पन्द्रह रुपये (सजिल्द)
राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर
संशोधित मूल्य रु० 20/-





प्राप्तिस्थान
राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान
गोलेछा हवेली मोतीसिंह भोमियों का रास्ता
जयपुर (राज०)



मुद्रक
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
जौहरी बाजार जयपुर-3

PRĀKRIT SVAYAM ŚIKṢAKA/Grammar
by
Prem Suman Jain/Jaipur/1979

प्रकाशकीय

प्राकृत भाषा एव साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन एव प्राकृत भाषा का प्रचार तथा प्रसार प्राकृत भारती के प्रमुख उद्देश्य हैं। इसी दिशा म प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड १ का इस संस्थान की तरफ से प्रकाशन करने म अत्यधिक प्रसन्नता है। डा प्रेम सुमन जन प्राकृत के प्रमुख विद्वान् हैं। इस क्षेत्र म उनके विस्तृत ज्ञान एव अनुभव का लाभ प्राकृत के पाठकों को उपलब्ध होगा। उन्होंने प्राकृत के सीखने सिखाने म एक वैज्ञानिक एव नवीनतम शैली का प्रयोग इस पुस्तक म किया है। साधारणतया प्राकृत संस्कृत की मदद से सीखी सिखाई जाती रही है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि सामान्य हिन्दी जानने वाला पाठक भी बिना किसी कठिनाई के प्राकृत स्वय सीख सकता है। नई प्रणाली के उपरान्त भी लेखक ने प्राकृत व्याकरण की परम्परा को पृष्ठभूमि में बनाये रखा है। इस तरह संस्थान का उद्देश्य एव पाठकों की उपयोगिता के सदर्भ म यह एक बहुत ही समसामयिक प्रकाशन कहा जा सकता है। संस्थान इस पुस्तक के लेखक के प्रति विशेष आभार प्रकट करता है कि प्राकृत के क्षेत्र मे एक बहुत बडी कमी को उन्होंने यह पुस्तक लिखकर पूरा किया है।

प्राकृत भारती ने राजस्थान का जन साहित्य एव कल्पसूत्र (प्राकृत मूल, हिन्दी व अग्रेजी म अनुवाद ३६ रगीन चित्रों सहित) ये दो ग्रन्थ प्रकाशित कर दिये हैं। प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड १ के अतिरिक्त निम्न ३ और पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित और विमोचित हो रही हैं —

१ स्मरणकला—(इसमें श्री धीरज भाई टोकरसी शाह ने शतावधान की प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।)

२ आगमतीर्थ—(इसम आगम साहित्य स उद्धरण और उनका हिन्दी म काव्यानुवाद डा हरिराम आचार्य ने प्रस्तुत किया है।)

३ आगमदिग्दर्शन—(इसम डा० मुनि नगराजजी महाराज द्वारा सामान्य पाठकों का आगम साहित्य की विषयवस्तु की जानकारी प्रस्तुत की गयी है।)

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त निम्नाकित पुस्तकें प्राकृत भारती के अन्तर्गत प्रकाशनाधीन हैं —

४ इसिभासियाइ—(यह पुस्तक प्राकृत मूल व हिन्दी तथा अग्रेजी अनुवाद सहित महोपाध्याय विनयसागर व श्री कलानाथ शास्त्री द्वारा प्रस्तुत की जा रही है, जिसम हिन्दू बौद्ध और जन ऋषियों के सारगर्भित उद्बोधन हैं।)

५ नीतिवाक्यामृत—(डा एस के गुप्ता व डा बी आर मेहता द्वारा आचार्य सोमदेव के राजनीति के सिद्धान्तो का हिन्दी व अग्रेजी म अनुवाद।)

६ देवतामूर्ति प्रकरण—(प भगवानदासजी व आर सी अग्रवाल द्वारा जैन मूर्तिकला विषयक ग्रन्थ का मूलसहित हिन्दी व अग्रेजी मे अनुवाद।)

७ त्रिलोकसार—(आचार्य नेमिचन्द्र के गणित विषयक ग्रन्थ का मूल प्राकृत हिन्दी व अग्रेजी मे प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द जन द्वारा अनुवाद।)

८ जन साहित्य मे वज्ञानिक विषय—(अकगणित, ब्रह्माण्ड विद्या, सिस्टम थियरी सेट थियरी व थियरी आफ अल्टीमेट पार्टीकल्स पर प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द जन द्वारा लिखित पाच ग्रन्थ।)

९ अधकथानक—(प्रोफेसर मुकुन्द लाट द्वारा श्री बनारसीदास की आत्मकथा का मूल व अग्रेजी मे अनुवाद)।

प्रस्तुत पुस्तक के मुखपृष्ठ की कला सज्जा के लिए श्री पारस मसाली का आभार।

२८ सितम्बर ७९

देवेन्द्रराज मेहता
सचिव

प्रस्तावना

विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमो एव अनुसन्धान के क्षत्र म विगत कुछ वर्षों म प्राकृत भाषा एव साहित्य को विशेष महत्व प्राप्त होने लगा है। परिणाम स्वरूप राजस्थान के विश्वविद्यालयो म भी विभिन्न स्तरो पर प्राकृत के पठन पाठन का शुभारम्भ हुआ है। उदयपुर विश्वविद्यालय के जनविद्या एव प्राकृत विभाग म इस समय बी ए एम ए डिप्लोमा एव सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमा म प्राकृत भाषा का शिक्षण हो रहा है। प्रसनता की बात है कि महाराष्ट्र एव गुजरात के माध्यमिक शिक्षा बार्डों की तरह राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बाड अजमर न भी सकण्डरी परीक्षा म 1980 स प्राकृत को एक वैकल्पिक विषय के रूप म स्वीकार किया है। इसस राजस्थान म प्राकृत के पठन पाठन को बहुत बल मिलगा।

प्राकृत क शिक्षण की य सब व्यवस्थाए तभी कारगर हो सकती हैं जब सरल-सुबोध शली म प्राकृत भाषा का कोई व्याकरण उपलब्ध हो तथा आधुनिक अभ्यास पद्धतिया से युक्त प्राकृत की पाठय पुस्तक प्रकाशित हो। इस दिशा म प्राकृत के विद्वाना का प्रयत्न अभी नगण्य ही कहा जायेगा। प्राकृत व्याकरण की जो पुस्तक वतमान म उपलब्ध हैं व परम्परागत होने स सस्कृत भाषा का मूल म रखकर प्राकृत सीखने सिखाने का प्रयत्न करती हैं। इससे प्राकृत का कभी स्वतन्त्र भाषा के रूप म अध्ययन नही किया गया। गयी कि सस्कृत म निपुणता प्राप्त किये बिना प्राकृत नही सीखी जा सकती। सस्कृत, पालि प्राकृत अपभ्रश य सब भाषाए एक दूसर क ज्ञान म पूरक अवश्य हैं किन्तु इनका शिक्षण और मनन स्वतन्त्ररूप स भी किया जा सकता है। तभी उनकी समृद्धि का उचित मूल्याकन हो सकता है। किन्तु इसके लिए आवश्यक है कि प्राकृत शिक्षण का सरलतम एव सारगर्भित माग प्रशस्त हो। प्राकृत के विद्वान् शाध अनुसधान क कार्यों क अतिरिक्त प्राकृत भाषा एव उसकी पाठय पुस्तका क निर्माण म भी थोडा श्रम और समय लगायें।

प्राकृत भाषा क प्रचार प्रसार को दृष्टि म रखत हुए विगत वर्षों म हमने कतिपय सोपान पार किये हैं। १९७३ म आदश साहित्य सघ चूरू से हमारी **प्राकृत चयनिका** प्रकाशित हुई। १९७४ म **प्राकृत काव्य सौरभ** एव **अपभ्रश काव्यधारा** प्रकाश म आयी। इनस पाठयक्रम के अन्य उद्देश्य तो पूरे हुए किन्तु वह सन्तोष नही हुआ जो प्राकृत भाषा

के शिक्षण के लिए आवश्यक था। १९७८ में 'तीर्थङ्कर मासिक' में प्राकृत सीखें के पाठ धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए (अब पुस्तिका रूप में प्रकाशित)। उसका यह परिणाम हुआ कि प्राकृत के कई प्रेमियों ने मुझे प्राकृत भाषा की और अधिक सरल सुबोध पुस्तक लिखने की प्रेरणा दी। उदयपुर के मेरे विद्वान् मित्र डा० कमलचन्द सोगानी मुझसे घंटों इस सम्बन्ध में चर्चा करते रहते कि प्राकृत सिखाने की कोई नयी शैली निकालो। उनके साथ विभिन्न भाषाओं के व्याकरणों की कई पुस्तकें देखी गयीं। किन्तु प्राकृत भाषा के अनुरूप एक नयी शैली ही तय करनी पड़ी जिसमें सीखने वाले पर कम से कम रटने आदि का भार पड़े। वह अभ्यास से ही बहुत कुछ सीख जाय। उस नवीन शैली का साकार रूप है—प्रस्तुत पुस्तक—प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड १)।

प्राकृत स्वयं-शिक्षक खण्ड १ में यह मानकर प्राकृत का अभ्यास कराया गया है कि सीखने वाले को प्राकृत बिलकुल नहीं आती। संस्कृत से वह परिचित नहीं है। अतः उसे प्राकृत के सामान्य नियमों का ही विभिन्न प्रयोगों और चार्टों द्वारा अभ्यास कराया गया है। सर्वनाम, क्रिया, संज्ञा आदि के नियम पाठों के अन्त में दिये गये हैं ताकि सीखने वाले के अभ्यास में बाधा न पहुँचे। प्राकृत व्याकरणों के मूलसूत्र नियमों में नहीं दिये गये हैं क्योंकि प्राकृत के प्रारम्भिक विद्यार्थी का शिक्षण उनके बिना भी हो सकता है।

इस पुस्तक में इस बात का ध्यान भी रखा गया है कि पाठक जिन प्राकृत शब्दों, क्रियाओं, अव्ययों एवं सर्वनामों से परिचित हो चुका है उन्हीं का वह अभ्यास करे। उसने शब्दकोश या क्रियाकोश से जो नयी जानकारी प्राप्त की है उसका अभ्यास वह आगे के पाठ द्वारा करता है। इसी तरह आगे के पाठों में उसे पीछे सीखे गये पाठों का भी अभ्यास करने को कहा गया है। इस तरह उसका अर्जित ज्ञान ताजा बना रहता है। पूरी पुस्तक के अभ्यास कर लेने पर पाठक लगभग ६०० प्राकृत शब्दों, २०० क्रियाओं, ५० अव्ययों, १०० विशेषण शब्दों, ५० तद्धित शब्दों तथा प्रमुख सर्वनामों के प्रयोग का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

प्राकृत में शब्दरूपों एवं क्रियारूपों में विकल्पों का प्रयोग बहुत होता है। प्राकृत जनभाषा होने से यह स्वाभाविक भी है। इस पुस्तक में पाठक को प्रायः शब्द या क्रिया के एक ही रूप का ज्ञान कराया गया है ताकि वह प्राकृत भाषा के मूल स्वरूप को पहिचान जाय। विकल्प रूपों का अध्ययन वह बाद में भी कर सकता है। इस अध्ययन की रूपरेखा भी प्रस्तुत पुस्तक में दे दी गयी है। पुस्तक के अन्त में प्राकृत के गद्य पद्य पाठों का संकलन दिया गया है। इस संकलन में जो वैकल्पिक रूप प्रयुक्त हुए हैं उन्हें एक साथ संकलन के पूर्व दे दिया गया है और उनके सामने पाठक ने जिन प्राकृत रूपों की जानकारी प्राप्त की है वे दे दिये गये हैं। इस चार्ट से पाठक आसानी से समझ लेता है कि कमलानि के स्थान पर कमलाइं, गच्छइ के स्थान पर गच्छेइ, जाणिऊण के लिए णच्चा आदि के प्रयोग भी प्राकृत में होते हैं। संकलन पाठ बी. ए. एवं डिप्लोमा के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर दिये गये हैं तथा उनके शब्दार्थ देकर पाठों को समझने में सरलता प्रदान की गयी है। इस तरह इस पुस्तक में थोड़े में और सरल ढंग से प्राकृत भाषा का हृदयंगम कराने का विनम्र

प्रयत्न किया गया है। वस्तुत प्राकृत का पूरा ज्ञान तो उसके साहित्य के अनुशीलन और मनन से ही आ सकता है।

प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड २ में प्राकृत के वैकल्पिक और आर्ष प्रयोगों का विस्तार से वर्णन होगा। अर्धमागधी मागधी शौरसेनी आदि प्रमुख प्राकृतो का यह हिंदी में प्रामाणिक व्याकरण होगा। इसके अभ्यास से प्राकृत आगम एव व्याख्या साहित्य का अध्ययन सुगम हो सकेगा। प्राकृत शिक्षण के प्रयत्न का तीसरा सोपान है— हिन्दी प्राकृत व्याकरण। इस व्याकरण में पहली बार प्राकृत के प्राचीन व्याकरणो की सामग्री को व्यवस्थित एव सुबोध शैली में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें प्राकृत व्याकरणो के सूत्र भी सन्दर्भ में दिये जायेंगे एव प्राकृत के वर्तमान ग्रथो से उदाहरण एव प्रयोग आदि देने का प्रयत्न रहेगा। ये दोनो पुस्तकें यथाशीघ्र प्राकृत के जिज्ञासु पाठको के समक्ष पहुचाने का प्रयास है।

आभार

प्राकृत स्वय शिक्षक के इन तीनो खण्डो के स्वरूप एव रूपरेखा आदि को निखारने मे जिन विद्वानो का परामर्श एव प्रोत्साहन मिला है उनमे प्रमुख हैं—आदरणीय डा० कमलचन्द सोगानी (उदयपुर), डॉ० जगदीशचन्द्र जैन (बम्बई) प० दलसुख भाई मालवणिया (अहमदाबाद) डा० आर सी द्विवेदी (जयपुर) डा० गोकुलचन्द्र जैन (बनारस) एव डा० नेमीचन्द जैन (इन्दौर)। इन सबके सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ और कृतज्ञ हूँ उन समस्त प्राचीन एव अर्वाचीन प्राकृत भाषा के लेखको का जिनके ग्रथो के अनुशीलन से प्राकृत व्याकरण सम्बन्धी मेरी कई गुत्थिया सुलझी हैं तथा पाठ सकलन मे जिनसे मदद मिली है। प्राकृत भाषा के ममज्ञ मुनिजनो के आशीष का ही यह फल है कि प्राकृत के पठन पाठन की दिशा मे कुछ प्रयत्न हो पा रहा है। उनके प्राकृत अनुराग को सादर प्रणाम है।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था आदि मे प्राकृत भारती के सक्रिय सचिव श्रीमान् देवेन्द्रराज मेहता सयुक्त सचिव महोपाध्याय विनय सागर एव फ्रेण्डस प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स जयपुर के प्रबन्धको का जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

अन्त मे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज जैन के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से मुझे अध्ययन अनुशीलन के लिए पर्याप्त समय प्राप्त हो जाता है।

अग्रिम आभार उन जिज्ञासु पाठको एव विद्वानो के प्रति भी है जो इस पुस्तक को गहराई से पढकर मुझे अपनी प्रतिक्रिया सम्मति आदि मे अवगत करायेंगे तथा इसके सशोधन-परिवर्द्धन मे वे सहभागी होंगे।

समय'
२६ सुन्दरवास (उत्तरी)
उदयपुर
१ अगस्त, १९७९

प्रेम सुमन जैन



अनुक्रम

□□

प्राकृत स्वयं-शिक्षक

खण्ड १

पाठ १

उदाहरण वाक्य अह=मैं

अह नमामि=मैं नमन करता हू ।
अह जाणामि=मैं जानता/जानती हू ।
अह इच्छामि=मैं इच्छा करता हू ।
अह पासामि=म दखता/देखती हू ।
अह पिवामि=मैं पीता/पीती हू ।
अह गच्छामि=मैं जाता/जाती हू ।
अह धावामि=मैं दौडता/दौडती हूँ ।
अह खेलामि=मैं खेलता/खेलती हू ।
अह हसामि=मैं हसता/हँसती हू ।
अह सयामि=म सोता/सोती हू ।

अह पढामि=मैं पढता/पढती हू ।
अह चितामि=मैं चितन करता हू ।
अह सुणामि=मैं सुनता/सुनती हू ।
अह भुजामि=मैं भोजन करता हू ।
अह चलामि=मैं चलता/चलती हू ।
अह भमामि=मैं घूमता/घूमती हूँ ।
अह णच्चामि=मैं नाचता/नाचती हू ।
अह जयामि=मैं जीतता/जीतती हू ।
अह सेवामि=मैं सेवा करता हू ।
अह लिहामि=मैं लिखता/लिखती हू ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं दौडता हू । मैं जानती हू । मैं नमन करता हू । म सुनती हू ।
मैं पीता हू । मैं घूमती हू । मैं हँसती हू । मैं इच्छा करता हू ।
मैं नाचती हूँ । मैं जीतता हू ।

प्रयोग वाक्य

अत्थ=यहाँ	अह अत्थ पढामि	=	मैं यहाँ पढता/पढती हू ।
तत्थ=वहा	अह तत्थ खेलामि	=	मैं वहाँ खेलता/खेलती हू ।
सइ=एक बार	अह सइ भुजामि	=	मैं एक बार भोजन करता हू ।
मुहु=बार-बार	अह मुहु चितामि	=	मैं बार बार चितन करता हू ।
सया=सदा	अह सया सेवामि	=	मैं सदा सेवा करती हू ।
दाणि=इस समय	अह दाणि सयामि	=	मैं इस समय सोता/सोती हू ।
सणिअ=धीरे	अह सणिअ चलामि	=	मैं धीरे चलता/चलती हू ।
झत्ति=शीघ्र	अह झत्ति गच्छामि	=	मैं शीघ्र जाता/जाती हू ।
अग्गओ=आगे	अह अग्गओ पासामि	=	मैं आगे देखता/देखती हू ।
ण=नही	अह ण लिहामि	=	मैं नही लिखता/लिखती हू ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं एक बार पढता हू । मैं वहाँ भोजन करती हू ।
मैं इस समय खेलता हूँ । मैं यहाँ रहती हू । मैं आग देखता हू ।

पाठ २

उदाहरण वाक्य अम्हे=हम दोनों/हम लोग

अम्हे नमामो=हम नमन करते हैं।	अम्हे पढामो=हम पढ़ते/पढ़ती हैं।
अम्हे जाणामो=हम जानते/जानती हैं।	अम्हे चिंतामो=हम चिंतन करते हैं।
अम्हे इच्छामो=हम इच्छा करते हैं।	अम्हे सुणामो=हम सुनते/सुनती हैं।
अम्हे पासामो=हम देखते/देखती हैं।	अम्हे भुंजामो=हम भोजन करते हैं।
अम्हे पिवामो=हम पीते/पीती हैं।	अम्हे चलामो=हम चलते/चलती हैं।
अम्हे गच्छामो=हम जाते/जाती हैं।	अम्हे भमामो=हम घूमते/घूमती हैं।
अम्हे धावामो=हम दौड़ते/दौड़ती हैं।	अम्हे णच्चामो=हम नाचते/नाचती हैं।
अम्हे खेलामो=हम खेलते/खेलती हैं।	अम्हे जयामो=हम जीतते/जीतती हैं।
अम्हे हसामो=हम हँसते/हँसती हैं।	अम्हे सेवामो=हम सेवा करते हैं।
अम्हे सयामो=हम सोते/सोती हैं।	अम्हे लिहामो=हम लिखते/लिखती हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

हम दौड़ते हैं। हम जानती हैं। हम नमन करते हैं।
हम सुनती हैं। हम पीते हैं। हम घूमते हैं। हम हँसते हैं।
हम इच्छा करते हैं। हम नाचती हैं। हम जीतते हैं।

प्रयोग वाक्य

अम्हे अत्थ पढामो	=	हम यहाँ पढ़ते हैं।
अम्हे तत्थ खेलामो	=	हम वहाँ खेलते हैं।
अम्हे सइ भुंजामो	=	हम एक बार भोजन करती हैं।
अम्हे मुहु चिंतामो	=	हम बार बार चिंतन करते हैं।
अम्हे सया सेवामो	=	हम सदा सेवा करते हैं।
अम्हे दाणि सयामो	=	हम इस समय सोती हैं।
अम्हे सणिअं चलामो	=	हम धीरे चलते हैं।
अम्हे झत्ति गच्छामो	=	हम शीघ्र जाते हैं।
अम्हे अग्गओ पासामो	=	हम आगे देखते हैं।
अम्हे ण लिहामो	=	हम नहीं लिखते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

हम बार-बार चिंतन करती हैं। हम सदा सेवा करती हैं।
हम इस समय सोते हैं। हम धीरे चलते हैं। हम आगे देखते हैं।

पाठ ३

उदाहरण वाक्य

तुम=तुम

तुम नमसि=तुम नमन करते हो।
तुम जाणसि=तुम जानते/जानती हो।
तुम इच्छसि=तुम इच्छा करते/करती हो।
तुम पाससि=तुम देखते/देखती हो।
तुम पिबसि=तुम पीते/पीती हो।
तुम गच्छसि=तुम जाते/जाती हो।
तुम धावसि=तुम दौड़ते/दौड़ती हो।
तुम खेलसि=तुम खेलते/खेलती हो।
तुम हससि=तुम हसते/हसती हो।
तुम सयसि=तुम सोते/सोती हो।
तुम पढसि=तुम पढते/पढती हो।
तुम चिंतसि=तुम चिंतन करते हो।
तुम सुणसि=तुम सुनते/सुनती हो।
तुम भुंजसि=तुम भोजन करते हो।
तुम चलसि=तुम चलते/चलती हो।
तुम भमसि=तुम घूमते/घूमती हो।
तुम णच्चसि=तुम नाचते/नाचती हो।
तुम जयसि=तुम जीतते/जीतती हो।
तुम सेवसि=तुम सेवा करती हो।
तुम लिहसि=तुम लिखते/लिखती हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम दौड़ते हो। तुम जानती हो। तुम नमन करते हो। तुम सुनती हो। तुम पीते हो। तुम घूमती हो। तुम हँसती हो। तुम इच्छा करते हो। तुम नाचती हो। तुम जीतते हो।

प्रयोग वाक्य

तुम अत्थ पढसि	=	तुम यहाँ पढते हो।
तुम तत्थ खेलसि	=	तुम वहाँ खेलते हो।
तुम सइ भुंजसि	=	तुम एक बार भोजन करते हो।
तुम मुहु चिंतसि	=	तुम बार-बार चिंतन करते हो।
तुम सया सेवसि	=	तुम सदा सेवा करती हो।
तुम दाणि सयसि	=	तुम इस समय सोते हो।
तुम सणिअं चलसि	=	तुम धीरे चलती हो।
तुम झत्ति गच्छसि	=	तुम शीघ्र जाते हो।
तुम अग्गओ पाससि	=	तुम आगे देखते हो।
तुम ण लिहसि	=	तुम नही लिखते हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम एक बार पढते हो। तुम वहा भोजन करती हो।
तुम इस समय खेलते हो। तुम यहाँ रहते हो। तुम आगे देखते हो।

पाठ ४

उदाहरण वाक्य तुम्हे = तुम दोनो/तुम सब

तुम्हे नमित्था = तुम दोना नमन करते हो। तुम्हे पढित्था = तुम सब पढते पढती हो।
तुम्हे जाणित्था = तुम सब जाते हो। तुम्हे चिंतित्था = तुम दोना चिंतन करते हो।
तुम्हे इच्छित्था = तुम सब इच्छा करते हो। तुम्हे सुणित्था = तुम सब सुनते/सुनती हो।
तुम्हे पासित्था = तुम सब देखते हो। तुम्हे भु जित्था = तुम सब भाजन करते हो।
तुम्हे पिवित्था = तुम दोना पीते हो। तुम्हे चलित्था = तुम सब चलते/चलती हो।
तुम्हे गच्छित्था = तुम जाते/जाती हो। तुम्हे भमित्था = तुम घूमते/घूमती हो।
तुम्हे धावित्था = तुम सब दौडते हो। तुम्हे णच्चित्था = तुम सब नाचते हो।
तुम्हे खेलित्था = तुम सब खेलती हो। तुम्हे जयित्था = तुम दोना जीतते हो।
तुम्हे हसित्था = तुम सब हँसते हो। तुम्हे सेवित्था = तुम सेवा करते हो।
तुम्हे सयित्था = तुम सोते/सोती हो। तुम्हे लिहित्था = तुम सब लिखते हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम सब दौडते हो। तुम सब जानती हो। तुम सब नमन करते हो।
तुम दानो सुनती हो। तुम दोनों पीते हो। तुम सब घूमते हो। तुम सब हँसती हो।
तुम सब इच्छा करते हो। तुम सब नाचते हो। तुम सब जीतत हो।

प्रयोग वाक्य

तुम्हे अत्थ पढित्था = तुम सब यहाँ पढते हो।
तुम्हे तत्थ खेलित्था = तुम सब वहाँ खेलते हो।
तुम्हे सइ भु जित्था = तुम दोनो एक बार भोजन करती हो।
तुम्हे मुहु चिंतित्था = तुम सब बार-बार चिंतन करते हो।
तुम्हे सया सेवित्था = तुम सब सदा सेवा करती हो।
तुम्हे दाणि सयित्था = तुम दोनो इस समय सोती हो।
तुम्हे सणिअ चलित्था = तुम सब धीरे चलते हो।
तुम्हे भत्ति गच्छित्था = तुम दोना शीघ्र जाती हो।
तुम्हे अग्गओ पासित्था = तुम सब आगे देखते हो।
तुम्हे ण लिहित्था = तुम सब नहीं लिखते हो।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम सब बार-बार चिंतन करती हो। तुम दोनो सदा सेवा करती हो।
तुम सब इस समय सोते हो। तुम दोनो धीरे चलते हो। तुम सब आगे देखत हो।

पाठ ३

उदाहरण वाक्य **तुम=तुम**

तुम नमसि=तुम नमन करते हो।
तुम जाणसि=तुम जानते/जानती हो।
तुम इच्छसि=तुम इच्छा करते/करती हो।
तुम पाससि=तुम देखते/देखती हो।
तुम पिवसि=तुम पीते/पीती हो।
तुम गच्छसि=तुम जाते/जाती हो।
तुम धावसि=तुम दौडते/दौडती हो।
तुम खेलसि=तुम खेलते/खेलती हो।
तुम हससि=तुम हसते/हसती हो।
तुम सयसि=तुम सोते/सोती हो।
तुम पढसि=तुम पढते/पढती हो।
तुम चिंतसि=तुम चिंतन करते हो।
तुम सुणसि=तुम सुनते/सुनती हो।
तुम भुंजसि=तुम भोजन करते हो।
तुम चलसि=तुम चलते/चलती हो।
तुम भमसि=तुम घूमते/घूमती हो।
तुम णच्चसि=तुम नाचते/नाचती हो।
तुम जयसि=तुम जीतते/जीतती हो।
तुम सेवसि=तुम सेवा करती हो।
तुम लिहसि=तुम लिखते/लिखती हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम दौडते हो। तुम जानती हो। तुम नमन करते हो। तुम सुनती हो।
तुम पीते हो। तुम घूमती हो। तुम हँसती हो। तुम इच्छा करते हो।
तुम नाचती हो। तुम जीतते हो।

प्रयोग वाक्य

तुम अत्थ पढसि	=	तुम यहाँ पढते हो।
तुम तत्थ खेलसि	=	तुम वहाँ खेलते हो।
तुम सइ भुंजसि	=	तुम एक बार भोजन करते हो।
तुम मुहु चिंतसि	=	तुम बार-बार चिंतन करते हो।
तुम सया सेवसि	=	तुम सदा सेवा करती हो।
तुम दाणि सयसि	=	तुम इस समय सोते हो।
तुम सणिअं चलसि	=	तुम धीरे चलती हो।
तुम झत्ति गच्छसि	=	तुम शीघ्र जाते हो।
तुम अग्गओ पाससि	=	तुम आगे देखते हो।
तुम ण लिहसि	=	तुम नही लिखते हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम एक बार पढते हो। तुम वहाँ भोजन करती हो।
तुम इस समय खेलते हो। तुम यहाँ रहते हो। तुम आगे देखते हो।

पाठ ४

उदाहरण वाक्य तुम्हे = तुम दोनो/तुम सब

तुम्हे नमित्था = तुम दोनो नमन करते हो। तुम्हे पढित्था = तुम सब पढते पढती हो।
तुम्हे जाणित्था = तुम सब जाते हो। तुम्हे चिंतित्था = तुम दोनो चिंतन करते हो।
तुम्हे इच्छित्था – तुम सब इच्छा करते हो। तुम्हे सुणित्था = तुम सब सुनते/सुनती हो।
तुम्हे पासित्था = तुम सब देखते हो। तुम्हे भुंजित्था = तुम सब भोजन करते हो।
तुम्हे पिवित्था = तुम दोनो पीते हो। तुम्हे चलित्था = तुम सब चलते/चलती हो।
तुम्हे गच्छित्था = तुम जाते/जाती हो। तुम्हे भमित्था = तुम घूमते/घूमती हो।
तुम्हे धावित्था = तुम सब दौडते हो। तुम्हे णच्चित्था = तुम सब नाचते हो।
तुम्हे खेलित्था = तुम सब खेलती हो। तुम्हे जयित्था = तुम दोनो जीतते हो।
तुम्हे हसित्था = तुम सब हँसते हो। तुम्हे सेवित्था = तुम सेवा करते हो।
तुम्हे सयित्था = तुम सोते/सोती हो। तुम्हे लिहित्था = तुम सब लिखते हो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम सब दौडते हो। तुम सब जानती हो। तुम सब नमन करते हो।
तुम दोनो सुनती हो। तुम दोनों पीते हो। तुम सब घूमते हो। तुम सब हँसती हो।
तुम सब इच्छा करते हो। तुम सब नाचते हो। तुम सब जीतते हो।

प्रयोग वाक्य

तुम्हे अत्थ पढित्था = तुम सब यहाँ पढते हो।
तुम्हे तत्थ खेलित्था = तुम सब वहाँ खेलते हो।
तुम्हे सइं भुंजित्था = तुम दोनो एक बार भोजन करती हो।
तुम्हे मुहु चिंतित्था = तुम सब बार-बार चिंतन करते हो।
तुम्हे सया सेवित्था = तुम सब सदा सेवा करती हो।
तुम्हे दाणि सयित्था = तुम दोनो इस समय सोती हो।
तुम्हे सणिअं चलित्था = तुम सब धीरे चलते हो।
तुम्हे झत्ति गच्छित्था = तुम दोनो शीघ्र जाती हो।
तुम्हे अग्गओ पासित्था = तुम सब आगे देखते हो।
तुम्हे ण लिहित्था = तुम सब नहीं लिखते हो।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम सब बार-बार चिंतन करती हो। तुम दोनों सदा सेवा करती हो।
तुम सब इस समय सोते हो। तुम दोनो धीरे चलते हो। तुम सब आगे देखते हो।

पाठ ५

उदाहरण वाक्य **सो=वह (पुल्लिग)**

सो नमइ=वह नमन करता है ।
सो जाणइ=वह जानता है ।
सो इच्छइ=वह इच्छा करता है ।
सो पासइ=वह देखता है ।
सो पिवइ=वह पीता है ।
सो गच्छइ=वह जाता है ।
सो धावइ=वह दौडता है ।
सो खेलइ=वह खेलता है ।
सो हसइ=वह हँसता है ।
सो सयइ=वह सोता है ।

सो पढइ=वह पढता है ।
सो चिंतइ=वह चिंतन करता है ।
सो सुणइ=वह सुनता है ।
सो भुंजइ=वह भोजन करता है ।
सो चलइ=वह चलता है ।
सो भमइ=वह घूमता है ।
सो णच्चइ=वह नाचता है ।
सो जयइ=वह जीतता है ।
सो सेवइ=वह सेवा करता है ।
सो लिहइ=वह लिखता है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह दौडता है । वह जानता है । वह नमन करता है । वह सुनता है ।
वह पीता है । वह घूमता है । वह हसता है । वह इच्छा करता है ।
वह नाचता है । वह जीतता है ।

प्रयोग वाक्य

सो अत्थ पढइ = वह यहाँ पढता है ।
सो तत्थ खेलइ = वह वहाँ खेलता है ।
सो सइ भुंजइ = वह एक बार भोजन करता है ।
सो मुहु चिंतइ = वह बार बार चिंतन करता है ।
सो सया सेवइ = वह सदा सेवा करता है ।
सो दाणि सयइ = वह इस समय सोता है ।
सो सणिअ चलइ = वह धीरे चलता है ।
सो झत्ति गच्छइ = वह शीघ्र जाता है ।
सो अग्गओ पासइ = वह आगे देखता है ।
सो ण लिहइ = वह नही लिखता है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह एक बार पढता है । वह वहा भोजन करता है ।
वह इस समय खेलता है । वह यहा रहता है । वह आगे देखता है ।

पाठ ६

उदाहरण वाक्य ते=वे दोनों/वे सब (पुल्लिंग)

ते नमन्ति=वे दोनों/सब नमन करते हैं।
ते जाणन्ति=वे जानते हैं।
ते इच्छन्ति=वे इच्छा करते हैं।
ते पासन्ति=वे सब देखते हैं।
ते पिवन्ति=वे दोनों पीते हैं।
ते गच्छन्ति=वे जाते हैं।
ते धावन्ति=वे सब दौड़ते हैं।
ते खेलन्ति=वे दोनों खेलते हैं।
ते हसन्ति=वे सब हँसते हैं।
ते सयन्ति=वे सब सोते हैं।
ते पढन्ति=वे दोनों/सब पढते हैं।
ते चिंतन्ति=वे चिंतन करते हैं।
ते सुणन्ति=वे सुनते हैं।
ते भुंजन्ति=वे भोजन करते हैं।
ते चलन्ति=वे सब चलते हैं।
ते भमन्ति=वे सब घूमते हैं।
ते णच्चन्ति=वे सब नाचते हैं।
ते जयन्ति=वे दोनों जीतते हैं।
ते सेवन्ति=वे सेवा करते हैं।
ते लिहन्ति=वे सब लिखते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वे सब दौड़ते हैं। वे सब जानते हैं। वे दोनों नमन करते हैं।
वे सब सुनते हैं। वे पीते हैं। वे सब घूमते हैं। वे दोनों हँसते हैं।
वे इच्छा करते हैं। वे सब जानते हैं।

प्रयोग वाक्य

ते अत्थ पढन्ति = वे सब यहाँ पढते हैं।
ते तत्थ खेलन्ति = वे सब वहाँ खेलते हैं।
ते सइ भुंजन्ति = वे दोनों एक बार भोजन करते हैं।
ते मुहु चिंतन्ति = वे सब बार बार चिंतन करते हैं।
ते सया सेवन्ति = वे सदा सेवा करते हैं।
ते दाणि सयन्ति = वे सब इस समय सोते हैं।
ते मणिअं चलन्ति = वे दोनों धीरे चलते हैं।
ते झत्ति गच्छन्ति = वे सब शीघ्र जाते हैं।
ते अग्गओ पासन्ति = वे सब आगे देखते हैं।
ते ण लिहन्ति = वे दोनों नहीं लिखते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

वे सब बार-बार चिंतन करते हैं। वे दोनों सदा सेवा करते हैं।
वे सब इस समय सोते हैं। वे दोनों धीरे चलते हैं। वे सब आगे देखते हैं।

पाठ ७

उदाहरण वाक्य सा=वह (स्त्री०)

सा नमइ=वह नमन करती है।
सा जाणइ=वह जानती है।
सा इच्छइ=वह इच्छा करती है।
सा पासइ=वह देखती है।
सा पिवइ=वह पीती ह।
सा गच्छइ=वह जाती है।
सा धावइ=वह दौडती है।
सा खेलइ=वह खेलती है।
सा हसइ=वह हँसती है।
सा सयइ=वह सोती है।

सा पढइ=वह पढती है।
सा चिंतइ=वह चिंतन करती है।
सा सुणइ=वह सुनती है।
सा भुंजइ=वह भोजन करता है।
सा चलइ=वह चलती है।
सा भमइ=वह घूमती है।
सा णच्चइ=वह नाचती है।
सा जयइ=वह जीतती है।
सा सेवइ=वह सेवा करती है।
सा लिहइ=वह लिखता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह दौडती है। वह जानती है। वह नमन करती है। वह सुनती है।
वह पीती है। वह घूमती है। वह हँसती है। वह इच्छा करती है।
वह नाचती है। वह जीतती है।

प्रयोग वाक्य

सा अत्थ पढइ	=	वह यहाँ पढ़ती है।
सा तत्थ खेलइ	=	वह वहाँ खेलती है।
सा सइ भुंजइ	=	वह एक बार भोजन करती है।
सा मुहु चिंतइ	=	वह बार-बार चिंतन करती है।
सा सया सेवइ	=	वह सदा सेवा करती है।
सा दाणि सयइ	=	वह इस समय सोती है।
सा सणिअं चलइ	=	वह धीरे चलती है।
सा झत्ति गच्छइ	=	वह शीघ्र जाती है।
सा अग्गओ पासइ	=	वह आगे देखती है।
सा ण लिहइ	=	वह नहीं लिखती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह एक बार पढती है। वह वहाँ भोजन करती है।
वह इस समय खेलती है। वह यहाँ दौडती है। वह आगे देखती है।

पाठ ८

उदाहरण वाक्य ताओ=वे दोनों/वे सब (स्त्री०)

ताओ नमंति=वे दोनों नमन करती हैं।	ताओ पढंति=वे सब पढती हैं।
ताओ जाणन्ति=वे सब जानती हैं।	ताओ चिंतंति=वे चिंतन करती हैं।
ताओ इच्छंति=वे इच्छा करती हैं।	ताओ सुणंति=वे सब सुनती हैं।
ताओ पासन्ति=वे सब देखती हैं।	ताओ भुंजंति=वे भोजन करती हैं।
ताओ पिवंति=वे दोनों पीती हैं।	ताओ चलंति=वे सब चलती हैं।
ताओ गच्छंति=वे सब जाती हैं।	ताओ भमन्ति=वे घूमती हैं।
ताओ धावंति=वे दोनों दौडती हैं।	ताओ णच्चन्ति=वे सब नाचती हैं।
ताओ खेलंति=वे सब खेलती हैं।	ताओ जयंति=वे दोनों जीतती हैं।
ताओ हसंति=वे हँसती हैं।	ताओ सेवंति=वे सेवा करती हैं।
ताओ सयंति=वे सब सोती हैं।	ताओ लिहंति=वे लिखती हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वे सब दौडती हैं। वे सब जानती हैं। वे दोनों नमन करती हैं।
वे सब सुनती हैं। वे दोनों पीती हैं। वे सब घूमती हैं। वे हँसती हैं।
वे इच्छा करती हैं। वे सब नाचती हैं। वे सब जीतती हैं।

प्रयोग वाक्य

ताओ अत्थ पढंति	=	वे सब यहाँ पढती हैं।
ताओ तत्थ खेलंति	=	वे सब वहाँ खेलती हैं।
ताओ सइं भुंजंति	=	वे दोनों एक बार भोजन करती हैं।
ताओ मुहु चिंतंति	=	वे बार बार चिंतन करती हैं।
ताओ सया सेवंति	=	वे सब सदा सेवा करती हैं।
ताओ दाणि सयंति	=	वे इस समय सोती हैं।
ताओ सणिअं चलंति	=	वे दोनों धीरे चलती हैं।
ताओ झत्ति गच्छंति	=	वे सब शीघ्र जाती हैं।
ताओ अग्गओ पासंति	=	वे सब आगे देखती हैं।
ताओ ण लिहंति	=	वे नहीं लिखती हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वे सब बार-बार चिंतन करती हैं। वे दोनों सदा सेवा करती हैं।
वे सब इस समय सोती हैं। वे धीरे चलती हैं। वे दोनों वहाँ मिलती हैं।

पाठ ९

(पु)	इमो=यह	इमे=ये	को=कौन, के=कौन
(स्त्री)	इमा=यह	इमाओ=ये	का=कौन काओ=कौन

उदाहरण वाक्य

एकवचन	बहुवचन
इमो नमइ=यह नमन करता है।	इमे नमन्ति=ये नमन करते हैं।
इमो गच्छइ=यह जाता है।	इमे गच्छन्ति=ये जाते हैं।
इमो पढइ=यह पढता है।	इमे पढन्ति=ये पढते हैं।
इमा णच्चइ=यह नाचती है।	इमाओ णच्चन्ति=ये नाचती हैं।
इमा धावइ=यह दौडती है।	इमाओ धावन्ति=ये दौडती हैं।
इमा खेलइ=यह खेलती है।	इमाओ खेलन्ति=ये खेलती है।
को हसइ=कौन हँसता है?	के हसन्ति=कौन हँसते है?
को जाणइ=कौन जानता है?	के जाणन्ति=कौन जानते हैं?
को सीखइ=कौन सीखता है?	के सीखन्ति=कौन सीखते है?
का णच्चइ=कौन नाचती है?	काओ णच्चन्ति=कौन नाचती है?
का सेवइ=कौन सेवा करती है?	काओ सेवन्ति=कौन सेवा करती है?
का पढइ=कौन पढती है?	काओ पढन्ति=कौन पढती है?

प्राकृत मे अनुवाद करो

कौन देखता है? यह पीता है। ये सोते हैं। कौन लिखता है। यह घूमती है। कौन चलता है? ये भोजन करती है। यह सुनता है। कौन जानती हैं? ये जीतते है। यह नमन करता है। कौन इच्छा करता है? यह दौडता है।

प्रयोग वाक्य

इमो अत्थ पढइ	=	यह यहाँ पढता है।
को तत्थ भुंजइ	=	कौन वहाँ भोजन करता है?
इमे अत्थ खेलन्ति	=	ये यहाँ खेलते हैं।
इमाओ सणियं चलन्ति	=	ये धीरे चलती हैं।
के ण लिहन्ति	=	कौन नही लिखते है?
इमा तत्थ गच्छइ	=	यह वहाँ जाती है।
काओ अग्गओ पासन्ति	=	कौन आगे देखती हैं?
का ण चिंतइ	=	कौन नही सोचती है?

पाठ १०

नियम सवनाम (पु०, स्त्री०) प्रथमा विभक्ति

सवनाम[1] (पु , स्त्री)

नि० १ प्राकृत म अम्ह (मैं) एव तुम्ह (तुम) सवनाम क रूप पुल्लिग एव स्त्रीलिंग म एक समान बनत है। प्रथमा विभक्ति म इनके रूप इस प्रकार याद करलें —

एकवचन	अह	तुम
बहुवचन	अम्हे	तुम्हे

सवनाम (पु)

नि० २ 'त' (वह) सवनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन म **सो** तथा बहुवचन म **ते** रूप बन जाता है।

नि० ३ इम (यह) सवनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन मे **'ओ'** तथा बहुवचन म 'ए' प्रत्यय लगकर य रूप बनत हैं—**इमो इमे** ।

नि० ४ 'क' (कौन) सवनाम के प्रथमा विभक्ति ए व म **ओ'** तथा ब व म 'ए' प्रत्यय लगकर ये रूप बनत हैं—**को, क** ।

सवनाम (स्त्री)

नि० ५ 'ता' (वह) सवनाम के प्रथमा विभक्ति ए व म **सा'** रूप तथा व व म **'ओ'** प्रत्यय लगकर **ताओ** रूप बनता है।

नि० ६ 'इमा' (यह) सवनाम के प्रथमा विभक्ति ए व तथा ब व म ये रूप बनत है—**इमा, इमाओ** ।

नि० ७ का' (कौन) सवनाम के प्रथमा विभक्ति ए व तथा व व म य रूप बनत है—**का, काओ** ।

निर्देश पिछले पाठो मे आपन प्राकृत के कुछ प्रमुख सवनामा, क्रियाओ तथा अव्यया की जानकारी प्राप्त की। इनके रूप इस प्रकार याद करलें —

सवनाम	प्रथम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष (पु)	अन्य पुरुष (स्त्री)
एकवचन	अह	तुम	सो, इमो को	सा, इमा का
बहुवचन	अम्हे	तुम्हे	ते, इमे, क	ताओ, इमाओ काओ

१ प्राकृत मे सवनामा के अन्य रूप भी प्रयुक्त होत हैं, जिनका विवेचन आगामी प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड २ मे किया जावेगा। यहाँ सवनाम के एव रूप का ही प्रयुक्त किया गया है।

क्रियाएं[1]

नम=नमन करना

	एकवचन	बहुवचन
(प्र पु)	नमामि	नमामो
(म पु)	नमसि	नमित्था
(अ पु)	नमइ	नमन्ति

निर्देश इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप बनेंगे। इनका तीनो पुरुषों एवं दोनो वचनो में लिखकर अभ्यास कीजिए –

क्रियाकोश

पढ=पढना	पिव=पीना	जय=जीतना
जाण=जानना	चल=चलना	हस=हसना
चिंत=चिंतन करना	गच्छ=जाना	सेव=सेवा करना
इच्छ=इच्छा करना	भम=घूमना	सय=सोना
सुण=सुनना	धाव=दौडना	लिह=लिखना
पास=देखना	णच्च=नाचना	वस=रहना
भुंज=भोजन करना	खेल=खेलना	बंध=बाधना

अव्यय

नि० ८ जिन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता उन्हें अव्यय कहते हैं। यथा –
अत्थ=यहाँ सया=सदा ण=नहीं, झत्ति=शीघ्र आदि।

अभ्यास

उपयुक्त सर्वनाम लिखो उपयुक्त क्रियारूप लिखो

(क)	पढन्ति	(ख) सा	(हस)।
	गच्छामो	अहं	(धाव)
	नमसि	ताओ	(णच्च)
	पिवित्था	तं	(इच्छ)।

उपयुक्त अव्यय लिखो

(ग) इमा	पढइ।	ताओ	चलन्ति।
क	खेलन्ति।	अम्हे	पासन्ति।
सो	भुंजइ।	ते	लिहन्ति।

१ प्राकृत में क्रियाओं के अन्य रूप भी प्रयुक्त होते हैं, जिनका विवेचन आगामी प्राकृत स्वयं शिक्षक खण्ड २ में किया जावेगा। यहां क्रियाओं के रूप को ही प्रयुक्त किया गया है।

पाठ ११

निर्देश आगे के क्रिया-पाठों व अभ्यास के लिए निम्न सभी क्रियाओं संज्ञाओं एवं अव्ययों का याद करें ।

अकारान्त क्रियाएं

पास=देखना	कर=करना
गच्छ=जाना	गिण्ह=ग्रहण करना
इच्छ=इच्छा करना	नम=नमन करना
खेल=खेलना	जाण=जानना
पढ=पढना	धाव=दौडना
सुण=सुनना	हस=हँसना
भुंज=भोजन करना	णच्च=नाचना
पुच्छ=पूछना	सेव=सेवा करना
कह=कहना	सय=सोना
खण=खोदना	अच्च=पूजा करना

आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएं

दा=देना	पा=पीना
गा=गाना	ठा=ठहरना
खा=खाना	णे=ले जाना
झा=ध्यान करना	हो=होना

कर्म-संज्ञाएं

विज्जालय=विद्यालय	कहा=कथा
चित्त=चित्र	पत्त=पत्र
जस=यश	पण्ह=प्रश्न
दव्व=धन	कज्ज=कार्य
कंदुअ=गेंद	गीअ=गीत
सत्थ=शास्त्र	रोटिअ=रोटी
पोत्थअ=पुस्तक	फल=फल
जल=पानी	अप्प=आत्मा
दुद्ध=दूध	वत्थ=वस्त्र
वागरण=व्याकरण	पुण्ण=पुण्य

अव्यय

पइदिण=प्रतिदिन	अंत=भीतर
अज्ज=आज	बहिं=बाहर
कल्ल=कल	किं=क्या
अवस्स=अवश्य	कत्थ=कहाँ

पाठ १२

(क) अकारान्त क्रियाएं — वर्तमानकाल

एकवचन	बहुवचन
अह पासामि=मैं देखता हूँ।	अम्हे पासामो=हम सब देखते हैं।
तुम पाससि=तुम देखते हो।	तुम्हे पासित्था=तुम सब देखते हो।
सो पासइ=वह देखता है।	ते पासन्ति=वे देखते हैं।

उदाहरण वाक्य

अह विज्जालय गच्छामि	= मैं विद्यालय जाता हूँ।
तुम जस इच्छसि	= तुम यश को चाहते हो।
सो तत्थ कन्दुअ खेलइ	= वह वहाँ गेंद खेलता है।
अम्हे वागरण पढामो	= हम व्याकरण पढते हैं।
तुम्हे सत्थ सुणित्था	= तुम सब शास्त्र सुनते हो।
ते अत्थ भुजन्ति	= वे यहाँ भोजन करते हैं।
सा कि करइ ?	= वह क्या करती है ?
सा पत्त लिहइ	= वह पत्र लिखती है।
ताओ कह कहन्ति	= वे (स्त्रियाँ) कथा कहती हैं।
ते पण्ह पुच्छन्ति	= वे प्रश्न पूछते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हम सब नमन करते हैं। वह धन ग्रहण करता है। तुम क्या करते हो ? मैं पुस्तक पढता हूँ। वे सब वहाँ दौडते हैं। वह यहाँ नाचती है। तुम सब प्रतिदिन सेवा करते हो। वे (स्त्रियाँ) आत्मा को जानती हैं। वह वहाँ खेलता है। वे भीतर पूजा करते हैं।

क्रियाकोश

भण=कहना	आगच्छ=आना
पेस=भेजना	कीण=खरीदना
जिण=जीतना	बीह=डरना
कद=रोना	पाल=पालन करना
जिघ=सूँघना	सीख=सीखना
अड=घूमना	घोस=घोषणा करना
गम=व्यतीत होना	जप=बोलना
घाय=मारना	दह=जलना
चिट्ठ=बैठना	णिम्म=बनाना
छुट्ट=छूटना	तुल=तौलना

निर्देश इन क्रियाओं के तीनों पुरुषों और दोनों वचनों में वर्तमानकाल के रूप लिखो और वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एव ओकारान्त क्रियाए :

एकवचन	बहुवचन
अह दामि=मैं देता हूँ।	अम्हे दामो=हम देते हैं।
तुम दासि=तुम देते हो।	तुम्हे दाइत्था=तुम देते हो।
सो दाइ=वह देता है।	ते दान्ति=वे देते हैं।

उदाहरण वाक्य

अह गीअ गामि = मैं गीत गाता हूँ।
तुम तत्थ ठामि = तुम वहाँ ठहरते हो।
सो फल खाइ = वह फल खाता है।
ते किं णेंति = वे क्या ले जाते है ?
अह अप्प झामि = मैं आत्मा को ध्याता हूँ।
अम्हे दुद्ध पामो = हम सब दूध पीते हैं।
तत्थ किं होइ = वहा क्या होता है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं वहा ठहरता हूँ। तुम यहा गाते हो। वह इस समय ध्यान करता है। वे नही देते है। हम सब वहा ले जाते है। तुम सब यहाँ खाते हो। यहा क्या होता है ? मै धन देता हू।

अभ्यास

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए

(क) सो .... (पेस)। (ख) .... आगच्छसि।
अह .... (बोह)। .... कीणइ।
ते .... (भण)। .... दामो।
सो .... (जिण)। .... जिघामि।
अम्हे .... (सीख)। .... पालित्था।

(ग) अह .... ण्हामि। तुम .... पासि।
सो .... खाअइ। .... ताओ .... णच्चन्ति।
ते .... णेति। तत्थ .... होइ।

पाठ १२

(क) अकारा त क्रियाए वतमानकाल

एकवचन	बहुवचन
अह पासामि=मै देखना हूँ।	अम्हे पासामो=हम सब देखते है।
तुम पाससि=तुम दखत हा।	तुम्हे पासित्था=तुम सब दखत हा।
सो पासइ=वह दखता है।	ते पासंति=वे देखते हैं।

उदाहरण वाक्य

अह विज्जालय गच्छामि	= मै विद्यालय जाता हूँ।
तुम जस इच्छसि	= तुम यश को चाहत हो।
सो तत्थ कंदुअ खेलइ	= वह वहाँ गेंद खेलता है।
अम्हे वागरण पढामो	= हम व्याकरण पढते हैं।
तुम्हे सत्थ सुणित्था	= तुम सब शास्त्र सुनते हो।
ते अत्थ भुंजति	= वे यहाँ भोजन करत है।
सा किं करइ ?	= वह क्या करती है ?
सा पत्त लिहइ	= वह पत्र लिखती है।
ताओ कह कहंति	= वे (स्त्रिया) कथा कहती है।
ते पण्ह पुच्छंति	= वे प्रश्न पूछते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हम सब नमन करते हैं। वह धन ग्रहण करता है। तुम क्या करत हा ? मैं पुस्तक पन्ता हूँ। वे सब वहा दौडते हैं। वह यहाँ नाचती है। तुम सब प्रतिदिन सेवा करत हा। व (स्त्रिया) आत्मा का जानती हैं। वह वहाँ खेलता है। वे भीतर पूजा करत है।

क्रियाकोश

भण=कहना	आगच्छ=आना
पेस=भेजना	कीण=खरीदना
जिण=जीतना	वीह=डरना
कद=रोना	पाल=पालन करना
जिघ=सूंघना	सीख=सीखना
अड=घूमना	घोस=घोषणा करना
गम=व्यतीत होना	जप=बोलना
घाय=मारना	दह=जलना
चिट्ठ=बठना	णिम्म=बनाना
छुट्ट=छूटना	तुल=तौलना

निर्देश इन क्रियाओं के तीनो पुरुषो और दोनो वचनो मे वतमानकाल के रूप लिखो और वाक्यो मे उनका प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एव ओकारान्त क्रियाए।

एकवचन	बहुवचन
अह दामि=मैं देता हूँ।	अम्हे दामो=हम देते हैं।
तुम दासि=तुम देते हो।	तुम्हे दाइत्था=तुम देते हो।
सो दाइ=वह देता है।	ते दान्ति=वे देते हैं।

उदाहरण वाक्य

अह गीअ गामि = मै गीता गाता हूँ।
तुम तत्थ ठासि = तुम वहाँ ठहरते हो।
सो फल खाइ = वह फल खाता है।
त किं णेति = वे क्या ले जाते है?
अह अप्प झामि = मैं आत्मा का ध्याता हूँ।
अम्हे दुद्ध पामो = हम सब दूध पीते हैं।
तत्थ किं होइ = वहा क्या होता है?

प्राकृत मे अनुवाद करो

मै वहा ठहरता हूँ। तुम यहा गाते हो। वह इस समय ध्यान करता है। वे नही देते है। हम सब वहाँ ले जाते है। तुम सब यहाँ खाते हो। यहाँ क्या होता है? मै धन देता हूँ।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(क) सो	(पेस)।	(ख)	आगच्छसि।
अह	(बीह)।		कीणइ।
ते	(भण)।		कन्दामो।
सा	(जिण)।		जिघामि।
अम्हे	(सीख)।		पालित्था।

(ग) अह	कहामि।	तुम	गासि।
सो	खाअइ।	तामो	गच्छन्ति।
ते	णंति।	तत्थ	होइ।

पाठ १३

(क) प्रकारान्त क्रियाएं — भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
अह पासीअ=मैंने देखा ।	अम्हे पासीअ=हम सबने देखा ।
तुम पासीअ=तुमने देखा ।	तुम्हे पासीअ=तुम सबने देखा ।
सो पासीअ=उसने देखा ।	ते पासीअ=उन सबने देखा ।

उदाहरण वाक्य

अह तत्थ गच्छीअ	=मैं वहाँ गया ।
तुम दव्व इच्छीअ	=तुमने धन को चाहा ।
सो कल्ल कन्दुअ खेलीअ	=उसने कल गेंद खेली ।
अम्हे पोत्थअ पढीअ	=हम सबने पुस्तक पढी ।
तुम्हे अज्ज सत्थ सुणीअ	=तुम सबने आज शास्त्र सुना ।
ते रोटिअ भुंजीअ	=उन्होंने रोटी खायी ।
सा कज्ज करीअ	=उस (स्त्री) ने काम किया ।
सो वागरण लिहीअ	=उसने व्याकरण लिखी ।
ते कह कहीअ	=उन्होंने कथा कही ।
अम्हे अज्ज पण्ह पुच्छीअ	=हमने आज प्रश्न पूछा ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम सबने नमन किया । उसने धन ग्रहण किया । तुमने क्या किया ? मैंने पुस्तक पढी । हम सब वहाँ दौडे । वह (स्त्री) कल नाची । उन्होंने सेवा नही की । उन (स्त्रियों) ने नही जाना । उसने गेंद खेली । उन्होंने प्रतिदिन पूजा की ।

क्रियाकोश

फास=छूना	उड्ड=उडना
गज्ज=गजना	जग्ग=जागना
थुण=स्तुति करना	तर=तरना
कलह=झगडना	कस्स=जोतना
लज्ज=लजाना	खम=क्षमा करना
जण=उत्पन्न करना	जूर=खेद करना
ढक्क=ढकना	दूस=दूषण लगाना
तक्क=तर्क करना	पच=पकाना
दरिस=दिखलाना	पहर=प्रहार करना
तिप्प=सतुष्ट होना	पत्थर=बिछाना

निर्देश —इन क्रियाओं के तीन पुरुषों एवं दोनों वचनों में भूतकाल के रूप लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

(ख) आ, ए एव ओकारान्त क्रियाए

एकवचन	बहुवचन
अहं दाही=मैंने दिया।	अम्हे दाही=हम सबने दिया।
तुम दाही=तुमने दिया।	तुम्हे दाही=तुम सबने दिया।
सो दाही=उसने दिया।	ते दाही=उन्होंने दिया।

उदाहरण वाक्य

अह कल्ल गीअं गाही	=	मैंने कल गीत गाया।
तुम तत्थ ठाही	=	तुम वहाँ ठहरे।
सो रोटिअं खाही	=	उसने रोटी खायी।
सा अप्पं झाही	=	उस (स्त्री) ने आत्मा का ध्याया।
ते किं णेही	=	वे क्या ले गये ?
अम्हे दुद्धं पाही	=	हमने दूध पिया।
तत्थ किं होही	=	वहाँ क्या हुआ ?

प्राकृत में अनुवाद करो

वह कहाँ ठहरा ? तुमने यहाँ गीत गाया। उसने कल ध्यान किया। उन्होंने धन नहीं दिया। हम सबने यहाँ दूध पिया। तुम वस्त्र वहाँ ले गये। कल यहाँ क्या हुआ ? मैंने यहाँ रोटी खायी।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(क) अहं	(थुण)।	(ख)	.....	कम्पीअ।
सो तत्थ	(कलह)।	तुम्हे	.....	तरीअ।
ते वत्थ	(कीण)।	सा	.....	पासीअ।
सा णं	(सज्ज)।		.....	झत्ति जग्गीअ।
तुम सत्त	(वस्स)।		.....	णं नमीअ।
ते	(पा)।		.....	झाही।
(ग) सो	..... भुंजीअ।	तुम्हे	.....	लिहीअ।
ताओ	पुच्छीअ।	अहं	.....	करीअ।
अम्हे	..... सुणीअ।	तुम	.....	..... कलहीअ।

(क) अकारान्त क्रियाएं — भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
अहं पासीअ=मैंने देखा।	अम्हे पासीअ=हम सबने देखा।
तुम पासीअ=तुमने देखा।	तुम्हे पासीअ=तुम सबने देखा।
सो पासीअ=उसने देखा।	ते पासीअ=उन सबने देखा।

उदाहरण वाक्य

अहं तत्थ गच्छीअ	=मैं वहाँ गया।
तुम दव्व इच्छीअ	=तुमने धन को चाहा।
सो कल्ल कन्दुअ खेलीअ	=उसने कल गेंद खेली।
अम्हे पोत्थअ पढीअ	=हम सबने पुस्तक पढ़ी।
तुम्हे अज्ज सत्थ सुणीअ	=तुम सबने आज शास्त्र सुना।
ते रोटिअ भुंजीअ	=उन्होंने रोटी खायी।
सा कज्ज करीअ	=उस (स्त्री) ने कार्य किया।
सो वागरण लिहीअ	=उसने व्याकरण लिखी।
ते कह कहीअ	=उन्होंने कथा कही।
अम्हे अज्ज पण्ह पुच्छीअ	=हमने आज प्रश्न पूछा।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम सबने नमन किया। उसने धन ग्रहण किया। तुमने क्या किया? मैंने पुस्तक पढ़ी। हम सब वहाँ दौड़े। वह (स्त्री) कल नाची। उन्होंने सेवा नहीं की। उन (स्त्रियों) ने नहीं जाना। उसने गेंद मला। उन्होंने प्रतिदिन पूजा की।

क्रियाकोश

फास=छूना	उड्ड=उड़ना
गज्ज=गजना	जग्ग=जागना
थुण=स्तुति करना	तर=तैरना
कलह=झगड़ना	कस्स=जोतना
लज्ज=लजाना	खम=क्षमा करना
जण=उत्पन्न करना	जूर=खेद करना
ढक्क=ढकना	दूस=दूषण लगाना
तक्क=तर्क करना	पच=पकाना
दरिस=दिखलाना	पहर=प्रहार करना
तिप्प=सतुष्ट होना	पत्थर=बिछाना

निर्देश—इन क्रियाओं के तीन पुरुषों एवं दोनों वचनों में भूतकाल के रूप लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएं

एकवचन	बहुवचन
अहं दाही = मैंने दिया।	अम्हे दाही = हम सबने दिया।
तुम दाही = तुमने दिया।	तुम्हे दाही = तुम सबने दिया।
सो दाही = उसने दिया।	ते दाही = उन्होंने दिया।

उदाहरण वाक्य

अहं कल्लं गीअं गाही	=	मैंने कल गीत गाया।
तुम तत्थ ठाही	=	तुम वहाँ ठहरे।
सो रोटिअं खाही	=	उसने रोटी खायी।
सा अप्पं झाही	=	उस (स्त्री) ने आत्मा को ध्याया।
ते किं णेही	=	वे क्या ले गये ?
अम्हे दुद्धं पाही	=	हमने दूध पिया।
तत्थ किं होही	=	वहाँ क्या हुआ ?

प्राकृत में अनुवाद करो

वह कहाँ ठहरा ? तुमने यहाँ गीत गाया। उसने कल ध्यान किया। उन्होंने धन नहीं दिया। हम सबने यहाँ दूध पिया। तुम वस्त्र वहाँ ले गये। कल यहाँ क्या हुआ ? मैंने यहाँ रोटी खायी।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(क) अहं	(थुण)।	(ख)	कहसीअ।
सो तत्थ	(कलह)।	तुम्हे	तरीअ।
ते वत्थ	(कीण)।	सा	पासीअ।
सा गं	(नच्च)।	......	झत्ति जग्गीअ।
तुम खेत	(कस्स)।	......	ण खमीअ।
ते	(पा)।	......	झाही।
(ग) सो	मुंजीअ।	तुम्हे	लिहीअ।
ताआ	पुच्छीअ।	अहं	करीअ।
अम्हे	सुणीअ।	तुम	कलहीअ।

पाठ १४

अस धातु=विद्यमान होना

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
(प्र०पु०)	अहं अम्हि=मैं हूँ।	अम्ह म्हो=हम हैं।
(म०पु०)	तुम असि=तुम हो।	तुम्ह थ=तुम सब हो।
(अ०पु०)	सो अत्थि=वह है।	ते संति=वे हैं।

भूतकाल

एकवचन	बहुवचन
अह अहेसि/आसि=मैं था।	अम्हे अहसि/आसि=हम थे।
तुम अहेसि/आसि=तुम थे।	तुम्ह अहसि/आसि=तुम सब थे।
सो अहेसि/आसि=वह था।	ते अहेसि/आसि=वे सब थे।

उदाहरण वाक्य

अह अत्थ अम्हि	= मैं यहां हूँ।
तुम तत्थ असि	= तुम वहां हो।
सो कत्थ अत्थि	= वह कहां है ?
अह तत्थ अहेसि	= मैं वहां था।
सो तत्थ ण आसि	= वह वहां नहीं था।
ते कल्ल तत्थ अहेसि	= वे सब कल वहां थे।
सो अत्थ अत्थि	= वह यहां है।
सा तत्थ अत्थि	= वह (स्त्री) वहां है।
ताओ कत्थ संति	= वे स्त्रियां कहां हैं ?
ते अत्थ संति	= वे यहां हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वहां पुस्तक है। यहां दूध है। मैं वहां हूँ। वह कहां है ? वे सब यहां थे। तुम वहां थे। हम सब यहां हैं। वह वहां नहीं है। तुम यहां नहीं थे। क्या वह वहां था ? वह स्त्री कहां थी ?

हिंदी मे अनुवाद करो

अत्थ विज्जालय अत्थि। तत्थ चित्त नत्थि। पत्त कत्थ आसि ? सो तत्थ अहेसि। ते अत्थ ण संति। ताओ कत्थ आसि। तुम्ह तत्थ था। अम्हे कल्ल तत्थ अहसि। अह अत्थ अम्हि।

अभ्यास

रिक्त स्थान भरिए

(क) सवनाम

	अत्थ पढामि ।	नत्थ भुजइ ।
....	सया गच्छति ।	ग गच्छामा ।
	सणिय चलसि ।	तत्थ मनित्था ।

(ख) अव्यय

अह	भु जामि ।	त	गच्छन्ति ।
सो	खनइ ।	तुम	सवसि ।
अम्ह ..	पासामा ।	तुम्हे	मयित्था ।

(ग) क्रिया (वतमान)

मा बन्दुम	।	अम्ह बागरण
ताम्रा कह	।	त पण्ह
तुम्हे पढन्ति	।	अह सत्थ..
अह गीअ	।	सो अप्प

(घ) क्रिया (भूतकाल)

ते बागरण	।	अम्ह राटिअ
मा कल्ल	।	अह पोथअ
तुम दुद्ध	।	तुम्ह दव्व

हिन्दी मे अनुवाद करो

अम्हे दाणि सयामो । तुम अग्गमा पाससि । सा मुहु चितइ । त सड ण भुजन्ति । ताम्रा कत्थ वसति ? काओ अत्थ पढन्ति । तुम्हे सत्थ सुणित्था । तुम तत्थ ण ठामि । त पात्थअ फासाम । अह अप्प कहो ।

क्रियाकोश

कड्ढ=खीचना	विरम=अलग होना
छिन=काटना	सचय=इकट्ठा करना
तूस=सतुष्ट होना	सज्ज=सजाना
दुह=दुहना	सिह=चाहना
पत्थ=प्रायना करना	सोह=शोभित होना

निर्देश इन क्रियाओ के वतमान एव भूतकाल के रूप बनाकर वाक्यो मे प्रयाग करो ।

पाठ १५

(क) अकारान्त क्रियाएं — भविष्यकाल

एकवचन	बहुवचन
अह पासिहिमि = मैं देखूंगा।	अम्हे पासिहामो = हम देखेंगे।
तुम पासिहिसि = तुम देखोगे।	तुम्हे पासिहित्था = तुम सब देखोगे।
सो पासिहिइ = वह देखेगा।	ते पासिहिंति = वे देखेंगे।

उदाहरण वाक्य

अह विज्जालय गच्छिहिमि = मैं विद्यालय जाऊंगा।
तुम दव्व इच्छिहिसि = तुम धन चाहोगे।
सा तत्थ कन्दुअ खेलिहिइ = वह वहा गेंद खेलेगी।
अम्हे अवस्स पोत्थअ पढिहामो = हम अवश्य पुस्तक पढेंगे।
तुम्हे पइदिण सत्थ सुणिहित्था = तुम लोग प्रतिदिन शास्त्र सुनोगे।
ते तत्थ किं भुंजिहिंति = वे वहा क्या खायेंगे?
सा कि कज्ज करिहिइ = वह क्या कार्य करेगी?
सो पोत्थअ लिहिहिइ = वह पुस्तक लिखेगा।
ते अज्ज कह कहिहिंति = वे आज कथा कहेंगे।
अम्हे वागरण पुच्छिहामो = हम व्याकरण पूछेंगे।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम सब नमन करोगे। वह धन ग्रहण करेगा। तुम वहा क्या करोगे? मैं आज पुस्तक पढूंगा। हम वहां दौड़ेंगे। वह (स्त्री) आज नाचेगी। वे अवश्य सेवा करेंगे। वे (स्त्रियां) क्या जानेंगी? वह प्रतिदिन गेंद खेलेगा। वे वहा पूजा करेंगे।

क्रियाकोश

पड = गिरना	हिंस = हिंसा करना
हिण्ड = घूमना	रूस = क्रोधित होना
तव = तप करना	धर = पकड़ना
मुच्छ = मूर्छित होना	मग्ग = मांगना
धोव = धोना	मुंच = छोड़ना
पविस = प्रवेश करना	*फल = फलना*
पलाय = भाग जाना	बोह = समझना
फुल्ल = फूलना	भंज = तोड़ना
पीस = पीसना	बोल्ल = बोलना
पेच्छ = देखना	मन्न = मानना

निर्देश इन क्रियाओं के तीनों पुरुषों और दोनों वचनों में भविष्यकाल के रूप लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एव ओकारान्त क्रियाए

एकवचन	बहुवचन
अह दाहिमि=म दूगा ।	अम्हे दाहामो=हम देंगे ।
तुम दाहिसि=तुम दोग ।	तुम्हे दाहित्था=तुम सब दोगे ।
सा दाहिइ=वह दगा ।	ते दाहिंति=वे देंगे ।

उदाहरण वाक्य

अह तत्थ गीअ गाहिमि	=	मै वहाँ गीत गाऊगा ।
तुम अत्थ ठाहिसि	=	तुम यहा ठहरोगे ।
सो रोटिअ खाहिइ	=	वह रोटी खायेगा ।
सा अप्प झाहिइ	=	वह आत्मा का ध्यान करेगी ।
ते सत्थ णेंहिंति	=	वे शास्त्र ले जायेंगे ।
अम्हे दुद्ध पाहामो	=	हम दूध पियेंगे ।
तत्थ किं होहिइ	=	वहा क्या होगा ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह कहाँ ठहरेगा । तुम आज गीत गाओगे । वह प्रतिदिन ध्यान करेगा । वे विद्यालय का धन देंगे । हम सब वहाँ दूध पीयेंगे । तुम वहा पुस्तक ले जाओग । वहाँ क्या होगा ? म यहाँ रोटी खाऊगा ।

अभ्यास

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए

(क) सो	(पढ) ।	(ख)	धण्णु (गाय) दुहिहिइ ।
तुम "	(लव) ।		जिणहिमि ।
अह	(घोव) ।		खमिहित्था ।
त "	(मग्ग) ।		ए हिंसिहामो ।
अम्हे	(घर्) ।		"सिहिहिमि ।
अह	(ठा) ।		होहिइ ।
(ग) सो	"लिहिहिइ ।	ताओ	मु जिहिंति ।
अम्हे	पढिहामो ।	अह	पढिहिमि ।
त"	दुहिहिंति ।	तुम	मग्गिहिसि ।

(क) अकारान्त क्रियाए इच्छा/आज्ञा

एकवचन	बहुवचन
अह पासमु = मैं देखू ।	अम्हे पासमो = हम सब देखें ।
तुम पासहि = तुम देखो ।	तुम्हे पासह = तुम सब देखो ।
सो पासउ = वह देखे ।	ते पासतु = वे सब देखें ।

उदाहरण वाक्य

अह विज्जालय गच्छमु	=	मैं विद्यालय जाऊ ।
तुम दव्व इच्छहि	=	तुम धन को चाहो ।
सो अत्थ न खेलउ	=	वह यहाँ न खेले ।
अम्हे अज्ज वागरण पढमो	=	हम आज व्याकरण पढें ।
तुम्हे तत्थ सत्थ सुणह	=	तुम सब वहाँ शास्त्र सुनो ।
ते तत्थ भुजतु	=	वे वहाँ भोजन करें ।
सा अत्थ कज्ज करउ	=	वह (स्त्री) यहाँ काय करे ।
सा पत्त लिहउ	=	वह पत्र लिखे ।
ताओ अत्थ कह कहतु	=	वे (स्त्रिया) यहाँ कथा कहे ।
ते वागरण पुच्छतु	=	वे व्याकरण पूछें ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हम सब नमन करें । वह धन ग्रहण करे । तुम आज काय करो । मैं पुस्तक को पढू । वे सब वहाँ न दौडें । वह (स्त्री) यहाँ नाचे । तुम सब प्रतिदिन सेवा करो । वे (स्त्रिया) यहाँ न जावें । वह प्रतिदिन वहाँ खेले । वे भीतर पूजा करें ।

क्रियाकोश

हुव	= होना		रम	= रमण करना	
ताड	= पीटना		विहर	= विहार करना	
हण	= मारना		सद्दह	= श्रद्धान करना	
वड्ढ	= बढना		निन्द	= निन्दा करना	
गुथ	= गूथना		लभ	= प्राप्त करना	
सिणेह	= स्नेह करना		तिम्म	= भीगना	
साह	= कहना		लघ	= लाघना	
अच्छ	= ठहरना		सक्क	= समथ होना	
अक्कोस	= आक्रोश करना		सर	= याद करना	
आसक	= सदेह करना		हरिस	= खुश होना	

निर्देश इन क्रियाओं के तीनों पुरुषों एव दोनों वचनों में विधि (इच्छा) और आज्ञा के रूप लिखो तथा उनका वाक्यो मे प्रयोग करो ।

(ख) आकारान्त एकारान्त एवं ओकारान्त क्रियाएं

एकवचन	बहुवचन
अहं दामु = मैं दूं ।	अम्हे दामो = हम सब दें।
तुम दाहि = तुम दो ।	तुम्हे दाह = तुम सब दो ।
सो दाउ = वह दे ।	ते दांतु = वे सब दें।

उदाहरण वाक्य

अहं तत्थ गीअं गामु	=	मैं वहाँ गीत गाऊं ।
तुम अत्थ ठाहि	=	तुम यहाँ ठहरो ।
सो पइदिण रोटिअं खाउ	=	वह प्रतिदिन रोटी खाय ।
सा अप्प झाउ	=	वह (स्त्री) आत्मा का ध्यान करे।
ते चित्त रोन्तु	=	वे चित्र ले जाएं।
अम्हे दुद्ध पामो	=	हम दूध पियें।
अज्ज तत्थ किं होउ	=	आज वहाँ क्या हो ?
अत्थ गीअं ण गाहि	=	यहाँ गीत न गाओ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वह वहाँ ठहरे। तुम आज गीत गाओ। वह प्रतिदिन ध्यान करे। वे धन दें। हम सब आज दूध न पियें। तुम वहाँ पुस्तक ले जाओ। आज वहाँ क्या हो ? क्या मैं यहाँ रोटी खाऊं ?

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

(क) सो ण ...... (हण)।
तुम पइदिण ...... (वड्ढ)।
तत्थ किं ...... (हव)।
ते ण ...... (ताड)।
सा ...... (गुथ)।

(ख) ...... तत्थ रमउ।
...... अत्थ विहरतु।
...... सद्दहमु।
...... ण निन्दमो।
...... जस लभहु।

(ग) सो ...... चिट्ठउ। ताओ ...... सेवतु।
अम्हे ...... गच्छमो। सा ...... ठाउ।
तुमं ...... पाहि। तुम्हे ...... खाह।

पाठ १७

सम्बन्ध कृदन्त

पासिऊण	=	देखकर	करिऊण	=	करके
गच्छिऊण	=	जाकर	गिण्हिऊण	=	ग्रहणकर
इच्छिऊण	=	इच्छाकर	नमिऊण	=	नमनकर
खेलिऊण	=	खेलकर	जाणिऊण	=	जानकर
पढिऊण	=	पढकर	धाविऊण	=	दौडकर
सुणिऊण	=	सुनकर	हसिऊण	=	हसकर
भुंजिऊण	=	भोजनकर	णच्चिऊण	=	नाचकर
लिहिऊण	=	लिखकर	सेविऊण	=	सेवाकर
पुच्छिऊण	=	पूछकर	सयिऊण	=	सोकर
कहिऊण	=	कहकर	अच्चिऊण	=	पूजाकर
दाऊण	=	देकर	णेऊण	=	ले जाकर
गाऊण	=	गाकर	पाऊण	=	पीकर
खाऊण	=	खाकर	ठाऊण	=	ठहरकर
झाऊण	=	ध्यानकर	होऊण	=	होकर

प्रयोग वाक्य

सो चित्त पासिऊण लिहइ	=	वह चित्र को देखकर लिखता है।
तुम विज्जालय गच्छिऊण पढसि	=	तुम विद्यालय जाकर पढते हो।
अहं जस इच्छिऊण सेवामि	=	मै यश की इच्छाकर सेवा करता हू।
अम्हे पढिऊण खेलामो	=	हम सब पढकर खेलते हैं।
तुम्हे भुंजिऊण सयिहित्था	=	तुम सब भोजन करके सोओगे।
ते लिहिऊण पुच्छिहिंति	=	वे लिखकर पूछेंगे।
सा धाविऊण नमीअ	=	उसने दौडकर नमन किया।
सो तत्थ ठाऊण अच्चीअ	=	उसने वहाँ ठहरकर पूजा की।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं हँसकर नमन करता हू। वह जानकर क्या करेगा ? तुम देखकर पढो। हम सब ध्यानकर पूजा करेंगे। वे सब व्याकरण पढकर क्या करेंगे। वह नाचकर सो गयी। मैंने वहाँ जाकर पत्र लिखा। वह पुस्तक पढकर प्रश्न पूछे।

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो चिन्तिऊण जपइ। त अच्छिऊण आगच्छीअ। अम्हे पोत्थअ कीणिऊण पढामो। तुमं जिणिऊण जूरसि। अहं तुलिऊण पसामि। सा दहिऊण कदइ।

पाठ १८

हेत्वथ कृदन्त

पासिउ	=	देखने के लिए	करिउ	=	करने के लिए
गच्छिउ	=	जाने के लिए	गिण्हिउ	=	ग्रहण करने के लिए
इच्छिउ	=	इच्छा करने के लिए	नमिउ	=	नमन करने के लिए
खेलिउ	=	खेलने के लिए	जाणिउ	=	जानने के लिए
पढिउ	=	पढने के लिए	धाविउ	=	दौडने के लिए
सुणिउ	=	सुनने के लिए	हसिउ	=	हँसने के लिए
भुंजिउ	=	भोजन करने के लिए	णच्चिउ	=	नाचने के लिए
लिहिउ	=	लिखने के लिए	सेविउ	=	सेवा करने लिए
पुच्छिउ	=	पूछने के लिए	सयिउ	=	सोने के लिए
कहिउ	=	कहने के लिए	अच्चिउ	=	पूजा करने के लिए
दाउ	=	देने के लिए	णेउ	=	ले जाने के लिए
गाउ	=	गाने के लिए	पाउ	=	पीने के लिए
खाउ	=	खाने के लिए	ठाउ	=	ठहरने के लिए
भाउ	=	ध्यान करने के लिए	होउ	=	होने के लिए

प्रयोग वाक्य

अह पढिउ विज्जालय गच्छामि	=	मैं पढने के लिए विद्यालय जाता हूँ।
तुम खेलिउ तत्थ गच्छीअ	=	तुम खेलने के लिए वहा गये।
सो पुण्ण करिउ अच्चिहिइ	=	वह पुण्य करने के लिए पूजा करेगा।
ते धण दाउ इच्छति	=	वे धन देने के लिए इच्छा करते है।
अम्हे लिहिउ पढीअ	=	हम सबने लिखने के लिए पढा है।
तुम्हे नमिउ धावीअ	=	तुम सब नमन करने के लिए दौडे।
सा गाउ पुच्छइ	=	वह गाने के लिए पूछती है।
सो दुद्ध पाउ इच्छइ	=	वह दूध पीने के लिए इच्छा करता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह खेलने लिए वहाँ जाये। तुम चित्र देखने के लिए जाओगे। क्या मैं पढने के लिए जाऊ ? वे सब पूजा करने के लिए वहाँ ठहरते हैं। हम सब कार्य करने के लिए वहाँ गये। वह गाने के लिए इच्छा करती है। तुम सब यहाँ क्या कहने के लिए ठहरे हो। मै भोजन करने के लिए वहाँ जाऊगा।

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो तविउ पुच्छइ। ते धोविउ तत्थ णेंति। सा पीसिउ तत्थ गच्छइ। अह मुंचिउ भणामि। अम्हे बोहिउ आगच्छीअ।

पाठ १९

अभ्यास

निर्देश इन क्रियाओ के सम्बन्ध कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यो मे प्रयोग कीजिए –

(क)	रज	= आसक्त होना	गण	=	गिनना
	वच	= ठगना	उज्जम	=	प्रयत्न करना
	उवदिस	= उपदेश देना	आदिस	=	आज्ञा देना
	अवगण	= अपमान करना	उटठ	=	उठना
	फाड	= फाडना	लव	=	कहना
	मोत्त	= छोडना	दटठ	=	देखना

निर्देश इन क्रियाओ के हेत्वथ कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यो मे प्रयोग कीजिए –

(ख)	सिच	= सींचना	परिहा	=	पहिनना
	आणे	= ले आना	ठव	=	स्थापना करना
	चक्ख	= स्वाद लेना	वस	=	रहना
	वण्ण	= वर्णन करना	वह	=	बहना
	निमत	= निमन्त्रण करना	सिव्व	=	सीना

(ग) सम्बन्ध कृदन्त की क्रियाए बनाकर भरिए

सो	(वच) गच्छीअ ।	अह	(दटठ) कहिहिमि ।
ते	(रज) भमति ।	तुम	(गण) गिण्हहि ।
	अवगणूण खामइ ।	सो वत्थ	(फाड) णेही ।
सो	(उटठ) दुद्ध पाइ ।	अह	(मोत्त) न गच्छिहिमि ।
अम्हे	(उज्जम) मु जामो ।	तुम्हे	(हिण्ड) सयित्था ।

(घ) हेत्वथ कृदन्त की क्रियाए बनाकर भरिए

सो जल	(सिंच) पुच्छइ ।	अह	(चक्ख) मु जामि ।
ते	(वण्ण) निहन्ति ।	अम्हे	(निमत) गच्छामो ।
सा फल	(आण) गच्छीअ ।	सो वत्थ	(परिहा) गच्छइ ।
सो	(वस) पुच्छीअ ।	अह चित्त	(ठव) अम्हि ।
सो वत्थ	(सिव्व) आणइ ।	अह अत्थ	(वस) ठाहिमि ।

पाठ २०

नियम क्रियारूप

क्रिया प्रत्यय

नि० ९ मूल क्रिया या शब्द में जो अन्य अक्षर या स्वर जुड़ते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। यथा—'पासइ' क्रिया के रूप में 'पास' मूल क्रिया है एवं 'इ' प्रत्यय है। इसी तरह प्रत्येक काल की क्रियाओं के अलग अलग प्रत्यय होते हैं जो सभी क्रियाओं में प्रयोग व काल के अनुसार जुड़ते रहते हैं।

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
(प्र० पु०)	मि	मो
(म० पु०)	सि	इत्था
(अ० पु०)	इ	न्ति

नि० १० प्र० पु० के प्रत्यय मि, मो क्रिया में जुड़ने के पूर्व क्रिया के 'अ' का दीर्घ आ हो जाता है। यथा—पास + मि = पास + आ + मि = पासामि पास + मो = पासामो।

भूतकाल

नि० ११ भूतकाल में सभी अकारान्त क्रियाओं में तीनों पुरुषों एवं दोनों वचनों में ईअ प्रत्यय जुड़ता है। यथा—पास + ईअ = पासीअ।

नि० १२ आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाओं में सी, ही, हीअ प्रत्यय जुड़ते हैं। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में 'ही' प्रत्यय वाले रूप प्रयुक्त हुए हैं। यथा—दा + ही = दाही ले + ही = लेही।

भविष्यकाल

नि० १३ भविष्यकाल की क्रियाओं में कई प्रत्यय जुड़ते हैं। किन्तु यहाँ निम्न तरह प्रत्यय को ही प्रयुक्त किया गया है। इस प्रत्यय के जुड़ने के पूर्व क्रिया के अ को इ हो गया है। यथा—पास + इ + हिमि = पासिहिमि।

	एकवचन	बहुवचन
(प्र० पु०)	हिमि	हामो
(म० पु०)	हिसि	हित्था
(अ० पु०)	हिइ	हिंति

इच्छा (विधि)/आज्ञा

नि० १४ विधि एवं आज्ञा वाली क्रियाओं में निम्न प्रत्यय जुड़ते हैं —

(प्र० पु०)	मु	मो
(म० पु०)	हि	ह
(अ० पु०)	उ	न्तु

सम्बन्ध कृदन्त

नि० १५ जब कर्ता एक काय को समाप्त कर दूसरा काय करता है तो पहले किये गये काय के लिए सम्बन्ध कृदन्त का व्यवहार होता है।

नि० १६ क्रिया से सम्बन्ध कृदन्त रूप बनाने के लिए प्राकृत मे तु, तूण आदि आठ प्रत्यय लगते है। यहाँ केवल तूण' प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है। तूण (ऊण) प्रत्यय लगाने के पूव क्रियाओ के अ' को इ' हो जाता है। यथा—
पास + इ + ऊण = पासिऊण (देखकर)।

नि० १७ आ ए एव ओकारान्त क्रियाओ म ऊण प्रत्यय लगाकर रूप बनाये जाते हैं। यथा—दा + ऊण = दाऊण णे + ऊण = णेऊण हो + ऊण = होऊण।

हेत्वथ कृदन्त

नि० १८ जब कर्ता किसी अभीष्ट काय के लिए कोई दूसरी क्रिया करता है तो वहा अभीष्ट काय को सूचित करने के लिए हेत्वथ कृदन्त का प्रयोग होता है।

नि० १९ इस अभीष्ट काय वाली क्रिया म तु (उ) प्रत्यय जुड जाता है तथा अकारान्त क्रियाओ के अ' को इ हो जाता है। यथा—
पास + इ + उ = पासिउ (देखन के लिए)।

निर्देश उपयुक्त पाठो के क्रिया कोश मे आपने जो नयी क्रियाए सीखी है उनके विभिन्न कालो म रूप लिखिए और उनका एक चाट बनाइये। यथा—

मूल क्रिया	व०	भू०	भवि०	आज्ञा	स० कृ०	हे० कृ०
पास	पासइ	पासीअ	पासिहिइ	पासउ	पासिऊण	पासिउ
गच्छ	—	—	—	—	—	—
सुण	—	—	—	—	—	—

क्रियाओ का परिचय दीजिए

	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
पढिहिइ	पढ	भविष्य	अन्य पुरुष	एक वचन
मु जउ	—	—	—	—
नमिऊण	—	—	—	—
हसिउ	—	—	—	—
जपहि	—	—	—	—
कीणित्था	—	—	—	—
पढमु	—	—	—	—

पाठ २१

मिश्रित अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो भणिहिइ ।
अह चित्त पेसिहिमि ।
तुम वागरण सीखिहिसि ।
ते अज्ज आगच्छिहिंति ।
अम्हे वत्थ कीणामो ।
सा तत्थ कलहइ ।
ताओ लज्जति ।
अह थुणामि ।
सो पडिऊण उटठइ ।
अह वत्थ धाविऊण गच्छामि ।
त मग्गिऊण मु जति ।
अम्हे रूसिऊण गच्छीअ ।

सो ताडीअ ।
अह दव्व लभीअ ।
तत्थ किं हवीअ ?
ते ण सद्दहीअ ।
तुम जल सिंचहि ।
अह फल चक्खमु ।
सा वत्थ सिव्वउ ।
ते तत्थ वसन्तु ।
सो उवदिसिउ भणइ ।
अह हिण्डिउ गच्छामि ।
ते दट्ठिउ आगच्छीअ ।
सो चित्त फाडिउ ण गच्छिहिइ ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह कल रोया ।
मैं नही डरूंगा ।
व पालन करेंगे ।
तुम अवश्य जीतोगे ।
वह वस्त्र को छूती है ।
म वहाँ तैरता हू ।
वे यहाँ जोतते हैं ।
वहाँ वह गजता है ।
वह गाय (घेणु) दुहेगी ।
म वहाँ तप करूंगा ।
वे हिंसा नही करते हैं ।
तुम सब धन को चाहते हो ।

तुम प्रतिदिन बढते हो ।
वह यहाँ विहार करता है ।
वे निन्दा नही करते हैं ।
वस्त्र यहा लाओ ।
तुम यहाँ रहो ।
तुम वस्त्र पहिनो ।
वे निमन्त्रण करें ।
म यहाँ आसक्त होता हूँ ।
वह अपमान नही करता है ।
वे सदा प्रयत्न करते हैं ।
वह आज्ञा देता है ।
वे वहाँ खुश होंगे ।

पाठ २२

निर्देश सभी शब्दों के आगामी पाठों के अभ्यास के लिए निम्नलिखित क्रियाओं संज्ञाओं एवं अव्ययों को याद करलें।

क्रियाकोश

अभिरुय	=	अच्छा लगना	णीसर	=	निकलना
उप्पज्ज	=	उत्पन्न होना	पच्चाअ	=	विश्वास करना
मोड	=	मोडना	पराजय	=	हारना
चिण	=	चुनना	मुण	=	जानना
जाय	=	पैदा होना	पसंस	=	प्रशंसा करना
जुज्झ	=	युद्ध करना	रोअ	=	पसन्द करना
झर	=	झरना	लिप्प	=	लिप्त होना
दुगुच्छ	=	घृणा करना	विक्कीण	=	बेचना

शब्दकोश

पुल्लिंग शब्द

अग्गि	=	अग्नि	पव्वअ	=	पर्वत
अवगुण	=	अवगुण	पाइय	=	प्राकृत
आवण	=	दुकान	पासाय	=	महल
गुण	=	गुण	पीअ	=	पीला
जण	=	लोग	भंडाआर	=	भंडार
जम्म	=	जन्म	भमर	=	भौंरा
जीव	=	जीव	भिच्च	=	नौकर
तड	=	तट	मंदिर	=	मंदिर
तंतु	=	धागा	महुर	=	मधुर
तिलय	=	तिलक	मुक्ख	=	मूर्ख
तेअ	=	तेज	मुल्ल	=	कीमत
देस	=	देश	रंग	=	रंग
दोस	=	दोष	रत्त	=	लाल
पइ	=	पति	ववहार	=	व्यापार
पंडिअ	=	पंडित	वाउ	=	हवा
परिग्गह	=	परिग्रह	विनय	=	विनय
परिणअ	=	विवाह	संजम	=	संयम
सामि	=	स्वामी	पथ	=	रास्ता

नपुंसक लिंग शब्द

अण्णाण	=	अज्ञान
अभिहाण	=	नाम
आकड्ढण	=	आकर्षण
उववण	=	उपवन
कमिण	=	माला
घय	=	घी
जीवण	=	जीवन
धिज्ज	=	धैर्य
तिण	=	तृण (घास)
णाण	=	ज्ञान
पत्त	=	वतन
पाण	=	प्राण
रज्ज	=	राज्य
रस	=	रस
लावण्ण	=	लावण्य
वर	=	अच्छा
विचित्त	=	विचित्र
सवेयण	=	संवेदन
संगहण	=	संग्रह
सच्च	=	सत्य
सच्छ	=	स्वच्छ
सट्ठ	=	शठता
समप्पण	=	समर्पण
सम्माण	=	सम्मान
सर	=	तालाब
सासण	=	शासन

स्त्रीलिंग शब्द

आसत्ति	=	आसक्ति
खमा	=	क्षमा
तारगा	=	तारे
भत्ति	=	भक्ति
भासा	=	भाषा
रज्जु	=	रस्सी
लआ	=	लता
लज्जा	=	लज्जा
विज्जा	=	विद्या
सड्ढा	=	श्रद्धा
सत्ति	=	शक्ति
सोहा	=	शोभा

अव्यय

अणेग	=	अनेक
अम्मो	=	आश्चर्य
अल	=	बस
अवस्स	=	अवश्य
इत्थ	=	इस प्रकार
एगया	=	एक बार
कल्ल	=	कल
कहिं	=	कहाँ
किं	=	क्या
केरिसो	=	कैसा
केवल	=	केवल
खिप्प	=	शीघ्र
पुणो	=	फिर से
ज	=	जो
जहा	=	जैसे
जहिं	=	जहाँ
जाव	=	जब तक
तहा	=	उस प्रकार से
तहिं	=	वहाँ
तारिसो	=	वैसा
ताव	=	तब तक
दुट्ठु	=	खराब
धुव	=	निश्चय
तओ	=	उसके बाद
पच्छा	=	बाद में
पुव्व	=	पहले

पाठ २३

अकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिंग) **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
बालअ	=	बालक	बालओ	बालआ
पुरिस	=	आदमी	पुरिसो	पुरिसा
छत्त	=	छात्र	छत्तो	छत्ता
सीस	=	शिष्य	सीसो	सीसा
णर	=	मनुष्य	णरो	णरा

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

बालओ सीखइ	=	बालक सीखता है।
पुरिसो दाणि लिहइ	=	आदमी इस समय लिखता है।
छत्तो पण्हं पुच्छइ	=	छात्र प्रश्न पूछता है।
सीसो सया झाइ	=	शिष्य सदा ध्यान करता है।
णरो दव्व गिण्हइ	=	मनुष्य धन ग्रहण करता है।

बहुवचन

बालआ सीखन्ति	=	बालक सीखते हैं।
पुरिसा दाणि लिहन्ति	=	आदमी इस समय लिखते हैं।
छत्ता पण्हं पुच्छन्ति	=	छात्र प्रश्न पूछते हैं।
सीसा सया झान्ति	=	शिष्य सदा ध्यान करते हैं।
णरा दव्व गिण्हन्ति	=	मनुष्य धन ग्रहण करते हैं।

शब्दकोश (पु०)

निव	=	राजा	मेह	=	बादल
बुह	=	बुद्धिमान	मिअ	=	मृग
भड	=	योद्धा	सीह	=	सिंह
देव	=	देवता	मोर	=	मोर
आयरिअ	=	आचार्य	चोर	=	चोर

प्राकृत बनाओ

राजा पालन करता है। बुद्धिमान पुस्तक पढ़ता है। योद्धा जीतता है। देवता सन्तुष्ट होता है। आचार्य कथा कहता है। बादल गरजता है। मृग डरता है। सिंह वहाँ रहता है। मोर नाचता है। चोर यहाँ आता है।

निर्देश इन्हीं वाक्यों को बहुवचन में प्राकृत बनाइए।

पाठ २४

इकारान्त एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु)

प्रथमा

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
सुधि	=	विद्वान्	सुधी	सुधिणो
कवि	=	कवि	कवी	कविणो
कुलवइ	=	कुलपति	कुलवई	कुलवइणो
सिसु	=	बच्चा	सिसू	सिसुणो
साहु	=	साधु	साहू	साहुणो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सुधी उवदिसइ	=	विद्वान् उपदेश देता है।
कवी पत्त लिहइ	=	कवि पत्र लिखता है।
कुलवई दव्व गिण्हइ	=	कुलपति धन ग्रहण करता है।
सिसू तत्थ खेलइ	=	बच्चा वहाँ खेलता है।
साहू पण्ह पुच्छइ	=	साधु प्रश्न पूछता है।

बहुवचन

सुधिणो उवदिसन्ति	=	विद्वान् उपदेश देते हैं।
कविणो लिहन्ति	=	कवि लिखते हैं।
कुलवइणो किं गिण्हन्ति	=	कुलपति क्या ग्रहण करते हैं ?
सिसुणो तत्थ खेलन्ति	=	बच्चे वहाँ खेलते हैं।
साहुणो किं पुच्छन्ति	=	साधु क्या पूछते हैं ?

शब्दकोश (पु०)

सेट्ठि	=	सेठ	नाणि	=	ज्ञानी	जन्तु	=	प्राणी
हत्थि	=	हाथी	पक्खि	=	पक्षी	गुरु	=	गुरु
जोगि	=	योगी	उदहि	=	समुद्र	तरु	=	वृक्ष
मुणि	=	मुनि	भिक्खु	=	भिक्षु	धणु	=	धनुष
तवस्सि	=	तपस्वी	पिउ	=	पिता	पसु	=	पशु
भूवइ	=	राजा	पहु	=	स्वामी	बाहु	=	भुजा
गहवइ	=	मुखिया	रिउ	=	शत्रु	फरसु	=	कुल्हाडा

प्राकृत मे अनुवाद करिए

तपस्वी कहाँ तप करता है ? राजा क्रोध नही करता है। मुखिया प्रशंसा करता है। ज्ञानी लिप्त नही होता है। पक्षी प्रतिदिन उडता है। शत्रु निन्दा करता है। धनुष टूटता है। वृक्ष गिरता है।

निर्देश इन्ही वाक्यो के बहुवचन मे प्राकृत के वाक्य बनाइये।

पाठ २५

नियम प्रथमा (पु० सज्ञा शब्द)

नि० २० पुरुषवाचक सज्ञा शब्दो मे अकारान्त शब्द के आगे प्रथमा विभक्ति म —

(क) एकवचन म 'ओ' प्रत्यय लगता है[१] । जसे—
पुरस=पुरिसो, णर=णरो, देव=देवो आदि ।

(ख) बहुवचन म आ प्रत्यय लगता है । जसे—
पुरिस=पुरिसा णर=णरा, देव=देवा आदि ।

नि० २१ इकारान्त शब्दो के आगे प्रथमा विभक्ति म —

(क) एकवचन मे ई प्रत्यय लगता है । अत शब्द की इ दीघ ई हो जाती है । जसे—कवि=कवी, सेटिठ=सेट्ठी हत्थि=हत्थी, आदि ।

(ख) बहुवचन म शब्दो के साथ णो जुड जाता है । जसे—
कवि=कविणो, सेटिठ=सेटिठणो हत्थि=हत्थिणो आदि ।

नि० २२ उकारान्त शब्दो का 'उ प्रथमा एकवचन म —

(क) दीघ 'ऊ हो जाता है । जसे—
सिसु=सिसू, विउ=विऊ साहु=साहू आदि ।

(ख) उकारान्त बहुवचन मे शब्द के साथ णो जुड जाता है । जसे—
सिसु=सिसुणो, विउ=विउणो साहु=साहुणो आदि ।

अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद करो

निवो खमीअ । मेहा गज्जन्ति । मोरा णच्चन्ति । देवा तूसीअ । भूवइणो भणिहिइ । मुणिणो ण हिंसीअ । पक्खिणो उड्डेहिंति । नाणी सया जिणइ । पहू पसंसइ । रिउणो निन्दिहिंति । गुरुणो बहू भणीअ । विऊ तत्थ णच्चिहिइ ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मृग कापता है । सिंह गजन करेगा । आचाय उपदेश देंगे । योद्धा वहां लडे । कुलपति प्रश्न पूछेगा । तपस्वी ने वहां तप किया । मुखिया वहाँ रहते हैं । प्राणी उत्पन्न होंगे । वे आज वृक्षों को काटेंगे । तुम धनुष तोडो । पशु वहां जायेंगे ।

---

१ प्राकृत वयाकरणो ने प्राकृत शब्दो के एकवचन एव बहुवचन म कई प्रत्ययो का विकल्प से विधान किया है । किन्तु इस पुस्तक म सरलता की दृष्टि से केवल एक एक प्रत्यय का ही प्रयोग किया गया है । यही दृष्टिकोण आगे की सभी विभक्तियो मे रखा गया है ।

पाठ २६

प्रथमा

अकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०)

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
बाला	=	बालिका	बाला	बालाओ
माआ	=	माता	माआ	माआओ
सुण्हा	=	बहू	सुण्हा	सुण्हाओ
माला	=	माला	माला	मालाओ

उदाहरण वाक्य

एकवचन

बाला वड्ढइ	=	बालिका बढ़ती है।
माआ अच्चइ	=	माता पूजा करती है।
सुण्हा लज्जइ	=	बहू लजाती है।
माला सोहइ	=	माला शोभित होती है।

बहुवचन

बालाओ वड्ढन्ति	=	बालिकाए बढ़ती हैं।
माआओ अच्चन्ति	=	माताए पूजा करती हैं।
सुण्हाओ लज्जन्ति	=	बहुए लजाती हैं।
मालाओ सोहन्ति	=	मालाए शोभित होती हैं।

शब्दकोश (स्त्री०)

विज्जुला	=	बिजली	कमला	=	लक्ष्मी
सरिआ	=	नदी	गोवा	=	ग्वालिन
नावा	=	नाव	छालिया	=	बकरी
कन्ना	=	कन्या	भज्जा	=	पत्नी
धूआ	=	पुत्री	निसा	=	रात्रि

प्राकृत मे अनुवाद करो

बिजली चमकती है। नदी बहती है। नाव तरती है। कन्या कहती है। पुत्री गीत गाती है। लक्ष्मी यहाँ आती है। ग्वालिन दूध दुहती है। बकरी डरती है। पत्नी वस्त्र सीती है। रात्रि बीतती है।

निर्देश इन्ही वाक्यों को बहुवचन मे प्राकृत बनाइए।

पाठ २७

इ ई, उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) प्रथमा

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
जुवइ	=	युवति	जुवई	जुवईओ
नई	=	नदी	नई	नईओ
साडी	=	साडी	साडी	साडीओ
घेणु	=	गाय	घेणू	घेणूओ
वहू	=	बहू	बहू	बहूओ
सासू	=	सास	सासू	सासूओ

उदाहरण वाक्य

एकवचन

जुवई पइदिण अच्चइ	=	युवति प्रतिदिन पूजा करती है।
नई मणिअ वहइ	=	नदी धीरे बहती है।
साडी सोहइ	=	साडी अच्छी लगती है।
धणू दुद्ध दाइ	=	गाय दूध देती है।
वहू सया सेवइ	=	बहू सदा सेवा करती है।
सासू वत्थ कीणइ	=	सासें वस्त्र खरीदती है।

बहुवचन

जुवईओ पइदिण अच्चन्ति	=	युवतियाँ प्रतिदिन पूजा करती हैं।
नईओ सणिअ वहन्ति	=	नदियाँ धीरे बहती हैं।
साडीओ सोहन्ति	=	साडिया अच्छी लगती हैं।
घेणूओ दुद्ध दान्ति	=	गायें दूध देती हैं।
बहूओ न सेवन्ति	=	बहुए सेवा नही करती हैं।
सासूओ न लज्जन्ति	=	सासें नही लजाती हैं।

शब्दकोश (स्त्री०)

कुमारी	=	कुमारी	धाई	=	धाय
वहिणी	=	बहिन	लच्छी	=	लक्ष्मी
इत्थी	=	स्त्री	नडी	=	नटी (नर्तकी)
रत्ति	=	रात्रि	मऊरी	=	मोरनी
दासी	=	नौकरानी	विज्जु	=	बिजली

निर्देश इन शब्दो के एकवचन और बहुवचन मे प्राकृत के वाक्य बनाइए।

पाठ २८

प्रथमा

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपु०)

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
णयर	=	नगर	णयर	णयराणि
फल	=	फल	फल	फलाणि
पुप्फ	=	फूल	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	=	कमल	कमल	कमलाणि
घर	=	घर	घर	घराणि
खेत्त	=	खेत, मदान	खेत्त	खेत्ताणि
सत्थ	=	शास्त्र	सत्थ	सत्थाणि
वारि	=	पानी	वारि	वारीणि
दहि	=	दही	दहि	दहीणि
वत्थु	=	वस्तु	वत्थु	वत्थूणि

सवनाम (नपु)

इम	=	यह	इम	इमाणि
त	=	वह	त	ताणि

उदाहरण वाक्य

एकवचन		बहुवचन	
इम णयर अत्थि	= यह नगर है।	इमाणि णयराणि सति	= ये नगर हैं।
त फल अत्थि	= वह फल है।	ताणि फलाणि सति	= वे फल हैं।
पुप्फ अत्थि	= फल है।	पुप्फाणि सति	= फूल हैं।
कमल अत्थि	= कमल है।	कमलाणि सति	= कमल हैं।
घर अत्थि	= घर है।	घराणि सति	= घर हैं।
खेत्त अत्थि	= खेत है।	खेत्ताणि सति	= खेत हैं।
सत्थ अत्थि	= शास्त्र है।	सत्थाणि सति	= शास्त्र हैं।
वारि अत्थि	= पानी है।	वारीणि सति	= पानी हैं।
दहि अत्थि	= दही है।	दहीणि सति	= दही हैं।
वत्थु अत्थि	= वस्तु है।	वत्थूणि सति	= वस्तुए हैं।

शब्दकोश (नपु०)

भय	=	भय	सद्द	=	शब्द	कम्म	=	कम
सर	=	तालाब	सुह	=	सुख	वण	=	जगल
सग्रड	=	गाडी	दुह	=	दुख	कव्व	=	काव्य
सच्च	=	सत्य	रिण	=	कज	धण	=	धन

निर्देश इन शब्दों के नपु० एकवचन एवं बहुवचन मे प्राकृत के वाक्य बनाइये।

पाठ ३१

अ, इ एव उकारा त सज्ञा शब्द (पु०) द्वितीया=को

शब्द	द्वितीया एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअ	बालआ
पुरिस	पुरिस	पुरिसा
छत्त	छत्त	छत्ता
सीस	सीस	सीसा
णर	णर	णरा
सुधि	सुधि	सुधिणो
कवि	कवि	कविणो
कुलवइ	कुलवइ	कुलवइणो
सिसु	सिसु	सिसुणो
साहु	साहु	साहुणो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

पिऊ बालअ पालइ = पिता बालक को पालता है।
पहू पुरिस पेसइ = स्वामी आदमी को भेजता है।
गुरू छत्त उवदिसइ = गुरु छात्र को उपदेश देता है।
आयरिओ सीस खमइ = आचार्य शिष्य को क्षमा करता है।
भूवई णर वधइ = राजा मनुष्य को बाँधता है।
निवो सुधि जाणइ = नृप बुद्धिमान को जानता है।
सो कवि पासइ = वह कवि को देखता है।
कुलवइ को ण जाणइ = कुलपति को कौन नहीं जानता है ?
माआ सिसु गिण्हइ = माता बच्चे को लेती है।
बुहा साहु पुच्छन्ति = बुद्धिमान् साधु को पूछते है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालक को जानता है। मैं आदमी को देखता हूँ। गुरु शिष्य को उपदेश देता है। वे मनुष्य को बाधते हैं। बालक देव को नमन करते है। राजा योद्धा को बाधता है। वह कुलपति को नही जानता है। आचार्य तपस्वी को जानते हैं। माता शिशु को पालती है। साधु को कौन नही जानता है ?

उदाहरण वाक्य

पिऊ बालआ पालइ	=	पिता बालकों को पालता है।
पहू पुरिसा पेसइ	=	स्वामी आदमियों को भेजता है।
गुरु छत्ता उवदिसइ	=	गुरु छात्रों को उपदेश देता है।
आयरिओ सीसा खमइ	=	आचार्य शिष्यों को क्षमा करता है।
भूवई णरा बंधइ	=	राजा मनुष्यों को बाँधता है।
निवो सुविणो जाणइ	=	नृप विद्वानों को जानता है।
सो कविणो पासइ	=	वह कवियों को देखता है।
कुलवइणो को ण जाणइ	=	कुलपतियों को कौन नहीं जानता है ?
माआ सिसुणो गिण्हइ	=	माता बच्चों को लेती है।
बुहा साहुणो पुच्छंति	=	विद्वान् साधुओं को पूछते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं बालकों को जानता हूं। वह आदमियों को देखता है। साधु शिष्यों को उपदेश देता है। राजा मनुष्यों को बाँधता है। कन्याएं देवताओं को नमन करती हैं। शत्रु योद्धाओं को जीतता है। वे कुलपतियों को जानते हैं। राजा कवियों को पूछता है। माता शिशुओं को पालती है। विद्वानों को कौन नहीं जानता है ?

शब्दकोश (पु०)

उवज्झाय	= उपाध्याय	पुत्त	= पुत्र
इंद	= इन्द्र	चाइ	= त्यागी
अज्ज	= सज्जन	मंति	= मन्त्री
समण	= श्रमण	गुरु	= गुरु
जीव	= जीव	बंधु	= भाई

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम उपाध्याय को नमन करो। वह इन्द्र को देखे। तुम सब सज्जन को नमन करो। वह श्रमण को न छुए। जीव को न मारो। पुत्र को पालो। वे त्यागी को पूछें। तुम मन्त्री को न भेजो। वह गुरु को क्रोधित न करे। तुम भाई को क्षमा करो।

निर्देश इन्हीं वाक्यों के बहुवचन द्वितीया में प्राकृत में अनुवाद करो।

पाठ ३२

आ इ, ई उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) द्वितीया=को

शब्द	द्वितीया एकवचन	बहुवचन
बाला	बाल	बालाआ
माआ	माअ	माआओ
सुण्हा	सुण्ह	सुण्हाओ
माला	माल	मालाओ
जुवइ	जुवइ	जुवईआ
नई	नइ	नईआ
साडी	साडि	साडीओ
बहू	बहु	बहूआ
धेणु	धेणु	धेणूआ
सासू	सासु	सासूओ

उदाहरण वाक्य

एकवचन

माआ बाल इच्छइ = माता बालिका को चाहती है ।
धूआ माअ नमइ = पुत्री माता का नमन करती है ।
सा सुण्ह जाणइ = वह बहू को जानती है ।
इत्थी माल धारइ = स्त्री माला को धारण करती है ।
भूवई जुवइ पासइ = राजा युवती का देखता है ।
भडो नइ तरइ = योद्धा नदी को तरता है ।
सुण्हा साडि इच्छइ = बहू साडी को चाहती है ।
सो बहु पुच्छइ = वह बहू का पूछता है ।
णरो धेणु गिण्हइ = मनुष्य गाय को ग्रहण करता है ।
जुवई सासु नमइ = युवती सास को नमन करती है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं बालिका का देखता हू । माता बहू का जानती है । पुत्री माला को धारण करना है । वह साडी का चाहती है । सासु बहू का क्षमा करती है । बहू सास को नमन करती है । राजा माला को धारण करना है । युवती गाय को देखती है । साडी को कौन नही चाहती है ? बहू को कौन जानता है ?

बहुवचन (स्त्री०)

माआ बालाओ पेसइ	=	माता बालिकाओ को भेजती है।
धूआ माआओ नमइ	=	लड़की माताओ को नमन करती है।
तोआ सुण्हाओ जाणंति	=	वे बहुओं को जानती है।
इत्थीओ मालाओ धारंति	=	स्त्रिया मालाओ को धारण करती हैं।
भूवई जुवईओ पासइ	=	राजा युवतियो को देखता है।
भडो नईओ तरइ	=	योद्धा नदियो को पार करता है।
सुण्हाओ साडीओ इच्छंति	=	बहुए साडियो को चाहती हैं।
सासू बहूओ पुच्छइ	=	सास बहुओ को पूछती है।
णरो धेणूओ गिण्हइ	=	मनुष्य गायो को लेता है।
जुवईओ सासूओ नमंति	=	युवतिया सासो को नमन करती हैं?

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालिकाओ को देखती है। मैं कन्याओ को जानता हूँ। माता बहुओ को पूछती है। पुत्रियाँ मालाओ को धारण करती हैं। साडियो को कौन नही चाहती हैं? सासें बहुओ को क्षमा करती हैं। वह सासो को जानती है। युवती गायो को देखती है। योद्धा युवतियो को देखता है। नदियो को कौन पार करता है?

शब्दकोश (स्त्री०)

निसा	=	रात्रि	तरुणी	=	जवान स्त्री
दिसा	=	दिशा	साहुनी	=	साध्वी
गिरा	=	वाणी	पुहवी	=	पृथ्वी
अच्छरसा	=	अप्सरा	सिप्पी	=	सीपी
आणा	=	आज्ञा	वावी	=	वापी

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह रात्रि को देखता है। मैं पूर्व दिशा को जाऊँगा। वह वाणी को सुने। हम सब अप्सरा को देखें। तुम उस आज्ञा को मानो। वह तरुणी को वस्त्र देता है। तुम साध्वी को नमन करो। उसने पृथ्वी को देखा। वह सीपी को लेता है। मैं वापी को बाँधता हूँ।

निर्देश —इन वाक्यो का बहुवचन (द्वितीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ३३

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०) - द्वितीया=को

शब्द	द्वितीया का एकवचन	बहुवचन
णयर	णयर	णयराणि
फल	फल	फलाणि
पुप्फ	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	कमल	कमलाणि
घर	घर	घराणि
खेत्त	खेत्त	खेत्ताणि
सत्थ	सत्थ	सत्थाणि
वारि	वारि	वारीणि
दहि	दहि	दहीणि
वत्थु	वत्थु	वत्थूणि

सर्वनाम (नपुं०)

इम	=	इमाणि
त	=	ताणि

उदाहरण वाक्य एकवचन

पुरिसो त णयर गच्छइ	=	आदमी उस नगर को जाता है।
बालओ इद फल इच्छइ	=	बालक इस फल को चाहता है।
अहं पुप्फ पासामि	=	मैं फूल को देखता हूँ।
सो कमल गिण्हइ	=	वह कमल को लेता है।
सेट्ठि घर गच्छइ	=	सेठ घर को जाता है।
णरो खेत्त कस्सइ	=	मनुष्य खेत को जोतता है।
छत्तो सत्थ पढइ	=	छात्र शास्त्र को पढता है।
कन्ना वारि पिबइ	=	कन्या पानी को पीती है।
सुण्हा दहिं खाइ	=	बहू दही को खाती है।
साहू वत्थु ण इच्छइ	=	साधु वस्तु को नही चाहता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

बालक नगर को जाता है। तुम फल को चाहते हो। पुरुष फूल को देखता है। कन्या दही को खाती है। विद्वान् घर को जाता है। युवती कमल को लेती है। छात्र खेत को जोतता है। बालिका पानी को पीती है। बहू शास्त्र पढती है। मुनि वस्तु को नही चाहता है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपु०)

भूवई इमाणि णयराणि जयइ	=	राजा इन नगरो को जीतता है।
बालओ ताणि पुप्फाणि इच्छइ	=	बालक उन फूलो को चाहता है।
अह फलाणि भुजामि	=	मैं फलो को खाता हूँ।
पुरिसो कमलाणि गिण्हइ	=	आदमी कमलो को लेता है।
सो घराणि पासइ	=	वह घरो को देखता है।
णरो खेत्ताणि कस्सइ	=	मनुष्य खेतो को जोतता है।
सीसा सत्थाणि पढइ	=	शिष्य शास्त्रो को पढता है।
नई वारीणि गिण्हइ	=	नदी पानियो को ग्रहण करती है।
कन्ना दहीणि पासइ	=	कन्या दहियो को देखती है।
वत्थूणि को ण इच्छइ	=	वस्तुओ को कौन नही चाहता है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

मनुष्य नगरो को देखता है। वह फलो को खाता है। मैं फूलो को ग्रहण करता हूँ। बालिका कमलो को देखती है। युवतियाँ घरो को जाती हैं। आदमी खेतो को जोतते हैं। छात्र शास्त्रो को पढते है। स्त्रियाँ पानियो को लाती हैं। कन्याएँ दहियो को देखती हैं। साधु वस्तुओ को नही चाहता है।

शब्दकोश (नपु०)

नयण	=	आँख	कुल	=	वंश
हियय	=	हृदय	अमिअ	=	अमृत
मित्त	=	मित्र	विस	=	विष
चारित्त	=	चारित्र	अट्ठि	=	हड्डि
पाव	=	पाप	अंसु	=	आँसू

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह आँख को खोलता है। मैं हृदय को जानता हूँ। वह मित्र को सन्तुष्ट करे। हम सब चारित्र को पालें। तुम सब पाप मत करो। शिष्य कुल को पूछता है। कौन अमृत को नही चाहता है। शिव विष को पीता है। वह हड्डी को त्यागता है। वह आँसू को गिराता है।

निर्देश – इन वाक्यों को बहुवचन (द्वितीया) में प्राकृत में अनुवाद करो।

पाठ ३४

नियम द्वितीया (पु०, स्त्री० नपु०)

सवनाम

नि० २७ (क) द्वितीया विभक्ति के एक वचन म अम्ह का मम तथा तुम्ह का तुम रूप बनता है। बहुवचन म प्रथमा विभक्ति के समान अम्हे और तुम्हे रूप बनता है।

(ख) पुल्लिग सवनाम त, इम एव क मे द्वितीया विभक्ति के एकवचन म अनुस्वार ( ) लग जाता है। बहुवचन म प्रथमा विभक्ति के समान रूप बनते हैं।

(ग) स्त्रीलिंग सवनाम ता, इमा, का द्वितीया विभक्ति एकवचन म ह्रस्व हा जात हैं तब उनम अनुस्वार ( ) लगता है और उनके रूप पुल्लिग सवनामा के समान बनते हैं। यथा– त इम क। बहुवचन म इन स्त्री० सवनामो के रूप प्रथमा विभक्ति के समान बनत हैं। यथा– ताओ इमाओ काओ।

पुल्लिग शब्द

नि० २८ पुल्लिग अ', 'इ एव उकारान्त शब्दो के आगे द्वितीया विभक्ति म —

(क) एकवचन म अनुस्वार ( ) प्रत्यय लगता है। जसे–
बालअ=बालअ सुधि= सुधि सिसु=सिसु आदि।

(ख) बहुवचन मे अकारान्त शब्दों के आगे दीघ आ लग जाता है।
जसे– बालअ=बालआ, पुरिस=पुरिसा आदि।

(ग) इकारान्त तथा उकारान्त शब्दो के आगे णो प्रत्यय लग जाता है।
जसे– सुधि=सुधिणो सिसु=सिसुणो आदि।

स्त्रीलिंग शब्द

नि० २९ स्त्रीलिंग आ, इ ई, उ एव ऊकारान्त शब्दो के आगे द्वितीया विभक्ति म —

(क) एकवचन मे अनुस्वार ( ) प्रत्यय लगता है एव शब्द के अत के आ ई तथा ऊ ह्रस्व हो जात है। जसे– बाला = बाल, नई = नइ बहू=बहु आदि।

(ख) बहुवचन मे आ इ ई उ एव ऊकारान्त शब्दो के आग ओ' प्रत्यय लगता है। जसे– बाला=बालाओ नई=नईओ, बहू=बहूओ, आदि।

नपु सकलिंग शब्द

नि० ३० नपु सक लिंग अ, इ एव ऊकारान्त शब्दा एव सवनामो क रूप द्वितीया विभक्ति के एकवचन एव बहुवचन म प्रथमा विभक्ति के समान ही हात है। यथा–

ए० व० —	णयर	वारि	वत्थु	इम	त
ब० व० —	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि	इमाणि	ताणि

पाठ ३५

सवनाम (पु० स्त्री०) तृतीया=के द्वारा साथ, से

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	मए	=	मेरे द्वारा	अम्हेहि	=	हमारे,हम दोनों के द्वारा
	तुमए	=	तेरे द्वारा	तुम्हेहि	=	तुम्हारे/तुम दोनों के द्वारा
(पु०)	तेएा	=	उसके द्वारा	तेहि	=	उनके/उन दोनों के द्वारा
(स्त्री०)	ताए	=	उसके द्वारा	ताहि	=	उसके/उन दोनों के द्वारा
(पु०)	इमेएा	=	इनके द्वारा	इमेहि	=	इन सबके द्वारा
(स्त्री०)	इमाए	=	इनके द्वारा	इमाहि	=	इन सबके द्वारा
(पु०)	केएा	=	किनके द्वारा	केहि	=	किन सबके द्वारा
(स्त्री०)	काए	=	किनके द्वारा	काहि	=	किन सबके द्वारा

उदाहरण वाक्य

एकवचन

इद कज्ज मए होइ	=	यह कार्य मेरे द्वारा होता है।
त कज्ज तुमए होइ	=	वह कार्य तेरे द्वारा होता है।
इद कज्ज तेएा होइ	=	यह कार्य उसके द्वारा होता है।
त कज्ज ताए होइ	=	वह कार्य उस (स्त्री) के द्वारा होता है।
त कज्ज इमिएा होइ	=	वह कार्य इसके द्वारा होता है।
इद कज्ज काए होइ	=	यह कार्य किस (स्त्री) के द्वारा होता है?

बहुवचन

इमाणि कज्जाणि अम्हेहि होन्ति	=	ये कार्य हमारे द्वारा होते हैं।
ताणि कज्जाणि तुम्हेहि होन्ति	=	वे कार्य तुम्हारे द्वारा होते हैं।
इद दुक्ख तेहि होइ	=	यह दुख उनके द्वारा होता है।
त सुक्ख ताहि होइ	=	वह सुख उनके (स्त्री०) द्वारा होता है।
त कज्ज इमेहि होइ	=	वह कार्य इन सबके द्वारा होता है।
त दुक्ख काहि होइ	=	वह दुख किन (स्त्रियो) के द्वारा होता है?

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह सुख मेरे द्वारा होता है। यह कार्य तेरे द्वारा होता है। यह कार्य उसके द्वारा होता है। वे कार्य हमारे द्वारा होते हैं। यह कार्य तुम दोनों के द्वारा होता है। यह कार्य उन दोनों के द्वारा होता है। ये कार्य उन स्त्रियों के द्वारा होते हैं। यह दुख उस स्त्री के द्वारा होता है। यह कार्य उन दोनों स्त्रियों के द्वारा होता है। वे कार्य तुम सबके द्वारा होते हैं। ये कार्य किन सबके द्वारा होते हैं?

पाठ ३६

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु०) तृतीया=के द्वारा, साथ, से

शब्द	तृतीया-एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालएण	बालएहि
पुरिस	पुरिसेण	पुरिसेहि
छत्त	छत्तेण	छत्तेहि
सीस	सीसेण	सीसेहि
णर	णरेण	णरेहि
सुधि	सुधिणा	सुधीहि
कवि	कविणा	कवीहि
कुलवइ	कुलवइणा	कुलवईहि
सिसु	सिसुणा	सिसूहि
साहु	साहुणा	साहूहि

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अहं बालएण सह गच्छामि	=	मैं बालक के साथ जाता हूं।
बालओ पुरिसेण सह वसइ	=	बालक आदमी के साथ रहता है।
इदं कज्जं छत्तेण होइ	=	यह कार्य छात्र के द्वारा होता है।
साहू सीसेण सह भुंजइ	=	साधु शिष्य के साथ भोजन करता है।
ताणि कज्जाणि नरेण होंति	=	*वे कार्य मनुष्य के द्वारा होते हैं।*
तं कज्जं सुधिणा होइ	=	वह कार्य विद्वान् के द्वारा होता है।
कविणा कज्जं होइ	=	कवि के द्वारा कार्य होता है।
निवो कुलवइणा सह गच्छइ	=	राजा कुलपति के साथ जाता है।
माआ सिसुणा सह वसइ	=	माता बच्चे के साथ रहती है।
सीसो साहुणा सह पढइ	=	शिष्य साधु के साथ पढता है।

प्राकृत में अनुवाद करो —

वह बालक के साथ रहता है। मैं आदमी के साथ जाता हूँ। ये कार्य शिष्य के द्वारा होते हैं। साधु छात्र के साथ भोजन करता है। वह कार्य मनुष्य के द्वारा होता है। ये कार्य विद्वान् के द्वारा होते है। राजा कवि के साथ रहता है। कुलपति के द्वारा वह कार्य होता है। माता बच्चे के साथ जाती है। वे साधु के साथ जाते हैं।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (पु०)

अह बालएहि सह गच्छामि	=	मैं बालको के साथ जाता हूँ।
बालओ पुरिसेहि सह वसइ	=	बालक आदमियो के साथ रहता है।
इमाणि कज्जाणि छत्तेहि होन्ति	=	ये काय छात्रो के द्वारा होते हैं।
साहू सीसेहि सह भुजइ	=	साधु शिष्य के साथ भोजन करता है।
ताणि कज्जाणि णरेहि होन्ति	=	वे काय मनुष्या के द्वारा होते हैं।
त कज्ज सुधीहि होइ	=	वह काय विद्वानों के द्वारा होता है।
कवीहि कज्ज होइ	=	कविया के द्वारा काय होता है।
निवो कुलवईहि सह गच्छइ	=	राजा कुलपतियो के साथ जाता है।
माआ सिसूहि सह वसइ	=	माता बच्चो के साथ रहती है।
सीसो साहूहि सह पढइ	=	शिष्य साधुओ के साथ पढता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालको के साथ रहता है। मैं आदमियो के साथ जाता हूँ। ये काय शिष्यो के द्वारा होते हैं। साधु छात्रा के साथ भोजन करता है। वह काय मनुष्या के द्वारा होता है। वे काय विद्वानो के द्वारा होते हैं। राजा कविया के साथ रहता है। यह काय कुलपतिया के द्वारा होता है। माता बच्चा के साथ जाती है। वे साधुओं के साथ रहते हैं।

शब्दकोश (पु०)

कर	=	हाथ	केसरि	=	सिंह
कण्ण	=	कान	मणि	=	रत्न
दत	=	दात	फणि	=	साप
कुत	=	माला	चक्खु	=	आख
दड	=	लाठी	केउ	=	ध्वजा

प्राकृत में अनुवाद करो

वह हाथ से पुस्तक लेता है। मैने कान से शब्द सुना। तुमने दात से रोटी खायी। उसने माला स साप को मारा। हम लाठी से लड़ेंगे। सिंह के साथ कौन रहेगा? मणि से प्रकाश होता है। साप के साथ वह नही रहेगा। वह आख से चित्र देखता है। ध्वजा से घर शोभित होता है।

निर्देश — इही वाक्या का बहुवचन (तृतीया) म प्राकत मे अनुवाद करो।

पाठ ३७

आ, इ, ई, उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) तृतीया=के द्वारा, साथ, से

शब्द	तृतीया एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाए	बालाहि
माआ	माआए	माआहि
सुण्हा	सुण्हाए	सुण्हाहि
माला	मालाए	मालाहि
जुवइ	जुवईए	जुवईहि
नई	नईए	नईहि
साडी	साडीए	साडीहि
बहू	बहूए	बहूहि
धणु	धणूए	धणूहि
सासू	सासूए	सासूहि

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सा बालाए सह गच्छइ	=	वह बालिका के साथ जाती है ।
अह माआए विणा ण भुजामि	=	मैं माता के बिना नही खाता हू ।
इमाणि कज्जाणि सुण्हाए होन्ति	=	ये काय बहू के द्वारा होते हैं ।
मालाए परिणाओ होइ	=	माला से विवाह होता है ।
पुरिसो जुवईए सह वसइ	=	आदमी युवती के साथ रहता है ।
णयर नईए विणा ण सोहइ	=	नगर नदी के बिना अच्छा नही लगता है ।
इत्थी साडीए सोहइ	=	स्त्री साडी के द्वारा शोभित होती है ।
सासू बहूए सह कलहइ	=	सास बहू के साथ झगडती है ।
धेणूए सह निवो गच्छइ	=	गाय के साथ राजा जाता है ।
सासूए सह सुण्हा वसइ	=	सास के साथ बहू रहती है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं बालिका के साथ भोजन करता हू । वह माता के बिना नहीं खाता है । यह काय बहू के द्वारा होता है । बहू सास के साथ झगडती है । मैं गाय के साथ जाता हूँ । बहू साडी के बिना अच्छी नही लगती है । स्त्री माला से शोभित होती है । नदी के साथ नगर होता है । युवती के साथ राजा जाता है । उसे बहू से सुख होता है ।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

सा बालाहि सह गच्छइ	=	वह बालिकाओं के साथ जाती है।
बालओ माआहि विणा ण भुंजइ	=	बालक माताओं के बिना नही खाता है।
ताणि कज्जाणि सुण्हाहि होंति	=	वे कार्य बहुओ के द्वारा होते हैं।
परिणओ मालाहि होइ	=	विवाह मालाओ से होता है।
सो जुवईहि सह ण वसइ	=	वह युवतियो के साथ नही रहता है।
णयर नईहि विणा ण सोहइ	=	नगर नदियो के बिना शोभित नही होता है।
इत्थी साडीहि सोहइ	=	स्त्री साडियो से अच्छी लगती है।
सासू वहूहि सह कलहइ	=	सास बहुओ के साथ झगडती है।
सो धेणूहि सह गच्छइ	=	वह गायो के साथ जाता है।
सुण्हा सासूहि विणा ण वसइ	=	बहू सासा के बिना नही रहती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालिकाओ के साथ नाचती है। हम माताओ से क्या सुनते है? बहुओ से घर शोभित होता है। मालाओ से बच्चे खेलते हैं। युवतियो के साथ राजा जाता है। देश नदियो से समृद्ध होता है। साडियो से स्त्रिया शोभित होती हैं। सासो के बिना घर अच्छा नही लगता है।

शब्दकोश (स्त्री०)

णासा	= नाक		अंगुली	=	उंगली
जीहा	= जीभ		असी	=	तलवार
कला	= कला		मेहदी	=	महदी
ससा	= बहिन		पसाहणी	=	कघी
णणदा	= ननद		चचु	=	चोंच

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह नाक से फूल सूघे। तुम जीभ से फल चखते हो। स्त्री कला के साथ शोभित होती है। वह बहिन के साथ आज जायेगा। युवती ननद के बिना नही रहती है। वह उगली से फूल को छूता है। हम तलवार से हिंसा नही करेंगे। स्त्रिया महदी से पर रगती हैं। मैं कघी से केश सम्हारता हूँ। पक्षी चोंच से अन्न चुगता है।

निर्देश — इन वाक्यो का बहुवचन (तृतीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

अ इ एव उकारान्त सज्ञा शब्द (नपु ०) तृतीया=के द्वारा, साथ से

शब्द	तृतीया एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरेण	णयरेहि
फल	फलेण	फलेहि
पुप्फ	पुप्फेण	पुप्फेहि
कमल	कमलेण	कमलेहि
घर	घरेण	घरहि
खेत्त	खेत्तेण	खेत्तेहि
सत्थ	सत्थेण	सत्थेहि
वारि	वारिणा	वारीहि
दहि	दहिणा	दहीहि
वत्थु	वत्थुणा	वत्थूहि

उदाहरण वाक्य

एकवचन

णयरेण विणा समिद्धी ण होइ	=	नगर के बिना समृद्धि नही होती है ।
सो फलेण विणा ण भु जइ	=	वह फल के बिना भोजन नही करता है ।
पुप्फेण अच्चा होइ	=	फूल के द्वारा पूजा हाती है ।
कमलेण सर सोहइ	=	कमल से तालाब शोभित होता है ।
घरेण विणा सुह णत्थि	=	घर के बिना सुख नही है ।
खेत्तेण बिणा सस्सो ण होइ	=	खेत के बिना फसल नही होती है ।
सत्थेण पडिओ होइ	=	शास्त्र से पडित होता है ।
वारिणा विणा जीवण णत्थि	=	पानी के बिना जीवन नही है ।
अह दहिणा सह भु जामि	=	मैं दही के साथ भोजन करता हूँ ।
वत्थुणा परिग्गहो होइ	=	वस्तु से परिग्रह होता है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

राजा नगर से शोभित होता है । मैं फल क साथ भोजन करता हूँ । फल स लता अच्छी लगती है । कमल के बिना सरोवर अच्छा नहीं लगता है । शास्त्र के बिना आदमी मूर्ख होता है । खेत से घर शोभित होता है । वह पानी के बिना भोजन नही करता है । वे दही के साथ भोजन करते हैं । वस्तु क बिना समृद्धि नही होती है । घर के बिना जीवन नही है ।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपु०)

णयरेहि विणा समिद्धी ण होइ	=	नगरो के विना समृद्धि नही होती है।
फलेहि विणा सो ण भुंजइ	=	फलो के बिना वह नही खाता है।
पुप्फेहि अच्चा होइ	=	फूलो से पूजा होती है।
कमलेहि सरोवरो सोहइ	=	कमलो से सरोवर शोभित होता है।
घरेहि रक्खा होइ	=	घरो से रक्षा होती है।
खेत्तेहि विणा सस्सो ण होइ	=	खेतो के बिना फसल नही होती है।
सत्थेहि को पंडिओ होइ	=	शास्त्रो से कौन पंडित होता है ?
वारीहि वाहीओ होंति	=	पानियो से बीमारिया होती हैं।
दहीहि सह अम्हे भुंजामो	=	दहियों के साथ हम भोजन करते हैं।
वत्थूहि सुहं ण होइ	=	वस्तुओ से सुख नही होता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

नगरो से व्यापार होता है। वह फलो के साथ भोजन करता है। फूलो से माला बनती है। घरो के बिना जीवन नहीं है। फूलो से लता अच्छी लगती है। कमलो से पूजा होती है। शास्त्रो के बिना ज्ञान नही होता है। खेतो से किसान समृद्ध होता है। वस्तुओ के बिना घर नही बनता है।

शब्दकोश (नपु०)

कुंडल	=	कुंडल	बीअ	=	बीज
दुग्ग	=	किला	तण	=	तृण (घास)
भायण	=	बतन	अक्खि	=	आख
कट्ठ	=	लकडी	जाणु	=	घुटना
आउह	=	शस्त्र	महु	=	शहद

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह कुंडलो से शोभित होगी। नगर किलो से अच्छा लगता है। वह बतन के बिना भोजन नही करता है। मैं लकडी से तरता हूँ। वह शस्त्र से युद्ध करता है। किसान बीज से खेती करता है। बगीचा घास से शोभित होता है। आख के बिना जीवन नही है। बालक घुटनो से चलता है। वह शहद के साथ रोटी खाता है।

निर्देश — इन्हा वाक्यो का बहुवचन (तृतीया) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ३९

नियम तृतीया (पु०, स्त्री०, नपु०)

सवनाम

नि० ३१ (क) तृतीया विभक्ति के एकवचन म अम्ह का मए एव तुम्ह का तुमए रूप बनता है। बहुवचन मे इनम एकार तथा हि प्रत्यय जुड जाता है। यथा– अम्हेहि तुम्हेहि।

(ख) पुल्लिग सवनाम त इम, क म तृ० वि० एकवचन म एकार तया ण' प्रत्यय जुडकर तेण इमेण एव केण रूप बनत हैं। बहुवचन म एकार एव हि' प्रत्यय जुडकर तेहि इमहि एव केहि रूप बनत हैं।

(ग) स्त्रीलिग सवनाम ता, इमा एव का म तृ० वि० एकवचन म ए प्रत्यय तथा बहुवचन म 'हि' प्रत्यय जुडकर इस प्रकार रूप बनते हैं —

ए० व० ताए इमाए काए ब० व० ताहि इमाहि काहि।

पुल्लिग शब्द

नि० ३२ पुल्लिग अकारान्त शब्दो के आगे तृतीया विभक्ति म –

(क) एकवचन म ण' प्रत्यय लगना है तथा शब्द के अ' को 'ए हो जाता है। जसे– वालअ > वालए + ण = बालएण, पुरिस > पुरिसेण आदि।

(ख) इकारान्त एव उकारान्त पु० शब्दो के आगे 'णा प्रत्यय लगना है। जसे– सुधि = सुधिणा सिसु = सिसुणा, आदि।

(ग) बहुवचन म अकारान्त शब्दो के अ को ए होना है तथा हि प्रत्यय लगता है।

जसे– बालअ = बालए + हि = बालएहि, पुरिस = पुरिसेहि, आदि।

(घ) बहुवचन म इकारान्त एव उकारान्त पु० शब्दो के इ एव उ दीघ ई ऊ हो जाते हैं तथा हि प्रत्यय लगता है।

सुधि = सुधी + हि = सुधीहि सिसु = सिसूहि आदि।

स्त्रीलिग शब्द

नि० ३३ स्त्रीलिग के आ, ई ऊकारान्त शब्दो के आग तृतीया विभक्ति म –

(क) एकवचन म ए प्रत्यय लगना है।

जसे– वाला = बालाए नई = नईए बहू = बहूए आदि।

(ख) बहुवचन म आ 'ई ऊकारान्त शब्दो म हि प्रत्यय लगता है।

जसे– वाला = बालाहि नई = नईहि बहू = बहूहि, आदि।

(ग) इ एव उकारान्त शब्द दीघ हो जाते है तब उनम ए या हि प्रत्यय लगता है।

नपुसकलिग शब्द

नि० ३४ नपुसकलिग के अ इ एव उकारान्त शब्दो क रूप तृतीया विभक्ति के एकवचन एव बहुवचन म पुल्लिग शब्दो के समान ही बनते है।

नि० ३५ नपु० सवनामा (इद त) के तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक के रूप पुल्लिग सवनामा के समान बनते हैं।

पाठ ४०

चतुर्थी=के लिए

सवनाम

एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
मज्झ	मेरे लिए	अम्हाण	हम सब/हम दोनो के लिए
तुज्झ	तुम्हारे लिए	तुम्हाण	तुम सब/तुम दोनो के लिए
तस्स	उसके लिए	ताण	उनके/उन दोनो के लिए
ताअ	उसके लिए	ताण	उस/उन दोनो (स्त्री) के लिए
(पु०) इमस्स	इसके लिए	इमाण	इनके लिए
(स्त्री०) इमाअ	इसके लिए	इमाण	इनके लिए
(पु०) कस्स	किसके लिए	काण	किनके लिए
(स्त्री०) काअ	किसके लिए	काण	किनके लिए

उदाहरण वाक्य

एकवचन

इद कमल मज्झ अत्थि	=	यह कमल मेरे लिए है ।
त पुप्फ तुज्झ अत्थि	=	वह फूल तेरे लिए है ।
त फल तस्स अत्थि	=	वह फल उसके लिए है ।
इद घर ताअ अत्थि	=	यह घर उस (स्त्री) के लिए है ।
इद चित्त इमस्स अत्थि	=	यह चित्र इसके लिए है ।
त वत्थ काअ अत्थि	=	वह वस्त्र किसके (स्त्री) लिए है ।

बहुवचन

इमाणि सत्थाणि अम्हाण सन्ति	=	ये शास्त्र हमारे लिए हैं ।
ताणि फलाणि तुम्हाण सन्ति	=	वे फल तुम सबके लिए हैं ।
इद दुद्ध ताण अत्थि	=	यह दूध उनके लिए है ।
इमाणि वत्थूणि ताण सन्ति	=	ये वस्तुए उन स्त्रियो के लिए हैं ।
इमाणि चित्ताणि इमाण सन्ति	=	ये चित्र इनके लिए हैं ।
ताणि वत्थाणि काण सन्ति	=	वे वस्त्र किन (स्त्रियो) के लिए हैं ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह वस्तु मेरे लिए है। वह घर उसके लिए है। यह दूध तुम्हारे लिए है। ये फल हम सबके लिए हैं। यह फूल उस स्त्री के लिए है। ये वस्तुए हम दोनो के लिए हैं। ये कमल तुम सबके लिए हैं। यह घर उन दोनो स्त्रियो के लिए है। ये शास्त्र इन सबके लिए हैं। यह फल तुम दोनों के लिए है। यह जल उन सब स्त्रियो के लिए है। वह वस्तु किन दोनो के लिए है ?

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअस्स	बालआण
पुरिस	पुरिसस्स	पुरिसाण
छत्त	छत्तस्स	छत्ताण
सीस	सीसस्स	सीसाण
णर	णरस्स	णराण
सुधि	सुधिणो	सुधीण
कवि	कविणो	कवीण
कुलवइ	कुलवइणो	कुलवईण
सिसु	सिसुणो	सिसूण
साहु	साहुणो	साहूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अह बालस्स फल दामि	=	मैं बालक के लिए फल देता हू ।
इद पुप्फ पुरिसस्स अत्थि	=	यह फूल आदमी के लिए है ।
त सत्थ छत्तस्स अत्थि	=	वह शास्त्र छात्र के लिए है ।
इद घर सीसस्स अत्थि	=	यह घर शिष्य के लिए है ।
सो णरस्स वत्थूणि दाइ	=	वह मनुष्य के लिए वस्तुए देता है ।
निवो सुधिणो धण दाइ	=	राजा विद्वान् के लिए धन देता है ।
सा कविणो कमल दाइ	=	वह कवि के लिए कमल देता है ।
ते कुलवइणो नमन्ति	=	वे कुलपति को नमन करते हैं ।
इद दुद्ध सिसुणो अत्थि	=	यह दूध बच्चे के लिए है ।
ते साहुणो भोअण दाति	=	वे साधु के लिए भोजन देते हैं ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह दूध बालक के लिए है । मैं आदमी के लिए फल देता हू । वह घर छात्र के लिए है । वह बच्चे के लिए फल देता है । मैं शिष्य के लिए शास्त्र देता हूँ । यह वस्तु मनुष्य के लिए है । वह धन विद्वान् के लिए है । राजा कवि के लिए धन देता है । यह कमल कुलपति के लिए है । हम साधु के लिए नमन करते हैं ।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (पु०)

अह बालआण फलाणि दामि	=	मैं बालको के लिए फल देता हूँ।
इमाणि पुप्फाणि पुरिसाण सन्ति	=	ये फूल आदमियों के लिए हैं।
ताणि सत्थाणि छत्ताण सन्ति	=	वे शास्त्र छात्रों के लिए हैं।
इद घर सीसाण अत्थि	=	यह घर शिष्यों के लिए है।
सो णराण वत्थूणि दाइ	=	वह मनुष्यो के लिए वस्तुए देता है।
निवो सुधीण धण दाइ	=	राजा विद्वानो के लिए धन देता है।
सा कवीण कमलाणि दाइ	=	वह कवियो के लिए कमल देती है।
ते कुलवईण नमन्ति	=	वे कुलपतियों को नमन करते है।
इद दुद्ध सिसूण अत्थि	=	यह दूध बच्चो के लिए है।
ते साहूण भोअण दान्ति	=	वे साधुओ के लिए भोजन देते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह दूध बालको के लिए है। मैं आदमियो के लिए फूल देता हूं। यह वस्तु छात्रो के लिए है। वह बच्चो के लिए फल देता है। मैं शिष्यो के लिए शास्त्र देता हूँ। यह घर मनुष्यो के लिए है। वह धन विद्वानो के लिए है। ये चित्र कवियो के लिए हैं। तुम सब कुलपतियो के लिए नमन करते हो। वह साधुओ के लिए नमन करता है।

शब्दकोश (पु०)

वणिअ	=	बनिया	किसाण	=	किसान
गोव	=	ग्वाला	वानर	=	बन्दर
सेवअ	=	नौकर	हस	=	हस
समिय	=	मजदूर	जोगि	=	योगी
वेज्ज	=	वैद्य	जतु	=	प्राणी

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह धन बनिये के लिए है। यह रानी ग्वाले के लिए है। यह दही नौकर के लिए है। यह पानी मजदूर के लिए है। यह फल वैद्य के लिए है। वह खेत किसान के लिए है। यह जल बन्दर के लिए है। वह दूध हस के लिए है। यह शास्त्र योगी के लिए है। यह फूल प्राणी के लिए है।

निर्देश – इन वाक्यों का बहुवचन (चतुर्थी पु०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद कीजिए।

पाठ ४२

आ, इ, ई, उ एव ऊकारा त सन्ना शब्द (स्त्री०) चतुर्थी के=के लिए

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाअ	बालाण
माआ	माआअ	माआण
सुण्हा	सुण्हाअ	सुण्हाण
माला	मालाअ	मालाण
जुवइ	जुवईआ	जुवईण
नई	नईआ	नईण
साडी	साडीआ	साडीण
बहू	बहूए	बहूण
धेणू	धेणूए	धेणूण
सासू	सासूए	सासूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सो बालाअ फलं दाइ	=	वह बालिका को फल देता है।
अह माआअ धणं दामि	=	मैं माता के लिए धन देता हूँ।
सासू सुण्हाअ साडिं दाइ	=	सास बहू के लिए साडी देती है।
सिसू मालाअ कन्दइ	=	बच्चा माला के लिए रोता है।
जुवईआ साडी रोयइ	=	युवती के लिए साडी अच्छी लगती है।
नईआ जलं वहइ	=	नदी के लिए पानी बहता है।
पुरिसो साडीआ धणं दाइ	=	आदमी साडी के लिए धन देता है।
सासू बहूए उवदिसइ	=	सास बहू के लिए उपदेश देती है।
सो धेणूए धणं दाइ	=	वह गाय के लिए धन देता है।
इदं वत्थु सासूए अत्थि	=	यह वस्तु सास के लिए है।

प्राकृत में अनुवाद करो

यह फूल बालिका के लिए है। यह कमल माता के लिए है। मैं बहू के लिए साडी देता हूँ। तुम माला के लिए रोते हो। यह साडी युवती के लिए है। राजा नदी के लिए धन देता है। वह स्त्री साडी के लिए रोती है। यह माला बहू के लिए है। यह घर गाय के लिए है। बहू सास के लिए नमन करती है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

अह् वालाण फलाणि दामि	=	मैं बालिकाओ के लिए फल देता हूँ।
ते माआण पुप्फाणि दाति	=	वे माताओ के लिए फूल देते हैं।
सासू सुण्हाण साडीओ दाइ	=	सास बहुओ के लिए साडिया देती है।
सिसू मालाण कन्दइ	=	बच्चा मालाओ के लिए रोता है।
साडी जुवईण रोयइ	=	साडी युवतियो के लिए अच्छी लगती है।
जल नईण वहइ	=	पानी नदियो के लिए बहता है।
पुरिसो साडीण धण दाइ	=	आदमी साडियो के लिए धन देता है।
सासू बहूण उवदिसइ	=	सास बहुओ के लिए उपदेश देती है।
सा घेणूण धण दाइ	=	वह गायो के लिए धन देता है।
इद वत्थु सासूण अत्थि	=	यह वस्तु सासो के लिए है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

ये चित्र बालिकाओ के लिए है। ये कमल माताओ के लिए हैं। मैं बहुओ के लिए वस्त्र देता हूँ। तुम मालाओ के लिए क्यो रोते हो? वे साडिया युवतियो के लिए हैं। राजा नदियो के लिए धन देता है। साडियो के लिए कौन स्त्री रोती है? यह घर बहुओ के लिए है। गायो के लिए कौन पानी देता है? तुम सब सासो के लिए नमन करते हो।

शब्दकोश (स्त्री०)

मेहला	=	करधनी	जणणी	=	माता
जत्ता	=	यात्रा	खिड्डकी	=	खिडकी
सहा	=	सभा	भित्ती	=	दीवाल
चडआ	=	चिडिया	समणी	=	साध्वी
पलिहा	=	खाई	गउ	=	गाय

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह फूल करधनी के लिए है। वह पुस्तक यात्रा के लिए है। यह वस्त्र सभा के लिए है। वह फल चिडिया के लिए है। यह पानी खाई के लिए है। यह साडी माता के लिए है। वह धन खिडकी के लिए है। यह वस्तु दीवाल के लिए है। वह वस्त्र साध्वी के लिए है। यह पानी गाय के लिए है।

निर्देश – इन्हीं वाक्यो का बहुवचन (चतुर्थी स्त्री०) मे प्राकृत मे अनुवाद कीजिए।

पाठ ४३

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं०) चतुर्थी=के लिए

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरस्स	णयराण
फल	फलस्स	फलाण
पुप्फ	पुप्फस्स	पुप्फाण
कमल	कमलस्स	कमलाण
घर	घरस्स	घराण
खेत्त	खेत्तस्स	खेत्ताण
सत्थ	सत्थस्स	सत्थाण
वारि	वारिणो	वारीण
दहि	दहिणो	दहीण
वत्थु	वत्थुणो	वत्थूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

णिवो णयरस्स धण दाइ	=	राजा नगर के लिए धन देता है।
सिसू फलस्स रुदइ	=	बच्चा फल के लिए रोता है।
सा पुप्फस्स सिहइ	=	वह फूल की चाहना करती है।
त जल कमलस्स अत्थि	=	वह जल कमल के लिए है।
इद वत्थु घरस्स अत्थि	=	यह वस्तु घर के लिए है।
इद वारि खेत्तस्स अत्थि	=	यह पानी खेत के लिए है।
अहं सत्थस्स सिहामि	=	मैं शास्त्र की चाहना करता हूँ।
इमो तडाओ वारिणो अत्थि	=	यह तालाब पानी के लिए है।
इद पत्त दहिणो अत्थि	=	यह पात्र (बर्तन) दही के लिए है।
सा वत्थुणो धण दाइ	=	वह वस्तु के लिए धन देता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह धन नगर के लिए है। वह फल के लिए धन देता है। मैं फूल की चाहना करता हूँ। बच्चा कमल के लिए रोता है। यह पानी घर के लिए है। राजा खेत के लिए धन देता है। यह बतन पानी के लिए है। वह दही की चाहना करता है। यह घर शास्त्र के लिए है। यह धन वस्तु के लिए है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपु०)

णिवो णयराण धण दाइ	=	राजा नगरो के लिए धन देता है।
सिसू फलाण कदइ	=	बच्चा फलो के लिए रोता है।
सा पुप्फाण सिहइ	=	वह फूलो को चाहना करती है।
त जल कमलाण अत्थि	=	वह जल कमलो क लिए है।
इमाणि वत्थूणि घराण सन्ति	=	ये वस्तुए घरो के लिए है।
इद वारि खेत्ताणि सन्ति	=	ये पानी खेतो के लिए है।
सो सत्थाण सिहइ	=	वह शास्त्रो को चाहता है।
इमो तडाग्रो वारीण अत्थि	=	यह तालाब पानियो क लिए है।
इद पत्त दहीण अत्थि	=	यह बतन दहियो के लिए है।
ते वत्थूण धण दाति	=	वे वस्तुओ के लिए धन देते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह धन नगरो क लिए है। वह फलो के लिए धन देता है। मैं फलो को चाहता हूँ। बच्चे कमलो के लिए रोते हैं। यह पानी घरो के लिए है। राजा खेतो के लिए धन देता है। ये बतन पानियो क लिए हैं। यह घर शास्त्रो के लिए है। वह धन वस्तुओ क लिए है।

शब्दकोश (नपु०)

अन्न	=	अनाज	कचरण	=	कगना
लोण	=	नमक	कवाड	=	किवाड
वसन	=	वस्त्र	छत्त	=	छाता
उत्तरीय	=	दुपट्टा	तिण	=	घास
कचुग्र	=	कुरता	सिर	=	सिर

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह पानी अनाज के लिए है। वह नमक के लिए झगडता है। वह वस्त्र के लिए वहाँ जायेगी। वे स्त्रियाँ दुपट्टे के लिए वस्त्र खरीदती हैं। मैं कुरता के लिए धन मांगता हूँ। यह कगना के लिए आग करती है। यह किवाड के लिए लकडी है। तुम छाता क लिए क्यो रोते हो? यह खेत घास के लिए है। यह छाता सिर क लिए है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (चतुर्थी नपु०) मे प्राकृत मे अनुवाद कीजिए।

पाठ ४४

नियम चतुर्थी (पु० स्त्री० नपु०)

सवनाम

नि० ३६ (क) चतुर्थी विभक्ति के एववचन म अम्ह का मज्झ और तुम्ह का तुज्झ रूप बनता है। बहुवचन म आकार एव ण प्रत्यय जुडकर अम्हाण एव तुम्हाण रूप बनते हैं।

(ख) पुल्लिग सवनाम त, इम, क म चतुर्थी ए० व० म स्स' प्रत्यय जुडकर तस्स इमस्स एव कस्स रूप बनते हैं। बहुवचन म आकार एव ण प्रत्यय जुडकर ताण इमाण एव काण रूप बनते हैं।

(ग) स्त्रीलिंग सवनाम ता इमा का म चतुर्थी एकवचन म अ प्रत्यय तथा बहुवचन म ण प्रत्यय जुडकर इस प्रकार रूप बनत हैं।

ए० व० ताअ इमाअ काअ ब० व० ताण इमाण काण।

पुल्लिग शब्द

नि० ३७ (क) पु० अकारान्त सज्ञा शब्दो के आग चतुर्थी विभक्ति एकवचन म 'स्स प्रत्यय लगता है। जसे-

पुरिस=पुरिसस्स णर=णरस्स छत्त=छत्तस्स आदि।

(ख) पु० इकारान्त एव उकारान्त शब्दो के आगे णो प्रत्यय लगता है। जसे-

सुधि=सुधिणो कवि=कविणो, सिसु=सिसुणो आदि।

नि० ३८ बहुवचन म चतुर्थी म पुल्लिग शब्दो क अ इ उ दीघ हो जाते है तथा अन्त म ण प्रत्यय लगता है। जसे-

पुरिस=पुरिसाण सुधि=सुधीण सिसु=सिसूण आदि।

स्त्रीलिंग शब्द

नि० ३९ (क) स्त्री० आकारान्त शब्दो क आग चतुर्थी विभक्ति म एकवचन म अ प्रत्यय लगता है। जसे-

बाला=बालाअ सुण्हा=सुण्हाअ माला=मालाअ, आदि।

(ख) स्त्री० इ ईकारान्त शब्दो क आगे आ प्रत्यय लगता है। यथा-

जुवइ=जुवईआ नई=नईआ साडी=साडीआ आदि।

(ग) स्त्री० उ ऊकारान्त शब्दो क आगे ए प्रत्यय लगता है। यथा-

धेणु=धेणुए बहू=बहूए सासू=सासूए आदि।

नि० ४० स्त्री० सभी शब्दो के आगे चतुर्थी विभक्ति म बहुवचन म ण प्रत्यय लगता है। जसे- बाला=बालाण जुवइ=जुवईण धेणु=धेणूण आदि।

नपुसकलिंग शब्द

नि० ४१ नपु० क शब्द क रूप चतुर्थी विभक्ति के एकवचन एव बहुवचन म पुल्लिग शब्दो जसे बनते है।

जसे- ए० व०-णयरस्स वारिणो वत्थुणो। ब० व०-णयराण वारीण वत्थूण।

पाठ ४५

पचमी=से

सवनाम

	एकवचन	अथ	बहुवचन	अथ
	ममाश्रो	मुझस	अम्हाहिंतो	हम से/हम दोनो से
	तुमाश्रो	तुझसे	तुम्हाहिंतो	तुम स/तुम दोनो स
(पु०)	ताश्रो	उसस	ताहिंतो	उन से/उन दोनो से
(स्त्री०)	तत्तो	उसस	ताहिंता	उन सब/उन दोनो स
(पु०)	इमाश्रो	इसस	इमाहिंतो	इनसे
(स्त्री०)	इमत्ता	इससे	इमाहिंतो	इनस
(पु०)	काओ	किसस	केहिंतो	किनस
(स्त्री०)	कत्तो	किससे	काहिंतो	किनस

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सा ममाश्रो फल गिण्हइ = वह मुझस फल ग्रहण करता है ।
अह तुमाश्रो कमल गिण्हामि = मैं तुझसे कमल लेता हूँ ।
तुम ताश्रो बीहसि = तुम उसस डरत हो ।
अह तत्तो दुगुच्छामि = मैं उस स्त्री स घृणा करता हूँ ।
सो इमाश्रो धण गिण्हइ = वह इसस धन ग्रहण करता है ।
तुम काश्रो बीहसि = तुम किससे डरत हो ?

बहुवचन

सो अम्हाहिंतो विरमइ = वह हमस दूर होता है ।
अह तुम्हाहिंतो धण गिण्हामि = मैं तुम लोगो से धन लता हूँ ।
सिसू ताहिंतो बीहइ = बच्चा उनसे डरता है ।
सासू ताहिंतो दुगुच्छइ = सास उन स्त्रियो स घृणा करती है ।
सो इमाहिंतो फल गिण्हइ = वह इनस फल लेता है ।
ते केहिंतो विरमति = व किनसे दूर होत हैं ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

युवती मुझस घृणा करती है । वह तुमस डरता है । मैं उससे धन लता हूँ । बच्चा उस स्त्री स फल लता है । वह पुरुष हम दोनों स दूर होता ह । मैं तुम सबसे डरता हूँ । तुम उन दोनो स घृणा करत हो । मैं उन स्त्रियो स कमलो का ग्रहण करता हूँ ।

पाठ ४६

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु०) **पंचमी=से**

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअत्तो	बालआहिंतो
पुरिस	पुरिसत्तो	पुरिसाहिंतो
छत्त	छत्तत्तो	छत्ताहिंतो
सीस	सीसत्तो	सीसाहिंतो
णर	णरत्तो	णराहिंतो
सुधि	सुधित्तो	सुधीहिंतो
कवि	कवित्तो	कवीहिंतो
कुलवइ	कुलवइत्तो	कुलवईहिंतो
सिसु	सिसुत्तो	सिसूहिंतो
साहु	साहुत्तो	साहूहिंतो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

पुरिसो बालअत्तो पोत्थअ मग्गइ = आदमी बालक से पुस्तक मांगता है।
सो पुरिसत्तो धण गिण्हइ = वह आदमी से धन लेता है।
अहं छत्तत्तो फलं णेमि = मैं छात्र से फल ले जाता हूं।
साहू सीसत्तो सत्थं मग्गइ = साधु शिष्य से शास्त्र मांगता है।
णिवो णरत्तो चित्तं गिण्हइ = राजा मनुष्य से चित्र ग्रहण करता है।
मुक्खो सुधित्तो बीहइ = मूर्ख विद्वान् से डरता है।
छत्तो कुलवइत्तो पोत्थअं गिण्हइ = छात्र कुलपति से पुस्तक लेता है।
कवित्तो कव्वं उप्पज्जइ = कवि से काव्य उत्पन्न होता है।
जणओ सिसुत्तो विरमइ = पिता बच्चे से दूर होता है।
सीसो साधुत्तो पढइ = शिष्य साधु से पढता है।

प्राकृत में अनुवाद करो

वह बालक से फल लेता है। बच्चा आदमी से डरता है। गुरु छात्र से पराजित होता है (पराजयइ)। राजा शिष्य से पुस्तक मांगता है। वह मनुष्य से धन लेता है। बच्चा विद्वान् से फल लेता है। वे कुलपति से डरते हैं। सब कवि से घृणा करता है। वह बच्चे से फूल लेता है। हम साधु से पढ़ते हैं।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (पु०)

सो बालआहिंतो पुप्फाणि मग्गइ	=	वह बालकों से फूल मांगता है।
अहं पुरिसाहिंतो धणं गिण्हामि	=	मैं आदमियों से धन लेता हूँ।
पुरिसो छत्ताहिंतो पोत्थआणि णेइ	=	आदमी छात्रों से पुस्तकें ले जाता है।
साहू सीसाहिंतो सत्थं मग्गइ	=	साधु शिष्यों से शास्त्र मांगता है।
णिवो णराहिंतो चित्ताणि गिण्हइ	=	राजा मनुष्यों से चित्र लेता है।
मुक्खो सुधीहिंतो ण बीहइ	=	मूर्ख विद्वानों से नहीं डरता है।
छत्ता कुलवईहिंतो बीहंति	=	छात्र कुलपतियों से डरते हैं।
कव्वाणि कवीहिंतो उप्पज्जन्ति	=	काव्य कवियों से उत्पन्न होते हैं।
पिउ सिसूहिंतो विरमइ	=	पिता बच्चों से दूर होता है।
सीसा साहूहिंतो पढंति	=	शिष्य साधुओं से पढ़ते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

मैं बालकों से गन्ने मांगता हूँ। वह आदमियों से डरता है। गुरु छात्रों से पराजित होता है। वे शिष्यों से पुस्तकें लेते हैं। पशु मनुष्यों से डरता है। मूर्ख विद्वानों से घृणा करता है। कुलपतियों से कौन नहीं डरता है। राजा कवियों से धन मांगता है। माता बच्चों से दूर नहीं होती है। वे साधुओं से उपदेश सुनते हैं।

शब्दकोश (पु०)

रुक्ख	=	पेड़	थण	=	स्तन
तंदुल	=	चावल	ओट्ठ	=	ओठ
णेउर	=	नूपुर	गाम	=	गांव
पाडल	=	गुलाब	घड	=	घड़ा
पुत्त	=	बेटा	दीवअ	=	दीपक

प्राकृत में अनुवाद करो

पेड़ से पत्ता गिरता है। चावल से पानी बहता है। नूपुर से शब्द निकलता है। गुलाब से सुगन्ध आती है। पुत्र से पिता पराजित होता है। स्तन से दूध झरता है। ओठ से खून गिरता है। गांव से आदमी आता है। घड़े से पानी गिरता है। दीपक से क्या गिरता है ?

निर्देश – इन वाक्यों का बहुवचन (पंचमी पु०) में भी प्राकृत में अनुवाद कीजिए।

पाठ ४७

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०) **पंचमी=से**

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालत्तो	बालाहिंतो
माआ	माअत्तो	माआहिंतो
सुण्हा	सुण्हत्तो	सुण्हाहिंतो
माला	मालत्तो	मालाहिंतो
जुवइ	जुवइत्तो	जुवईहिंतो
नई	नइत्तो	नईहिंतो
साडी	साडित्तो	साडीहिंतो
वहू	वहुत्तो	वहूहिंतो
धेणु	धेणुत्तो	धेणूहिंतो
सासू	सासुत्तो	सासूहिंतो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सो बालत्तो मालं गिण्हइ = वह बालिका से माला लेता है।
माअत्तो सिसू उप्पज्जइ = माता से बच्चा उत्पन्न होता है।
सासू सुण्हत्तो धणं मग्गइ = सास बहू से धन मांगती है।
मालत्तो सुयंधो आयइ = माला से सुगंध आती है।
सो जुवइत्तो दुगुच्छइ = वह युवती से घृणा करता है।
नइत्तो वारिं णेमि = मैं नदी से पानी ले जाता हूँ।
साडित्तो वारिं पडइ = साड़ी से पानी गिरता है।
सा वहुत्तो पढइ = वह बहू से पढ़ती है।
तुमं धेणुत्तो दुद्धं दुहसि = तुम गाय से दूध दुहते हो।
सा सासुत्तो साडिं मग्गइ = वह सास से साड़ी मांगती है।

प्राकृत में अनुवाद करो

माता बालिका से फूल मांगती है। वह माता से डरता है। बहू से बच्चा उत्पन्न होता है। मैं युवती से पढ़ती हूँ। वह नदी से पानी ले जाता है। माला से पानी गिरता है। साड़ी से सुगन्ध आती है। वह सास से घृणा करती है। मैं गाय से दूध दुहता हूँ। वह सास से धन लेती है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

अह बालाहिंतो मालाओ गिण्हामि	=	मैं बालिकाओ से मालाएं लेता हूँ।
सिसूओ माआहिंतो उप्पज्जन्ति	=	बच्चे माताओ से पैदा होते हैं।
मालाहितो सुयधो आयइ	=	मालाओ से सुगन्ध आती है।
सासू सुण्हाहिंतो धण मग्गइ	=	सास बहुओ से धन मागती है।
ते जुवईहिंतो ण दुगुच्छन्ति	=	वे युवतियो से घृणा नही करते हैं।
अह नईहिंतो वारि णेमि	=	मैं नदियो से पानी लाता हूँ।
साडीहिंतो जल पडइ	=	साडियो से पानी गिरता है।
ताओ वहूहिंतो पढन्ति	=	वे (स्त्रिया) बहुओ से पढती हैं।
सो धेणूहिंतो दुद्ध दुहइ	=	वह गायो से दूध दुहता है।
सा सासूहिंतो वत्थ मग्गइ	=	वह सासो से वस्त्र मागती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह बालिकाओ से फूल मागती है। बच्चे माताओ से नही डरते हैं। सास बहुओ से घृणा नही करती है। वे स्त्रिया नदियो से पानी लाती हैं। बहुओ से बच्चे पैदा होते हैं। बच्चे युवतियो से पढते हैं। मालाओ से पानी गिरता है। साडियो से सुगन्ध आता है। बहुएं सासो से डरती है। ग्वाला गायो से दूध नही दुहता है। सास बहुओ से धन ग्रहण करती है।

शब्दकोश (स्त्री०)

भाउजाया	=	भौजाई	कयली	=	केला
माउसिआ	=	मौसी	जाई	=	चमेली
पेडिआ	=	पेटी	पुत्ति	=	पुत्री
रच्छा	=	गली	धूलि	=	धूल
महुमक्खिआ	=	मधुमक्खी	सिप्पि	=	सीपी

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह भौजाई से रोटी मागता है। वे मौसी से धन लेते है। तुम पेटी से वस्त्र निकालते हो। उस गली से कौन जाता है? धूल से क्या पैदा होता है? केला से पत्ते गिरते हैं। चमेली से सुगन्ध आता है। वह पुत्री से क्या लेता है? वे मधुमक्खी से डरते हैं। सीपी से मोती पैदा होता है।

निर्देश – इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (पचमी स्त्री०) मे प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ४८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपु०) **पंचमी=से**

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरत्तो	णयराहिंतो
फल	फलत्तो	फलाहिंतो
पुप्फ	पुप्फत्तो	पुप्फाहिंतो
कमल	कमलत्तो	कमलाहिंतो
घर	घरत्तो	घराहिंतो
खेत्त	खेत्तत्तो	खेत्ताहिंतो
सत्थ	सत्थत्तो	सत्थाहिंतो
वारि	वारित्तो	वारीहिंतो
दहि	दहित्तो	दहीहिंतो
वत्थु	वत्थुत्तो	वत्थूहिंतो

उदाहरण वाक्य

एकवचन

बालओ णयरत्तो दूर गच्छइ	=	बालक नगर से दूर जाता है।
फलत्तो रस उप्पज्जइ	=	फल से रस उत्पन्न होता है।
पुप्फत्तो सुयंधो आयइ	=	फूल से सुगंध आती है।
कमलत्तो वारि पडइ	=	कमल से पानी गिरता है।
सो घरत्तो धणं णेइ	=	वह घर से धन ले जाता है।
खेत्तत्तो अन्न उप्पज्जइ	=	खेत से धान्य उत्पन्न होता है।
सो सत्थत्तो विरमइ	=	वह शास्त्र से दूर रहता है।
वारित्तो कमलं णिग्गच्छइ	=	पानी से कमल निकलता है।
दहित्तो धयं जायइ	=	दही से घी बनता है।
अहं तत्तो वत्थुत्तो दुगुच्छामि	=	मैं उस वस्तु से घृणा करता हूँ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वह आदमी नगर से जाता है। मैं पानी से डरता हूँ। तुम दही से घृणा करते हो। फल से सुगंध आती है। वह खेत से धन प्राप्त करता है। मैं घर से वस्तु ले जाता हूँ। वह उस वस्तु से दूर रहता है। कमल से सुगंध नहीं आती है। बच्चा पानी से नहीं निकलता है। वह दही से घी निकालता है।

बहुवचन (नपु०)

णयराहिंतो गाम दूर अत्थि	=	नगरो स गाव दूर है।
फलाहिंतो रसो जायइ	=	फलो से रस पैदा हाता है।
पुप्फाहिंतो सुयधो आयइ	=	फूला स सुगध आती है।
कमलाहिंतो जल पडइ	=	कमलो स पानी गिरता है।
घराहिंतो सो अन्न मग्गइ	=	घरा से वह अन्न मागता है।
खेत्ताहिंतो धन्न उप्पन्नइ	=	खेता मे धान्य उत्पन्न होता है।
सत्थाहिंतो सो विरमइ	=	शास्त्रा से वह अलग रहता है।
वारीहिंतो कमलाणि णिस्सरंति	=	पानियो से कमल निकलते हैं।
दहीहिंतो घय जायइ	=	दहिया से घी पदा होता है।
वत्थूहिंतो ते सया विरमंति	=	वस्तुओ से व सदा दूर रहते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

व आदमी नगरो स दूर आते हैं। यह पानिया मे डरते हैं। फलो से सुगध आती है। व खेतो स अन्न प्राप्त करते हैं। हम घरा स वस्तुए ले जाते है। कमला स कौन डरता है? फूला स धूलि गिरती है। वह शास्त्रो स पत्र सीखता है। मैं वस्तुओ म घृणा नही करता हूँ। व दहिया स घी निकालते हैं।

शब्दकोश (नपु०)

काणण	=	जगल	पजर	=	पिंजडा
कप्पास	=	कपास	तेल	=	तेल
विजण	=	पखा	णेड्ड	=	घोसला
चदण	=	चन्दन	जाण	=	वाहन (गाडी)
चम्म	=	चमडा	छिद्द्य	=	छेद (बिल)

प्राकृत मे अनुवाद करो

जगल स कौन जाता है? कपास स धागा निकलता है। पखा स हवा आती है। चदन स सुगध आती है। चमड स दुगध निकलती है। पिंजरे स पक्षी उडता है। तेल स सुगध नही आती है। घोसले स पक्षी नही जाता है। वाहन से कौन उतरता है? छेद म साप निकलता है।

निर्देश – इन वाक्या का बहुवचन (पचमी नपु०) म प्राकृत म अनुवाद करो।

पाठ ४९

नियम पचमी (पु०, स्त्री०, नपु०)

सवनाम

नि० ४२ (क) पचमी विभक्ति के एकवचन म अम्ह का ममाओ एव तुम्ह का तुमाओ रूप बनता है । बहुवचन म आकार एव हिंतो प्रत्यय जुडकर अम्हाहिंतो एव तुम्हाहिंतो रूप बनत है ।

(ख) पुल्लिग सवनाम त, इम क म पचमी के एकवचन म इन शब्दो के दीघ होने के बाद ओ प्रत्यय जुडता है । यथा–ताओ, इमाओ काओ। बहुवचन म हिंतो' प्रत्यय जुडता है । यथा– ताहिंतो इमाहिंतो काहिंतो ।

(ग) स्त्रीलिंग सवनाम ता इमा का पचमी क एकवचन म ह्रस्व हो जात है तथा उनम 'तो' प्रत्यय जुडता है । यथा– तत्तो, इमत्तो कत्तो । बहुवचन मे हिंतो प्रत्यय जुडकर पुल्लिग के समान रूप वन जाते हैं । यथा– ताहिंतो ईमाहिंतो काहिंतो ।

पुल्लिग शब्द

नि० ४३ (क) सभी अ इ एव उकारा त पुल्लिग शब्दो के आग पचमी विभक्ति एकवचन मे त्तो प्रत्यय लगता है । जसे–
पुरिस=पुरिसत्तो सुधि=सुधित्तो सिसु=सिसुत्तो आदि ।

(ख) पचमी बहुवचन म सभी पुल्लिग शब्द क अ, इ एव उ दीघ हो जात हैं । उसके बाद हिंतो' प्रत्यय लगता है । जस–
पुरिस=पुरिसाहिंतो सुधि=सुधीहितो सिसु=सिसूहिंतो ।

स्त्रीलिंग शब्द

नि० ४४ (क) सभी आ ई ऊकारान्त स्त्री० शब्द पचमी एकवचन म ह्रस्व हो जाते हैं । उसके बाद त्तो' प्रत्यय लगता है । जस–
बाला=बालत्तो नई=नइत्तो बहू=बहुत्तो ।

(ख) पचमी बहुवचन म सभी स्त्री० शब्द दीघ होते हैं तथा उनम हिंतो प्रत्यय लगता है ।
जसे– बालाहिंतो नईहिंतो बहूहिंतो आदि ।

नपु सकलिंग शब्द

नि० ४५ पचमी के एकवचन एव बहुवचन म नपुसकलिंग शब्दो के रूप उपयुक्त पुल्लिग शब्दो के समान ही बनते हैं जसे—
ए० व०– णयरत्तो वारित्तो वत्थुत्तो ।
ब० व०– णयराहिंतो वारीहिंतो वत्थूहिंतो ।

पाठ ५०

पष्ठी = का, के, की

सर्वनाम

(एकवचन – बहुवचन)

	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
	मज्झ	मेरा	अम्हाण	हमारा/हम दोनो का
	तुज्झ	तेरा	तुम्हाण	तुम्हारा/तुम दोनो का
(पु०)	तस्स	उसका	ताण	उनका, उन दोनो का
(स्त्री०)	ताअ	उसका	ताण	उन सब/उन दोनो का
(पु०)	इमस्स	इसका	इमाण	इन सबका
(स्त्री०)	इमाअ	इसका	इमाण	इन सबका
(पु०)	कस्स	किसका	काण	किनका
(स्त्री०)	काअ	किसका	काण	किनका

उदाहरण वाक्य

एकवचन

त मज्झ पुत्थअ अत्थि	=	वह मेरी पुस्तक है।
इद तुज्झ कमल अत्थि	=	यह तेरा कमल है।
सो तस्स भायरो गच्छइ	=	वह उसका भाई जाता है।
सा ताअ धूआ अत्थि	=	वह उस स्त्री की लडकी है।
सो इमस्स पुत्तो अत्थि	=	वह इसका पुत्र है।
इमा काअ साडी अत्थि	=	यह किस स्त्री की साडी है?

बहुवचन

ताणि पुत्थआणि अम्हाण सति	=	वे पुस्तकें हमारी हैं।
इमाणि खेत्ताणि तुम्हाण सन्ति	=	ये खेत तुम सबके हैं।
सो ताण जणओ अत्थि	=	वह उन सबका पिता है।
सा ताण बहिणी अत्थि	=	वह उन सब (स्त्रिया) की बहिन है।
ते इमाण पुत्ता सन्ति	=	वे इनके पुत्र हैं।
इमाणि पोत्थआणि काण सन्ति	=	ये पुस्तक किन स्त्रिया की हैं?

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह मेरा भाई है। वह तेरी पुस्तक है। यह उसकी बहिन है। यह साडी उस स्त्री की है। वे दोनो खेत किसके हैं? ये पुस्तकें तुम दोनो की हैं। यह लडकी किनकी बहिन है? यह घर उनका है। यह उस स्त्री की सास है। ये मालाए इन दोनो स्त्रियों की हैं। यह हम सबकी माता है। यह तुम सबका धन है।

पाठ ५१

अ, इ एव उकारान्त सज्ञा शब्द (पु०) षष्ठी=का के, की

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअस्स	बालआण
पुरिस	पुरिसस्स	पुरिसाण
छत्त	छत्तस्स	छत्ताण
सीस	सीसस्स	सीसाण
णर	णरस्स	णराण
सुधि	सुधिणो	सुधीण
कवि	कविणो	कवीण
कुलवइ	कुलवइणो	कुलवईण
सिसु	सिसुणो	सिसूण
साहु	साहुणो	साहूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

इद पोत्थअ बालअस्स अत्थि	=	यह पुस्तक बालक की है।
इमो पुरिसस्स सिसू अत्थि	=	यह आदमी का बच्चा है।
इद छत्तस्स घर अत्थि	=	यह छात्र का घर है।
त सत्थ सीसस्स अत्थि	=	वह शास्त्र शिष्य का है।
णरस्स जम्मो सेट्ठो अत्थि	=	मनुष्य का जन्म श्रेष्ठ है।
सुधिणो णाण वड्ढइ	=	विद्वान का ज्ञान बढ़ता है।
सो कविणो सम्माण करइ	=	वह कवि का आदर करता है।
अत्थ कुलवइणो सासण अत्थि	=	यहा कुलपति का शासन है।
सिसुणो जणआ गच्छइ	=	बच्चे का पिता जाता है।
इमो साहुणो सीसो अत्थि	=	यह साधु का शिष्य है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

बालक का पिता जाता है। यह पुस्तक आदमी की है। यह छात्र का काय है। वह शिष्य का घर है। यह मनुष्य का मित्र है। वह विद्वान् की पुत्री है। कवि का काव्य उत्तम है। हम कुलपति का सम्मान करते है। बच्चे की माता जाती है। यह साधु का शास्त्र है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (पु०)

इमाणि पोत्थम्राणि बालग्राण सन्ति	=	ये पुस्तकें बालकों की हैं।
इद घर पुरिसाण अत्थि	=	यह घर आदमियों का है।
त विज्जालय छत्ताण अत्थि	=	वह विद्यालय छात्रों का है।
तानि सत्थाणि सीसाण सन्ति	=	वे शास्त्र शिष्यों के हैं।
णराण जम्मो सेट्ठो अत्थि	=	मनुष्यों का जन्म श्रेष्ठ है।
सुधीण णाण वड्ढइ	=	विद्वानों का ज्ञान बढ़ता है।
सो कवीण सम्माण करइ	=	वह कवियों का सम्मान करता है।
इमे कुलवईण पुत्ता सन्ति	=	ये कुलपतियों के पुत्र हैं।
इद सिसूण उववण अत्थि	=	यह बच्चों का उपवन है।
साहूण के सीसा सन्ति	=	साधुओं के कौन शिष्य हैं ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह बालकों का पिता जाता है। उन आदमियों की ये पुस्तकें हैं। यह काय छात्रों का है। वह शिष्यों का घर है। इन मनुष्यों का कौन मित्र है ? वह विद्वानों की सभा है। कवियों के काव्य कौन पढ़ता है ? हम कुलपतियों के शिष्य हैं। इन बच्चों की माता वहाँ रहती है। यह साधुओं का शास्त्र है।

शब्दकोश (पु०)

वणह	=	वन	खत्ति	=	क्षत्रिय
मूसिअ	=	चूहा	नाणि	=	ज्ञानी
कवोअ	=	कबूतर	करेणु	=	हाथी
पाचअ	=	रसोइया	मच्चु	=	मृत्यु
हट्ट	=	बाजार	विच्छु	=	बिच्छू

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह वन की रस्सी है। वह चूहे का बिल है। यह कबूतर का पिंजड़ा है। यह रसोइए का पुत्र है। वह बाजार का मार्ग है। यहाँ क्षत्रिय का राज्य है। वह ज्ञानी का घर है। इस हाथी का कौन मालिक है ? उसकी मृत्यु का विश्वास मत करो। यह बिच्छू का बिल है।

निर्देश – इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (षष्ठी पु०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ५२

आ इ ई, उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) षष्ठी=का के की

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाअ	बालाण
माआ	माआअ	माआण
सुण्हा	सुण्हाअ	सुण्हाण
माला	मालाअ	मालाण
जुवइ	जुवईआ	जुवईण
नई	नईआ	नईण
साडी	साडीआ	साडीण
वहू	वहूए	वहूण
धेणु	धणूए	धणूण
सासू	सासूए	सासूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

इद वत्थ बालाअ अत्थि	=	यह वस्त्र बालिका का है।
इमो पुत्तो माआअ अत्थि	=	यह पुत्र माता का है।
सुण्हाअ अभिहाणो कमला अत्थि	=	बहू का नाम कमला है।
मालाअ रग पीअ अत्थि	=	माला का रग पीला है।
सो जुवईआ भायरो अत्थि	=	वह युवती का भाई है।
इद नईआ वारि अत्थि	=	यह नदी का पानी है।
इमो साडीआ आवणो अत्थि	=	यह साडी की दुकान है।
इद वहूए घर अत्थि	=	यह बहू का घर है।
धेणूए दुद्ध महुर होइ	=	गाय का दूध मीठा होता है।
इद वत्थू सासूए अत्थि	=	यह वस्तु सास की है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

बालिका का नाम मधु है। यह माता की पुत्री है। यह साडी बहू की है। वह माला की दुकान है। यह युवती का पति है। यह नदी का तट है। साडी का रग पीला है। यह सास का घर है। यह गाय का मालिक (सामी) है। यह पुस्तक बहू की है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

इमाणि वत्थाणि बालाण सन्ति	=	ये वस्त्र बालिकाओ के हैं।
इमाण माआण पुत्ता कत्थ सन्ति	=	इन माताओ के पुत्र कहा है ?
इमाण वहूण किं घर अत्थि	=	इन बहुओ का कौन घर है ?
ताण मालाण किं मोल्ल अत्थि	=	उन मालाओ का क्या माल है ?
सो जुवईण भायरो अत्थि	=	वह युवतियो का भाई है।
इद नईण वारि अत्थि	=	यह नदियो का पानी है।
इमो साडीण आवणो अत्थि	=	यह साडियो की दुकान है।
बहूण त घर अत्थि	=	बहुओ का वह घर है।
धेणूण दुद्ध महुर होइ	=	गायो का दूध मीठा होता है।
इमाण सासूण वहूओ कत्थ सन्ति	=	इन सासो की बहुए कहाँ हैं ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

उन बालिकाओ का नाम क्या है ? उन माताओ के वस्त्र कहा हैं ? ये बहुओ की साडिया है। वह मालाओ की दुकान है। इन युवतियो के पति यहा नही है। नदियो का पानी स्वच्छ होता है। उन साडियो का मालिक कौन है ? बहुओ के पिता वहाँ जाते हैं। गायो का घर कहाँ है ? हमारी सासो के पुत्र कहा है ?

शब्दकोश (स्त्री०)

हलिद्दा	=	हल्दी	दिट्ठि	=	दृष्टि
मट्टिआ	=	मिट्टी	नीइ	=	नीति
कीडिया	=	चीटी	रस्सि	=	डोरी
कु चिया	=	चाबी	डाली	=	शाखा
भासा	=	भाषा	सही	=	सखी

प्राकृत मे अनुवाद करो

हल्दी का रग पीला होता है। मिट्टी का घडा अच्छा होता है। यह चीटी का बिल है। इस चाबी का रग कैसा है ? यह प्राकृत भाषा की पुस्तक है। यह उसकी दृष्टि का दोष है। यह हमारी नीति का फल है। उस डोरी का रग लाल है। इस डाली का पत्ता पीला है। मेरी सखी का घर वहाँ है।

निर्देश – इन वाक्यो का बहुवचन (षष्ठी स्त्री०) मे भी प्राकृत मे अनुवाद करो।

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरस्स	णयराण
फल	फलस्स	फलाण
पुप्फ	पुप्फस्स	पुप्फाण
कमल	कमलस्स	कमलाण
घर	घरस्स	घराण
खेत्त	खेत्तस्स	खत्ताण
सत्थ	सत्थस्स	सत्थाण
वारि	वारिणो	वारीण
दहि	दहिणो	दहीण
वत्थु	वत्थुणो	वत्थूण

उदाहरण वाक्य

एकवचन

सो णयरस्स णिवो अत्थि	=	वह नगर का राजा है।
इमो फलस्स रुक्खो अत्थि	=	यह फल का वृक्ष है।
इमा पुप्फस्स लआ अत्थि	=	यह फूल की लता है।
इद कमलस्स पुप्फ अत्थि	=	यह कमल का फूल है।
सा घरस्स सामी अत्थि	=	वह घर का स्वामी है।
त खेत्तस्स वारि अत्थि	=	वह खेत का पानी है।
सो सत्थस्स पडिओ अत्थि	=	वह शास्त्र का पडित है।
इमा वारिणो नई अत्थि	=	यह पानी की नदी है।
इद दहिणो पत्त अत्थि	=	यह दही का बर्तन है।
सो वत्थुणो ववहारो करेइ	=	वह वस्तु का व्यापार करता है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह नगर का आदमी है। वह फल की दुकान है। यह फूल की शोभा है। वह कमल का सरोवर है। वह घर का नौकर है। मैं खेत का मालिक हूँ। वहाँ शास्त्र का मन्दिर है। वहाँ पानी की नदी नहीं है। दही का मूल्य क्या है? वस्तु का सग्रह अच्छा नहीं है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (नपु०)

ताए रायराण शिवो को अत्थि	=	उन नगरो का राजा कौन है ?
इमो फलाए रसो अत्थि	=	यह फलो का रस है।
इमा पुप्फाण लग्रा अत्थि	=	यह फूलो की माला है।
इमा कमलाण माला अत्थि	=	यह कमलो की माला है।
ताए घराए का सामी अत्थि	=	उन घरो का कौन मालिक है ?
खेत्ताए वारि वहइ	=	खेतो का पानी वहता है।
सो सत्थाए पडिम्रो गत्थि	=	वह शास्त्रो का पडित नही है।
इमा वारीए नई अत्थि	=	यह पानियो की नदी है।
त दहीए पत्त अत्थि	=	वह दहियो का बतन है।
इमो वत्थूए आवणो अत्थि	=	यह वस्तुग्रो की दुकान है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

नगरो की शोभा राजा है। फलो का दुकान यहा नही है। वह फूलो की माला गूथता है। यह कमलो का तालाब है। वह उन घरो का नौकर है। तुम इन खेतो के स्वामी हो। वहाँ शास्त्रो का भण्डार है। पानियो का रग विचित्र है। इन दहियो का घी कौन बेचेगा ? उन वस्तुग्रो का सग्रह मत करो।

शब्दकोश (नपु०)

चिंतण	=	विचार	महाणस	=	रसोइघर
आयास	=	आकाश	उवहाण	=	तकिया
हिम	=	बर्फ	तबोल	=	पान
हेम	=	स्वर्ण	मोत्तिय	=	मोती
हिरण्ण	=	चादी	जउ	=	लाख

प्राकृत मे अनुवाद करो

यह विचार का अन्तर है। ये आकाश के तारे हैं। यह बर्फ का पहाड है। यह मान का गहना है। यह चादी का नूपुर है। यह रसोईघर का बर्तन है। वह तकियो का गोदाम है। यह पान की दुकान है। यह मोती की माला है। यह लाख का भवन है।

निर्देश — इन्ही वाक्यो को (बहुवचन षष्ठी) मे भी प्राकृत मे अनुवाद करो।

पाठ ५४

नियम षष्ठी (पु०, स्त्री० नपु०)

नि० ४६ प्राकृत म षष्ठी विभक्ति म सभी सवनाम तथा सज्ञा शब्द चतुर्थी विभक्ति क समान ही प्रयुक्त होते ह । यथा–

सवनाम

ए० व० –	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स
ब० व० –	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण
(स्त्रीलिंग) ए० व० –			ताअ	इमाअ	काअ
ब० व० –			ताण	इमाण	काण

पुल्लिग शब्द

नि० ४७ (क) पु० अकारान्त सज्ञा शब्दो के आग षष्ठी विभक्ति एकवचन म स्स प्रत्यय लगता है । जस–
पुरिस=पुरिसस्स णर=णरस्स छत्त=छत्तस्स आदि ।

(ख) पु० इकारान्त एव उकारान्त शब्दो के आग णो प्रत्यय लगता है । जस सुधि=सुधिणो कवि=कविणो सिसु=सिसुणो आदि ।

(ग) बहुवचन मे षष्ठी के पुल्लिग शब्दो के अ 'इ उ दीघ हो जाते हैं तथा अन्त मे ण प्रत्यय लगता है । जसे–
पुरिस=पुरिसाण सुधि=सुधीण सिसु=सिसूण, आदि ।

स्त्रीलिंग शब्द

नि० ४८ (क) स्त्री० अकारान्त शब्दो के आगे षष्ठी विभक्ति मे एकवचन मे अ' प्रत्यय लगता है । जस– बाला=बालाअ सुण्हा=सुण्हाअ माला=मालाअ आदि ।

(ख) स्त्री० इ ईकारान्त शब्दो क आग आ प्रत्यय लगता है यथा–
जुवइ=जुवईआ, नई=नईआ, साडी=साडीआ आदि

(ग) स्त्री० उ ऊकारान्त शब्दो के आगे ए' प्रत्यय लगता है । यथा–
धेणु=धेणूए बहू=बहूए सासू=सासूए आदि ।

(घ) स्त्री० सभी शब्दो के आग षष्ठी विभक्ति मे बहुवचन मे ण' प्रत्यय लगता है ।
जस– बाला=बालाण जुवइ=जुवईण धेणु=धेणूण आदि ।

नि० ४९ स्त्री० इकारान्त एव उकारान्त शब्दो म दीघ होने क बाद प्रत्यय लगता है ।
यथा–जुवइ=जुवई+आ धेणू+ए आदि ।

नपुसकलिंग शब्द

नि० ५० नपु० के सभी शब्दो क रूप षष्ठी विभक्ति म एकवचन एव बहुवचन म पुल्लिग शब्दो जस बनत हैं ।

पाठ ५५

सप्तमी = मे, पर

सवनाम

	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
	अम्हम्मि	मुझमे	अम्हेसु	हम सबमे/हम दोनो मे
	तुम्हम्मि	तुझमे	तुम्हेसु	तुम सबमे/तुम दोनो मे
(पु०)	तम्मि	उसमे	तेसु	उनमे/उन दोनो मे
(स्त्री०)	ताए	उसमे	तासु	उनमे/उन दोनो मे
(पु०)	इमम्मि	इसमे	इमेसु	इन सब मे
(स्त्री०)	इमाए	इसमे	इमासु	इन सब मे
(पु०)	कम्मि	किसमे	केसु	किन मे
(स्त्री०)	काए	किसमे	कासु	किन मे

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अम्हम्मि जीवरण अत्थि	=	मुझ मे जीवन है।
तुम्हम्मि पाणा सन्ति	=	तुझ मे प्राण है।
तम्मि सत्ति अत्थि	=	उसमे शक्ति है।
ताए लावण्ण अत्थि	=	उस स्त्री मे सौन्दर्य है।
इमम्मि वाऊ नत्थि	=	इसमे हवा नही है।
काए लज्जा अत्थि	=	किस स्त्री मे लज्जा है?

बहुवचन

अम्हेसु पाणा सन्ति	=	हम सबमे प्राण हैं।
तुम्हेसु अवगुणा सन्ति	=	तुम दोनो मे अवगुण हैं।
तेसु खमा वसइ	=	उनमे क्षमा रहती है।
तासु सद्धा निवसइ	=	उनमे (स्त्रियो मे) श्रद्धा निवास करती है।
इमेसु पाणा ण सन्ति	=	इनमे प्राण नही हैं।
कासु लज्जा ण अत्थि	=	किन स्त्रियो मे लज्जा नही है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मुझमे शक्ति है। तुझमे सौन्दर्य है। उसमे जीवन है। इस स्त्री मे क्षमा रहती है। हम सबमे अवगुण हैं। तुम दोनो मे प्राण हैं। उन सबमे शक्ति है। किन दोनो स्त्रियो मे सौन्दर्य है? हम दोनो मे जीवन है। तुम सबमे क्षमा रहती है। उन सब स्त्रियो मे लज्जा है। उन दोनो मे शक्ति है।

अ, इ, ई उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) सप्तमी=म पर

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालए	बालएसु
पुरिस	पुरिसे	पुरिसेसु
छत्त	छत्ते	छत्तेसु
सीस	सीसे	सीसेसु
णर	णरे	णरेसु
सुधि	सुधिम्मि	सुधीसु
कवि	कविम्मि	कवीसु
कुलवइ	कुलवइम्मि	कुलवईसु
सिसु	सिसुम्मि	सिसूसु
साहु	साहुम्मि	साहूसु

उदाहरण वाक्य

एकवचन

बालए सच्च अत्थि	=	बालक म सत्य है।
पुरिसे सट्ठ अत्थि	=	आदमी म शठता है।
छत्ते विनय नत्थि	=	छात्र म विनय नही है।
सीसे विनय अत्थि	=	शिष्य म विनय है।
णरे सत्ती अत्थि	=	मनुष्य म शक्ति है।
सुधिम्मि वुद्धी अत्थि	=	विद्वान म बुद्धि है।
कविम्मि सवेयण अत्थि	=	कवि म सवेदन है।
कुलवइम्मि सद्धा अत्थि	=	कुलपति म श्रद्धा है।
सिसुम्मि अण्णाण अत्थि	=	बच्चे म अज्ञान है।
साहुम्मि तेओ अत्थि	=	साधु म तेज है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

विनय बालक मे है। सत्य ज्ञान म है। शिष्य म श्रद्धा है। मनुष्य मे जीवन है आदमी म अवगुण है। कवि म बुद्धि है। कुलपति म ज्ञान है। विद्वान् में क्षमा है। साधु म शक्ति है। बच्चे में प्राण है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (पु०)

केसु बालएसु सच्च अत्थि	=	किन बालको में सत्य है ?
इमेसु पुरिसेसु सट्ठ णत्थि	=	इन आदमियों में शठता नहीं है।
तेसु छत्तेसु विनय अत्थि	=	उन छात्रों में विनय है।
सीसेसु णाणं अत्थि	=	शिष्यों में ज्ञान है।
इमेसु णरेसु सत्ती अत्थि	=	इन मनुष्यों में शक्ति है।
सुधीसु सया बुद्धी वसइ	=	विद्वानों में सदा बुद्धि रहती है।
तेसु कवीसु संवेयण अत्थि	=	उन कवियों में संवेदन है।
कुलपईसु संजमो अत्थि	=	कुलपतियों में संयम है।
तेसु सिसूसु अण्णाणं अत्थि	=	उन बच्चों में अज्ञान है।

प्राकृत में अनुवाद करो

बालकों में विनय है। इन छात्रों में सत्य है। किन मनुष्यों में जीवन है ? उन आदमियों में अवगुण है। कवियों में सदा बुद्धि नहीं रहती है। कुलपतियों में हमारी श्रद्धा है। उन विद्वानों में क्षमा है। किन साधुओं में तुम सबकी भक्ति है। उन बच्चों में प्राण है।

शब्दकोश (पु०)

तिल	= तिल		बंभयारि	=	ब्रह्मचारी
गब्भ	= गर्भ		आहार	=	भोजन
वंसग्र	= बांसुरी		उदहि	=	समुद्र
उट्ठ	= ऊँट		भाणु	=	सूर्य
जर	= बुखार		सव्वण्णु	=	सर्वज्ञ
काय	= शरीर		मठ	=	मठ
पोक्खर	= तालाब		कोस	=	खजाना
अंक	= गोद		पासाय	=	महल

प्राकृत में अनुवाद करो

तिलों में तेल है। गर्भ में प्राणी है। बांसुरी में छेद है। मां की गोद में बच्चा है। ब्रह्मचारी में शक्ति है। नदियों का पानी समुद्र में एकत्र होता है। सूर्य में अग्नि रहती है। सर्वज्ञ में ज्ञान है। महल में राजा रहता है। ऊँट पर योद्धा बैठता है।

निर्देश — इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (सप्तमी) में प्राकृत में अनुवाद करो।

पाठ ५७

आ, इ, ई, उ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (स्त्री०) सप्तमी=म, पर

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाए	बालासु
माआ	माआए	माआसु
मुण्हा	मुण्हाए	मुण्हासु
माला	मालाए	मालासु
जुवइ	जुवईए	जुवईसु
नई	नईए	नईसु
साडी	साडीए	साडीसु
बहू	बहूए	बहूसु
धेणु	धेणूए	धेणूसु
सासू	सासूए	सासूसु

उदाहरण वाक्य

एकवचन

बालाए लज्जा अत्थि	=	बालिका म लज्जा है।
माआए समप्पण अत्थि	=	माता म समपण है।
मुण्हाए विनय अत्थि	=	बहू म विनय है।
मालाए पुप्फाणि सति	=	माला म फूल है।
जुवईए लावण्ण अत्थि	=	युवती म सौन्दय है।
नईए नावा सति	=	नदी म नावें हैं।
साडीए पुप्फाणि सति	=	साडी म फूल है।
बहूए सद्धा अत्थि	=	बहू म श्रद्धा है।
धेणूए दुद्ध अत्थि	=	गाय म दूध है।
सासूए गुणा सति	=	सास म गुण हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

नदी म पानी है। साडी म फल हैं। माला म सुगन्ध है। बहू म गुण हैं। युवती म लज्जा है। बालिका म अज्ञान है। माता म धय है। सास म ज्ञान है। गाय म प्राण हैं। बहू म जीवन है।

उदाहरण वाक्य

बहुवचन (स्त्री०)

तासु बालासु लज्जा अत्थि	=	उन बालिकाओं में लज्जा है।
सुण्हासु विनय हवइ	=	बहुओं में विनय होती है।
इमासु मालासु पुप्फाणि सन्ति	=	इन मालाओं में फूल हैं।
कासु जुवईसु लावण्णं णत्थि	=	किन युवतियों में सौंदर्य नहीं है?
नईसु नावा तरन्ति	=	नदी में नाव तरती है।
साडीसु पुप्फाणि ण सन्ति	=	साड़ियों में फूल नहीं हैं।
वहूसु सया लज्जा वसइ	=	बहुओं में सदा लज्जा रहती है।
कासु धेणूसु दुद्धं अत्थि	=	किन गायों में दूध है?
सासूसु गुणा हवन्ति	=	सासों में गुण होते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उन नदियों में आज पानी है। किनकी साड़ियों में फूल हैं? इन मालाओं में गुलाब के फूल हैं। उनकी बहुओं में सौंदर्य है। उन बालिकाओं में अभिमान है। बच्चों की माताओं में लज्जा नहीं होती है। सास की गायों में दूध नहीं है। बहुओं की श्रद्धा सासों में है।

शब्दकोश (स्त्री०)

भुक्खा	= भूख		कलिआ	=	कली
तिसा	= प्यास		चंदिआ	=	चाँदनी
संझा	= संध्या		सति	=	स्मृति
निसा	= रात्रि		पंति	=	कतार
वाया	= वाणी		पुहवी	=	पृथ्वी

प्राकृत मे अनुवाद करो

भूख में रोटी अच्छी लगती है। प्यास में नदी का पानी भी अच्छा लगता है। संध्या में आकाश में लालिमा होती है। रात्रि में आकाश में तारे होते हैं। किनकी वाणी में अमृत है? उन कलियों में सुगंध नहीं है। वे चाँदनी में सदा बाहर घूमते हैं। हमने पिता की स्मृति में विद्यालय स्थापित किया। विद्यालय में बच्चे कतार में खड़े होकर प्रार्थना करते हैं। इस पृथ्वी पर अनेक वस्तुएँ हैं।

पाठ ५८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपु०) सप्तमी = में, पर

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरे	णयरेसु
फल	फले	फलेसु
पुप्फ	पुप्फे	पुप्फेसु
कमल	कमले	कमलेसु
घर	घरे	घरेसु
खेत्त	खेत्ते	खेत्तेसु
सत्थ	सत्थे	सत्थेसु
वारि	वारिम्मि	वारीसु
दहि	दहिम्मि	दहीसु
वत्थु	वत्थुम्मि	वत्थूसु

उदाहरण वाक्य

एकवचन

अहं णयरे वसामि	=	मैं नगर में रहता हूं।
फले रसं अत्थि	=	फल में रस है।
पुप्फे सुयंधो णत्थि	=	फूल में सुगंध नहीं है।
कमले भमरो अत्थि	=	कमल पर भौंरा है।
घरे जणा णिवसंति	=	घर में लोग रहते हैं।
खेत्ते धेणू अत्थि	=	खेत में गाय है।
सत्थे विज्जा वसइ	=	शास्त्र में विद्या रहती है।
वारिम्मि नावा चलंति	=	पानी पर नाव चलती है।
दहिम्मि घअं अत्थि	=	दही में घी है।
वत्थुम्मि पाणा ण संति	=	वस्तु में प्राण नहीं हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

राजा नगर में रहता है। फूल में रस है। फल में सुगंध नहीं है। घर में गाय है। खेत में आदमी है। पानी में जीव है। शास्त्र में ज्ञान है। दही में प्राणी है। कमल में पत्ते हैं। वस्तु में मेरी आसक्ति नहीं है।

बहुवचन (नपु०)

अम्हे तेसु णयरेसु वसामो	=	हम उन नगरो मे रहते हैं।
इमेसु फलेसु रस णत्थि	=	इन फलो म रस नही है।
केसु पुप्फेसु सुयधो अत्थि	=	किन फूलो म सुगन्ध है ?
तेसु कमलेसु भमरा सन्ति	=	उन कमलो पर भौंरे हैं।
इमेसु घरेसु णरा निवसन्ति	=	इन घरो मे मनुष्य रहते हैं।
ताण खेत्तेसु जल णत्थि	=	उनके खेतो मे पानी नही है।
सत्थेसु णाण ण होइ	=	शास्त्रो मे ज्ञान नही होता है।
नईण वारीसु नावा तरन्ति	=	नदियो के पानियो म नाव तैरती है।
ताण पत्ताण दहीसु घअ अत्थि	=	उन बतनो के दहियो म घी है।
इमेसु वत्थूसु पाणा ण सन्ति	=	इन वस्तुओ मे प्राण नही हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

राजा उन नगरो मे घूमता है। उपवन के फूलो म सुगन्ध होती है। उनके घरो म गायें हैं। तालाब के कमलो मे रस है। जगल के खेतो म घास उत्पन्न होती है। शास्त्रो म इस ससार का वर्णन है। उन वस्तुओ मे किसकी आसक्ति है ?

शब्दकोश (नपु०)

भाल	=	ललाट	विहाण	=	प्रभात
पगरक्ख	=	जूता	मसाण	=	मरघट
आभरण	=	गहना	वेसम्म	=	विषमता
रूव	=	रूप	सागय	=	स्वागत
अडय	=	अडा	साहस	=	साहस

प्राकृत मे अनुवाद करिए

उसके ललाट पर तिलक है। मेरे जूते म मिट्टी है। उसके गहने म मोती है। किसके रूप म आकर्षण है ? उस अडे म प्राणी है। प्रभात मे चिडिया उडती है। मरघट म शान्ति होती है। विषमता म देश सुख प्राप्त नही करता है। हम उनके स्वागत म यहाँ हैं। साहस म शक्ति होती है।

निर्देश – ८०। वाक्यो का बहुवचन (सप्तमी) म प्राकृत म अनुवाद करो।

पाठ ५९

नियम सप्तमी (पु०, स्त्री० नपु०)

सर्वनाम

नि० ५१ (क) सप्तमी विभक्ति के एकवचन में अम्ह एवं तुम्ह में तथा पुल्लिंग त इम क सर्वनाम में 'म्मि प्रत्यय लगता है। बहुवचन में इनमें एकार होकर सु प्रत्यय लगता है। यथा–

ए० व० अम्हम्मि तुम्हम्मि तम्मि इमम्मि कम्मि।

ब० व० अम्हेसु तुम्हेसु तेसु इमेसु केसु।

(ख) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता इमा एवं का में सप्तमी के एकवचन में ए' प्रत्यय तथा बहुवचन में सु प्रत्यय लगता है। यथा–

ए० व० ताए इमाए काए। ब० व० तासु इमासु कासु।

पुल्लिंग शब्द

नि० ५२ (क) अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के आगे सप्तमी विभक्ति एकवचन में ए प्रत्यय लगता है जो शब्द में ए' की मात्रा के रूप में ( ) प्रयुक्त होता है। जैसे– पुरिस=पुरिसे, छत्त=छत्ते सीस=सीसे आदि।

(ख) बालअ शब्द में 'ए प्रत्यय लगने से बालए रूप बनता है।

(ग) इ एवं उकारान्त पु० शब्दों में म्मि' प्रत्यय लगने से इस प्रकार रूप बनते हैं —

सुधि=सुधिम्मि, सिसु=सिसुम्मि आदि।

नि० ५३ (क) अकारान्त पु० शब्दों के अ को बहुवचन में ए हो जाता है तथा उसके बाद 'सु प्रत्यय लगता है। जैसे- पुरिस=पुरिसेसु छत्त=छत्तेसु आदि।

(ख) इ एवं उकारान्त पु० शब्द बहुवचन में दीर्घ हो जाते हैं फिर उनमें सु प्रत्यय लगता है। जैसे–सुधि—सुधी+सु=सुधीसु सिसु=सिसूसु।

स्त्रीलिंग शब्द

नि० ५४ (क) आ ई ऊकारान्त स्त्री० शब्दों के आगे सप्तमी एकवचन में ए' प्रत्यय लगता है। जैसे- बाला=बालाए साडी=साडीए बहू=बहूए।

(ख) इ एवं उकारान्त स्त्री० शब्द दीर्घ हो जाते हैं तब उनमें ए प्रत्यय लगता है। जैसे- जुवइ=जुवईए धेणु=धेणूए आदि।

नि० ५५ स्त्री० सभी शब्द सप्तमी बहुवचन में दीर्घ आ ई ऊ वाले होते हैं जिनके आगे 'सु' प्रत्यय लगता है। जैसे- बाला=बालासु जुवइ=जुवईसु धेणु=धेणूसु सासू=सासूसु आदि।

नपुंसकलिंग शब्द

नि० ५६ सप्तमी एकवचन और बहुवचन में नपु० शब्दों के रूप पु० शब्दों की तरह बनते हैं।

विभक्ति अभ्यास

हिन्दी मे अनुवाद करो

सो मम पासइ। अह ताओ नमामि। तुम इन्द नमहि। जीवा मा हणउ। ते बघुणो खमन्तु। सो अज्ज अच्छरस पासिहिइ। तुम्हे पावाणि मा करह। त दुक्ख ताहि होइ। अह हत्थेण पत्त लिहामि। सा जीहाए फल चक्खउ। पक्खी चचुए अन्न चिणिहिइ। त वत्थ काए अत्थि। सेवआए किं अत्थि? अह समणीए वत्थाणि दाहिमि। सो अन्नस्स घरण भग्गइ। अह कवाडस्स वट्ट मन्नामि। सिसू ममाओ वीहइ। अह ताहितो पुप्फाणि गिण्हामि। रुक्खाहितो पत्ताणि पडन्ति। सिप्पिहितो मोत्तआणि जायन्ति। सा पेटिआहिता वत्थाणि गिण्हइ। ते मज्झ भायरा सन्ति। तानि पोत्थआणि काए सन्ति। अत्थ खत्तीण रज्ज अत्थि। त मोत्तिआए माला काअ अत्थि? तेसु कायेसु पाणा सन्ति। मदेसु छत्ता वसन्ति। अम्हे चदिआए निसाए भमाओ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वे किसको पूछते हैं? मन्त्रियो को कौन देखता है? वह वाणी को सुनता है। वे आसुओ को गिराती हैं। यह कार्य किसके द्वारा होता है? वे आखो से पुस्तक को देखते हैं। वह कुण्डलो से शोभित होती है। बच्चे घुटनो से चलेंगे। वह तलवार से हिंसा नही करेगा। ये कमल हमारे लिए हैं। प्राणियो के लिए अन्न है। यात्रा के लिए धन कहाँ है? यह धन सभा के लिए है। ये फल वैद्य के लिए हैं। म उन स्त्रियो से फूल लेता हूँ। गाय के थनो से दूध झरता है। गलियो से कौन नही जाता है? वे चूहो के छेद है। हम मिट्टी की गाडी देखते हैं। तकिये की रुई कौन निकालता है? सोने के मृग को किसने मारा? तुम इन खेतो के स्वामी हो। समुद्रो मे जल है। तुम्हारी वाणी में अमृत है। कलि मे सुगन्ध नही होती है। विषमता मे सुख नहीं होता है। उसकी गहना में आसक्ति नही है।

पाठ ६०

अ, इ एव उकारान्त सज्ञा शब्द (पु०) सम्बोधन

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालओ	बालआ
पुरिस	पुरिसो	पुरिसा
छत्त	छत्ता	छत्ता
सीस	सीसो	सीसा
णर	णरो	णरा
सुधि	सुधी	सुधिणा
कवि	कवी	कविणो
कुलवइ	कुलवई	कुलवइणो
सिसु	सिसू	सिसुणो
साहु	साहू	साहुणो

उदाहरण वाक्य

बालओ ! पोत्थअ पढहि	=	हे बालक पुस्तक पढो।
छत्ता ! विज्जालय गच्छह	=	हे छात्रो विद्यालय जाओ।
सुधी ! तत्थ उपदिसहि	=	हे विद्वान् वहाँ उपदेश दो।
कविणो ! अत्थ कव्व पढह	=	हे कवियो यहा काव्य पढो।
सिसू ! मा कन्दहि	=	हे बच्चे मत रोओ।
साहुणो ! दाण गिण्हह	=	हे साधुओ दान ग्रहण करो।

प्राकृत मे अनुवाद करो ‘

हे आदमी पाप मत करो। हे शिष्यो शास्त्र लिखो। हे मनुष्य, धन की इच्छा मत करो। हे कवि, गीत गाओ। हे कुलपति नगर का मत जाओ। हे बच्चो वहा नाचो। हे साधु वस्तुओ को सचित मत करो।

शब्दकोश (पु०)

निव	= राजा		तवस्सि	=	तपस्वी
वुह	=	बुद्धिमान	गहवइ	=	मुखिया
भड	=	योद्धा	रिसि	=	ऋषि
आयरिअ	=	आचार्य	गुरु	=	गुरु
मेह	=	बादल	रिउ	=	शत्रु

निर्देश — इन शब्दो के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन मे रूप लिख कर प्राकृत मे उनके वाक्य बनाओ।

पाठ ६१

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री०) **सम्बोधन**

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
बाला	बाला	बालाओ
माया	माया	मायाओ
सुण्हा	सुण्हा	सुण्हाओ
माआ	माआ	माआओ
जुवइ	जुवइ	जुवईओ
नई	नइ	नईओ
[illegible]	[illegible]	[illegible]
बहू	बहु	बहूओ
[illegible]	[illegible]	[illegible]
सासू	सासु	सासूओ

उदाहरण वाक्य

बाला! विज्जालयं गच्छहि = हे बालिके, विद्यालय जाओ।
सुण्हाओ! ते नमह — हे बहुओ, उनको नमन करो।
जुवइ! कज्जं सणियं कुणहि = हे युवति, काम धीरे करो।
माआओ! सिसुणो पालह — हे माताओ, बच्चों का पालो।
सासु! मम खमसु = हे सास, मुझे क्षमा करो।
बालाओ! तत्थ गच्छह = हे बालिकाओ, वहाँ जाओ।

प्राकृत में अनुवाद करो

हे बहू, उनको भोजन दो। हे युवतियो, वहाँ नृत्य करो। हे माता, [illegible] न करो।
हे माता, बहुओं की निन्दा मत करो। हे कन्या, उनकी सेवा करो।

शब्दकोश (स्त्री०)

धूआ	=	पुत्री	इत्थी	=	स्त्री
गोवी	=	ग्वालिन	दासी	=	नौकरानी
भारिया	=	पत्नी	धाई	=	धाय
कुमारी	=	कुमारी	नई	=	नदी
बहिणी	=	बहिन	माउसिआ	=	मौसी

निर्देश — इन शब्दों (स्त्री०) के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन के रूप लिखकर प्राकृत में उनके वाक्य बनाओ।

पाठ ६२

अ, इ एव ऊकारान्त सज्ञा शब्द (नपु ०) **सम्बोधन**

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
णयर	णयर	णयराणि
फल	फल	फलाणि
पुप्फ	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	कमल	कमलाणि
घर	घर	घराणि
खेत्त	खेत्त	खेत्ताणि
सत्थ	सत्थ	सत्थाणि
वारि	वारि	वारीणि
दहि	दहि	दहीणि
वत्थु	वत्थु	वत्थूणि

उदाहरण वाक्य

णयर ! अह तुम नमामि ।	=	हे नगर मैं तुम्हे प्रणाम करता हू ।
पुप्फ ! तुम मज्झ मित्त असि	=	हे फूल तुम मेरे मित्र हो ।
कमलाणि ! सर तुम्हाण घर अत्थि	=	हे कमलो सरोवर तुम्हारा घर है ।
खेत्ताणि ! तुम्ह अम्हाण पालआ सन्ति	=	हे खेतो तुम हमारे पालक हो ।
सत्थ ! तुम तस्स गुरु असि	=	हे शास्त्र तुम उसके गुरु हो ।
वारि ! तुम ससारस्स जीवण असि	=	हे पानी तुम ससार का जीवन हो ।

प्राकृत में अनुवाद करो

हे नगरो तुम्हे आज हम छोड रहे हैं । हे फलो, तुम रोगी का जीवन हो । हे कमल तुम तालाब की शोभा हो । हे फूलो तुम कवि की प्रेरणा हो । हे घर तुम प्राणियो की शरण हो । हे वस्तु तुमम प्राण नही है ।

शब्दकोश (नपु ०)

वण	=	जगल	पिंजर	=	पिंजडा
हियय	=	हृदय	चदण	=	चन्दन
मित्त	=	मित्र	आयास	=	आकाश
नयण	=	आख	हेम	=	स्वर्ण
चारित्त	=	चारित्र	मोत्तिय	=	मोती

निर्देश – इन शब्दों (नपु ०) के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन म रूप लिख कर प्राकृत म उनके वाक्य बनाओ ।

पाठ ६३

पुल्लिग शब्द नियम सम्बोधन (पु०, स्त्री०, नपु०)

नि० ५७ पुल्लिग अ, इ एव उकारान्त शब्दो के सम्बोधन म प्रथमा विभक्ति के समान रूप बनत हैं। जस –

ए० व० –	बालअा	सुधी	भिक्खू
ब० व० –	बालअा	सुधिणो	भिक्खुणो

स्त्रीलिग शब्द

नि० ५८ (क) आकारान्त स्त्री० शब्दो के सम्बोधन म प्रथमा विभक्ति क समान रूप बनत हैं। जस –

ए० व० –	बाला	मुण्हा	माला
ब० व० –	बालाओ	सुण्हाओ	मालाओ

(ख) ईकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्री० शब्द सम्बोधन के एकवचन म ह्रस्व हो जात है।

(ग) बहुवचन म प्रथमा विभक्ति के बहुवचन जस ही उनके रूप बनत हैं। जस –

ए० व० – नई = नइ बहू = बहु सासू = सासु।

ब० व० – नईओ बहूओ सासूओ।

नपुसकलिग शब्द

नि० ५६ (अ) अ इ एव उकारान्त नपु० शब्द सम्बोधन म एकवचन म मूल शब्द के रूप म ही प्रयुक्त हात है। जस –

ए० व० – णयर = णयर, वारि = वारि, वत्थु = वत्थु।

(ब) सम्बाधन बहुवचन म उनके प्रथमा विभक्ति के बहुवचन वाल रूप प्रयुक्त हात है। जस –

ब० व० – णयराणि वारीणि वत्थूणि

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो

तिसा अम्हाण रक्ख करहि। भद्दा तत्थ जुज्झ मा करह। रिसी, त णाण दाहि। गुरुणो तुम्हाण अम्ह सीमा सन्ति। गोवा मज्झ दुद्ध दाहि। दासि इद कज्ज करहि। बहिणीओ, अम्हाण वह सुणह। हियय, दाणि तुम सन्त होहि। मित्ताणि पावकम्माणि मा करह। चारित्त तुम मज्झ धण असि।

सर्वनाम

एकवचन	पु० स्त्री०		पुंल्लिंग			स्त्रीलिंग			नपुंसकलिंग		
शब्द	अम्ह	तुम्ह	त	इम	क	ता	इमा	का	त	इम	क
प्र०	अहं	तुम	सो	इमो	को	सा	इमा	का	तं	इमं	किं
द्वि०	मम	तुम	तं	इमं	कं	तं	इमं	कं	तं	इमं	किं
तृ०	मए	तुमए	तेण	इमेण	केण	ताए	इमाए	काए	तेण	इमेण	केण
च०	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स	ताअ	इमाअ	काअ	तस्स	इमस्स	कस्स
पं०	ममाओ	तुमाओ	ताओ	इमाओ	काओ	तत्तो	इमत्तो	कत्तो	ताओ	इमाओ	काओ
ष०	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स	ताअ	इमाअ	काअ	तस्स	इमस्स	कस्स
स०	अम्हम्मि	तुम्हम्मि	तम्मि	इमम्मि	कम्मि	ताए	इमाए	काए	तम्मि	इमम्मि	कम्मि

बहुवचन

प्र०	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	के	ताओ	इमाओ	काओ	ताणि	इमाणि	काणि
द्वि०	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	के	ताओ	इमाओ	काओ	ताणि	इमाणि	काणि
तृ०	अम्हेहि	तुम्हेहि	तेहि	इमेहि	केहि	ताहि	इमाहि	काहि	तेहि	इमेहि	केहि
च०	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण
पं०	अम्हाहिंतो	तुम्हाहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	काहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	काहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	काहिंतो
ष०	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण
स०	अम्हेसु	तुम्हेसु	तेसु	इमेसु	केसु	तासु	इमासु	कासु	तेसु	इमेसु	केसु

संज्ञा शब्द

एकवचन	पुल्लिंग शब्द			स्त्रीलिंग शब्द					नपुंसकलिंग शब्द		
	अकारान्त	इकारान्त	उकारान्त	आकारान्त	इकारान्त	ईकारान्त	उकारान्त	ऊकारान्त	अकारान्त	इकारान्त	उकारान्त
शब्द	पुरिस	सुधि	साहु	बाला	जुवइ	नई	धेणु	बहू	णयर	वारि	वत्थु
प्र	पुरिसो	सुधी	साहू	बाला	जुवई	नई	धेणू	बहू	णयर	वारि	वत्थु
द्वि	पुरिस	सुधि	साहु	बाल	जुवइ	नइ	धेणु	बहु	णयर	वारि	वत्थु
तृ	पुरिसेण	सुधिणा	साहुणा	बालाए	जुवईए	नईए	धेणूए	बहूए	णयरेण	वारिणा	वत्थुणा
च	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईअ	नईआ	धेणूए	बहूए	णयरस्स	वारिणो	वत्थुणो
प	पुरिसत्तो	सुधित्तो	साहुत्तो	बालत्तो	जुवइत्तो	नइत्तो	धेणुत्तो	बहुत्तो	णयरत्तो	वारित्तो	वत्थुत्तो
ष	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईअ	नईअ	धेणूए	बहूए	णयरस्स	वारिणो	वत्थुणो
स	पुरिसे	सुधिम्मि	साहुम्मि	बालाए	जुवईए	नईए	धेणुए	बहूए	णयरे	वारिम्मि	वत्थुम्मि
स	पुरिसो	सुधी	साहू	बाला	जुवइ	नइ	धेणु	बहू	णयर	वारि	वत्थु
बहुवचन											
प्र	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि
द्वि	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि
तृ	पुरिसेहि	सुधीहि	साहूहि	बालाहि	जुवईहि	नईहि	धेणूहि	बहूहि	णयरेहि	वारीहि	वत्थूहि
च	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण	णयराण	वारीण	वत्थूण
प	पुरिसाहितो	सुधीहिंतो	साहूहिंतो	बालाहिंतो	जुवईहिंतो	नईहिंतो	धेणूहिंतो	बहूहिंतो	णयराहिंतो	वारीहिंतो	वत्थूहिंतो
ष	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण	णयराण	वारीण	वत्थूण
स	पुरिससु	सुधीसु	साहूसु	बालासु	जुवईसु	नईसु	धेणूसु	बहूसु	णयरसु	वारीसु	वत्थूसु
स	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि

पाठ ६४

सज्ञार्थक क्रियाएं (पुल्लिग सज्ञा)

(क) शब्द	अर्थ	(ख) शब्द	अर्थ
आयार	आचार	उवदेसअ	उपदेशक
उवदेस	उपदेश	उवासअ	उपासक
कोव	क्रोध	किसअ	कृषक
पाट	पाठ	गायअ	गायक
णास	नाश	सासअ	शासक
लेह	लेख	नत्तअ	नर्तक
तव	तप	सावअ	श्रावक
हरिस	हर्ष	सेवअ	सेवक
फास	स्पर्श	भारवह	मजदूर
खय	क्षय	रक्खअ	रक्षक

नि० ६०– इन शब्दो के रूप अकारान्त पुल्लिग शब्दो की तरह सभी विभक्तियो मे चलते हैं।

उदाहरण वाक्य

(क)

इमो महावीरस्स उवदेसो अत्थि	=	यह महावीर का उपदेश है।
सो कोवं जिणइ	=	वह क्रोध को जीतता है।
मुणी तवेण भायइ	=	मुनि तप के द्वारा ध्यान करता है।
सो कम्मस्स खयस्स तवइ	=	वह कर्म के क्षय के लिए तप करता है।
बालओ कोवत्तो बीहइ	=	बालक क्रोध से डरता है।
साहू कोवस्स णासं कुणइ	=	साधू क्रोध का नाश करता है।
सो तवे लीणो अत्थि	=	वह तप मे लीन है।

(ख)

उवदेसओ आगच्छइ	=	उपदेशक आता है।
सो सेवअं धणं देइ	=	वह सेवक को धन देता है।
अह रक्खएण सह गच्छामि	=	मैं रक्षक के साथ जाता हूँ।
सो सासअस्स नमइ	=	वह शासक के लिए नमन करता है।
मुणि उवासअत्तो भोअणं मग्गइ	=	मुनि उपासक से भोजन मागता है।
सो नत्तअस्स पुत्तो अत्थि	=	वह नर्तक का पुत्र है।
सावए भत्ती अत्थि	=	श्रावक मे भक्ति है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उसका आचार अच्छा है। यह किस पुस्तक का पाठ है? उसके लेख मे शक्ति है। पापो का नाश कब होगा। नारी के स्पर्श मे क्षणिक सुख है। तप से कर्मों का क्षय होता है। वह महावीर का उपासक है। तुम किस देश के शासक हो। वह राजा का सेवक है। मजदूरो के द्वारा महल बनता है। किसान अन्न पैदा करता है।

पाठ ६५

(स्त्रीलिंग संज्ञा)

सज्ञायक क्रियाए

(क) शब्द	अर्थ	(ख) शब्द	अर्थ
उवलद्धि	उपलब्धि	मुत्ति	मुक्ति
गइ	गति	थुइ	स्तुति
दिट्ठि	दृष्टि	सति	शान्ति
वुद्धि	वुद्धि	सिद्धि	सिद्धि
भत्ति	भक्ति	कित्ति	कीर्ति

नि० ६१ – इन शब्दों के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों की तरह सभी विभक्तियों मे चलते हैं।

उदाहरण वाक्य

मज्झ कज्जस्स इमा उवलद्धि अत्थि	=	मेरे काय की यह उपलब्धि है।
जणा तस्स भत्ति पासन्ति	=	लोग उसकी भक्ति को देखते हैं।
वुद्धीआ कज्जाणि सिज्झन्ति	=	वुद्धि से काय सिद्ध होते हैं।
मुत्तीए सो तव कुणइ	=	मुक्ति के लिए वह तप करता है।
सो कित्तीत्तो वीहइ	=	वह कीर्ति से डरता है।
इद सतीए दार अत्थि	=	यह शान्ति का द्वार है।
सो थुईसु लीणो अत्थि	=	वह स्तुतियों में लीन है।

शब्दकोश (स्त्री०)

मति	=	स्मृति	कंति	=	कान्ति
पति	=	पक्ति	सिद्धि	=	सिद्धि
मइ	=	मति	दित्ति	=	दीप्ति
रइ	=	रति	धिइ	=	धैर्य

प्राकृत मे अनुवाद करो

उस तरुणी की गति धीमी है। उसकी दृष्टि तेज है। इस काय की सिद्धि कब होगी? तुम सब ईश्वर की भक्ति करो। स्तुति से देवता प्रसन्न नहीं होते हैं। शांति से जीवन में सुख होता है। कवि काव्य लिख कर कीर्ति प्राप्त करता है।

निर्देश –इन सज्ञायक क्रियाओं (स्त्रीलिंग) के सभी विभक्तियों में रूप लिख कर अभ्यास कीजिये।

पाठ ६६

मज्ञाथक क्रियाए (नपुंसकलिंग)

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अज्झयण	अध्ययन	रक्खण	रक्षा करना
आयरण	आचरण	लेहण	लिखना
कहण	कथन	सयण	सोना
गज्जण	गजना	सवण	सुनना
गहण	ग्रहण करना	गमण	जाना
चयन	चुनना	जीवण	जीवन
धावण	दौडना	मरण	मरण
धामण	नमन करना	पोसण	पालन करना
पढण	पढना	कपण	कपना
पूयण	पूजन	आसण	बैठना

नि० ६२ – इन शब्दों के रूप अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों की तरह सभी विभक्तियों में चलते है।

उदाहरण वाक्य

पच्चूसे अज्झयण वर अत्थि = प्रात काल मे अध्ययन करना अच्छा है।
सो तस्स आयरण पासइ = वह उसके आचरण को देखता है।
केवल कहणेण किं होइ = केवल कहने से क्या होता है ?
सो पढणस्स गच्छइ = वह पढने के लिए जाता है।
सो पूयणत्तो विरमइ = वह पूजन करने से अलग होता है।
जीवणस्स किं उद्देस्सो अत्थि = जीवन का क्या उद्देश्य है ?
तस्स कहणे सच्च अत्थि = उसके कहने मे सत्य है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

उसने बादल की गजना सुनी। युवति पति का चयन करती है। तुम्हारा दौडना अच्छा नही है। दिन मे पूजन करना अच्छा है। वह लेखन से धन इकट्ठा करता है। प्रात काल मे सोना हानिकारक है। शास्त्रों का सुनना हितकारी है।

निर्देश – इन सज्ञायक क्रियाओ (नपुंसकलिंग) के सभी विभक्तियो मे रूप लिख कर अभ्यास कीजिए।

पाठ ६७

कुछ अन्य पुल्लिंग संज्ञा शब्द

शब्द	अर्थ	एकवचन (प्रथमा)	बहुवचन
भगवत	भगवान	भगवतो	भगवता
गुणवत	गुणवान	गुणवतो	गुणवता
णाणवत	ज्ञानवान	णाणवतो	णाणवता
जुवाण	युवक	जुवाणो	जुवाणा
अप्पाण	आत्मा	अप्पाणो	अप्पाणा
राय	राजा	रायो	राया
जम्म	जन्म	जम्मो	जम्मा
चंदम	चन्द्रमा	चंदमो	चंदमा

नि० ६३ – इन शब्दों के रूप अकारान्त पुल्लिंग शब्दों की भांति प्रयुक्त किये जाते हैं। यद्यपि विकल्प से इनके अन्य रूप भी बनते हैं।

उदाहरण वाक्य

एकवचन

भगवतो वीयरागो होइ	=	भगवान वीतराग होता है।
सो भगवंत पणमइ	=	वह भगवान को प्रणाम करता है।
भगवतेण विणा धम्मो नत्थि	=	भगवान के बिना धर्म नहीं है।
अहं भगवतस्स नमामि	=	मैं भगवान के लिए नमन करता हूँ।
तं भगवन्तो किं मग्गन्ति	=	वे भगवान से क्या मांगते हैं ?
भगवतस्स णाणो सेट्ठो अत्थि	=	भगवान का ज्ञान श्रेष्ठ है।
भगवते अवगुणा ण सन्ति	=	भगवान में अवगुण नहीं हैं।
भगवो ! अम्हे उवदिसहि	=	हे भगवान ! हमें उपदेश दो।

प्राकृत में अनुवाद करो

वह भगवान को पूजता है। गुणवान राजा नागों का कल्याण करता है। ज्ञानवान साधु के साथ हम रहते हैं। राजा युवक से डरता है। आत्मा का कल्याण कब होगा ? राजा का पुत्र नगर में घूमता है। वह पूर्व जन्म में मृग था। बालक चन्द्रमा को देखता है। हे ज्ञानवान ! उन्हें शिक्षा दो।

उदाहरण वाक्य

भगवता वीयराग्रा होन्ति	=	भगवान वीतराग होते है ।
अम्हे भगवता पणमामो	=	हम भगवानो को प्रणाम करते हैं ।
भगवतेहि विणा भत्ती ण होइ	=	भगवानो के बिना भक्ति नहीं होती है ।
इमो जिणालयो भगवताण अत्थि	=	यह जिनालय भगवानो के लिए है ।
भगवताहिंतो जणा किं मग्गन्ति	=	भगवानो से लोग क्या मागते हैं ?
इमे भगवताण सावग्रा सन्ति	=	ये भगवानो के श्रावक हैं।
भगवतेसु राग्रदोसो ण होइ	=	भगवानो मे रागद्वेष नहीं होता है ।
भगवा ! अम्हे उवदिसन्तु	=	हे भगवानो ! हमे उपदेश दो ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

भगवान यहाँ कब आयेंगे ? राजा गुणवानो का सम्मान करता है । ज्ञानवान साधुओ के साथ वह नही रहता है । बालक युवको से डरते हैं । तुम ससार की आत्माओ का कल्याण करो । वहाँ राजाओ की सभा है । वे पूर्व जन्मो मे कहाँ थे ? चन्द्रमाओ मे किसका चित्र है ?

निर्देश – (क) उपर्युक्त भगवत आदि शब्दो के सभी विभक्तियो मे रूप लिखिए ।
(ख) राय (राजा) शब्द के विकल्प वाले ये रूप भी याद करलें ।

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	राया	राइणो
द्वि०	राइण	राइणो
तृ०	राइणा	राईहि
च०	राइणो	राईण
प०	राइणो	राईहिंतो
ष०	राइणो	राईण
स०	राइम्मि	राईसु
स०	राया	राइणो

नि० ६४ – राय शब्द के ये उपर्युक्त रूप पुल्लिंग इकारान्त शब्द की तरह हैं । किन्तु प्रथमा द्वितीया एव पचमी एकवचन मे राया, राइण राइणो ये रूप उससे भिन्न हैं ।

पाठ ६८

गुणवाचक विशेषण शब्द (पु०, स्त्री०, नपु०)

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उत्तम	श्रेष्ठ (अच्छा)	गभीर	गभीर
अहम	नीच	चवल	चचल
निट्ठुर	कठोर	सीयल	ठडा
दयालु	दयावान्	उण्ह	गरम
किसण	काला	नाणि	ज्ञानी
धवल	सफेद	मुक्ख	मूख
बलिट्ठ	बलशाली	रुग्ग	रोगी
निब्बल	कमजोर	णीरोग	स्वस्थ
चाइ	त्यागी	पमाइ	आलसी
लुद्ध	लोभी	उज्जमसील	उद्यमशील

नि० ६५ – इन विशेषण शब्दो के रूप एव लिंग विशेषण के अनुसार बनते हैं।

उदाहरण-वाक्य

	प्रथमा – एकवचन	प्रथमा – बहुवचन
(पु०)	उत्तमा साहू झाइ	उत्तमा साहुणो झायन्ति
(स्त्री०)	उत्तमा जुवई पढइ	उत्तमाओ जुवईओ पढन्ति
(नपु०)	उत्तम मित्त पच्चाअइ	उत्तमाणि मित्ताणि पच्चाअन्ति
	द्वितीया – एकवचन	**द्वितीया – बहुवचन**
(पु०)	उत्तम कवि सा नमइ	उत्तमा कविणो त नमन्ति
(स्त्री०)	उत्तम साडि सा इच्छइ	उत्तमाओ साडीओ ताओ इच्छन्ति
(नपु०)	उत्तम सत्थ सा पढइ	उत्तमाणि सत्थाणि सा पढइ
	तृतीया – एकवचन	**तृतीया – बहुवचन**
(पु०)	उत्तमेण सुधिणा सह मा पढइ	उत्तमेहि सुधीहि सह सो पढइ
(स्त्री०)	उत्तमाए सासूए सह सुण्हा वसइ	उत्तमाहि सासूहि सह कलह ण होइ
(नपु०)	उत्तमेण घरेण विणा सुह नत्थि	उत्तमेहि पुप्फेहि सोहा होइ
	चतुर्थी – एकवचन	**चतुर्थी – बहुवचन**
(पु०)	उत्तमस्स छत्तस्स इद फल अत्थि	उत्तमाण छत्ताण इमाणि फलाणि सन्ति
(स्त्री०)	उत्तमाअ बालाअ त पुप्फ अत्थि	उत्तमाण बालाण ताणि पुप्फाणि सन्ति
(नपु०)	उत्तमस्स वत्थुणो इद धण अत्थि	उत्तमाण वत्थूण इद धण अत्थि

पंचमी – एकवचन		पंचमी – बहुवचन
(पु०)	उत्तमत्तो साहुत्तो सो पढइ	उत्तमाहिंतो कवीहिंतो कव्व उप्पज्जइ
(स्त्री०)	उत्तमत्तो मालत्तो सुअधो आयइ	उत्तमाहिंतो मालाहिंतो सुअधो आयइ
(नपु०)	उत्तमत्तो फलत्तो रस उप्पज्जइ	उत्तमाहिंतो फलाहिंतो रस उप्पज्जइ

षष्ठी – एकवचन		षष्ठी – बहुवचन
(पु०)	उत्तमस्स पुरिसस्स इमो पुत्तो अत्थि	उत्तमाण पुरिसाण इमे पुत्ता सति
(स्त्री०)	उत्तमाए लदाए इद पुप्फ अत्थि	उत्तमाण लदाण इमाणि पुप्फाणि सति
(नपु०)	उत्तमस्स पुप्फस्स इद रस अत्थि	उत्तमाण पुप्फाण इमा माला अत्थि

सप्तमी – एकवचन		सप्तमी – बहुवचन
(पु०)	उत्तमे सीसे विनय होइ	उत्तमेसु सीसेसु विनय होइ
(स्त्री०)	उत्तमाए नारीए लज्जा होइ	उत्तमेसु नारीसु लज्जा होइ
(नपु०)	उत्तमे घरे सन्ति होइ	उत्तमेसु घरेसु सन्ति होइ

निर्देश - उपयुक्त वाक्यो का हिन्दी मे अनुवाद करो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह नीच पुरुष है। उस राजा का कठोर शासन है। यह साधु बहुत दयालु है। लोभी मनुष्य दुख प्राप्त करता है। गभीर नदी बहती है। चचल युवति लज्जा नही करती है। यह जल शीतल है। अग्नि सदा गरम होती है। ज्ञानी आचार्य का शिष्य आदर करते हैं। मूर्ख आदमियो की सभा मे वह निन्दा करता है। आलसी नही पढता है। उद्यमशील बालिकाओ की वह प्रशसा करता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो

विसणो सप्पो गच्छइ। धवलो मेहो ण वरसइ। बलिट्ठो पुरिसो घण अज्जइ। लुद्धा जणा निट्ठुरा हान्ति। मुक्खा बाला चित्त फाडइ। णीरोगे सरीरे सत्ती होइ। चवलेण वाणरेण सह मित्तो ण गच्छइ। उत्तमाए बालाए ताणि पुप्फाणि सति। अहमेसु जणेसु गुणा ण सन्ति।

पाठ ६९

विशेषण शब्द (पु०, स्त्री० नपु०) तुलनात्मक

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अप्प	छोटा	कणीअस	उससे छोटा	कणिट्ठ	सबसे छोटा
जेट्ठ	बडा	जट्ठयर	उसस बडा	जेट्ठयम	सबसे बडा
पिअ	प्रिय	पिअअर	उससे प्रिय	पिअअम	सबसे प्रिय
उच्च	ऊचा	उच्चअर	उससे ऊचा	उच्चअम	सबसे ऊचा
सेटठ	श्रेष्ठ	सेटठअर	उससे श्रेष्ठ	सेट्ठअम	सबसे श्रेष्ठ
बहु	बहुत	भूयस	उससे अधिक	भूयिट्ठ	सबसे अधिक
खुद्द	नीच	खुद्दअर	उससे नीच	खुद्दअम	सबसे नीच

नि० ६६ --इन विशेषण शब्दो के सभी विभक्तिया म रूप एव लिंग विशेष्य के अनुसार होते हैं। जसे-- सेटठो पुत्तो, सेटठा धूआ सेटठ पोत्थअ।

उदाहरण वाक्य

तुम ममत्तो कणीअसो अत्थि	=	तुम मुझसे छोटे हो।
मोहणो तस्स कणिट्ठो पुत्तो अत्थि	=	मोहन उसका सबसे छोटा पुत्र है।
सईसु सीया सेट्टा अत्थि	=	सतियो में सीता श्रेष्ठ है।
नईसु गगा सेटठअमा अत्थि	=	नदियो म गगा सबसे श्रेष्ठ है।
गिरीसु हिमालयो उच्चअमो अत्थि	=	पवतो मे हिमालय सबस ऊचा है।
तस्स पुत्ताण रामो जेट्ठो अत्थि	=	उसके पुत्रो म राम सबसे बडा है।
सव्व जन्तूसु गद्दभो खुद्दअरो होइ	=	सब प्राणियो मे गधा नीच होता है।
कणिटठा धूआ पियअमा होइ	=	छोटी पुत्री सबसे प्रिय होती है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं तुमसे छोटा हूँ। तुम उसके सबसे बडे पुत्र हो। साधुओ मे काश्यप श्रेष्ठ है। वह पेड सबसे ऊचा है। बफ सबसे अधिक शीतल होता है। तुम्ह उसकी पुत्री सबसे अधिक प्रिय है। यह पुस्तक मुझे प्रिय है।

हिन्दी में अनुवाद करो

तुम ममाओ जेट्ठअमो असि। कणिट्ठो पुत्तो पिअअमो होइ। पावस्स मग्गो पिअअरा ण होइ। सो मज्झ कणिट्ठा भायरा अत्थि। कवीसु कालिदासो सट्ठो अत्थि। णयरेसु उदयपुरो सट्ठअमा अत्थि।

पाठ ७०

विशेषण शब्द — सख्यावाचक

(क) एक

एगो = एक (पु०)		एगो छत्तो पढइ	=	एक छात्र पढता है।
एगा = एक (स्त्री०)		एगा बालिआ गच्छइ	=	एक बालिका जाती है।
एग = एक (नपु०)		इम एग फल अत्थि	=	यह एक फल है।

नि० ६७ – एक शब्द के रूप सातो विभक्तियो मे पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवम् नपुसकलिंग के *अकारान्त शब्दो के समान चलेंगे। विशेष्य शब्द के अनुरूप ही एक शब्द का* प्रयोग होगा। यथा –

एगस्स पुरिसस्स इद घर अत्थि	=	एक आदमी का यह घर है।
एगेण बालएण सह अह गच्छामि	=	एक बालक के साथ मैं जाता हू।
एगे खेत्ते वारि अत्थि	=	एक खेत मे पानी है।

(ख) दो

नि० ६८ – एक शब्द को छोड कर सभी सख्यावाची शब्द प्राकृत मे तीनो लिंगो मे समान होते है। यथा –

(पु०)	दोण्णि बालआ पढंति	=	दो बालक पढते है।
(स्त्री०)	दोण्णि जुवईओ गच्छंति	=	दो युवतिया जाती है।
(नपु०)	दोण्णि फलाणि संति	=	दो फल हैं।

(ग) दो से अठारह एव कई

नि० ६९ – दो (२) से लेकर अट्ठारह (१८) सख्या तक के शब्द तथा कई (कितने) शब्द सभी विभक्तियो मे बहुवचन मे ही प्रयुक्त होते हैं –

दोण्णि	= दो		एगारह	=	ग्यारह
तिण्णि	= तीन		बारह	=	बारह
चउरो	= चार		तेरह	=	तेरह
पच	= पाच		चउद्दह	=	चौदह
छ	= छह		पण्णरह	=	पद्रह
सत्त	= सात		सोलह	=	सोलह
अट्ठ	= आठ		सत्तरह	=	सत्तरह
णव	= नो		अट्ठारह	=	अट्ठारह
दह	= दस		कइ	=	कितने

तीन शब्द के सात विभक्तियो के रूप

प्र०	तिण्णि बालआ पढंति	=	तीन बालक पढते है।
द्विती०	तिण्णि साडीओ सा गिण्हइ	=	तीन साडियो को वह लेती है।
तृ०	तीहि कवीहि सह सो गच्छइ	=	तीन कवियो के साथ वह जाता है।
च०	तीण्ह वत्थूण सो धणं दाइ	=	तीन वस्तुओ के लिए वह धन देता है।
प०	तीहिंतो कमलाहिंतो वारिं पडइ	=	तीन कमलो से पानी गिरता है।
ष०	तीण्ह पुरिसाण त घर अत्थि	=	तीन आदमियो का वह घर है।
स०	तीसु खेत्तेसु वारिं अत्थि	=	तीन खेतो मे पानी है।

(घ) उन्नीस से अट्ठावन तक

नि० ७० – उनीस (१६) स अटठावन (५८) सख्या तक के शब्दो के रूप माला शब्द के समान आकारान्त बनते हैं। अत उनके रूप माला शब्द के समान सातो विभक्तियो म चलते हैं तथा तीनो लिंगो मे समान होते हैं।

एगूणवीसा	=	उनीस	छव्वीसा	=	छब्बीस
वीसा	=	बीस	सत्तवीसा	=	सत्ताइस
एगवीसा	=	इक्कीस	अट्ठावीसा	=	अटठाईस
दुवीसा	=	बाइस	एगूणतीसा	=	उनतीस
तेवीसा	=	तेइस	तीसा	=	तीस
चउवीसा	=	चौबीस	एगतीसा	=	इकतीस
पण्णवीसा	=	पच्चीस	चत्तालीसा	=	चालीस

(ङ०) उनसठ से निन्नानवे तक

नि० ७१ – उनसठ (५६) से निन्नानवे (६६) सख्या तक के शब्दो के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग जैसे होते हैं। अत उनके रूप 'जुवइ' शब्द जैसे चलते हैं। तथा तीनो लिंगो म समान होते हैं।

एगूणसट्ठि	=	उनसठ	एगूणसत्तरि	=	उनहत्तर
सट्ठि	=	साठ	सत्तरि	=	सत्तर
एगसट्ठि	=	इकसठ	एक्सत्तरि	=	इकहत्तर
दोसट्ठि	=	बासठ	एगूणसीइ	=	उन्नासी
तेसट्ठि	=	त्रेसठ	असीइ	=	अस्सी
चउसट्ठि	=	चौंसठ	एगासीइ	=	इक्यासी
पणसट्ठि	=	पैंसठ	एगूणनवइ	=	नवासी
छसट्ठि	=	छियासठ	णवइ	=	नव्वे
सत्तसट्ठि	=	सडसठ	एगणवइ	=	इक्यानवे
अट्ठसट्ठि	=	अडसठ	नवणवइ	=	निन्नानवे

उदाहरण वाक्य

वीसा (तीनो लिंगो मे समान)

(पु०)	वीसा बालग्रा पढन्ति	=	बीस बालक पढते हैं ।
(स्त्री०)	वीसा साडोग्रो सन्ति	=	बास साडिया है ।
(नपु०)	वीसा खेत्ताणि सन्ति	=	बीस खेत है ।

सट्ठि (तीनों लिंगों मे समान)

(पु०)	सट्ठी पुरिसा गच्छन्ति	=	साठ ग्रादमी जाते है ।
(स्त्री०)	सटठी जुवईग्रो गायन्ति	=	साठ युवतिया गाती है ।
(नपु०)	सटठी फलाणि सो गेण्हइ	=	साठ फलो को वह लेता है ।

(च) सौ, हजार, लाख

नि० ७२ – निम्नलिखित सख्या शब्दो के रूप नपु सकलिंग अकारान्त शब्दो के समान चलते है —

सय	=	सौ	तिसय	=	तीन सौ
दुसय	=	दो सौ	सहस्स	=	(एक) हजार
नवसय	=	नौ सौ	लक्ख	=	(एक) लाख

प्राकृत में अनुवाद करो

मनुष्य के शरीर मे एक आत्मा है । उसकी दो ग्राख हैं । तुम्हारी तीन पुत्रियाँ हैं । ये चार पुस्तकें मेरी है । महावीर के पाच शिष्य है । इस गाव मे सत्तर लोग रहते है। मेरे विद्यालय मे नब्बे छात्र हैं । इस नगर मे एक हजार पुरुष हैं ।

हिन्दी मे अनुवाद करो –

इमम्मि नयरे तिण्णि नईग्रो सन्ति । सत्त उदही सन्ति । चउद्दह सुवण्णाणि सन्ति । पण्णासा जणा तम्मि नयरे वसन्ति । अट्ठारह पुराणा पसिद्धा सन्ति । तम्मि खेत्ते तिसयाणि बालग्रा खेलन्ति । ताए लताए बीसा पुप्फाणि सन्ति । इमम्मि कारागारे चत्तारि चोरा सन्ति । सत्त दीवा हान्ति । सटठी बालग्रा पढमाए पढन्ति ।

पाठ ७१

प्रकार एव क्रमवाचक

विशेषण शब्द

एगहा	=	एक प्रकार
दुविहा	=	दो प्रकार
तिविह	=	तीन प्रकार
चउहा	=	चार प्रकार
दसविह	=	दस प्रकार
पढमो	=	पहला
बीओ	=	दूसरा
तइओ	=	तीसरा
चउत्थो	=	चौथा
पचमो	=	पाचवा
छट्ठो	=	छठवा
सत्तमो	=	सातवा
बहुविह	=	बहुत प्रकार
अणेगविह	=	अनेक प्रकार
णाणाविह	=	नाना प्रकार
सयहा	=	सकडा प्रकार
सहस्सहा	=	हजारों प्रकार
अट्ठमो	=	आठवा
नवमो	=	नौवा
दहमो	=	दसवा
वीसइमो	=	बीसवा
चउवीसइमो	=	चौबीसवा
सययमो	=	सौवा
अणतयमो	=	अनन्तवा

उदाहरण वाक्य

दुविहा जीवा	=	दो प्रकार के जीव।
तिविह मोक्ख मग्ग	=	तीन प्रकार का मोक्ष मार्ग।
चउहा गईओ	=	चार प्रकार की गतिया।
दसविहो धम्मो	=	दस प्रकार का धर्म।
बहुविहा कम्मा	=	बहुत प्रकार के कर्म
णाणाविहाणि पोत्थआणि	=	नाना प्रकार की पुस्तकें।
पढमो बालओ निउणो अत्थि	=	पहला बालक निपुण है।
पढमा जुवई नमइ	=	पहली युवति नमन करती है।
पढम सत्थ आयारो अत्थि	=	पहला शास्त्र आचाराग है।
चउवीसइमो तित्थयरो महावीरो अत्थि	=	चौबीसवें तीर्थंकर महावीर हैं।
चउत्थी बाला मम धूआ अत्थि	=	चौथी बालिका मेरी पुत्री है।
पचम घर मज्झ अत्थि	=	पाचवा घर मेरा है।

प्राकृत मे अनुवाद करो

दूसरा बालक दयालु है। तीसरी पुस्तक काव्य की है। छठी युवति तुम्हारी बहिन है। सातवा फूल गुलाब का है। आठवीं गाय काली है। नौवा वस्त्र सफेद है। दस आम्मी मूर्ख है। चार प्रकार के फल। तीन प्रकार के वस्त्र। दो प्रकार की पुस्त दस प्रकार के फूल। हजारो प्रकार के प्राणी। नाना प्रकार के जन्म। अनेक प्र के घर।

पु० शब्द	अर्थ	पु० शब्द	अर्थ
पढन्तो	पढता हुआ	गज्जन्तो	गजता हुआ
धावन्तो	दौडता हुआ	रुदन्तो	रोता हुआ
चालन्तो	चालता हुआ	अभीयमाणो	अध्ययन करता हुआ
णच्चन्तो	नाचता हुआ	हसमाणो	हँसता हुआ
हसन्तो	हसता हुआ	पलायमाणो	भागता हुआ
गच्छन्तो	जाता हुआ	कपमाणो	कपता हुआ
खेलन्तो	खेलता हुआ	लज्जणो	लजाता हुआ
नमन्तो	नमन करता हुआ	उड्डमाणो	उडता हुआ

नि० ७३ (क) मूल धातु मे 'न्त' एव माण प्रत्यय लगन पर वतमान काल के कृदन्त रूप बनत हैं। जसे– पढ + न्त=पढन्त पु० म पढन्तो। हस + माण= हसमाण। पु० म हसमाणो।

(ख) इन कृदन्तो म 'ई' प्रत्यय लगकर स्त्रीलिंग रूप बन जाते हैं। जसे– पढन्त + ई=पढन्ती हसमाण + ई=हसमाणी।

नि० ७४ इन विशेषण शब्दा के रूप तीनो लिंगो म सभी विभक्तिया म विशेष्य के अनुसार बनेंगे।

उदाहरण वाक्य –

	प्रथमा – एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्तो बालओ गच्छइ	पढन्ता बालआ गच्छन्ति
स्त्री०	पढन्ती जुवई नमइ	पढन्तीओ जुवईओ नमन्ति
नपु०	पढन्त मित्त हसइ	पढन्ताणि मित्ताणि हसन्ति
	द्वितीया – एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्त बालअ सो पुच्छइ	पढन्ता बालआ सो पुच्छइ
स्त्री०	पढन्ति जुवइ सा कहइ	पढन्तीओ जुवईओ सा कहइ
नपु०	पढन्त मित्त अह पासामि	पढन्ताणि मित्ताणि अह पासामि
	तृतीया – एकवचन	बहुवचन
पु०	पढन्तण बालएण सह सो पढइ	पढन्तेहि बालएहि गाम सोहइ
स्त्री०	पढन्तीए जुवईए सह सा वसइ	पढन्तीहि जुवईहि घर सोहइ
नपु०	पढन्तेण मित्तेण सह अह पढामि	पढन्तेहि मित्तेहि सह कलह ण होइ

चतुर्थी – एकवचन	बहुवचन
पु० पढन्तस्स बालअस्स इद फल अत्थि	पढन्ताण बालआण इमाणि फलाणि सन्ति
स्त्री० पढन्तीआ जुवईआ त पुप्फ अत्थि	पढन्तीण जुवईण तानि पुप्फाणि सन्ति
नपु० पढन्तस्स मित्तस्स इद पोत्थअ अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि सत्थाणि सन्ति

पचमी – एकवचन	बहुवचन
पु० पढन्तत्तो बालअत्तो सो पोत्थअ मग्गइ	पढन्ताहिंतो बालआहिंतो सो पोत्थअ मग्गइ
स्त्री० पढन्तित्तो जुवइत्तो सा कमल गिण्हइ	पढन्तीहिंतो जुवईहिंतो सा कमल गेण्हइ
नपु० पढन्तत्तो मित्तत्तो सद्दो उप्पन्नइ	पढन्ताहिंतो मित्ताहिंतो सद्दो उप्पन्नइ

षष्ठी – एकवचन	बहुवचन
पु० पढन्तस्स बालअस्स इमो जणओ अत्थि	पढन्ताण बालआण इद घर अत्थि
स्त्री० पढन्तीआ जुवईआ इमा माआ अत्थि	पढन्तीण जुवईण इमाणि आभरणाणि सन्ति
नपु० पढन्तस्स मित्तस्स इद कलम अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि फलाणि सन्ति

सप्तमी – एकवचन	बहुवचन
पु० पढन्ते बालए विनय होइ	पढन्तेसु बालएसु विनय अत्थि
स्त्री० पढन्तीए जुवईए लज्जा अत्थि	पढन्तेसु जुवइसु लज्जा अत्थि
नपु० पढन्ते मित्ते खमा अत्थि	पढन्तेसु मित्तेसु खमा अत्थि

निर्देश – उपर्युक्त वाक्यो का हिन्दी मे अनुवाद करो।

प्राकृत मे अनुवाद करो

दौडता हुआ बालक जीतता है। बोलती हुई वहू शोभित नही होती है। नाचता हुआ मोर गाता है। हँसती हुई युवति पूछती है। गजता हुआ बादल बरसता है। भागता हुआ नौकर यहाँ आया। लजाती हुई बालिका वहाँ गयी। उडता हुआ पक्षी भूमि पर गिर पडा। कपता हुआ मृग सिंह के समीप गया। नमन करता हुआ छात्र पुस्तक पढता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो

हसन्ती बाला तत्थ गच्छीअ। कपमाणी जुवई पुच्छइ। अभीयमाणेण मित्तेण सह सा गा कन्दइ। उड्डमाणाण कवोआण इम अन्न अत्थि। गज्जन्तेसु मेहेसु जल ण होइ।

पाठ ७३

कृदन्त विशेषण शब्द | भूतकाल

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सतुट्ठ	सन्तुष्ट हुआ/हुई	भणिअ	कहा हुआ/हुई
गमिअ	गया हुआ/हुई	पढिअ	पढा हुआ/हुई
अहीअ	पढा हुआ/हुई	रक्खिअ	रक्षित हुआ/हुई
कुविअ	क्रोधित हुआ/हुई	विअसिअ	विकसित हुआ/हुई
चिंतिअ	चिंतित हुआ/हुई	लिहिअ	लिखा हुआ/हुई
खाअ	भूखा हुआ/हुई	कअ	किया हुआ/हुई
नट्ठ	नष्ट हुआ/हुई	गअ	गया हुआ
पूइअ	पूजित हुआ/हुई	हुअ	मरा हुआ/हुई
भीअ	डरा हुआ हुई	णाअ	जाना हुआ
मुइअ	आनन्दित हुआ/हुई	दिट्ठ	देखा हुआ

नि० ७५ – मूल धातु मे 'अ' प्रत्यय लगने पर तथा विकल्प से धातु के अ का इ होने पर भूतकाल के कृदन्त रूप बनते हैं। यथा– गम + इ + अ = गमिअ। णा + अ = णाअ।

नि० ७६ – इन विशेषण शब्दो के रूप तीनो लिंगो मे सभी विभक्तियो मे विशेष्य के अनुसार बनेंगे।

उदाहरण वाक्य

	प्रथमा – एकवचन	बहुवचन
पु०	सतुट्ठो णिवो धण देइ	सतुट्ठा णिवा धण देंति
स्त्री०	सतुट्ठा णारी लज्जइ	सतुट्ठाओ णारीओ मुअंति
नपु०	सतुट्ठं मित्त किं करइ	सतुट्ठाणि मित्ताणि कज्ज करन्ति
	द्वितीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	सतुट्ठं णिव सो नमइ	सतुट्ठा णिवा को ण इच्छइ
स्त्री०	सतुट्ठं णारिं सो इच्छइ	सतुट्ठाओ णारीओ ते इच्छन्ति
नपु०	संतुट्ठं मित्त अहं इच्छामि	सतुट्ठाणि मित्ताणि सो धण देइ
	तृतीया – एकवचन	**बहुवचन**
पु०	सतुट्ठेण णिवेण सह सुह होइ	सतुट्ठेहि णिवहि कलह ण होइ
स्त्री०	सतुट्ठाए णारीए विणा सुह णत्थि	सतुट्ठीहि णारीहि सह सो वसइ
नपु०	सतुट्ठेण मित्तेण सह अहं वसामि	सतुट्ठेहि मित्तेहि सह सो गच्छइ

चतुर्थी – एकवचन	बहुवचन
पु० सतुट्ठस्स णिवस्स इदं सम्माणं अत्थि	सतुट्ठाण णिवाण ससारो असारो अत्थि
स्त्री० सतुट्ठाअ णारीए इदं धणं अत्थि	सतुट्ठाण णारीण इदं घरं अत्थि
नपु० सतुट्ठस्स मित्तस्स सा फलं देइ	सतुट्ठाण मित्ताण अहं नमामि
पचमी – एकवचन	**बहुवचन**
पु० सतुट्ठत्तो णिवत्तो सो धणं मग्गइ	सतुट्ठाहिंतो णिवाहिंतो सो धणं मग्गइ
स्त्री० सतुट्ठत्ता णारित्तो सा सिक्ख लहइ	सतुट्ठाहिंतो णारीहिंतो सा सिक्ख लहइ
नपु० सतुट्ठत्तो मित्तत्ता सो फलं गिण्हइ	सतुट्ठाहिंतो मित्ताहिंतो सो फलाणि गिण्हइ
षष्ठी – एकवचन	**बहुवचन**
पु० सतुट्ठस्स णिवस्स इदं रज्जं अत्थि	सतुट्ठाण णिवाण इद रज्जं अत्थि
स्त्री० सतुट्ठाअ णारीए इद कामव्वं अत्थि	सतुट्ठाण णारीण इद घर अत्थि
नपु० सतुट्ठस्स मित्तस्स इमो पुत्तो अत्थि	सतुट्ठाण मित्ताण इद कामव्वं अत्थि
सप्तमी – एकवचन	**बहुवचन**
पु० सतुट्ठे णिवे लच्छी वसइ	सतुट्ठेसु णिवेसु लच्छी वसइ
स्त्री० सतुट्ठाए णारीए लज्जा होइ	सतुट्ठेसु णारीसु लज्जा होइ
नपु० सतुट्ठे मित्ते णाणं होइ	सतुट्ठेसु मित्तेसु खति होइ

निर्देश – इन उपयुक्त वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो।

भविष्यकाल

उदाहरण वाक्य

पु०	पढिस्सतो गथो	=	पढा जाने वाला ग्रन्थ।
स्त्री०	पढिस्सता गाहा	=	पढी जाने वाली गाथा।
नपु०	पढिस्सतं पत्तं	=	पढा जाने वाला पत्र।

नि० ७७ – (क) मूल क्रिया के अ को इ होने पर 'स्सत' प्रत्यय लगने पर भविष्यकाल कृदन्त के रूप बनते हैं। जैसे–
पढ + इ + स्सत = पढिस्सत।

(ख) भविष्य कृदन्त बन जाने पर पु०, स्त्री० एव नपु० विशेष्य के अनुसार इन कृदन्तो के सभी विभक्तियो में रूप बनते हैं।

प्राकृत मे अनुवाद करो

वह जयपुर गया हुआ है। यह पुस्तक पढी हुई है। झुकी हुई लता से फूल तोडा। पूजित साधुओ को प्रणाम करो। डरी हुई युवतियो से बात करो। आनन्दित पुरुषो का जीवन अच्छा है। उसके द्वारा यह कहा हुआ है। विकसित कलियो को मत तोडो। लिखी हुई पुस्तक यहा लाओ। यह देखा हुआ नगर है। लिखा जाने वाला पत्र कहाँ है? सुना जाने वाला शास्त्र कहाँ है।

पाठ ७४

कृदन्त विशेषण शब्द — योग्यतासूचक

(क)		(ख)	
करणीअ	= करने योग्य	होअव्व	= होने योग्य
पढणीअ	= पढने योग्य	मुणेअव्व	= जानने योग्य
हसणीअ	= हँसने योग्य	नच्चेअव्व	= नाचने योग्य
कहणीअ	= कहने योग्य	फासेअव्व	= छूने योग्य
पुज्जणीअ	= पूज्यनीय	मग्गेअव्व	= मागने योग्य

नि० ७७ – (क) मूल धातु मे 'अणीअ' प्रत्यय लगने पर विध्यर्थ (योग्यता सूचक) कृदन्त बनता है । यथा– कर + अणीअ = करणीअ ।

(ख) मूल धातु मे 'अव्व' प्रत्यय लगने पर तथा धातु के अ को ए होने पर दूसरे प्रकार के योग्यता सूचक कृदन्त बनते हैं । यथा—
मुण + ए + अव्व = मुणेअव्व ।

नि० ७८ इन विशेषण शब्दो के रूप तीनो लिंगो मे सभी विभक्तियो मे विशेष्य के अनुसार चलेंगे ।

उदाहरण वाक्य

(क)

पु०	कहणीओ वित्तन्तो अत्थि	= कहने योग्य वृत्तान्त है ।
स्त्री०	कहणीआ कहा अत्थि	= कहने योग्य कथा है ।
नपु०	कहणीअं चरित्तं अत्थि	= कहने योग्य चरित्र है ।

(ख)

पु०	मुणेअव्वो धम्मो सुहं दाइ	= जानने योग्य धर्म सुख देता है ।
स्त्री०	मुणेअव्वा आणा किं अत्थि	= जानने योग्य आज्ञा क्या है ?
नपु०	मुणेअव्वं जीवणं अप्पं अत्थि	= जानने योग्य जीवन थोडा है ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

(क)

यह पुस्तक पढने योग्य है । वह आदमी हँसने योग्य है । करने योग्य कार्यों को शीघ्र करो । पूज्यनीय स्त्रियो को प्रणाम करो । वह कथा पढने योग्य है । यह दृष्टान्त कहने योग्य है । पूज्यनीय पुस्तको का संग्रह करो ।

(ख)

यह विवाह होने योग्य है । वह मा होने योग्य नही है । ये पुस्तकें जानने योग्य हैं । तुम जानने योग्य कथा कहो । वह युवति नाचने योग्य है । वह आदमी छूने योग्य नही है । यह वस्तु छूने योग्य है । वह वस्तु माँगने योग्य है ।

पाठ ७५

तद्धित विशेषण शब्द

(ब) योग्यता वाचक

तद्धितरूप	अर्थ	तद्धितरूप	अर्थ
रसाल	रसयुक्त	दयालु	दया युक्त
जडाल	जटाधारी	ईसालु	ईर्ष्या-युक्त
सद्दाल	शब्द-युक्त	नेहालु	स्नेह-युक्त
जोण्हाल	चांदनी युक्त	लज्जालु	लज्जा-युक्त
गव्विर	गर्व युक्त	सोहिल्ल	शोभा-युक्त
रेहिर	रेखा-युक्त	छाइल्ल	छाया-युक्त
दप्पुल्ल	दर्प युक्त	मसुल्ल	दाढीवाला
धणमण	धनयुक्त	सिरिमत	श्री-युक्त
सोहामण	शोभा युक्त	धीमत	बुद्धि-युक्त
भत्तिवत	भक्ति-युक्त	गामिल्ल	ग्रामीण
धणवत	धन-युक्त	घरिल्ल	घरेलु
एकल्ल	अकेला	णायरुल्ल	नागरिक
नवल्ल	नया	अप्पुल्ल	आत्मा मे उत्पन्न
नत्थिअ	नास्तिक	अत्थिअ	आस्तिक

उदाहरण वाक्य

जडालो जणो कत्थ गच्छइ = जटाधारी व्यक्ति कहाँ जाता है ?
अज्ज जुण्हाली रत्ति अत्थि = आज चाँदनी रात है।
ईसालू पुरिसो दुहं दाइ = ईर्ष्यालु आदमी दुःख देता है।
गव्विरा जुवई ण सोहइ = घमंडी युवति अच्छी नही लगती है।
त रुक्खं छाइल्ल णत्थि = वह वृक्ष छायावाला नहीं है।
धीमता धणमणा ण होंति = बुद्धिमान् धनवान् नही होते है।
तस्स घरिल्लं अभिहाणं किं अत्थि = उसका घरेलु नाम क्या है ?
नवल्ली वहू लज्जालू होइ = नयी बहू लज्जालु होती है।

नि० ८० संज्ञा शब्दों से बने ये शब्द तद्धित कहे जाते हैं। इनका प्रयोग विशेषण की तरह होता है। विशेष्य की तरह इनके रूप चलते हैं।

(ख) अन्य अर्थवाचक

तद्धितरूप	अर्थ	तद्धितरूप	अर्थ
एगहुत्त	एक बार	एगत्तो	एक ओर से
तिहुत्त	तीन बार	सवत्तो	सब ओर से
इत्तो	इस ओर से	तत्तो	उस ओर से
कत्तो	किस ओर से	जत्तो	जिस ओर से
अम्हकेर	हमारा	तुम्हकेर	तुम्हारा
परकेर	दूसरे का	अप्पणय	अपना
जहि	जहाँ पर	तहि	वहा पर
कहि	कहाँ पर	अन्नहि	अन्य स्थान पर
एत्तिअ	इतना	तेत्तिअ	उतना
केत्तिअ	कितना	जेत्तिअ	जितना
ऐरिस	ऐसा	तारिस	वैसा
केरिस	कैसा	जारिस	जैसा
अम्हारिस	हमारे जैसा	तुम्हारिस	तुम्हारे जैसा

प्रयोग वाक्य

ते तिहुत्त भुजंति	=	वे तीन बार भोजन करते हैं।
सो इत्तो गच्छइ	=	वह इस ओर से जाता है।
इद परकेर पोत्थअ अत्थि	=	यह दूसरे की पुस्तक है।
सो एकल्लो किं करइ	=	वह अकेला क्या करता है ?
एत्तिअ सचय वर णत्थि	=	इतना सचय अच्छा नही है।
वासुदेवो केरिस कज्ज करइ	=	वासुदेव कैसा काम करता है ?

प्राकृत मे अनुवाद करो

ग्रामीण लोग वहाँ पढते हैं। दयालु आदमी हिंसा नही करता है। घमड करने वाला सदा दुःख पाता है। आम का फल रसयुक्त है। वह घरेलु पक्षी है। तुम एकबार क्या भोजन करते हो ? तुम्हारा पुत्र कहाँ पर है ? साधु आस्तिक है। तुम जितना मागोगे वह उतना नही देगा। हमारे जैसा श्रीमत अन्य स्थान पर नही है।

क्रियारूप चार्ट

एकवचन

पुरुष	वर्तमानकाल अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	भूतकाल अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	भविष्यकाल अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	इच्छा या आज्ञा अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	सम्बन्ध कृदन्त अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	हेत्वर्थ कृदन्त अ क्रिया नम	आ क्रिया दा
प्रथम	नमामि	दामि	नमीअ	दाही	नमिहिमि	दाहिमि	नममु	दामु	नमिऊण	दाऊण	नमिउ	दाउं
मध्यम	नमसि	दासि	नमीअ	दाही	नमिहिसि	दाहिसि	नमहि	दाहि	"	"	"	"
अन्य	नमइ	दाइ	नमीअ	दाही	नमिहिइ	दाहिइ	नमउ	दाउ	"	"	"	"

बहुवचन

पुरुष	वर्तमानकाल अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	भूतकाल अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	भविष्यकाल अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	इच्छा या आज्ञा अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	सम्बन्ध कृदन्त अ क्रिया नम	आ क्रिया दा	हेत्वर्थ कृदन्त अ क्रिया नम	आ क्रिया दा
प्रथम	नमामो	दामा	नमीअ	दाही	नमिहामो	दाहामा	नममो	दामो	नमिऊण	दाऊण	नमिउ	दाउ
मध्यम	नमित्था	दाइत्था	नमीअ	दाही	नमिहित्था	दाहित्था	नमह	दाए	"	"	"	"
अन्य	नमन्ति	दान्ति	नमीअ	दाही	नमिहिन्ति	दाहिन्ति	नमन्तु	दातु				

कृदन्त विशेषण चार्ट

काल	मूलक्रिया एवं प्रत्यय	एकवचन पु०	एकवचन स्त्री०	एकवचन नपु०	बहुवचन पु०	बहुवचन स्त्री०	बहुवचन नपु०
		प्रथमाविभक्ति					
वतमानकाल	पढ + अत	पढतो	पढन्ती	पढन्त	पढन्ता	पढन्तीश्रो	पन्न्ताणि
,,	पढ + माण	पढमाणो	पढमाणी	पढमाण	पढमाणा	पढमाणीश्रो	पढमाणाणि
भूतकाल	पढ + श्र	पढिश्रो	पढिश्रा	पढिश्र	पन्श्रिा	पढिश्राश्रो	पढिश्राणि
भविष्यकाल	पढ + स्सत	पढिस्सतो	पढिस्सती	पढिस्सत	पढिस्सता	पढिस्सतीश्रो	पन्स्सिताणि
योग्यतासूचक (क) (विधिकृदन्त)	पढ + श्रणीश्र	पढणीश्रो	पढणीश्रा	पन्णीश्र	पन्णीश्रा	पन्णीश्राश्रो	पन्णीश्राणि
,, (ख)	पढ + श्र व	पढेश्रव्वो	पढेश्रव्वा	पढेश्रव्व	पढेश्र वा	पढेश्रव्वाश्रो	पढेश्रव्वाणि

निर्देश — इसी प्रकार सभी विभक्तियो मे विशेष्य के श्रनुसार इन विशपणो के रूप प्रयुक्त होत हैं। पढ क्रिया के समान श्रन्य क्रियाश्रो के सभी कालो म कृदन्त विशेपण बनाकर श्रभ्यास कीजिए।

पाठ ७६

वर्तमानकाल

कर्मवाच्य क्रिया प्रयोग

तेण अहं पासीअमि/पासिज्जमि	=	उसके द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
निवेण अम्हे पासीअमो/पासिज्जमो	=	राजा के द्वारा हम देखे जाते हैं।
मए तुम पासीअसि/पासिज्जसि	=	मेरे द्वारा तुम देखे जाते हो।
तुम्हे पासीअइत्था/पासिज्जित्था	=	तुम सब देखे जाते हो।
तुमए सो पासीअइ/पासिज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जाता है।
साहुणा ते पासीअंति/पासिज्जंति	=	साधु के द्वारा वे सब देखे जाते हैं।

उदाहरण वाक्य

जुवईए बालओ पासीअइ	=	युवति के द्वारा बालक देखा जाता है।
मए घडो करीअइ	=	मेरे द्वारा घड़ा बनाया जाता है।
तेण पात्थअ पढिज्जइ	=	उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
बहूए देवो अच्चीअइ	=	बहू के द्वारा देव पूजा जाता है।
पुरिसेण पत्ताणि लिहिज्जंति	=	आदमी के द्वारा पत्र लिखे जाते हैं।
निवेण तुम पुच्छिज्जसि	=	राजा के द्वारा तुम पूछे जाते हो।
तेहिं भिच्चो पेसिज्जइ	=	उनके द्वारा नौकर भेजा जाता है।
बालाए चुण्णं पीसिज्जइ	=	बालिका के द्वारा आटा पीसा जाता है।

हिन्दी मे अनुवाद करो

बालएण फलाणि भुंजीअन्ति। तुमए किं कज्जं करीअइ। आयरिएण गंथाणि निहिज्जंति। तेहिं पुत्तो मह वहू ण पसिज्जइ। साहुणा सया झाणं करिज्जइ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

तुम्हारे द्वारा जल पिया जाता है। उसके द्वारा चित्र देखा जाता है। बालक के द्वार पुस्तकें पढ़ी जाती हैं। विद्वान् के द्वारा मैं पूछा जाता हूँ। हम सबके द्वारा साधु नम किया जाता है। उनके द्वारा तुम भेजे जाते हो। विद्या के द्वारा वह जाना जाता है साधु द्वारा संयम पाला जाता है। राम के द्वारा सेतु बाँधा जाता है। गुरु द्वारा शिष्य ताड़ित किया जाता है। भ्रमर द्वारा फूल सूंघा जाता है।

क्रियाकोश

अइक्कम	=	उलंघन करना	आकंद	=	रोना चिल्लाना
अक्ख	=	कहना	आयण्ण	=	सुनना
अणुकंप	=	दया करना	अतिकख	=	इच्छा करना
अणुमण्ण	=	अनुमति देना	अवमण्ण	=	तिरस्कार करना
अवरज्झ	=	अपराध करना	अभिलस	=	चाहना

सामा य क्रिया प्रयोग

तेण अहं पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	उसके द्वारा मैं देखा गया।
निवेण अम्हे पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	राजा क द्वारा हम देखे गय।
मए तुम पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	मरे द्वारा तुम देखे गय।
तुम्हे पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	तुम सब देखे गये।
तुमए सो पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा गया।
साहुणा ते पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	साधु के द्वारा वे सब देखे गये।

उदाहरण वाक्य

मए घडो करीअईअ/ करिज्जीअ	=	मरे द्वारा घडा बनाया गया।
तेण पोत्थअ पढीअईअ/पढिज्जीअ	=	उसके द्वारा पुस्तक पढी गयी।
सासूए वहू तूसीअईअ/तूसिज्जीअ	=	सास के द्वारा बहू सतुष्ट की गयी।
पत्ताणि लिहीअईअ/लिहिज्जीअ	=	पत्र लिखे गये।
तेहि भिच्चो पेसीअईअ/पेसिज्जीअ	=	उनके द्वारा नौकर भेजा गया।

कृदन्त प्रयोग

तेण अहं दिट्ठो	=	उसके द्वारा मैं देखा गया।
	या	उसने मुझे देखा।
मए घडो कओ	=	मैंने घडा बनाया।
तेण पोत्थअ पढिअ	=	उसने पुस्तक पढी।
सासूए वहू सतट्ठा	=	सास ने बहू को सन्तुष्ट किया।
पुरिसेहि पत्ताणि लिहिआणि	=	आदमियो न पत्र लिखे।
तेहि भिच्चो पेसिओ	=	उन्होने नौकर को भेजा।

हिन्दी मे अनुवाद करो

पवणजएण अजणा पुच्छिआ। मए तुज्झ अवराहा ण कओ। लकाहिवएण दूआ पेसिओ। आयरिएण सीसा ण सतुट्ठा। मन्तीहि णिवो भणिओ। वहूए घरस्स कज्जाणि ण करिज्जीअ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मेरे द्वारा देव पूजा गया। राजा के द्वारा हम सब पूछे गय। हमारे द्वारा साधु को नमन किया गया। कुलपति द्वारा छात्र ताडित किया गया। बालिका द्वारा फूल सूघा गया। उनके द्वारा फल खाया गया। तपस्वी द्वारा सयम पाला गया।

तेण अहं पासिहिमि	=	उसके द्वारा मैं देखा जाऊँगा।
निवेण अम्हे पासिहामो	=	राजा के द्वारा हम देखे जायेंगे।
मए तुमं पासिहिसि	=	मेरे द्वारा तुम देखे जाओगे।
सुधिणा तुम्हे पासिहित्था	=	विद्वान् के द्वारा तुम सब देखे जाओगे।
तुमए सो पासिहिइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जायगा।
साहुणा ते पासिहिंति	=	साधु के द्वारा वे देखे जायेंगे।

निर्देश – पाठ ७६ के उदाहरण वाक्यों एवं अनुवाद वाक्यों में भविष्यकाल की सामान्य क्रियाएं लगाकर कर्मवाच्य के प्राकृत वाक्य बनाओ।

विधि एवं आज्ञा

तुमए अहं पासीअमु/पासिज्जमु	=	तुम्हारे द्वारा मैं देखा जाऊं।
अम्हे पासीअमो/पासिज्जमो	=	हम सब देखे जाय।
तेण तुमं पासीअहि/पासिज्जहि	=	उसके द्वारा तुम देखे जाओ।
निवेण तुम्हे पासीअह/पासिज्जह	=	राजा के द्वारा तुम सब देखे जाओ।
मए सो पासीअउ/पासिज्जउ	=	मेरे द्वारा वह देखा जाय।
सुधिणा ते पासीअंतु/पासिज्जंतु	=	विद्वान् के द्वारा वे सब देखे जाय।

उदाहरण वाक्य

जुवईए साडी कीणीअउ	=	युवति के द्वारा साड़ी खरीदी जाय।
तेण कंदुओ ण खेलीअउ	=	उसके द्वारा गेंद न खेली जाय।
सीसेहि सत्थाणि सुणीअंतु	=	शिष्यों के द्वारा शास्त्र सुने जाय।
सुधिणो नमिज्जंतु	=	विद्वानों को नमन किया जाय।
तुमए अहं पुच्छीअमु	=	तुम्हारे द्वारा मैं पूछा जाऊं।

प्राकृत में अनुवाद करो

बालिका के द्वारा जल पिया जाय। राजा के द्वारा चित्र देखा जाय। छात्र के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाय। आदमी के द्वारा पत्र न लिखा जाय। कुलपति के द्वारा मैं वहाँ भेजा जाऊँ। उनके द्वारा वह ताड़ित न किया जाय। युवति के द्वारा आटा पीसा जाय।

क्रियाकोश

अणुसंध	=	खोजना	अवधार	=	निश्चय करना
अत्थम	=	अस्त होना	आसास	=	आश्वासन देना
अब्भत्थ	=	सत्कार करना	उवदंस	=	दिखाना
अब्भुट्ठ	=	आदर देना	गरह	=	घृणा करना
अभिणंद	=	प्रशंसा करना	गुंफ	=	गूंथना

पाठ ७७

भाववाच्य क्रिया प्रयोग

वर्तमानकाल

मए हसीअइ/हसिज्जइ	=	मेरे द्वारा हसा जाता है।
अम्हेहि हसीअइ/हसिज्जइ	=	हमारे द्वारा हँसा जाता है।
तुमए धावीअइ/धाविज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा दौडा जाता है।
तुम्हेहि धावीअइ/धाविज्जइ	=	तुम सबके द्वारा दौडा जाता है।
तेण झाईअइ/झाइज्जइ	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाता है।
तेहि झाईअइ/झाइज्जइ	=	उनके द्वारा ध्यान किया जाता है।
वालाए णच्चीअइ/णच्चिज्जइ	=	बालिका के द्वारा नाचा जाता है।
मोरेहि णच्चीअइ/णच्चिज्जइ	=	मोरो के द्वारा नाचा जाता है।
छत्तेण भणीअइ/भणिज्जइ	=	छात्र के द्वारा पढा जाता है।
सीसेहि भणीअइ/भणिज्जइ	=	शिष्यो के द्वारा पढा जाता है।

भूतकाल

मए हसीअईअ/हसिज्जीअ	=	मेरे द्वारा हसा गया/मैं हँसा।
मए हसिअ	=	" "
तेण झाईअईअ/झाइज्जीअ	=	उसके द्वारा ध्यान किया गया।
तेण झाइअ	=	" " /उसने ध्यान किया।
सीसेहि भणीअईअ/भणिज्जीअ	=	शिष्यो के द्वारा पढा गया।
सीसेहि भणिअ	=	" " / शिष्यो ने पढा।

भविष्यकाल

तेण पासिहिइ	=	उसके द्वारा देखा जायगा।
अम्हेहि पासिहिइ	=	हम सबके द्वारा देखा जायगा।
मए भणिहिइ	=	मेरे द्वारा पढा जायेगा।
वालाए भणिहिइ	=	बालिका के द्वारा पढा जायगा।

विधि एवं आज्ञा

मए सुणीअउ/सुणिज्जउ	=	मेरे द्वारा सुना जाय।
सीसेहि सुणीअउ/सुणिज्जउ	=	शिष्यो के द्वारा सुना जाय।
तुमए नमीअउ/नमिज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा नमन किया जाय।
वहूहि नमीअउ/नमिज्जउ	=	वहूओ के द्वारा नमन किया जाय।

क्रियाकोश

उक्खिव	=	फेंकना	रंध	=	पकाना
घेत्त	=	ले जाना	लुक्क	=	छिपना
ढुक्क	=	भेंट करना	विअस	=	खिलना
बुडड	=	डूबना	निहुण	=	नाचना
मुस	=	चोरी करना	विण्णव	=	निवेदन करना

पाठ ७८

नियम कर्मवाच्य भाववाच्य

नि० ८१– प्राकृत में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के प्रयोग होते हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता को प्रथमा विभक्ति और कर्म को द्वितीया विभक्ति होनी है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। इसके नियम आप पाठ २० में सीख चुके हैं।

कर्मवाच्य

नि० ८२– कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। क्रिया का लिंग वचन और पुरुष कर्म के अनुसार रहता है।

नि० ८३– मूल क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने के लिए उसमें ईअ अथवा इज्ज प्रत्यय लगाया जाता है। उसके बाद वर्तमान, भूतकाल, विधि आज्ञा के प्रत्यय लगाकर क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

मूलक्रिया	वाच्य प्रत्यय	वर्तमान	भू० का०	विधि आज्ञा
पास + ईअ	पासीअ—	पासीअमि	पासीअईअ	पासीअमु
पास + इज्ज =	पासिज्ज—	पासिज्जमि	पासिज्जीअ	पासिज्जमु

नि० ८४– कर्मवाच्य या भाववाच्य में भविष्यकाल के प्रयोगों में ईअ या इज्ज प्रत्यय मूल क्रिया में नहीं लगते हैं। अतः सामान्य भविष्यकाल के प्रत्यय लगकर ही क्रियाएं प्रयुक्त होती हैं। यथा— पासिहिमि पासिहामो इत्यादि।

नि० ८५– भूतकाल के कर्मवाच्य या भाववाच्य में भूतकाल के कृदन्तों का भी प्रयोग होता है। इनमें ईअ या इज्ज प्रत्यय नहीं लगते। कृदन्तों के प्रयोग कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार होते हैं। यथा—

तेण छत्तो दिट्ठो	=	उसके द्वारा छात्र को देखा गया।
तेण बाला दिट्ठा	=	उसके द्वारा बालिका को देखा गया।
तेण मित्तं दिट्ठं	=	उसके द्वारा मित्र को देखा गया।

नि० ८६– भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। कर्म नहीं रहता और क्रिया सभी कालों में अन्य पुरुष एकवचन में होती है। जैसे—

तृतीया वि	व का	भू का	भ का	विधि आज्ञा
अम्हेहि	हसिज्जइ	हसिज्जीअ	हसिहिइ	हसिज्जउ
सीसहि	भणीअइ	भणीअईअ	भणिहिइ	भणीअउ
तेण	जाणिज्जइ	जाणिज्जीअ	जाणिहिइ	जाणीअउ
मए	पासीअइ	पासीअईअ	पासिहिइ	पासीअउ

कर्मवाच्य कृदन्त प्रयोग

वर्तमान कृदन्त

मए पढीअतो/पढीअमाणो गथो = मेरे द्वारा पढा जाता हुआ ग्रन्थ ।
तुमए पढीअती/पढीअमाणी गाहा = तुम्हारे द्वारा पढी जाती हुई गाथा ।
तेण पढीअत/पढीअमाण पोत्थअ = उसके द्वारा पढी जाती हुई पुस्तक ।

भूत कृदन्त

मए पढिओ गथो = मेरे द्वारा पढा हुआ ग्रन्थ ।
तुमए पढिआ गाहा = तुम्हारे द्वारा पढी हुई गाथा ।
तेण पढिअ पोत्थअ = उसके द्वारा पढी हुई पुस्तक ।

भविष्य कृदन्त

रामेण पढिस्समाणो गथो = राम के द्वारा पढा जाने वाला ग्रन्थ ।
बालाए पढिस्समाणी गाहा = बालिका के द्वारा पढी जाने वाली गाथा ।
छत्तेण पढिस्समाण पोत्थअ = छात्र के द्वारा पढी जाने वाली पुस्तक ।

विधि कृदन्त

मए पढणीओ/पढेअव्वो गथो = मेरे द्वारा पढने योग्य ग्रन्थ ।
बालाए पढणीआ/पढेअव्वा गाहा = बालिका के द्वारा पढने योग्य गाथा ।
तेण पढणीअ/पढेअव्व पोत्थअ = उसके द्वारा पढने योग्य पुस्तक ।

उदाहरण वाक्य

मए कहीअमाणा कहा अत्थि = मेरे द्वारा कही जाती हुई कथा है ।
तेण नमिआ बाला भणइ = उसके द्वारा नमन की हुई बालिका पढती है ।
तुमए भुंजिस्समाण फल णत्थि = तुम्हारे द्वारा खाये जाने वाला फल नहीं है ।
बालाए मुणेअव्व चरित्त अत्थि = बालिका के द्वारा जानने योग्य चरित्र है ।

अन्य प्रयोग

मए गथो पढीअता = मेरे द्वारा ग्रन्थ पढा जाता है ।
तुमए गथो पढिओ = तुम्हारे द्वारा ग्रन्थ पढा गया ।
बालाए गथो पढिस्समाणो = बालिका के द्वारा ग्रन्थ पढा जायेगा ।
तेण गथो पढणीओ = उसके द्वारा ग्रन्थ पढा जाना चाहिए ।
जुवईए गाहा पढिआ = युवती के द्वारा गाथा पढी गयी ।
पुरिसेण पत्ताणि लिहिआणि = आदमियों के द्वारा पत्र लिखे गये ।
निवेण धण गिण्हिअ = राजा के द्वारा धन लिया गया ।

वर्तमान कृदन्त

मए हसीअत/हसीअमाण = मेरे द्वारा हँसा जाता है ।
तुमए धावीअत/धावीअमाण = तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाता है ।
वालाए णच्चीअत/णच्चीअमाण = बालिका के द्वारा नाचा जाता है ।
तेण झाईअत/झाईअमाण = उसके द्वारा ध्यान किया जाता है ।

भूत कृदन्त

मए हसिअ = मैं हँसा/मेरे द्वारा हँसा गया ।
तुमए धाविअ = तुम दौड़े/तुम्हारे द्वारा दौड़ा गया ।
बालाए णच्चिअ = बालिका नाची/द्वारा नाचा गया ।
तेण झाईअ = उसने ध्यान किया ।

भविष्य कृदन्त

मए हसिस्समाण = मेरे द्वारा हँसा जाने वाला है ।
तुमए धाविस्समाण = तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाने वाला है ।
बालाए णच्चिस्समाण = बालिका द्वारा नृत्य किया जाना है ।
तेण झाइस्समाण = उसके द्वारा ध्यान किया जाना है ।

विधि कृदन्त

मए हसेअव्व/हसणीअ = मेरा द्वारा हँसा जाना चाहिए ।
तुमए धावेअव्व/धावणीअ = तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाना चाहिए ।
बालाए णच्चेअव्व/णच्चणीअ = बालिका के द्वारा नृत्य किया जाना चाहिए ।
तेण झाएअव्व/झाणीअ = उसके द्वारा ध्यान किया जाना चाहिए ।

हिन्दी मे अनुवाद करो

सुधिणा हसीअमाण । पुरिसेहि धावीअत । साहुणा अणुकंपीअमाण । जुवईए णच्चीअत । बालाए भणिअ । बहूहि नमिअ । छत्तेहि पत्तिस्समाण । साहूहि झाइस्समाण । अम्हेहि धावणीअ । जुवईहि णच्चेअव्व । तुम्हेहि ण गच्छेअव्व ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

शिष्य के द्वारा पढ़ा जाता है । बालकों के द्वारा दौड़ा जाता है । उनके द्वारा नमन नहीं किया जाता है । विद्वानों के द्वारा कहा गया । तपस्वियों के द्वारा तप किया गया । हमारे द्वारा सुना गया । राजा के द्वारा कहा जाने वाला है । तुम्हारे द्वारा नृत्य किया जाना है । उसके द्वारा आज नहीं हँसा जाना चाहिए । छात्रों के द्वारा ध्यान किया जाना चाहिए ।

पाठ ८०

नियम वाच्च कृदन्त-प्रयोग

नियम ८७ – कमवाच्य एव भाववाच्य म सामान्य नियाम्रो के ग्रतिरिक्त विभिन्न वालो के कृन्तो का प्रयाग भी क्रिया के रूप म होता है। यथा—

सा क्रि प्रयोग		कृदन्त प्रयोग
(व०) तेरा गयो पढीग्रइ	=	तेरा गयो पढीग्रमाणो।
(भू०) मए गयो पढीग्रईग्र	=	मए गयो पढिग्रो।
(भ०) रामेण गयो पढिहिइ	=	रामरा गयो पढिस्समाणा।
(वि०) तुमए गयो पढीग्रउ	=	तुमए गयो पढणीग्रो।

नि० ८८— कमणि कृदन्त प्रयोगा म सामान्य क्रिया म वाच्य प्रत्यय ईग्र या इज्ज जाडकर व० कृदन्त प्रत्यय ग्रत या माण जाडे जाते हैं। यथा—

पढ + ईग्र = पढीग्र + ग्रत/माण = पढीग्रत पढीअमाण

पढ + इज्ज = पढिज्ज + ग्रत/माण = पढिज्जत पढिज्जमाण

नि० ८९— कमवाच्य म कृदन्ता का प्रयोग कम के ग्रनुसार पु० स्त्री० एव नपु० रूपो म होता है। यथा—

पढीग्रतो (पु०), पढीग्रती (स्त्री०) पढीग्रत (नपु०)

नि० ९०— भू० के कृदन्तो म वाच्य का कोई प्रत्यय नहा लगता है। व कम के लिंग के ग्रनुसार प्रयुक्त होत हैं। यथा—

पढिग्रो (पु०) पढिग्रा (स्त्री०) पढिग्र (नपु०)

नि० ९१— निकट भविष्य मे होने वाली क्रिया को सूचित करने के लिए भविष्य कृदन्ता का प्रयोग किया जाता है। मूल धातु म कमवाच्य प्रयोग के लिए इस्समाण प्रत्यय जोडा जाता है। यथा—

पढ + इस्समाण = पढिस्समाण।

नि० ९२— विधि कृदन्ता का प्रयोग वाच्य म ही होना है। ग्रत इनम वाच्य का कोई प्रत्यय नही लगाया जाता। यथा—

पढणीग्रो पढणीग्रा पढणीग्र।

नि० ९३— भाववाच्य म सभी कालो व कृदन्त कम न रहने स नपु० लिंग एकवचन म ही प्रयुक्त होत हैं। यथा—

व०– हसीग्रत, भू०– हसिग्र भवि०– हसिस्समाण वि०– हसेग्रव्व।

कर्मणि-प्रयोग चार्ट

कमवाच्य

मूलक्रिया	प्रत्यय	वतमान	भूत०	भविष्य०	विधि / आज्ञा	व० कृ०	भू० कृ०	भ० कृ०
पास	ईअ	पासीअइ	पासीअईअ	पासिहिइ	पासीअउ	पासीअमाणो	पासिओ	पासिस्समाणो
,,	इज्ज	पासिज्जइ	पासिज्जीअ	,,	पासिज्जउ	पासिज्जमाणो	,,	,,

निर्देश — कमवाच्य के प्रत्यय ईअ/इज्ज क्रिया म लगाने के वाद क्रिया के रूप क्रम के अनुसार वनत हैं। विभिन्न क्रियाओ म ये प्रत्यय लगाकर कमवाच्य की क्रिया बनाने का अभ्यास करिए।

भाववाच्य

मूलक्रिया	प्रत्यय	वतमान	भूत०	भविष्य०	विधि / आज्ञा	व० कृ०	भूत कृ०	भ० कृ०
हस	ईअ	हसीअइ	हसीअईअ	हसिहिइ	हसीअउ	हसीअमाणं	हसिअ	हसिस्समाणं
,,	इज्ज	हसिज्जइ	हसिज्जीअ	,,	हसिज्जउ	हसिज्जमाणं	,,	,,

निर्देश — भाववाच्य की क्रिया सभी कालो म अन्य पुरुष एकवचन मे ही प्रयुक्त होती है। तथा भाववाच्य कृदन्त नपुंसकलिंग एकवचन मे ही प्रयुक्त होते हैं।

पाठ ८१

प्रेरणाथक क्रिया के प्रयोग **१ प्रेरक सामान्य क्रियाए**

क्रियाए

पिवाव	=	पिलाना	सीखाव	=	सिखाना
खेलाव	=	खिलाना	जग्गाव	=	जगाना
हसाव	=	हँसाना	कराव	=	कराना
लिहाव	=	लिखाना	उट्ठाव	=	उठाना
णच्चाव	=	नचाना	सयाव	=	सुलाना

वतमानकाल

अह सीस पढावेमि	=	मैं शिष्य को पढाता हूँ।
अम्हे बालाओ पढावेमो	=	हम बालिकाओ को पढाते हैं।
तुम त पढावेसि	=	तुम उसको पढाते हो।
तुम्हे छत्ता पढावेइत्था	=	तुम सब छात्रो को पढाते हो।
सो मम पढावेइ	=	वह मुझे पढाता है।
ते जुवइओ पढावेंति	=	वे युवतियो को पढाते हैं।

भूतकाल

अह सीस पढावीअ	=	मैंने शिष्य को पढाया।
अम्हे बालाओ पढावीअ	=	हमने बालिकाओ को पढाया।
सो मम पढावीअ	=	उसने मुझे पढाया।

भविष्यकाल

अह सीस पढाविहिमि	=	मैं शिष्य को पढाऊँगा।
अम्हे बालाओ पढाविहामो	=	हम बालिकाओ को पढायेंगे।
तुम त पढाविहिसि	=	तुम उसे पढाओगे।

इच्छा/आज्ञा

अह सीस पढावमु	=	मैं शिष्य को पढाऊँ।
तुम त पढावहि	=	तुम उसे पढाओ।
सो मम पढावउ	=	वह मुझे पढाये।

प्राकृत मे अनुवाद करो

मैं उसे जल पिलाता हूँ। तुम मुझे पत्र लिखाते हो। उसने शिष्य को क्या सिखाया? तुमने यहाँ बालिका को नचाया। गुरु ने छात्र को पढाया। विद्वान् साधु को उठाते हैं। बहू बच्चे को सुलायगी। सास बहू को जगायगी। तुम उसे न हँसाओ। राजा नौकर से काम कराये।

सम्बन्ध कृदन्त

पिवाविऊण	= पिलाकर	लिहाविऊण	= लिखाकर
खेलाविऊण	= जगाकर	जग्गाविऊण	= जगाकर
हसाविऊण	= हंसाकर	पढाविऊण	= पढाकर

हेत्वर्थ कृदन्त

पिवाविउं	= पिलाने के लिए	लिहाविउं	= लिखाने के लिए
खेलाविउं	= खिलाने के लिए	जग्गाविउं	= जगाने के लिए
हसाविउं	= हँसाने के लिए	पढाविउं	= पढ़ाने के लिए

विधि कृदन्त

पिवावणीअ	= पिलाने योग्य	लिहावणीअ	= लिखाने योग्य
खेलावणीअ	= खिलाने योग्य	जग्गावणीअ	= जगाने योग्य
हसावणीअ	= हँसाने योग्य	पढावणीअ	= पढ़ाने योग्य
हसावअव्व	= हँसाने योग्य	पढावअव्व	= पढ़ाने योग्य

वत० कृदन्त

पिवावमाणो	= पिलाता हुआ	लिहावतो	= लिखाता हुआ
खेलावमाणो	= खिलाता हुआ	जग्गावतो	= जगाता हुआ
हसावमाणो	= हँसाता हुआ	पढावतो	= पढ़ाता हुआ

भूत कृदन्त

पिवाविओ	= पिलाया हुआ	लिहाविओ	= लिखाया हुआ
खेलाविओ	= खिलाया हुआ	जग्गाविओ	= जगाया हुआ
हसाविओ	= हँसाया हुआ	पढाविओ	= पढ़ाया हुआ

भविष्य कृदन्त

पिवाविस्सतो	= पिलाया जाने वाला	लिहाविस्सतो	= लिखाया जाने वाला
खेलाविस्सतो	= खिलाया जाने वाला	जग्गाविस्सतो	= जगाया जाने वाला
हसाविस्सतो	= हँसाया जाने वाला	पढाविस्सतो	= पढ़ाया जाने वाला

प्राकृत में अनुवाद करो

वह दूध पिलाकर जाय। मैं उसे पढ़ाने के लिए आऊँगा। यह दूध पिलाने योग्य नहीं है। वह ग्रन्थ लिखाने योग्य है। गुरु हँसाता हुआ पढ़ाता है। बालिका जगाती हुई हँसती है। उनके द्वारा लिखाया गया पत्र लाओ। मेरे द्वारा पढ़ायी गयी गाथा कहो। पिलाया जाने वाला जल कहाँ है?

पाठ ८२

३ प्रेरक वाच्य प्रयोग

(ग) प्रेरक कर्मवाच्य सामान्य क्रियाएं

पिवावीअ	=	पिलाया जाना	सीखाविज्ज	=	सिखाया जाना
खेलावीअ	=	खिलाया जाना	जग्गाविज्ज	=	जगाया जाना
हसावीअ	=	हँसाया जाना	कराविज्ज	=	कराया जाना
लिहावीअ	=	लिखाया जाना	उट्ठाविज्ज	=	उठाया जाना
णच्चावीअ	=	नचाया जाना	सयाविज्ज	=	सुलाया जाना
पढावीअ	=	पढाया जाना	पासाविज्ज	=	दिखाया जाना

वर्तमानकाल

जुवईए बालअो पासाविज्जइ	=	युवति के द्वारा बालक दिखाया जाता है।
मए घडो कराविज्जइ	=	मेरे द्वारा घडा बनवाया जाता है।
तेण बाला सीखाविज्जइ	=	उसके द्वारा बालिका सिखायी जाती है।
गुरुणा पोत्थअ पढावीअइ	=	गुरु के द्वारा पुस्तक पढायी जाती है।

भूतकाल

मए बालअो पासाविज्जीअ	=	मेरे द्वारा बालिका दिखायी गयी है।
तण घडो कराविज्जीअ	=	उसके द्वारा घडा बनवाया गया है।
जुवईए बाला णच्चावीअईअ	=	युवति के द्वारा बालिका नचायी गयी है।

भविष्यकाल

तेण अहं पासाविहिमि	=	उसके द्वारा मैं दिखाया जाऊँगा।
मए तुम णच्चाविहिसि	=	मेरे द्वारा तुम नचाये जाओगे।
गुरुणा पोत्थअ पढाविहिइ	=	गुरु के द्वारा पुस्तक पढायी जायेगी।

विधि / आज्ञा

तेण पत्त लिहावीअउ	=	उसके द्वारा पत्र लिखाया जाय।
तुमए कंदुआ खेलावीअउ	=	तुम्हारे द्वारा गेंद खिलायी जाय।
छत्तहिं सुधिणो नमावीअन्तु	=	छात्रों के द्वारा विद्वानों को नमन कराया जाय।
तेण अहं ण उठाविज्जमु	=	उसके द्वारा मुझे न उठाया जाय।

प्राकृत में अनुवाद करो

उसके द्वारा बालिका को जल पिलाया जाय। तुम्हारे द्वारा शिष्य को सिखाया जाय। तुम्हारे द्वारा वह उठाया जाता है। छात्र के द्वारा शास्त्र नहीं पढा जाता है। युवति के द्वारा बालकों को जल पिलाया गया। मेरे द्वारा बालिकाओं को गीत सिखाया गया। माता के द्वारा मैं जगाया जाऊंगा। पिता के द्वारा घडा बनाया जायगा। हमारे द्वारा चित्र दिखाये जायेंगे।

(ख) प्रेरक कर्मवाच्य कृदन्त क्रियाएं

वर्तमान कृदन्त

पढावीअतो/पढावीअमाणो गंथो	=	पढाया जाता हुआ ग्रन्थ।
पढावीअती/पढावीअमाणी गाहा	=	पढायी जाती हुई गाथा।
पढावीअत/पढावीअमाण पोत्थअं	=	पढायी जाती हुई पुस्तक।

भूत कृदन्त

पढाविओ गंथो	=	पढाया गया ग्रन्थ।
पढाविआ गाहा	=	पढायी गयी गाथा।
पढाविअं पोत्थअं	=	पढायी गयी पुस्तक।

भविष्य कृदन्त

पढाविस्समाणो गंथो	=	पढाया जाने वाला ग्रन्थ।
पढाविस्समाणी गाहा	=	पढायी जाने वाली गाथा।
पढाविस्समाणं पोत्थअं	=	पढायी जाने वाली पुस्तक।

विधि कृदन्त

पढावणीओ गंथो	=	पढाने योग्य ग्रन्थ।
पढावणीआ गाहा	=	पढाने योग्य गाथा।
पढावणीअं पोत्थअं	=	पढाने योग्य पुस्तक।

प्रयोग वाक्य

मए गंथो पढावीअमाणो	=	मेरे द्वारा ग्रन्थ पढाया जाता है।
तेण गाहा पढाविआ	=	उसके द्वारा गाथा पढायी गयी।
तुमए पोत्थअं पढाविस्समाणं	=	तुम्हारे द्वारा पुस्तक पढायी जायगी।
गुरुणा गंथो पढावणीओ	=	गुरु के द्वारा ग्रन्थ पढाया जाना चाहिए।

प्राकृत में अनुवाद करो

माता के द्वारा बालक जगाया जाता है। गुरु के द्वारा शिष्य पढाये जाते हैं। उनके द्वारा गेंद गिरायी गया। साधु के द्वारा जल पिलाया गया। राजा के द्वारा पत्र लिखाया गया। मेरे द्वारा शास्त्र पढाया जायगा। तुम्हारे द्वारा कथा सुनायी जायगी। उनके द्वारा तुमको नमन किया जायेगा। तुम सबके द्वारा साधु को पानी पिलाया जाना चाहिए। गुरु के द्वारा छात्र को सिखाया जाना चाहिए। तुम्हारे द्वारा काम किया जाना चाहिए।

(ग) प्रेरक भाववाच्य सामान्य क्रियाएं

वर्तमानकाल

मएहसावीग्रइ/हसाविज्जइ	=	मेरे द्वारा हंसाया जाता है।
ग्रम्हेहि हसावीग्रइ/हसाविज्जइ	=	हमारे द्वारा हँसाया जाता है।
तुमए धावावीग्रइ/धावाविज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जाता है।
तेण भावीग्रइ/भाविज्जइ	=	उसके द्वारा ध्यान कराया जाता है।
बालाए णच्चावीग्रइ/णच्चाविज्जइ	=	बालिका के द्वारा नचाया जाता है।
छत्तेण भणावीग्रइ/भणाविज्जइ	=	छात्र के द्वारा पढ़ाया जाता है।

भूतकाल

मए हसावीग्रईग्र/हसाविज्जीग्र	=	मेरे द्वारा हँसाया गया।
तेण धावावीग्रईग्र/धावाविज्जीग्र	=	उसके द्वारा दौड़ाया गया।
तुमए णच्चावीग्रईग्र/णच्चाविज्जीग्र	=	तुम्हारे द्वारा नचाया गया।
छत्तेण भणावीग्रईग्र/भणाविज्जीग्र	=	छात्र के द्वारा पढ़ाया गया।

भविष्यकाल

तेण हसाविहिइ/हसाविज्जिहिइ	=	उसके द्वारा हँसाया जायगा।
ग्रम्हेहि पढाविहिइ/पढाविज्जिहिइ	=	हमारे द्वारा पढ़ाया जायेगा।
तुमए धाविहिइ/धाविज्जिहिइ	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जायगा।

विधि एवं आज्ञा

तेहि सुणावीग्रउ/सुणाविज्जउ	=	उनके द्वारा सुनाया जाय।
तेण पढावीग्रउ/पढाविज्जउ	=	उसके द्वारा पढ़ाया जाय।
तुमए नमावीग्रइ/नमाविज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा नमन कराया जाय।

क्रियाकोश

मोह	=	मोहित होना	कूद	=	कूदना
लुब्भ	=	लोभ करना	चव्व	=	चबाना
संगह	=	संग्रह करना	बुक्क	=	भौंकना
सलह	=	प्रशंसा करना	थक्क	=	थकना
संवर	=	रोकना	कंडूग्र	=	खुजाना
सीग्र	=	खेद करना	लुण	=	काटना
हर	=	छीनना	वरिस	=	बरसना

(ग) कृदन्त क्रियाएं

वर्तमानकृदन्त

मए हसावीअत/हसावीअमाण	=	मेरे द्वारा हँसाया जाता है/हुआ
तुमए धावावीअत/धावावीअमाण	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जाता है/हुआ
तेण पढावीअत/पढावीअमाण	=	उसके द्वारा पढ़ाया जाता है/हुआ

भूतकृदन्त

मए हसाविअ/हसाविज्ज	=	मेरे द्वारा हँसाया गया/मैंने हसाया।
तुमए धावाविअ/धावाविज्ज	=	तुमने दौड़ाया/तुम्हारे द्वारा दौड़ाया गया।
तेण पढाविअ/पढाविज्ज	=	उसके द्वारा पढ़ाया गया/उसने पढ़ा।

भविष्य कृदन्त

मए हसाविस्समाण	=	मेरे द्वारा हँसाया जायगा।
तुमए धावाविस्समाण	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जायगा।
तेण पढाविस्समाण	=	उसके द्वारा पढ़ाया जायगा।

विधिकृदन्त

मए हसावेअव्व/हसावणीअ	=	मेरे द्वारा हँसाया जाना चाहिए।
तुमए धावावेअव्व/ धावावणीअ	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जाना चाहिए।
तेण पढावेअव्व/पढावणीअ	=	उसके द्वारा पढ़ाया जाना चाहिए।

हिन्दी में अनुवाद करो

पुरिसए सिक्खावीअन्त। सुधिणा दरिसावीअमाण। निवए ताडाविअ। तए रिक्खाविज्ज। अम्हे पिवाविस्समाण। तुमए सुणाविस्समाण। तेण पमावणीअ। मए लिहावअव्व।

प्राकृत में अनुवाद करो

कवि द्वारा हँसाया जाता है। गुरु के द्वारा पढ़ाया जाता है। राजा के द्वारा दौड़ाया जाता है। मेरे द्वारा सिखाया गया। मानु के द्वारा दिखाया गया। बालिका द्वारा भेजा जायगा। नौकर द्वारा कराया जाना चाहिए। उनके द्वारा नहीं हँसाया जाना चाहिए। तुम्हारे द्वारा क्षमा कराया जाना चाहिए। युवति के द्वारा नृत्य कराया जाना चाहिए।

पाठ ८४

४ प्रेरणायक क्रिया के अन्य प्रयोग

(क) कर्तृ वाच्य

सामान्य क्रियाएँ

अह् सीसेण पढावेमि	=	मैं शिष्य से पढवाता हूं ।
तुम मए पढावेसि	=	तुम मुझसे पढवाते हो ।
अम्हे तुमए पढावीअ	=	हमने तुमसे पढवाया ।
ते वालाहि पढाविहिंति	=	वे बालिकाओं से पढवायेंगे ।
सा तेण पढावउ	=	वह उससे पढवाये ।

कृदन्त क्रियाएँ

तेण पढाविऊण	=	उससे पढवाकर ।
मए लिहाविऊण	=	मुझसे लिखवाकर ।
तुमए पढाविउं	=	तुमसे पढवाने के लिए ।
छत्तेण लिहाविउं	=	छात्र से लिखवाने के लिए ।
सीसेण पढावणीअ	=	शिष्य से पढवाने योग्य ।
वालाए लिहावतो	=	बालिका से लिखवाता हुआ ।
तेण पढावमाणो	=	उससे पढवाता हुआ ।
मए लिहाविओ	=	मुझसे लिखवाया हुआ ।
तुमए पढाविस्सता	=	तुमसे पढवाया जाने वाला ।

(ख) कर्म एवं भाव वाच्य

मए छत्तेण पात्थअ पढावीअइ	=	मेरे द्वारा छात्र से पुस्तक पढवायी जाती है ।
निवेण तेण घडो कराविज्जीअ	=	राजा के द्वारा उससे घडा बनवाया गया ।
गुरुणा वालाए णच्चाविहिइ	=	गुरु के द्वारा बालिका से नचवाया जायगा ।
तुमए तेण पढाविज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा उससे पढवाया जाय ।

कृदन्त प्रयोग

तेण पढावीअता गथा	=	उससे पढवाया जाता हुआ ग्रन्थ ।
मए लिहाविअ पत्ता	=	मुझसे लिखवाया गया पत्र ।
तेण पढाविस्समाणी गाहा	=	उससे पढवायी जाने वाली गाथा ।
छत्तेण लिहावणीअ पोत्थअ	=	छात्र से लिखवाने योग्य पुस्तक ।

प्राकृत मे अनुवाद करो

राजा नौकर से काम करवाता है । गुरु शिष्य से लिखवाता है । युवति बालिका से नृत्य करवाती है । तुमने उससे पत्र लिखवाकर भेजा । पुत्र पिता से पुस्तक खरीदवाने के लिए रोता है । यह गाथा शिष्य से पढवाने योग्य नही है । यह पत्र उसके द्वारा लिखवाया हुआ है ।

पाठ ८५

नियम प्रेरणार्थक क्रिया-प्रयोग

नि० ९४ प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग तब होता है जब किसी भी क्रिया को करने में कर्ता स्वतन्त्र नहीं होता है। क्रिया करने के लिए (i) कर्ता दूसरे को प्रेरणा देता है अथवा (ii) स्वयं दूसरे के लिए वह क्रिया करता है। यथा—

(i) अहं सीसेण पढावमि = मैं शिष्य से पढ़वाता हूँ।
(ii) अहं सीसं पढावमि = मैं शिष्य को पढ़ाता हूँ।

इन दोनों वाक्यों में पढ़ने की क्रिया में अहं (मैं) की प्रेरणा है। अतः अहं के साथ सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले पढामि क्रिया रूप में प्रेरणार्थक आव प्रत्यय जुड़ जाने से पढ + आव + मि = पढावमि रूप बन जाता है।

नि० ९५ प्राकृत में प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के लिए मूल क्रिया में आव प्रत्यय जोड़ने के बाद काल और पुरुष-बोधक प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे—

मू० क्रि०		प्रे० प्र०			उ० पु० ए० व०		प्रेरणार्थक क्रियारूप
पढ	+	आव	——		+ मि	=	पढावमि (वर्त०)
पढ	+	आव	+	ईअ	+ —	=	पढावीअ (भूत०)
पढ	+	आव	+	इहि	+ मि	=	पढाविहिमि (भवि०)
पढ	+	आव	——		+ मु	=	पढावमु (इच्छा/आज्ञा)

नि० ९६ प्रेरणार्थक क्रिया के सामान्य प्रयोगों में जिससे वह क्रिया करायी जाती है उस कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे— अहं सीसेण पढावमि। (देखें पाठ ८४) और जिसके लिए वह क्रिया की जाती है उस कर्ता में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे— अहं सीसं पढावमि।

नि० ९७ प्रेरणार्थक कृदन्त रूपों में मूल क्रिया में आव प्रत्यय जोड़ने के बाद विभिन्न कृदन्तों के प्रत्यय जोड़े जाते हैं।
जैसे—

स० कृ०	—	पढ + आव + इ + ऊण	=	पढाविऊण
हे० कृ०	—	पढ + आ + इ + उ	=	पढाविउ
वि० कृ०	—	पढ + आव + अणीअ	=	पढावणीअ
		,, + ए + अव्व	=	पढावेअव्व

भ० कृ० — पढ + आव + इस्सत = पढाविस्सत

निर्देश — इन सभी प्रेरक कृदन्तरूपों के पु० स्त्री० एवं नपुं० रूप बनाकर विशेषण जैसे प्रयुक्त किये जा सकते हैं। इनके प्रयोग एवं नियम आप कृदन्त विशेषण पाठों में सीख चुके हैं। यथा—

पढावणीआ गाहा = पढवाने योग्य गाथा। (स्त्री० वि० कृ०)
पढावतो पुरिसो = पढाता हुआ पुरुष। (पु० व० कृ०)
पढाविअं पोत्थअं = पढवायी हुई पुस्तक। (नपुं० भू० कृ०)
पढाविस्सतो गंथो = पढाया जाने वाला ग्रन्थ (पु० भवि० कृ०)

नि० ९८ प्रेरक कर्म वाच्य क्रियाएँ बनाने के लिए मूल क्रिया में आवि प्रत्यय जोडकर वाच्य के प्रत्यय जोड़े जाते हैं। उसके बाद विभिन्न कालों के और पुरुष-बोधक प्रत्यय जोड़े जाते हैं जैसे—

मू० क्रि०		प्रे० प्र०		वाच्य प्र०		पु० बो० प्र०		प्रेरकवाच्यरूप
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	इ	=	पढावीअइ (व०का०)
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	ईअ	=	पढाविज्जीअ (भू०का०)
पढ	+	आवि		———	+	हिइ	=	पढाविहिइ (भ०का०)
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	उ	=	पढावीअउ (विधि)

निर्देश — वाच्य क्रियाओं में भविष्यकाल में वाच्य प्रत्यय ईअ/इज्ज नहीं जुड़ते हैं। (देखें नि० ८४) अतः पढाविहिइ में इनका प्रयोग नहीं है।

नि० ९९ (क) प्रेरणायक कर्म वाच्य कृदन्तों में वर्तमान कृदन्त में वाच्य प्रत्यय ईअ जुडता है तथा भविष्य कृदन्त में इस्समाण प्रत्यय जुडता है। यथा—

व०कृ० — पढ + आव + ईअ + माण = पढावीअमाणो (पु०)
भ०कृ० — पढ + आव ———+ इस्समाण = पढाविस्समाणो (पु०)

(ख) अन्य प्रेरणायक कर्म वाच्य कृदन्त सामान्य प्रेरक कृदन्तों की भांति बनते हैं (देखें नि० ९७)।

नि० १०० –(क) प्रेरक भाववाच्य सामान्य क्रियाएँ प्रेरक कर्मवाच्य क्रियाओं की तरह ही बनती हैं (देखें नि० ९८)। ये क्रियाएं अन्य पुरुष के एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं।

(ख) प्रेरक भाववाच्य कृदन्त प्रेरक कर्मवाच्य कृदन्तों के समान ही बनते हैं (देखें, नि० ९९)। ये कृदन्त नपुं० में ही प्रयुक्त होते हैं।

प्रेरणार्थक क्रिया चार्ट

क्रिया प्रयोग

	मू० क्रि०	प्रत्यय	व० का०	भू० का०	भ० का०	वि० आ०
सामान्य क्रिया	पढ	आव	पढावइ	पढावीअ	पढाविहिइ	पढावउ
कमवाच्य	पढ	आव	पढावीअइ	पढावीअईअ	"	पढावीअउ
भाववाच्य	हस	आव	हसावीअइ	हसावीअईअ	"	हसावीअउ

कृदन्त प्रयोग

	मू० क्रि०	प्रत्यय	व० कृ०	भू० कृ०	भ० कृ०	वि० कृ०	स० कृ०	हे० कृ०
सामान्य कृदन्त	पढ	आव	पढावमाणो पढावतो	पढाविओ	पढाविस्सतो	पढावणीअ/ पढावेअव्व	पढाविऊण	पढाविउ
कमवाच्य	पढ	आव	पढावीअमाण पढावीअतो	"	पढाविस्समाणो		"	"
भाववाच्य	हस	आव	हसावीअमाण हसावीअत	हसाविअ	हसाविस्समाण	हसावणीअ/ हसावेअव्व	हसाविऊण	हसाविउ

पाठ ८६

क्रियातिपत्ति के प्रयोग

तुम भाणेण पढेज्जा अण्णहा सहल ण होज्जा ।	= तुम ध्यान से पढो अन्यथा सफल नही होओगे ।
जइ अह कम्म ण करेज्जा ता धण ण लभेज्जा ।	= यदि मैं काम नही करूँ तो धन नही मिलेगा ।
जइ समयम्मि वेज्जो ण आगच्छेज्जा ता णिवो अवस्स मरेज्जा ।	= यदि समय पर वद्य नही आता तो राजा अवश्य मर जाता ।
जया दीवो होज्जा तया अधयारो नस्सेज्जा ।	= जब दीपक होता है तब अधकार नष्ट हो जाता है ।
आयासे जया विज्जुला चमक्केज्जा तया मेहा वरसेज्जा	= आकाश म जब बिजली चमकती है तब बादल बरसते हैं ।
जइ मग्गमि पयासो होन्तो ता अम्हे खड्डम्मि ण पडन्तो ।	= यदि माग म प्रकाश होता तो हम खड्डे म न गिरत ।

	एकवचन				बहुवचन			
उ० पु०—	हसज्ज	हसेज्जा,	हसन्तो	हसमाणो	हसज्ज	हसेज्जा	हसन्तो	हसमाणा
म० पु०	"	"	"	"	"	"	"	"
अ० पु०	"	"	"	"	"	"	"	"

पढेज्ज	पढेज्जा	पढन्तो	पढमाणा	पढज्ज,	पढज्जा	पढन्ता	पढमाणा
करेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
गच्छेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
भणेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
नमेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
जाणेज्ज	——	——	——	——	——	——	——
होज्ज	होज्जा	होन्तो	होमाणा	होज्ज,	होज्जा	होन्तो	होमाणी
सोज्ज	——	——	——	——	——	——	——
भाज्ज	——	——	——	——	——	——	——

प्राकृत मे अनुवाद करो

यदि तुम वहाँ जाते तो सब जान जाते । यदि हम पहले आ जाते तो अवश्य उनको देखते । यदि मेरे पास धन होता तो मैं विदेश यात्रा करता । रावण यदि शील की रक्षा करता तो राम उसकी रक्षा करते । यदि वहा तालाब न होता तो गाव जल जाता ।

नि० १०१ – क्रियातिपत्ति का प्रयोग प्राय तब होता है जब पूर्व वाक्य मे कोई कारण हो और दूसरे वाक्य मे उसका फल।

नि० १०२ – क्रियातिपत्ति के तीनो पुरुषो, दोनो वचनो और सभी कालो मे क्रिया का एक रूप प्रयुक्त होता है। क्रिया मे ज्ज, ज्जा, न्त एव माण प्रत्यय विकल्प से जुडते हैं। जैसे—

पढ + ए + ज्ज	=	पढेज्ज,	पढ + ए + ज्जा	=	पढेज्जा
पढ + न्त	=	पढन्तो (पु०)	पढ + माण	=	पढमाणो (पु०)
हो + ज्ज	=	होज्ज	हो + ज्जा	=	होज्जा
हो + न्त	=	होन्तो	हो + माण	=	होमाणो

निर्देश – जिन क्रियाओ को आपने सीखा है उनके क्रियातिपत्ति रूप बनाइए और उनके वाक्यो मे प्रयोग कीजिए।

हिन्दी मे अनुवाद करो

तुमए ण भाइअ। तुम न लिहाविहिसि। सो मम ण जगावउ। जुवईए बाला नयाविज्जइ। पुरिसेण चित्त पासावीअइ। गुरुणा गाहा ण लिहाविआ। अम्हेहि पत्त लिहाविज्जइ। तेण सत्थ पढावीअउ। साहू तेण गथ पढाविऊण सुणइ। जया णाण होज्जा तया अण्णाण नस्सेज्जा।

प्राकृत मे अनुवाद करो

हमारे द्वारा नही सुना गया। शिष्य साधु को जगाता है। स्वामी नौकर को सिखायेगा। यह पुस्तक पढने योग्य नही है। तुम्हारे द्वारा गीत लिखाया जायगा। विद्वान् के द्वारा ग्रन्थ पढाया जाना चाहिए। युवती छात्र से पत्र लिखवाती है। यदि मैं वहा पढूगा तो ज्ञान नहीं मिलेगा।

पाठ ८७

संधि प्रयोग

निर्देश – प्राकृत मे संधि का प्रयोग प्रायः वैकल्पिक है अनिवार्य नही। प्राकृत साहित्य मे संधि के कई प्रयोग देखने को मिलते है। प्राकृत वैयाकरणो ने संधि के कुछ नियम भी बतलाये है। प्रारम्भिक जानकारी के लिए कुछ प्रमुख नियम एवं उनके उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं।

१ स्वर-संधि

प्रथम शब्द के अंतिम स्वर एवं द्वितीय शब्द के पहले स्वर मिल जाने पर शब्द मे जो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहते है।

प्राकृत मे स्वर संधि के प्रायः निम्न प्रयोग देखे जाते हैं –

समान स्वर

(१) अ + अ = आ	यथा– जीव	+ अजीव	= जीवाजीव
	णर	+ अहिव	= णराहिव
	धम्म	+ अधम्म	= धम्माधम्म
(२) इ + इ ई + इ = ई	यथा– मुणि	+ ईसर	= मुणीसर
	मुणि	+ इंद	= मुणिंद
	रयणी	+ ईस	= रयणीस
(३) उ + उ ऊ + उ = ऊ	यथा– बहु	+ उअय	= बहूअय
	भाणु	+ उवज्झाय	= भाणूवज्झाय

असमान स्वर

(४) अ + इ अ + ई = ए	यथा– ण	+ इच्छइ	= णेच्छइ
	दिण	+ ईस	= दिणेस
	महा	+ इसि	= महेसि
	राअ	+ इसि	= राएसि
(५) अ + आ, आ + अ = आ	यथा– गीअ	+ आइ	= गीआइ
	कला	+ अहिवइ	= कलाहिवइ
(६) अ + उ अ + ऊ = ओ	यथा– तस्स	+ उवरि	= तस्सोवरि
	समण	+ उवासग	= समणोपासग
	पाअ	+ उण	= पाओण

संयुक्त व्यंजन के पूर्व स्वर

(७) अ + इ = इ	यथा– गअ	+ इंद	= गइंद
	णर	+ इंद	= णरिंद
अ + उ = उ	यथा– णील	+ उप्पल	= णीलुप्पल
	रयण	+ उज्जल	= रयणुज्जल

दीर्घ स्वर के पूर्व स्वर का लोप

(८) अ + ई = ई	यथा– तिअस	+ ईस	=	तिअसीस
	राअ	+ ईसर	=	राईसर
आ + ऊ = ऊ	यथा– महा	+ ऊसव	=	महूसव
	एग	+ ऊण	=	एगूण
अ + ए = ए	यथा– गाम	+ एणी	=	गामेणी
	इह	+ एव	=	इहेव
	तहा	+ एव	—	तहेव
अ+आ आ+ओ=ओ	यथा– जल	+ ओह	=	जलोह
	महा	+ ओसहि	=	महोसहि

अव्यय के पूर्व स्वर का लोप

(९) अपि का अ लोप	यथा– केण	+ अपि	=	केण वि
	का	+ अपि	=	को वि
	मरण	+ अपि	=	मरण पि
	त	+ अपि	=	त पि
इति की इ लोप	यथा– तहा	+ इति	=	तहत्ति
	दीसइ	+ इति	=	दीसइत्ति
	पढम	+ इति	=	पढमत्ति
	ज	+ इति	=	जत्ति
इव की इ लोप	यथा– चन्दो	+ इव	=	चण्डो व्व
	गेह	+ इव	=	गेह व
	जइ	+ इमा	=	जइमा

२ प्रकृतिभाव सधि

(१०) क्रियापद म यथास्थिति—	होइ	+ इह	=	होइ इह
	गच्छइ	+ इह	=	गच्छइ इह
व्यञ्जन लोप पर यथास्थिति—	निसा	+ अर	=	निसाअर
	गध	+ उडी	=	गधउडी
स्वर के बाद यथास्थिति—	एग	+ आया	=	एगे आया
	अहो	+ अच्छरिय	=	अहो अच्छरिय

३ व्यजन सधि

(११) म् का अनुस्वार	यथा– जलम्	= जल
	गिरिम्	= गिरि
विकल्प स मेल	यथा– किम् + इह	= किमिह
व्यजन का अनुस्वार	यथा– यत् = ज, सम्यक्	= सम्म
विकल्प मे मेल	यथा– यद् + अस्ति	= यदत्थि
	पुनर + अपि	= पुणरवि
	निर + अन्तर	= निरन्तर

समास

निर्देश –थाडे शन्दो म अधिक अथ बतलान वाली प्रक्रिया का समास कहत हैं। समास के प्रयोग से वाक्य रचना म सौन्दय आ जाता है। प्राकृत म सरल समासा का प्रयोग अधिक हुआ है। प्राकृत वयाकरणा ने समास के लिए कोई नियम नही बनाये हैं। अन प्रयोग के अनुसार प्राकृत के समासो को समझना चाहिए। समास के छह भेद निम्न प्रकार हैं।

१ अव्ययीभाव समास

जिसम पूवपद के अथ की प्रधानता हा तथा अव्ययो के साथ जिसका प्रयाग हा वह अव्ययीभाव समास है। यथा–

उवगुरु = गुरुणो समीव (गुरु के पास)।
अणुभोयण = भायणस्स पच्छा (भोजन के बाद)।
पइदिण = दिण दिण पइ (दिन के बाद दिन)।
अणुरुव = रुवस्स जोग्ग (रूप के समान)।

२ तत्पुरुष समास

जिसम उत्तरपद के अथ की प्रधानता होती है तथा पूवपद से विभक्तियो का लाप हाता है उसे तत्पुरुष समास कहते है। यथा—

द्वि० वि०— **सुहपत्तो** = सुह पत्ता (सुख को प्राप्त)।
तृ० — **गुणसम्पण्णो** = गुणेहि सम्पण्णो (गुणा से सम्पन्न)।
च० — **बहुजणहितो** = बहुजणस्स हितो (सब जनो के लिए हित)।
प० — **चोरभय** = चोरत्तो भीओ (चार से डरा हुआ)।
ष० — **देवमदिर** = देवस्स मदिर (देव का मन्दिर)।
स० — **कलाकुसलो** = कलासु कुसलो (कलाओ म कुशल)।

३ विशेषण और विशेष्य के समास कमधारय समास कहलात हैं। यथा–

महावीरो = महन्तो सो वीरो (महान् वीर)।
पीअवत्थ = पीअ त वत्थ (पीला वस्त्र)।
रत्तपीअ = रत्त अ पीअ अ (लाल और पीला)।
चन्दमुह = चन्दो व मुह (चन्द्र की तरह मुख)।
जिणेंदो = जिणो इदो इव (जिन इन्द्र की तरह)।
सजमधण = सजमो एव धण (सयम ही है धन)।
असच्च = ण सच्च (सत्य नही है)।

४ द्विगु समास

प्रथम पद यदि सख्यासूचक हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं। यथा-

तिलोग	=	तिण्ह लोगाण समूहो (तीन लोको का समूह)।
चउक्कसाय	=	चउण्ह कसायाण समूहो (चार कषायो का समूह)।
नवतत्त	=	नवण्ह तत्ताण समाहारो (नव तत्त्वो का समूह)।

५ द्वन्द समास

दो या दो से अधिक सज्ञाए जब एक साथ जोड़े के रूप मे प्रयुक्त हो तो उसे द्वन्द समास कहते हैं। यथा-

पुण्णपावाइ	=	पुण्ण अ पाव अ (पुण्य और पाप)।
पिअरा	=	माअ अ पिआ अ (माता और पिता)।
सुहदुक्खाइ	=	सुह अ दुक्ख अ (सुख और दुख)।
णाणदसणचरित्त	=	णाण अ दसण अ चरित्त अ (ज्ञान, दर्शन और चारित्र)।

६ बहुव्रीहि समास

जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य का विशेषण बनते हो तो उसे समास को बहुव्रीहि कहते हैं। यथा-

पीअबरो	=	पीअ अबर जस्स सो (पीला है वस्त्र जिसका वह)।
अपुत्तो	=	नत्थि पुत्तो जस्स सो (नही है पुत्र जिसका वह)।
सफल	=	फलेण सह (फल के साथ)।
निलज्जो	=	निग्गया लज्जा जस्स सो (निकल गयी है लज्जा जिसकी वह)।
जिअकामो	=	जिओ कामो जेण सो (जीता है काम को जिसने वह)।

उदाहरण वाक्य

अणुभोयण ते पढन्ति	=	भोजन के बाद वे पढते हैं।
गुणसम्पण्णो णिवो सासइ	=	गुणसम्पन्न राजा शासन करता है।
सो देवमदिरे ण गच्छइ	=	वह देवता के मदिर मे नही जाता है।
रत्तपीअ वत्थ अत्थ णत्थि	=	लाल और पीला वस्त्र यहाँ नही है।
चदमुही कन्ना कस्स घरे अत्थि	=	चद्रमा के समान मुखवाली कन्या किसके घर मे है ?
महावीरो तिलोय जाणइ	=	महावीर तीनों लोको को जानता है।
पुण्णपावाणि बधस्स कारणाणि सति	=	पुण्य और पाप बध के कारण हैं।
पीअबरो तत्थ णच्चइ	=	पीत वस्त्र वाला वहाँ नाचता है।

वकल्पिक प्रयोग

निर्देश – प्राकत याकरण के जिन नियमा का अभ्यास अभी तक आपने किया है उनका प्रयाग आपको आग ्यिे गये प्राक्त के पद्य एव गद्य सकलन म देखने को मिलेगा। साथ ही कुछ ऐसे प्रयोग भी इस सकलन म है जो आपके लिए नय हैं तथा जिनका विकल्प स प्रयाग होता है। एसे वकल्पिक प्रयागा का विस्तार से विवेचन **प्राकृत स्वय शिक्षक खण्ड २** म किया जावेगा। कि तु सामा य जानकारी के लिए ऐस नय प्रयोगा के कुछ नियम एव उदाहरण यहां भी ्यिे जा रह् हैं। इनके अभ्यास द्वारा इस प्रथम खण्ड म सकलित पाठो को सरलता स समझा जा सकेगा।

सवनाम

		एकवचन			बहुवचन		
१ उत्तमपुरुष	प्र० वि०	अह	=	ह	अम्हे	=	अम्ह
	द्वि०	मम	=	म		=	
	त०	मए	=	मे ममए	अम्हेहि	=	अम्हे
	च० प०	मज्झ	=	मह मम मे	अम्हाण	=	मज्झ
	प०	ममाओ	=	ममत्तो	अम्हाहितो	=	अम्हत्तो
	स०	अम्हम्मि	=	महम्मि	अम्हेसु	=	ममसु
२ मध्यम पुरुष	प्र०	तुम	=	तु तुह	तुम्हे	=	तुब्भे तुम्ह
	द्वि०	तुम	=	तुमे तव	तुम्हे	=	वा
	त०	तुमए	=	तुम	तुम्हेहि	=	तुज्झेहि
	च० प०	तुज्झ	=	तुह तुम्ह तस्स	तुम्हाण	=	तुमाण
	प०	तुमाओ	=	तुम्हत्तो	तुम्हाहितो	=	तुम्हाओ
	स०	तुम्हम्मि	=	तुमम्मि	तुम्हेसु	=	तुमसु
३ अन्यपुरुष	प्र०	सो	=	से ए	ते	=	ते ऐ
(पुल्लिग)	द्वि०	त	=	ए	ते	=	ऐ
	त०	तेण	=	ऐण	तेहि	=	ऐहि
	च० प०	तस्स	=	से	ताण	=	तेसि
	स०	तम्मि	=	तस्सि	तेसु	=	तेसु

		एकवचन			बहुवचन		
४ अन्यपुरुष	प्र०	सा	=	रणा	ताम्रो	=	तीम्रा
(स्त्री०)	त०	ताए	=	तीए	ताहि	=	तीहि
	च०प०	ताम्र	=	तिस्सा	ताए	=	तेसि
	स०	ताए	=	तीए	तासु	=	तीसु

५ ज=जो सवनाम के विभिन्न रूप

	पुल्लिग रूप		स्त्रीलिंग रूप	
	ए व	ब व	ए व	ब व
प्र०	जो	जे	जा	जाम्रो जीम्रा
द्वि०	ज	जे	ज	जाम्रा, जीम्रो
तृ०	जेए	जेहि	जीम्रा जीए	जाहि जीहि
च०	जस्स	जाए	जिस्सा जीए	जाए जेंसि
प०	जम्हा जत्तो	जाहित्ता	जित्तो जीए	जाहित्ता जीहित्तो
प०	जस्स	जाए	जस्सा जीए	जाए जेसि
स०	जम्मि,जस्सि	जेसु	जाए जीए	जासु जीसु

नपु० रूप	प्र०	ज	जाणि, जाइ
	द्वि०	ज	जाणि जाइ

(शेप विभक्तिया के रूप पुल्लिग के समान हाते है)

क्रियाए

६ क्रियाम्रा के म्रतिम म्र म्रयवा आ को वतमान काल म विकल्प स ए भी होता है तव क्रियाम्रो के रूप इस प्रकार प्रयुक्त हाते हैं ।—

म्रकारान्त क्रियाए

	एकवचन			बहुवचन		
उत्तमपुरुष	जपामि	=	जपमि	जपामो	=	जपेमा
मध्यमपुरुष	जपसि	=	जपसि	जपित्था	=	जपेत्था
म्रन्यपुरुष	जपइ	=	जपइ	जपति	=	जपेंति
	गमइ	=	गमइ	गमति	=	गामेति
	कहइ	=	कहेइ	कहति	=	कहेंति
	पालइ	=	पालेइ	पालति	=	पालति
	वम्रइ	=	वएइ	वम्रति	=	वएन्ति

म्राकारान्त क्रियाए

उ० पु०	दामि	=	देमि	दामो	=	देमो
म० पु०	दासि	=	देसि	दाइत्था	=	देइत्था
म्र० पु०	दाइ	=	देइ	दांति	=	देंति

७ भूतकाल मे आ ए आकारात क्रियाओ मे ही प्रत्यय के अतिरिक्त सी एव हीअ प्रत्यय भी प्रयुक्त होते हैं। जसे–

सभी पुरुपो एव	दाही	=	दासी दाहीअ
सभी वचनो म	पाही	=	पासी, पाहीअ
	एहो	=	एसी, एहीअ
	होही	=	होसी होहीअ

८ भविष्यकाल म मूलक्रिया म स्स प्रत्यय भी विकल्प से जुडता है। जसे–

मू० क्रि०		एकवचन	बहुवचन
पास	उ० पु०	पासिहिमि = पासिस्सामि	पासिहामो = पासिस्सामो
	म० पु०	पासिहिसि = पासिस्ससि	पासिहित्था = पासिस्सह
	अ० पु०	पासिहिइ = पासिस्सइ	पासिहिंति = पासिस्सति
दा	उ० पु०	दाहिमि = दास्सामि	दाहामो = दास्सामो
	म० पु०	दाहिसि = दास्ससि	दाहित्था = दास्सह
	अ० पु०	दाहिइ = दास्सइ	दाहिंति = दास्सति

९ विधि तथा आज्ञावाचक क्रियारूपो म मध्यमपुरुप क एकवचन म विकल्प से निम्न रूप भी प्रयुक्त होत हैं।

मू० क्रि०	सीखा हुआ रूप		वकल्पिक रूप	अथ
कुण	कुणहि	=	कुण कुणह कुणसु	करो
मुच	मुचहि	=	मुच मुचह मुचसु	छोडो
जप	जपहि	=	जप जपह जपसु	बोलो
जाण	जाणहि	=	जाण जाणह जाणसु	जानो
पेस	पेसहि	=	पेस पेसह पेससु	भेजो
धार	धारहि	=	धार धारह धारसु	धारण करो
सिक्ख	सिक्खहि	=	सिक्ख सिक्खह सिक्खसु	सीखो
झा	झाहि	=	झायह, झाएह	ध्यान करो
दा	दाहि	=	दाह, देहि	दो
मोच	मोचहि	=	मोएह मोयसु	छोडो
निक्कास	निक्कासहि	=	निक्कासय	निकालो

१० सम्बन्ध कृदन्तो म मूल क्रिया क साथ 'ऊण' प्रत्यय के अतिरिक्त निम्नांकित प्रत्यय भी प्रयुक्त होते हैं ।

मू० क्रि०	सीखा हुआ रूप		वकल्पिक रूप	प्रत्यय
हस	हसिऊण	=	हसितु, हसिउ	तु (उ)
कर	करिऊण	=	करिउ काउ	"
सुण	सुणिऊण	=	सोउ	"
ठव	ठविऊण	=	ठवेउ	"
भा	झाइऊण	=	झाइत्ता	इत्ता
वद	वदिऊण	=	वदित्ता	"
बध	बधिऊण	=	बधित्ता	"
गिण्ह	गिण्हिऊण	=	गिण्हित्ता	"
चिंत	चिंतिऊण	=	चिंतित्ता	"
उट्ठ	उट्ठिऊण	=	उट्ठित्ता	"
नम	नमिऊण	=	नमिअ	अ
हस	हसिऊण	=	हसिअ	"
आरुह	आरुहिऊण	=	आरुहिय	य/अ
आराह	आराहिऊण	=	आराहिय	"
परिणाव	परिणाविऊण	=	परिणाविय	"

११ अनियमित सम्बन्ध कृदन्त

दट्ठु	दट्ठिऊण	=	दट्ठु	=	देखकर
गच्छ	गच्छिऊण	=	गच्चा	=	जाकर
कर	करिऊण	=	किच्चा	=	करके
जाण	जाणिऊण	=	णच्चा	=	जानकर
सुण	सुणिऊण	=	सोच्चा	=	सुनकर
दा	दाऊण	=	दच्चा	=	देकर
चय	चयिऊण	=	चिच्चा	=	छोड़कर
सय	सयिऊण	=	सुत्ता	=	सोकर

निर्देश – सम्बन्ध कृदन्त के ये रूप उच्चारण भेद एवं ध्वनि परिवर्तन के आधार पर प्रयुक्त होते हैं । इनके लिए कोई निश्चित नियम नहीं हैं ।

१२ प्राकृत के कुछ शब्दों म 'अ' के स्थान पर 'य' का प्रयोग होता है । जैसे–

वअण	=	वयण (वचन)	पाआल	=	पायाल (पाताल)
नअण	=	नयण (नयन)	पआ	=	पया (प्रजा)
नअर	=	नयर (नगर)	जोअण	=	जोयण (योजन)

सज्ञाशब्द

१३ सज्ञा शब्दों में विभिन्न विभक्तियों में विकल्प से कई रूप बनते हैं। प्रयोग की दृष्टि से कुछ उदाहरण यहा प्रस्तुत हैं —

पुल्लिग सज्ञा शब्द

विभक्ति	एकवचन			बहुवचन		
प्र०	पुरिसो	=	पुरिस	पुरिसा	=	पुरिस
द्वि०	—		—	पुरिसा	=	पुरिस
तृ०	पुरिसेण	=	पुरिसेण	पुरिसेहि	=	पुरिसेहिं
च०	पुरिसस्स	=	पुरिसाय	पुरिसाण	=	पुरिसाण
	छुट्टणस्स	=	छुट्टणाय	(छूटने के लिए)		
	सयणस्स	=	सयणाय	(सोने के लिए)		
	भोयणस्स	=	भोयणाय	(भोजन के लिए)		
	वहस्स	=	वहाय	(वध के लिए)		
	परिहाणस्स	=	परिहाणाय	(पहिनने के लिए)		
प०	पुरिसत्तो	=	पुरिसाओ	पुरिसाहित्तो	=	पुरिसाहि
	सीलत्तो	=	सीलाउ	—		—
ष०	—		—	पुरिसाण	=	पुरिसाण
स०	पुरिसे	=	पुरिसम्मि	पुरिसेसु	=	पुरिसेसु

पु० इकारान्त, उकारान्त शब्दों के चतुर्थी एव षष्ठी विभक्ति में ये वैकल्पिक रूप बनते हैं —

सामिणो	=	सामिस्स
पिउणो	=	पिउस्स
गुरुणो	=	गुरुस्स

१४ स्त्रीलिंग सज्ञा शब्दों में निम्नांकित परिवर्तन ध्यान देने योग्य हैं —

		एकवचन			बहुवचन		
आकारान्त —	प्र०	—			मालाओ	=	मालाउ
	द्वि०	—			,,		,,
	तृ० से स०	मालाए	=	मालाइ	मालाहि	=	मालाहिं
ईकारान्त एव	प्र० द्वि०				नईओ	=	नईउ
उकारान्त	तृ० से स०	नईए	=	नईआ	—		—
	प०	नईए	=	नइत्ता	—		—

१५ नपुसकलिंग सज्ञाशब्दों में प्र० एव द्वि० विभक्ति के बहुवचन में वैकल्पिक रूप प्रयुक्त होते हैं। यथा—

नेत्ताणि	=	नेत्ताइ	मुहाणि	=	मुहाइ
वत्थाणि	=	वत्थाइ	भोगाणि	=	भोगाइ
कमलाणि	=	कमलाइ	नयराणि	=	नयराइ

पाइय-पज्ज-गज्ज संगहो

पज्ज-सगहो

१ अजणासु दरीकहा

अजणाअ चागो परिवेअण य

सग्ऊिण मिस्सकेसी वयण पवणजएण रुटठेण ।
चत्ता महि दतणया, दुक्खियमणसा अकयदोसा ।।१।।

विरहग्गिजलियगी, न लभइ विद्दाणलोयणा निद्द ।
वामकरधरियवयणा वाउकुमार विचि ततो ।।२।।

उक्कण्ठिय त्ति गाढ, नयणजलासित्तमलिणथणजुयला ।
हरिणी व वाहभीया, अच्छइ मग्ग पलोय ती ।।३।।

अइतणुइयसव्वगी, कडिसुत्तय-कडयसिढिलियाभरणा ।
भारेण असुयस्स य, जाइ मह त परमखेय ।।४।।

ववगयदप्पुच्छाहा, दुक्ख धारेइ अगमगाइ ।
एमेव सुन्नहियया, पलवइ अननवयणाइ ।।५।।

पासायतलत्था चिय, मोह गच्छइ पुणो पुणो बाला ।
नवर आसासिज्जइ, सीयलपवणेण फुसियगि ।।६।।

मिउ महुर मम्मणाए, जपइ वायाए दीणवयणाइ ।
अइतणुओ वि महायस ! तुज्झऽवराहो मए न कओ ।।७।।

मुचसु कोवारम्भ पसियसु मा एव निट्ठुरो होहि ।
पणिवइयवच्छला क्लि, होति मणुस्सा महिलियाए ।।८।।

एयाणि य अन्नाणि य, जप ती तत्थ दीणवयणाइ ।
अह सा महि दतणया, गमेइ काल चिय बहुत्त ।।९।।

एत्थन्तरे विरोहो, जाओ अइदारुणो रणारम्भो ।
रावण-वरुणाण तओ, दोहण्ह वि पुण दिप्पयबलाण ॥१०॥

लंकाहिवेण दूओ, वरुणस्स य पेसिओ अइतुरन्तो ।
गन्तूण पणमिऊण य, कयासणो भणइ वयणाइं ॥११॥

विज्जाहराण सामी, वरुण ! तुमं भणइ रावणो रुट्ठो ।
कुणह पणामं व फुडं, अह ठाहि रणे सवडहुत्तो ॥१२॥

हसिऊण भणइ वरुणो, दूयाहम ! को सि रावणो नाम ? ।
न य तस्स सिरपणामं करेमि आणापमाणं वा ॥१३॥

न य सो वेसमणो हं, नेय जमो न य सहस्सकिरणो वा ।
जो दिव्वसत्थभीओ, कुणइ पणामं तुहं दीणो ॥१४॥

वरुणेण उवन्द्धो, दूओ जं एव फरसवयणेहिं ।
तो रावणस्स गन्तुं, कहेइ सव्वं जहाभणियं ॥१५॥

सोऊण दूयवयणं रुट्ठो लंकाहिवो भणइ एवं ।
दिव्वत्थेहिं विणा मए, अवस्स वरुणो जिणेयव्वो ॥१६॥

एत्थन्तरे पयट्टो, दसाणणो सयलबलकयाडोवो ।
संपत्तो वरुणपुरं, मणिकणयविचित्तपायारं ॥१७॥

सोऊण रावणं सो, समागयं पुत्तबलसमाउत्तो ।
रणपरिहत्थुच्छाहो, विणिग्गओ अभिमुहो वरुणो ॥१८॥

राईवपुण्डरीया, पुत्ता बत्तीसइं सहस्साइं ।
सन्नद्धबद्धकवया, अब्भिट्टा रक्खसभडाणं ॥१९॥

अन्नोन्नसत्थभज्जन्त-संकुलं हुयवहुट्ठियफुल्लिंगं ।
अइदारुणं पवत्तं, जुज्झं विवडन्तवरसुहडं ॥२०॥

रह गय-तुरंग-जोहा, समरे जुज्झन्ति अभिमुहावडिया ।
सर-सत्ति-खग्ग-तोमर-चक्काउह-मोग्गरकरग्गा ॥२१॥

रक्खसभडेहि भग्गं, वरुणबलं विवडियाऽऽस-गय-जोहं ।
दट्ठूण पलायं तं, जलकन्तो अभिमुहीहूओ ॥२२॥

वरुणेण बलं भग्गं, आसरियं पेच्छिऊण दहवयणो ।
अब्भिडइ रोसपसरियसरोहनिवहं विमुञ्चन्तो ॥२३॥

वरुणस्स रावणस्स य, वट्टन्ते दारुणे महाजुज्झे।
ताव य वरुणसुएहिं, गहिओ खरदूसणो समरे ।।२४।।

दट्ठूण दूसणं सो, गहिओ मन्तीहि रावणो भणिओ।
जुज्झन्तेण पहु ! तुमे अवस्स मारिज्जए कुमरो ।।२५।।

काऊण संपहारं, समयं मन्तीहि रक्खसाहिवई।
खरदूसणजीयत्थे रणमज्झाओ समोसरिओ ।।२६।।

पायालपुरवरं सो, पत्तो मेलेइ सव्वसामन्ते।
पल्हायखेयरस्स वि, सिग्घं पुरिसं विसज्जेइ ।।२७।।

पवणवेगस्स रणत्थं गमणं

गन्तूण पणमिऊण य पल्हायनिवस्स कहइ सव्वं य।
रावण-वरुणाण रणं, दूसणगहणं जहावत्तं ।।२८।।

पडियागओ महप्पा, पायालपुरट्ठिओ ससामन्तो।
मेलेइ रक्खसवई, अहमवि वीसज्जिओ तुज्झ ।।२९।।

सोऊण वयणमेयं, पल्हाओ तक्खणे गमणसज्जो।
पवणजएण धरिओ, अच्छ तुमं ताव वीसत्थो ।।३०।।

सन्तेण मए सामिय !, कीस तुमं कुणसि गमणआरम्भं ?।
आलिंगणफलमेयं देमि अहं तुज्झ साहीणं ।।३१।।

भणिओ य नरवईणं, बालोसि तुमं अदिट्ठसंगामो।
अच्छसु पुत्त ! घरगओ, कील तो नियंयकीलाए ।।३२।

मा ताय ! एवं जंपसु, बालो त्ति अहं अदिट्ठरणकज्जो।
किं वा मत्तवरगए, सीहकिसोरो न घाएइ ? ।।३३।।

पल्हायनरवईणं ताहे वीसज्जिओ पवणवेगो।
भणिओ य पत्थिवजयं पुत्तय ! पाव तओ होहि ।।३४।।

तातस्स सिरपणामं, काउं आपुच्छिऊण से जणणिं।
आहरणभूसियंगो, विणिग्गओ सो सभवणाओ ।।३५।।

सहसा पुरम्मि जाओ, उल्लोल्ला निग्गओ पवणवेगो।
साऊण अजणा वि य, तं सद्दं निग्गया तुरियं ।।३६।।

अइपसरन्तसिणेहा, थम्भल्लीणा पइं पलोयन्ती।
वरसालिभंजिया इव, दिट्ठा बाला जणवएण ।।३७।।

पेच्छइ य त कुमार, महिन्दतणाया नरिन्दमग्गम्मि ।
पुलयन्ति न य तिप्पइ, कुवलयदलसरिसनयणेहिं ॥३८॥

पवणजएण वि तओ, पासायतलट्ठिया पलोयन्ती ।
दूर उव्वियणिज्जा, उक्का इव अजणा दिट्ठा ॥३९॥

त पेच्छिऊण रुट्ठो, पवणगई रोसपसरियसरीरो ।
भणइ य अहो ! अलज्जा, जा मज्झ उवट्ठिया पुरओ ॥४०॥

रइऊण अजलिउड, चलणपणाम च तस्स काऊण ।
भणइ उवालम्भन्ती, दूरपवासो तुम सामी ! ॥४१॥

वच्चन्तेण परियणो, सव्वो सभासिओ तुमे सामि ! ।
न य अन्नमणगएण वि, आलत्ता ह अकयपुण्णा ॥४२॥

जीय मरण पि तुमे, आयत्त मज्झ नत्थि सदेहो ।
जइ वि हु जासि पवास, तह वि य अम्हे सरेज्जासु ॥४३॥

एव पलवन्तीए, पवणगई मत्तगयवरारूढो ।
निग्गन्तूण पुराओ, उवट्ठिओ माणससरम्मि ॥४४॥

विज्जावलेण रइओ, तत्थ निवेसो घरा-ऽऽसणाईओ ।
ताव च्चिय अत्थगिरि, कमेण सूरो समल्लीणो ॥४५॥

पवणवेगेण अजनाअ सुमरण

अह सो सभासमए, भवण-गवक्खन्तरेण पवणगई ।
पेच्छइ सर सुरम्म, निम्मलवरसलिलसपुण्ण ॥४६॥

मच्छेसु कच्छभेसु य, सारसहसेसु पयलियतरग ।
गुमुगुमुगुमन्तभमर, सहस्सपत्तेसु सछन्न ॥४७॥

अइदारुणप्पयावो, लोए काऊण दीहरज्ज सो ।
अत्थाओ दिवसयरो, अवसाणे नरवई चेव ॥४८॥

दियहम्मि वियसियाइ, नियय भमरउलछड्डियदलाइ ।
मउलेन्ति कुवलयाइ दिणयरविरहम्मि दुहियाइ ॥४९॥

अह ते हसाईया, सउणा लीलाइउ सरवरम्मि ।
दट्ठु सभासमय, गया य निययाइँ ठाणाइ ॥५०॥

तत्थेक्का चक्काई, दिट्ठा पवणजएण कुव्वन्ती ।
अहियं समाउलमणा, अहिणवविरहग्गितवियगी ॥५१॥

उड्डाइ चलइ वेवइ, विहुणइ पक्खावलिं वियम्भन्ती ।
तडपायवे विलग्गइ, पुणरवि सलिलं समल्लियइ ।।५२।।

विहडेइ पउमसण्ड दइययसङ्काएँ चञ्चुपहरेहिं ।
उप्पयइ गयणमग्गं, सहसा पडिसद्दयं सोउं ।।५३।।

गरुयपियविरहदुहियं, चक्किं दट्ठूण तग्गयमणेणं ।
पवणञ्जएण सरिया, महिन्दतणया चिरपमुक्का ।।५४।।

भणिऊण समाढत्तो, हा ! कट्ठं जा मए अकज्जेणं ।
मूढेण पावगुरुणा चत्ता वरिसाणि बावीसं ।।५५।।

जह एसा चक्काई,, गाढं पियविरहदुक्खिया जाया ।
तह सा मज्झ पिययमा, सुदीणवयणा गमइ कालं ।।५६।।

जइ नाम अरण्णसुहं, भणियं सहियाएँ तीएँ पावाए ।
तो किं मए विमुक्का, पसयच्छी दोसपरिहीणा ? ।।५७।।

परिचिन्तिऊण एवं वाउकुमारेण पहसिओ भणिओ ।
दट्ठूण चक्कवाईं, सरिया से अजणा भज्जा ।।५८।।

एन्तेण मए दिट्ठा, पासायतलट्ठिया पलोयन्ती ।
ववगयसिरि सोहग्गा, हिमेण पहया कमलिणि व्व ।।५९।।

तं चिय करेहि सुपुरिस !, अज्ज उवायं अकालहीणम्मि ।
जेण चिरविरहदुहिया, पच्छामि अहजणा बाला ।।६०।।

परिमुणियकज्जनिहसो, पवणगइं भणइ पहसिओ मित्तो ।
मोत्तूण तत्थ गमणं, अन्नोवायं न पच्छामि ।।६१।।

पवणञ्जएण तुरियं, सद्दावेऊण मोग्गरामच्चो ।
ठविओ य सेन्नरक्खो, भणिओ मेरुं अहं जामि ।।६२।।

चन्दणकुसुमविहत्था, दोण्णि वि गयणङ्गणेण वच्चन्ता ।
रयणीए तुरियचवला, सपत्ता अजणाभवणं ।।६३।।

तो पहसिओ ठवेउं, धरम्मि अग्गीवए पवणवेगं ।
अब्भिन्तरं पविट्ठो दिट्ठो बालाएँ सहस त्ति ।।६४।।

भणिआ य भो ! तुमं को ?, केण व कज्जेण आगओ एत्थ? ।
तो पणमिऊण साहइ, मित्तो हं पवणवेगस्स ।।६५।।

सो तुज्झ पिआ सुन्दरि !, इहागओ तेण पेसिओ तुरियं ।
नामेण पहसिओ हं, मा सामिणि ! ससयं कुणसु ।।६६।।

र

सोऊण सुमिणसरिस, वाला पवणजयम्स आगमण।
भणइ य किं हससि तुम ?, पहसिय ! हसिया कय तेण ॥६७॥

अहवा को तुह दोसो ?, दोसो च्चिय मज्झ पुव्वकम्माण।
जा ह पियपरिभूया, परिभूया सव्वलोएण ॥६८॥

भणिया य पहसिएण, सामिणि ! मा एव दुक्खिया होहि।
सो तुज्झ हिययइट्ठो एत्थ चिय आगओ भवणे ॥६९॥

कच्छतरट्ठिओ सो, वसन्तमालाए कयपणामाए।
पवणजओ कुमारो, पवेसिओ वासभवणम्मि ॥७०॥

अब्भुट्ठिया य सहसा, दइय दट्ठूण अजणा वाला।
ओणमियउत्तमगा, तस्स य चलणजली कुणइ ॥७१॥

पवणजओवविट्ठो, कुसुमपडाच्छइयरयणपल्लवे।
हरिसवसुब्भिन्नगी, तस्स ठिया अजणा पासे ॥७२॥

कच्छतरम्मि बीए, वसन्तमाला सम पहसिएण।
अच्छइ विणोयमुहला, कहासु विविहासु जपन्ती ॥७३॥

पवणवेगेण सह अजनाअ समागम

तो भणइ पवणवेगो, ज सि तुम सासिया अवज्जेण।
त म खमाहि सुन्दरि !, अवराहसहस्ससघाय ॥७४॥

भणइ य महिन्दतणया, नाह ! तुम नत्थि कोइ अवराहो।
सुमरिय मणोरहफल, सपइ नेह वहेज्जासु ॥७५॥

तो भणइ पवणवेगो, सुन्दरि ! पम्हुसस सव्वअवराह।
होहि सुपसन्नहियया, एस पणामो कओ तुज्झ ॥७६॥

आलिगिया सनेह कुवलयदलसरिसकोमलसरीरा।
वयण पियस्स अणिमिस नयणेहि व पियइ अणुराय ॥७७॥

घणनेहनिब्भराण, दोण्ह वि अणुरायलद्धपसराण।
आवडिय चिय सुरय, अणेगचडुकम्मविणिओग ॥७८॥

आलिङ्गण-परिचुम्बण रइउच्छाहगुणेहि सुसमिद्ध।
निव्ववियविरहदुक्ख, मणतुट्ठियरजियजहिच्छ ॥७९॥

सुरतूसव समत्ते, दोण्णि वि ऐयालसगमगाइ।
अन्नोन्नभुयालिगण-सुहेण निद्द पवन्नाइ ॥८०॥

एव कमेण ताण, सुरयसुहामायलद्धनिद्दाण ।
किंचावसेसमया, ताव य रयणी खय पत्ता ॥८१॥

रयणीमुहपडिबुद्धा, पवणगई भणइ पहसिओ मित्तो ।
उट्ठेहि लहु सुपुरिस !, खंधावार पगच्छामो ॥८२॥

सुणिऊण मित्तवयण सयणाओ उट्ठिओ पवणवेगा ।
उवगूहिऊण कंत, भणइ य वयण निसामेहि ॥८३॥

अच्छ तुम वीसत्था, मा उव्वेयस्स देहि अत्ताण ।
जाव अह दहवयण, दट्ठूण लहु नियत्तामि ॥८४॥

तो विरहदुक्खभीया, चलणपणाम करेइ विणएण ।
मम्मण मुहुल्लावा, भणइ य पवणजय बाला ॥८५॥

अज्ज चिय उदुसमओ सामिय ! गब्भा कयाइ उयरम्मि ।
होही वयणिज्जयरो, नियमेण तमे परोक्खेण ॥८६॥

तम्हा कहहि गंतु गुरूण गब्भस्स सभव एय ।
होहि बहुदोहपेही करेहि दोसस्स परिहार ॥८७॥

अह भणइ पवणवेगो, मह नामामुद्दिय रयणचित्त ।
गेण्हसु मियनवयण !, एसा दोस पणासिहिइ ॥८८॥

आपुच्छिऊण कंता, वस तमाला य गयणमग्गेण ।
नियय निवेसभवण, पहसिय पवणजया पत्ता ॥८९॥

धम्मा ऽधम्मविवाग सजोग विओग-सोग सहभाव ।
नाऊण जीवलाए, विमले जिणसासणे समुज्जमह सया ॥९०॥

———

२. सिरिसिरिवालकहा

कहामुह—

अरिहाइनवपयाइं, झाइत्ता हिअयकमलमज्झम्मि ।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पमुत्तम किंपि जपेमि ॥१॥

अत्थित्थ जबुदीवे, दाहिणभरहद्धमज्झिमे खडे ।
बहुधणधनसमिद्धो, मगहादेसो जयपसिद्धो ॥२॥

जत्थुप्पन्न सिरिवीरनाहतित्थ जयमि वित्थरिय ।
त देस सविसेस, तित्थ भासति गीयत्था ॥३॥

तत्थ य मगहादेसे, रायगिह नाम पुरवर अत्थि ।
वेभारविउलगिरिवरसमलकियपरिसरपएस ॥४॥

तत्थ य सेणियराओ, रज्ज पालेइ तिजयविक्खाओ ।
वीरजिणचलणभत्तो, विहिअज्जियतित्थयरगुत्तो ॥५॥

जस्सत्थि पढमपत्ती, नदा नामेण जीइ वरपुत्तो ।
अभयकुमारो बहुगुणसारो चउबुद्धिभडारो ॥६॥

चेडयनरिदधूया, बीया जस्सत्थि चिल्लणा देवी ।
जीए असोगचदो, पुत्तो हल्लो विहल्लो अ ॥७॥

अन्नाउ अणेगाओ धारणीपमुहाउ जस्स देवीओ ।
मेहाइणो अणेगे, पुत्ता पियमाइपयभत्ता ॥८॥

सो सेणियनरनाहो, अभयकुमारेण विहियउच्छाहो ।
तिहुयणपयडपयावो, पालइ रज्ज च धम्म च ॥९॥

एयमि पुणो समए, सुरमहिओ वद्धमाणतित्थयरो ।
विहरतो सपत्तो, रायगिहासन्नायरमि ॥१०॥

पेसेइ पढमसीस, जिट्ठ गणहारिण गुणगरिट्ठ ।
सिरिगोयम मुणिद, रायगिहलोयलाभत्थ ॥११॥

सो लद्धजिणाएसो, सपत्तो रायगिहपुरोज्जाणे ।
बहुविहमुणिपरियरिओ, गोयमसामी समोसरिओ ॥१२॥

एव कमेण ताण, सुरयसुहासायलद्धनिद्दाण ।
कि चावसेसममया, ताव य रयणी खय पत्ता ॥८१॥

रयणीमुहपडिबुद्धो, पवणगई भणइ पहसिओ मित्तो ।
उट्ठेहि लहु सुपुरिम !, ख धावार पगच्छामो ॥८२॥

सुणिऊण मित्तवयण, सयणाओ उट्ठिओ पवणवेगो ।
उवगूहिऊण क त, भणइ य वयण निसामेहि ॥८३॥

अच्छ तुम वीसत्था, मा उव्वेयस्स देहि अत्ताण ।
जाव अह दहवयण, दट्ठूण लहु नियत्तामि ॥८४॥

तो विरहदुक्खभीया, चलणपणाम करेइ विणएण ।
मम्मण मुहुल्लावा, भणइ य पवणजय बाला ॥८५॥

अज्ज चिय उदुसमओ सामिय ! गब्भो कयाइ उयरम्मि ।
होही वयणिज्जयरो नियमेण तुमे परोक्खेण ॥८६॥

तम्हा कहहि ग तु गुरूण गब्भस्स सभव एय ।
होहि बहुदोहपेहो, करेहि दोसस्स परिहार ॥८७॥

अह भणइ पवणवेगो, मह नामामुद्दिय रयणचित्त ।
गण्हसु मियकवयणे !, एसा दोस पणासिहिइ ॥८८॥

आपुच्छिऊण कान्ता, वस तमाला य गयणमग्गेण ।
नियय निवेसभवण, पहसिय पवणजया पत्ता ॥८९॥

धम्मा ऽधम्मविवाग सजोग विओग सोग सुहभाव ।
नाऊण जीवलोए, विमले जिणसासणे समुज्जमह सया ॥९०॥

---

२ सिरिसिरिवालकहा

कहामुह—

अरिहाइनवपयाइ, झाइत्ता हिअयकमलमज्झमि।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पमुत्तम किपि जपेमि ॥१॥

अत्थित्थ जबुदीवे, दाहिणभरहद्धमज्झिमे खडे।
बहुधणधन्नसमिद्धो, मगहादेसो जयपसिद्धो ॥२॥

जत्थुप्पन्न सिरिवीरनाहतित्थ जयमि वित्थरिय।
त देस सविसेस, तित्थ भासति गीयत्था ॥३॥

तत्थ य मगहादेसे, रायगिह नाम पुरवर अत्थि।
वेभारविउलगिरिवरसमलकियपरिसरपएस ॥४॥

तत्थ य सेणियराओ, रज्ज पालेइ तिजयविक्खाओ।
वीरजिणचलणभत्तो, विहिअज्जियतित्थयरगुत्तो ॥५॥

जस्सत्थि पढमपत्ती, नदा नामेण जीइ वरपुत्तो।
अभयकुमारो बहुगुणसारो चउबुद्धिभडारो ॥६॥

चेडयनरिंदधूया, बीया जस्सत्थि चिल्लणा देवी।
जीए असोगचदो, पुत्तो हल्लो विहल्लो अ ॥७॥

अन्नाउ अणेगाओ धारणीपमुहाउ जस्स देवीओ।
मेहाइणो अणेगे, पुत्ता पियमाइपयभत्ता ॥८॥

सो सेणियनरनाहो, अभयकुमारेण विहियउच्छाहो।
तिहुयणपयडपयावो, पालइ रज्ज च धम्म च ॥९॥

एयमि पुणा समए, सुरमहिओ वद्धमाणतित्थयरो।
विहरतो सपत्तो, रायगिहासन्ननयरमि ॥१०॥

पेसेइ पढमसीस, जिट्ठ गणहारिण गुणगरिट्ठ।
सिरिगोयम मुणिद, रायगिहलोयलाभत्थ ॥११॥

सो लद्धजिणाएसो, सपत्तो रायगिहपुरोज्जाणे।
कइवयमुणिपरियरिओ, गोयमसामी समोसरिओ ॥१२॥

तस्सागमण सोउ, सयलो नरनाहपमुहपुरलोओ ।
नियनियरिद्धिसमेओ, समागओ भत्ति उज्जाणे ।।१३।।

पचविह अभिगमण, काउ तिपयाहिणाउ दाऊण ।
पणमिय गोयमचलणे, उवविट्ठो उचियभूमीए ।।१४।।

भयवपि सजलजलहर गभीरसरेण कहिउमाढत्तो ।
धम्मसरूव सम्म, परोवयारिक्कतल्लिच्छो ।।१५।।

भा भो महाणुभागा ! दुलह लहिऊण माणुस जम्म ।
खित्तकुलाइपहाण, गुरुसामग्गि च पुण्णवसा ।।१६।।

पचविहपि पमाय गुरुयावाय विवज्जिउ भत्ति ।
सद्धम्मकम्मविसए, समुज्जमा होइ कायव्वो ।।१७।।

सो धम्मो चउभेओ, उवइट्ठो सयलजिणवरिंदेहिं ।
दाण सील च तवा भावोऽवि अ तस्सिमे भेया ।।१८।।

तत्थवि भावेण विणा, दाण न हु सिद्धिसाहण होई ।
सीलपि भाववियल, विहल चिय होइ लोगमि ।।१९।।

भाव विणा तवोविहु, भवोहवित्थारकारण चेव ।
तम्हा नियभावुच्चिय, सुविसुद्धो होइ कायव्वो ।।२०।।

भावोवि मणोविसओ, मण च अइदुज्जय निरालब ।
तो तस्स नियमणत्थ, कहिय सालबण झाण ।।२१।।

आलवणाणि जइविहु बहुप्पयाराणि सति सत्थेसु ।
तह वि हु नवपयझाण सुपहाण बिति जगगुरुणो ।।२२।।

अरिह सिद्धायरिया, उज्झाया साहुणो अ सम्मत्त ।
नाण चरण च तवो, इय पयनवग मुणेयव्व ।।२३।।

तत्थऽरिहतेऽट्ठारसदासविमुक्के विसुद्धनाणमए ।
पयडियतत्ते नयसुरराए झाएह निच्चपि ।।२४।।

पनरसभेयपसिद्धे सिद्धे घणकम्मबवणविमुक्के ।
सिद्धाण तचउक्के, झायह तम्मयमणा सयय ।।२५।।

पचायारपवित्ते, विसुद्धसिद्ध तदेसणुज्जुत्ते ।
परउवयारिक्कपरे, निच्च झाएह सूरिवरे ।।२६।।

गणतित्तीसु निउत्ते, सुत्तत्थज्झावण मि उज्जुत्ते ।
सज्झाए लीणमणे, सम्म झाएह उज्झाए ।।२७।।

मव्वासु कम्मभूमिसु, विहरते गुणगणेहि संजुत्ते ।
गुत्ते मुत्ते झायह, मुणिराए निट्ठियकसाए ।।२८।।

सव्वन्नुपणीयागमपयडियतत्तत्थसद्दहणरूवं ।
दमणरयणपईवं, निच्चं धारेह मणभवणे ।।२९।।

जीवाजीवाइपयत्थ सत्थ तत्तावबोहरूवं च ।
नाणं सव्वगुणाणं, मूलं सिक्खेह विणएण ।।३०।।

असुह किरियाण चाओ, सहासुकिरिया जो य अपमाओ ।
तं चारित्तं उत्तमगुणजुत्तं पालह निरुत्तं ।।३१।।

घणकम्मतमोभरहरणभाणुभूयं दुवालसंगधरं ।
नवरमकसायतावं, चरेह सम्मं तवोकम्मं ।।३२।।

एयाइं नवपयाइं, जिणवरधम्ममि सारभूयाइं ।
कल्लाणकारणाइं, विहिणा आराहियव्वाइं ।।३३।।

अन्न चएएहिं नवपएहिं, सिद्धं सिरिसिद्धचक्कमाउत्तो ।
आराहंतो संतो, सिरिसिरिपालुव्व लहइ सुहं ।।३४।।

तो पुच्छइ मगहेसो को एसो मुणिवरिंद ! सिरिपालो ।
कहं तेण सिद्धचक्कं, आराहिय पाविय सुक्खं ? ।।३५।।

तो भणइ मुणी निसुणसु, नरवर ! अक्खाणयं इमं रम्मं ।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पसुंदरं परमचुज्जकरं ।।३६।।

कहारंभ

इत्थेव भरहखित्ते, दाहिणखंडमि अत्थि सुपसिद्धो ।
सव्वड्ढिकयपवेसो, मालवनामेण वरदेसो ।।३७।।

पए पए जत्थ सुगुत्तिगुत्ता, जोगप्पवेसा इव सन्निवेसा ।
पए पए जत्थ अगजणीया, कुडुंवमेला इव तुंगसेला ।।३८।।

पए पए जत्थ रसाउलाओ, पणंगणाओ व्व तरंगिणीओ ।
पए पए जत्थ सुहंकराओ, गुणावलीओव्व वणावलीओ ।।३९।।

पए पए जत्थ सवाणियाणि, महापुराणीव महासराणी ।
पए पए जत्थ सगोरसाणि, सुहीमुहाणीव सुगोउलाणि ।।४०।।

तत्थ य मालवदेसे, अक्कयपवेसे दुकालडमरेहिं ।
अत्थि पुरी पोराणा, उज्जेणी नाम सुपहाणा ।।४१।।

अणंगसो जत्थ पयावईओ, नरुत्तमाण च न जत्थ सखा ।
महेसरा जत्थ गिहे गिहेसु, सचीवरा जत्थ सम्मग्गलोया ।।४२।।

घरे घरे जत्थ रमंति गोरी-गणा सिरीओ अ पए पए अ ।
वणे वणे यावि अणंगरभा, रई अ पीई विय ठाणठाणे ।।४३।।

तीसे पुरीई सुरवरपुरीई अहियाइ वण्णण काउ ।
जइ निउणबुद्धिकलिओ, सक्कगुरु चेव सक्केइ ।।४४।।

तत्थत्थि पुहविपालो पयपालो, नामओ अ गुणओ अ ।
जस्स पयावो सोमो, भीमो विय सिट्ठदुट्ठजणे ।।४५।।

तस्सवरोहे बहुदेहसोह अवहरिय गोरिगव्वेवि ।
अच्चत मणहरणे, निउणाओ दुन्नि देविओ ।।४६।।

सोहग्गलडहदेहा, एगा सोहग्गसुंदरीनामा ।
बीया अ रूवसुंदरी नामा रूवेण रइतुल्ला ।।४७।।

पढमा माहेसरकुलसभूया तेण मिच्छदिट्ठित्ति ।
बीया साअवधूया तेण सा सम्मदिट्ठित्ति ।।४८।।

तओ सरिसवयाओ समसोहग्गाउ सरिसरूवाओ ।
सावत्तेवि हु पाय, परुप्पर पीतिकलिआआ ।।४९।।

नवर ताण मणट्ठियधम्मसरूव वियारयताण ।
दूरेण विसवाओ, विसपीउसेहिं सारिच्छो ।।५०।।

तओ अ रमतीओ, नवनवलीलाहिं नरवरेण सम ।
थोवतरमि समए, दोवि सगब्भाउ जायाओ ।।५१।।

कन्नगा सिक्खा

समयमि पसूयाओ, जायाओ कन्नगाउ दोहिंपि ।
नरनाहोवि सहरिसो, वद्धावणय करावेई ।।५२।।

सोहग्गसुंदरी नदणाइ सुरसुंदरित्ति वरनाम ।
बीयाइ मयणसुंदरि, नाम च ठवेइ नरनाहो ।।५३।।

समये समप्पियाओ, तओ सिवधम्मजिणमयविऊण ।
अज्झावयाण रत्ता, सिवभूतिसुबुद्धिनामाण ।।५४।।

सुरसुंदरी अ सिक्खइ, लिहिय गणिय च लक्खण छद ।
कव्वमलकारजुय तक्क च पुराणसमिईओ ।।५५।।

सिक्खेइ भरहसत्थ, गीय नट्ट च जोइसतिगिच्छ।
विज्ज मत तत, हरमेहलचित्तकम्माइ ॥५६॥

अन्नाइ पि कुडलविटलाइ करलाघवाइकम्माइ ।
सत्थाइ सिक्खियाइ, तीइ चमुक्कारजणयाइ ॥५७॥

सा कावि कला त किंपि कोसल त च नत्थि विन्नाए ।
ज सिक्खिय न तीए, पन्नाअभिओगजोगेण ॥५८॥

सविसेस गीयाइसु, निउणा वीणाविणीयलीणा सा ।
सुरसुदरी वियड्ढा,—जाया पत्ता य तारून ॥५९॥

जारिसओ होइ गुरू, तारिसओ होइ सीसगुणजोगो ।
इत्तुच्चिय सा मिच्छ—दिट्ठि उक्किट्ठदप्पा अ ॥६०॥

तह मयणसुदरीवि हु, एया उ कलाओ लीलमित्तेण ।
सिक्खेइ विमलपन्ना, धन्ना विणएण सपन्ना ॥६१॥

जिणमयनिउणेणज्झावएण मयणसुदरीवाला ।
तह सिक्खविया जह जिणमयंमि कुसलत्तण पत्ता ॥६२॥

एगा सत्ता दुविहो नओ य कालत्तय गइचउक्क ।
पचेव अत्थिकाया, दव्वछक्क च सत्त नया ॥६३॥

अट्ठेव य कम्माइ नवतत्ताइ च दसविहो धम्मो ।
एगारस पडिमाओ बारस वयाइ गिहीण च ॥६४॥

इच्चाइ वियाराचारसारकुसलत्तण च सपत्ता ।
अन्ने सुहुमवियारेवि मुणइ सा नियय नाम वि ॥६५॥

कम्माण मूलुत्तरपयडीओ गणइ मुणइ कम्मठिइ ।
जाणइ कम्मविवाग, बधोदयदीण सत ॥६६॥

जीसे सो उज्झाओ, सता दतो जिइदिओ धीरो ।
जिणमयरओ सुबुद्धि सा किं नहु होइ तस्सीला ? ॥६७॥

सयलकलागमकुसला, निम्मलसम्मत्तसीलगुणकलिया ।
लज्जासज्जा सा मयणसुदरी जुव्वण पत्ता ॥६८॥

अन्नदिणे अब्भितरसहानिविट्ठेण नरवरिदेण ।
अज्झावयमहियाओ, अणविवाओ कुमारीओ ॥६९॥

विणओणयाउ ताओ, सव्वलावन्नलोहिअसहाओ ।
विणिवेसिआउ रन्ना, नेहेण उभयपासेसु ॥७०॥

बुद्धिपरिक्खण

हरिसवसेण राया, तासिं बुद्धिपरिक्खणनिमित्त ।
एग देइ समस्सा—पय दुविहंपि समकाल ।।७१।।

जहा "पुन्निहिं लब्भइ एहु," ।

तो तक्काल अइचवलाइ अच्चतगव्वगहिलाए ।।
सुरसुंदरीइ भणिय, हु हु पूरेमि निसुहेण ।।७२।।

जहा धणजुव्वण सुवियडढपण रोगरहिअ निअ देहु ।
मणवल्लह मेलावडउ, पुन्निहिं लब्भइ एहु ।।७३।।

त सुणिय निवो तुठठो पससए साहु साहु उज्भाओ ।
जेणेसा सिक्खविआ, परिमावि भणेइ मच्चमिण ।।७४।।

तो रन्ना आइठ्ठा, मयणा वि हु पूरए समस्स त ।
जिणवयणरया सता दता ससहावसारिच्छ ।।७५।।

जहा—विणयविवेयपसण्णमणु सीलसुनिम्मलदेह ।
परमप्पहमेलावडउ, पुण्णहिं लब्भइ एहु ।।७६।।

तो तीए उवभाओ, मायावि अ हरिसिआ न उण सेसा ।
जेण तत्तोवएसो न कुणइ हरिस कुदिटठिण ।।७७।।

केरिसो वरो

कुरुजगलमि दसे, सखपुरीनामपुरवरी अत्थि ।
जा पच्छा विक्खाया, जाया अहिछत्तनामेण ।।७८।।

तत्थत्थि महीपालो कालो इव वेरिआण दमिआरी ।
पइवरिस सो गच्छइ, उज्जेणिनिवस्स सेवाए ।।७९।।

अन्नदिणे तप्पुत्तो, अरिदमनो नाम तारतारुन्नो ।
सम्पत्तो पिअठाणे, उज्जेणि रायसेवाए ।।८०।।

त च निवपणमणत्थ समागय तत्थ दिव्वरूवधर ।
सुरसुंदरी निरिक्खइ, तिक्खकडक्खेहि ताडति ।।८१।।

तत्थेव थिरनिवेसिअदिट्ठी दिट्ठा निवेण सा बाला ।
भणिया य कहसु वच्छे ! तुज्भ वरो केरिसो होउ ? ।।८२।।

तो तीए हिट्ठाए, धिट्ठाए मुक्कलोअलज्जाए ।
भणिय तायपसाया, जइ लब्भइ मग्गिअ कहवि ।।८३।।

ता स`वकलाकुसलो,   तरुणोवरुवपुण्णलायन्नो ।
एरिसम्रो होउ वरो, म्रहवा ताम्रोचिम्र पमाण ।।८४।।

जेण ताय तुम चिय, सेवयजणमणसमीहियत्थाण ।
पूरणपवणो दीससि, पच्चक्खो कप्परुक्खव्व ।।८५।।

ता तुट्ठो नरनाहो, दिट्ठिनिवेसेण नायतीइमणा ।
पभणेइ होउ वच्छे ! एसऽरिदमणो वरो तुज्झ ।।८६।।

ता सयलसभालोम्रो, पभणइ नरनाह ! एस सजोगो ।
म्रइसोहणोऽहिवल्लीपूगतरूण व   निब्भत ।।८७।।

ग्रह मयणसु`दरीवि हु रन्ना नेहेण पुच्छिया वच्छे ।
केरिसम्रो तुज्झ वरो, कीरउ ? मह कहसु म्रविलव ।।८८।।

सा पुण जिणवयणवियारसारसजणियनिम्मलविवेम्रा ।
लज्जागुणिक्कसज्जा, म्रहोमुही जा न जपेइ ।।८९।।

ताव नरिदेण पुणो पुट्ठा सा भणइ ईसि हसिऊण ।
ताय विवेयसमेम्रो, म पुच्छसि तमि किमजुत्त ।।९०।।

जेण कुलवालिम्राम्रो, न कहति हवेउ एस मज्झ वरो ।
जो करि पिऊहि दिन्नो सो चेव पमाणियव्वुत्ति ।।९१।।

म्रम्मा पिउणोवि निमित्तमित्तमेवेह वरपयाणमि ।
पाय पुव्वनिबद्धो सम्ब`धो होइ जीवाण ।।९२।।

कम्म परिणामो

ज जेण जया जारिसमुवज्जिय होइ कम्म सुहमसुह ।
त तारिस तया से, सपज्जइ दोरियनिबद्ध ।।९३।।

जा कन्ना बहुपुन्ना, दिन्ना सुकुलेवि सा हवइ सुहिया ।
जा होइ हीणपुन्ना, सुकुले दिन्नावि सा दुहिया ।।९४।।

ता ताय ! नायतत्तस्स, तुज्झ नो जुज्जए इमो गव्वा ।
ज मज्झ कयपसायापसायम्रो सुहदुहे लोए ।।९५।।

जो होइ पुन्नवलिम्रो, तस्स तुम ताय ! लहु पसीएसि ।
जो पुण पुण्णविहूणो, तस्स तुम नो पसीएसि ।।९६।।

भवियव्वया सहावो, दव्वाइया सहाइणो वावि ।
पाय पुव्वावज्जियकम्माणुगया फल दिति ।।९७।।

तो दुम्मिश्रो य राया, भणेइ रे तसि मह पसाएण ।
वत्थालकाराइ, पहिरती कीसिम भणसि ? ।।९८।।

हसिऊण भणइ मयणा, कयसुक्यवसेण तुज्भ गेहमि ।
उप्पन्ना ताय ! ग्रह, तेण माणेमि सुक्खाइ ।।९९।।

पुव्वकय सुकय चिम्र, जीवाण सुक्खकारण होइ ।
दुकय च कय दुक्खाण, कारण होइ निब्भत ।।१००।।

न सुरासुरेहि, नो नरवरेहि, नो बुद्धिबलसमिद्धेहि ।
कहवि खलिज्जइ इतो, सुहासुहो कम्मपरिणामो ।।१०१।।

तो रुट्ठो नरनाहो, ग्रहो ग्रहो ग्रप्पपुन्निग्रा एसा ।
मज्भ कय किपि गुण, नो मन्नइ दुव्वियड्ढा य ।।१०२।।

पभणेइ सहालोग्रो, सामिय ? किमिय मुणेइ मुद्धमई ।
त चेव कप्परुक्खो, तुट्ठो रुट्ठो कयतो य ।। १०३।।

मयणा भणेइ धिद्धि, धणलवमित्तत्थिणो इमे सव्वे ।
जाणतावि हु ग्रलिग्र, मुहप्पिय चेव जपति ।।१०४।।

जइ ताय ! तुह पसाया, सेवयलोग्रा हवति सव्वेवि ।
सुहिया ता समसेवानिरया किं दुक्खिया एगे ? ।।१०५।।

तम्हा जो तुम्हाण, रुच्चइ सो ताय ! मज्भ हाउ वरो ।
जइ ग्रत्थि मज्भ पुन, ता होही निग्गुणोवि गुणी ।।१०६।।

जइ पुण पुनविहीणा ताय ! ग्रह ताव सु दरोवि वरो ।
होही ग्रसु दरच्चिय, नूण मह कम्मदोसेण ।।१०७।।

तो गाढयर राया रुट्ठो चिंतेइ दुव्वियड्ढाए ।
एयाइ कग्रो लहुग्रो, ग्रह तग्रो वेरिणी एसा ।।१०८।।

रोसेण वियडभिउडीभीसणवयण पलोइऊण निव ।
दक्खो भणेइ मती, सामिय ! रइवाडियासमग्रो ।।१०९।।

रोसेण धमधमतो, नरनाहो तुरयरयणमारूढो ।
सामतमतिसहिग्रो, विणिग्गग्रो रायवाडीए ।।११०।।

कुट्ठिभूयोउवरो

जाव पुराग्रो बाहिं, निग्गच्छइ नरवरो सपरिवारो ।
ता पुरग्रो जणवद पिच्छइ साडबरमियत ।।१११।।

तो विम्हिएण रन्ना, पुट्ठो मंती स नायवुत्तंतो ।
विन्नवइ देव निसुणह, कहेमि जणवद परमत्थं ॥११२॥

सामिय ! सव्वपुरिसा, सत्तसया नववया ससोडीरा ।
दुट्ठकुट्ठाभिभूया, सव्वे एगत्थ समिलिया ॥११३॥

एगो य ताण बालो, मिलिओ उंबरयवाहिगहियगो ।
सो तेहिं परिगहिओ उंबरराणुत्ति कयनामो ॥११४॥

वरवेसरिमारूढो, तयदोसी छत्तधारओ तस्स ।
गयनासा चमरधरा, धिणिधिणिसद्दा य अग्गपहा ॥११५॥

गयकन्ना घटकरा, मंडलवइ अंगरक्खगा तस्स ।
दद्दुलथइआवत्तो गलीअंगुलि नामओ मंती ॥११६॥

केवि पसूइयवाया, कच्छादब्भेहिं केवि विकराला ।
केवि विउचिअपामामंमनिया सेवगा तस्स ॥११७॥

एवं सो कुट्ठिअपेडएण परिवेढिओ महीवीढे ।
रायकुलेसु भमंतो पजिअदाएण पगिण्हेइ ॥११८॥

सो एसो आगच्छइ, नरवर ! आडबरेण संजुत्तो ।
ता मग्गमिएण मुत्त्, गच्छह अन ! दिस तुब्भे ॥११९॥

तो वलिओ नरनाहो अन्नाइ दिसाइ जाव ताव पुरो ।
तो पेडयपि तीए दीसाइ वलियं तुरिअं तुरिअं ॥१२०॥

राया भणेइ मंतिं, पुरओ गतूणिमे निवारेसु ।
मुहमग्गियपि दाउ, जणेसि, दसणं न सुहं ॥१२१॥

जा तं करेइ मंति, गलिअंगुलिनामओ दुयं ताव ।
नरवर पुरआ ठाउ, एवं भणिउं समाढत्तो ॥१२२॥

सामिअ ! अम्हाणं पहू, उंबरनामेण राणओ एसो ।
सव्वत्थ वि मन्निज्जइ गरएहिं दाणमाणेहिं ॥१२३॥

तेणऽम्हाणं घग्गकरायचीरयमुहेहिं कीरइ न किंपि ।
एतस्स पसायेणं अम्हे सव्वेवि अइसुहिणो ॥१२४॥

एगो नाह ! समत्थि अम्ह मणचिंतिओ विअप्पुत्ति ।
जइ लहइ राणओ राणियंति ता सुदर होइ ॥१२५॥

ता नरनाह ! पसायं, काऊण देहि कन्नगं एगं ।
अवरेण कणगकप्पणदाणेणं तुम्ह पज्जत ॥१२६॥

तो भणइ रायमती अहो अजुत्त विमग्गिअ तुमए।
को देइ निय धूय कुटठकिलिटठस्स जाणतो ।।१२७।।

गलिअगुलिणा भणिय, अम्हेहिं सुया निवस्सिमा कित्ती।
ज किल मालवराया, करेइ नो पत्थणाभग ।।१२८।।

ता सा निम्मलकित्ति, हारिज्जउ अज्ज नरवरिंदस्स।
अहवा दिज्जउ कावि हु, धूया कुकुलेवि सभूया ।।१२९।।

मयणसुदरीविवाहो

पभणेइ नरवरिंदो, दाहिस्सइ तुम्ह कनगा एगा।
को किर हारइ कित्ती, इत्तियमित्तेण कज्जेण ? ।।१३०।।

चिंतेइ मणे राया, कोवानलजलियनिम्मलविवेगो।
नियधूय अरिभूय, त दाहिस्सामि एयस्स ।।१३१।।

सहसा वलिऊण तओ, नियआवासमि आगओ राया।
वुल्लावइ त मयणासुदरिनाम निय धूय ।।१३२।।

हु अज्जवि जइ मन्नसि, मज्झ पसायस्स सभव सुक्ख।
ता उत्तम वर ते परिणाविय देमि भूरि धण ।।१३३।।

जइ पुण नियकम्म चिय, मन्नसि ता तुज्झ कम्मणाणीओ।
एसो कुट्ठिअराणो होउ वरो कि वियप्पेण ? ।।१३४।।

हसिऊण भणइ बाला, आणीओ मज्झ कम्मणा जो उ।
सो चेव मह पमाण, राओ वा रकजाओ वा ।।१३५।।

कोवधेण रन्ना, सो उबरराणओ समाहूओ।
भणिओ य तुममिमीए, कम्माणीओसि होसु वरो ।।१३६।।

तेणुत्त नो जुत्त, नरवर ! वुत्त पि तुज्झ इय वयण।
को कणयरयणमाल वधइ कागस्स कठमि ।।१३७।।

एगमह पुव्वकय कम्म भु जेमि एरिसमणज्ज।
अवर च कहमिमीए, जम्म वोलेमि जाणतो ? ।।१३८।।

ता भो नरवर ! जइ देसि कावि ता देसु मज्झ अणुरूव।
दासीविलासिणिधूय, नो वा ते होउ कल्लाण ।।१३९।।

तो भणइ नरवरिंदो, भो भो महनदणी इमा किंपि।
नो मज्झकय मन्नइ, नियकम्म चेव मन्नेइ ।।१४०।।

तेण विग्र कम्मेण, आणीओ तमि चेव जोइ वरो।
जइ सा निअकम्मफल, पावइ ता अम्ह को दोसो ? ॥१४१॥

त सोउण बाला, उट्ठित्ता भत्ति उवरस्स कर।
गिण्हइ निययकरेण, विवाहलगव साहति ॥१४२॥

सामतमतिअतेउरिउ वारति तहवि सा वाला।
मरमससिसरिसवयणा, भणइ सई सुच्चिअ पमाण ॥१४३॥

एगत्तो माउलओ, एगत्तो रुप्पसु दरीमाया।
एगत्तो परिवारो, रुयइ अहो केरिसमजुत्त ? ॥१४४॥

तहवि न नियकोवाओ, वलेइ राया अईव कढिणमणो।
मयणावि मुणियतत्ता, निअसत्ताओ न पचलेइ ॥१४५॥

त वेसरिमारोविअ, जा चलिओ उवरो निअयठाण।
ता भणइ नयरलोओ, अहो अजुत्त अजुत्त ति ॥१४६॥

एगे भणति धिद्धी, रायाण जेणिम कयमजुत्त।
अन्ने भणति धिद्धी, एय अइदुव्विणीयति ॥१४७॥

केवि निदिति जणणि, तीए निंदति केवि उवभाय।
केवि निंदति दिव्व, जिणधम्म केवि निंदिति ॥१४८॥

तहवि हु वियमियवयणा, मयणा तेणु वरेण सह जति।
न कुणई मणे विसाय, सम्म धम्म वियाणति ॥१४९॥

उबरपरिवारेण, मिलिएण हरिसनिब्भरगेण।
निअपहुणो भत्तेण, विवाहकिच्चाइ विहियाइ ॥१५०॥

सुरसु दरीविवाहो

इत्तो—रन्ना सुरसु दरीइ वीवाहणत्थमुज्झाओ।
पुट्ठो सोहणलग्ग, सो पभणइ राय ! निसुणेसु ॥१५१॥

अज्ज चिय दिणसुद्धी, अत्थि पर सोहण गय लग्ग।
तइया जइया मयणाइ, तीइ कुट्ठिअकरो गहिओ ॥१५२॥

राया भणेइ हु हु नाओ नगरस्स तस्स परमत्थो।
अहुणावि हु निअधूय एय परिणावइस्सामि ॥१५३॥

रायाएसेण तओ, खणमित्तेणावि विहिअसामग्गि।
मतीहि पहिट्ठेहि, विवाहपव्व समाढत्त ॥१५४॥

त च केरिस —

ऊसिअतोरणपयडपडाय, बज्जिरतुरगहीरनिनाय ।
नच्चिरचारविलासिणिघट्ट, जयजयसद्दकरत सुभट्ट ॥१५५॥

पट्ट सुयघडओज्जिमाल, कूरकपूरतबोल विसाल ।
धवलदिअतसुवासिणिवग्ग वुड्ढपुरधिकहिअविहिमग्ग ॥१५६॥

मग्गणजणदिज्जतसुदान, सयण सुवासिणिकयसम्माण ।
मद्दलवायचउप्फललोय जणजणवयमणि जणियपमोय ॥१५७॥

कारिअसुरसुदरिसिणगार, सिंगारिअअरिदमनकुमार ।
हथलेवइ मडलविहिचग करमोयण करिदाणसुरग ॥१५८॥

एव विहिअविवाहो, अरिदमणो लद्धहयगयसणाहो ।
सुरसुदरीसमेओ, जा निगच्छइ पुरवरीओ ॥१५९॥

ता भणइ सयललोओ, अहाऽणुरुवो इमाण सजोगो ।
धन्ना एसा सुरसुदरी य जीए वरो एसा ॥१६०॥

केवि पससति निव, केवि वर केवि सुदरि कन्न ।
केवि तीएँ उज्झाय, केवि पससति सिवधम्म ॥१६१॥

सुरसुदरिसम्माण, मयणाइ विडबण जणो दट्ठु ।
सिवसासणप्पसस, जिणसासणनिंदण कुणइ ॥१६२॥

सीलमहिमा

निअपडयस्स मज्झ, रयणीए ऊवरेण सा मयणा ।
भणिआ भद्दे ! निसुणसु, इम अजुत्त कय रन्ना ॥१६३॥

तहवि न किंपि विणट्ठ, अज्जवि त गच्छ कमवि नररयण ।
जेण होइ न विहल, एय तुह रूवनिम्माण ॥१६४॥

इअ पेडयस्स मज्झे, तुज्झवि चिट्ठ तिआइ नो कुसल ।
पाय कुसगजणिअ, मज्झवि जाय इम कुटठ ॥१६५॥

तो तीए मयणाए नयणसुयनोरकलुसवयणाए ।
पइपाएसु निवेसिअसिराइ भणिअ इम वयण ॥१६६॥

सामिअ ! सव्व मह आइसेसु किंचेरिस पुणो वयण ।
नो भणियव्व ज दूहवेइ मह माणस एय ॥१६७॥

अ न च-पढम महिलाजम्म, केरिसय तपि होइ जइ लोए ।
सीलविहूण नूण, ता जाणह कजिअ कुहिअ ॥१६८॥

सील चिअ महिलाए, विभूपण सीलमेव सव्वस्स ।
सील जीवियसरिस, सीलाउ न सुदर किंपि ॥१६६॥

ता सामिअ ! आमरण, मह सरण तसि चेव ना अन्ना ।
इअ निच्छिय वियाणह, अवर ज होइ त होउ ॥१७०॥

एव तीए अइनिच्चलाइ दढसत्तपिक्खणनिमित्त ।
सहसा सहस्सकिरणो, उदयाचलचूलिअ पत्तो ॥१७१॥

मयणाए वयणेण सो उवरराणओ पभायमि ।
तीए सम तुरतो, पत्तो सिरिरिसहभवणमि ॥१७२॥

जिणवरपूआ

आणदपुलइ अगेहिं तेहि दोहिवि नमसिओ सामी ।
मयणा जिणमयनिउणा, एव थोउ समाढत्ता ॥१७३॥

भत्तिभरनमिरसुरिदवद-वदिअपयपढमजिणदचद ।
चदुज्जलकेवलकित्तिपूर पूरियभुवणतरवेरिसर ॥१७४॥

सूरुव हरिअतमतिमिरदेव देवासुरखेयरविहिअसेव ।
सवागयगयमयरायपाय पायडियपणामह कयपसाय ॥१७५॥

सायरसमसमयामयनिवास, वासवगुरगोयरगुणविकास ।
कामुज्जलसजमसोललील, लीलाइविहिअमोहावहील ॥१७६॥

हीलापरजतुसु अक्यसाव, सावयजणजणिअआणदभाव ।
भावलयअलकिअ रिसहनाह, नाहत्तणु करिहरि दुक्खदाह ॥१७७॥

इअ रिसह जिणेसर भुवणदिणेसर, तिजयविजयसिरिपालपहो ।
मयणाहिअ सामिअ सिवगइगामिअ, मणह मणोरह पूरिमहो ॥

एव समाहिलीणा मयणा जा थुणइ ताव जिणकठा ।
करठिअफलेण सहिआ उच्छलिआ कुसुमवरमाला ॥१७६॥

मयणावयणओ उवरए महसत्ति त फल गहिअ ।
मयणाइ सय माला, गहिया आणदिअमणाए ॥१८०॥

भणिअ च तीइ सामिअ फिट्टिस्सइ एस तुम्ह तणुरोगो ।
जेणसा सजोगा जाओ जिणवरकयपसाओ ॥१८१॥

तत्तो मयणा पइणा सहिआ मुनिचदगुरुसमीवमि ।
पत्ता पमुइअचित्ता भत्तीए नमइ तस्स पए ॥१८२॥

गुरुणो य तया करुणापरित्तचित्ता कहंति भवियाण ।
गभीरसजलजलहरमरेण धम्मस्स फलमेव ॥१८३॥

सुमाणुसत्त सुकुल सुरूव, सोहग्गमारुग्गमतुच्छमाउ ।
रिद्धि च विद्धि च पहुत्त कित्ती पुन्नप्पसाएण लहंति सत्ता ॥१८४॥

णवपयाण आराहण

इच्चाइ देसणते गुरुणो पुच्छति परिचिय मयण ।
वच्छे कोऽय धन्नो वरलक्खणलक्खिअसुपुन्नो ? ॥१८५॥

मयणाइ रुअतीए कहिओ सव्वोवि निअयवुत्तंतो ।
विन्नत च न अन्न भयव ! मह किंपि अत्थि दुह ॥१८६॥

एय चिअ मह दुक्ख ज मिच्छादिट्ठिणो इमे लोआ ।
निदति जिणहधम्म सिवधम्म चेव ससति ॥१८७॥

मा पहु कुणह पसाय किंपि उवाय कहेह मह पइणो ।
जेणेस दुट्ठवाही जाइ खय लोअवाय च ॥१८८॥

पभणेइ गुरु भद्दे ! साहूण न कप्पए हु सावज्ज ।
कहिउ किंपि तिगिच्छ विज्ज मत च तत च ॥१८९॥

तहवि अणवज्जमेग समत्थि आराहण नवपयाण ।
इहलोइअपरलोइअसुहाणमूल जिणुद्दिट्ठ ॥१९०॥

अरिह सिद्धायरिआ उज्झाया साहुणो य सम्मत्त ।
नाण चरण च तवो, इअ पयनवग परमतत्त ॥१९१॥

एएहिं नवपएहिं रइअ अन्न न अत्थि परमत्थ ।
एएसु च्चिअ जिणसासणस्स सव्वस्स अवयारो ॥१९२॥

जे किर सिद्धा सिज्झति जे अ, जे आवि सिज्झइस्सति ।
ते सव्वेवि हु नवपयझाणेण चेव निब्भत ॥१९३॥

एएसिं च पयाण पयमेगयर च परम भत्तीए ।
आराहिऊण णेगे सपत्ता तिजयसामित्त ॥१९४॥

एएहिं नवपएहिं सिद्ध सिरिसिद्धचक्कमेअ ज ! ।
तस्सुद्धारो एसो पुव्वायरिएहिं निद्दिट्ठो ॥१९५॥

• ☐ •

३ लीलावईकहा

मगलाचरण

णमह सारोससुयरिसण सच्चविय कररुहावलीजुयल ।
हिरणक्खवियडोरत्थलट्ठिदलगब्भिण हरिणो ॥१॥

त णमह जस्स तइया तइयवय तिहुयण तुलतस्स ।
सायारमणायारे अप्पाणमप्प च्चिय णिसण्ण ॥२॥

तस्सेय पुणो पणमह णिहुय हलिणा हसिज्जमाणस्स ।
अपहुत्त-देहली-लघणद्धवह सठिय चलण ॥३॥

सो जयउ जस्स पत्तो कठे रिट्ठासुरस्स घणक्खणो ।
उप्पायपवडिढयकालवासकरणी भुयप्फलिहो ॥४॥

रक्खतु वो महोवहिसयणे सेसस्स फेणमणिमऊहा ।
हरिणो सिरिसिहिणालयकोत्थुहकदकुरायारा ॥५॥

हरिणो जमलज्जुणरिट्ठकेसिकसासुरिद सैलाण ।
भजणवलणवियारणकडढणधरणे भुए णमह ॥६॥

वक्खभुयकोप्परपूरिमाणणो कढिणकरकयावेसो ।
कमि-किसोर-क्यरथण-कउज्जमो जयइ महुमहणो ॥७॥

सो जयउ जेण तयलोय-कवलणारभ गब्भिय मुहेण ।
ओसावणि व्व पीया सत्त वि चुलुय-ट्ठिया उयही ॥८॥

गोरीए गुरुभरक्कतमहिससीसट्ठिभजणुद्धरिय ।
णमह णमतसुरासुरसिरमसिणियणेउर चलण ॥९॥

चडीए कढिणकोयडकडढणायाससेय सलिलुल्लो ।
णत कुसभुप्पीलो रक्खउ वो कचुओ णिच्च ॥१०॥

ससहरकरसवलिया तुम्ह सुरणिण्णयाएणासतु ।
पाव फुरतरूद्दट्टहासधवला जलुप्पीला ॥११॥

सज्जण दुज्जण

जयति ते सज्जणभाणुणो मया वियारिणो जाण सुवण्णमचया ।
अइट्ठदोसा वियसति सगमे कहाणुवधा कमलायरा इव ।।१२।।

सो जयउ सयणा वि दुज्जणा इह विणिम्मिया भुयणे ।
ण तमेण विणा पावंति चद किरणा वि परिहाव ।।१३।।

दुज्जण सुयणाण णमो णिच्च पर-कज्ज वावड मणाण ।
एक्के भसण सहावा पर दोस परम्मुहा अण्णे ।।१४।।

अहवा ण को वि दोसो दीसइ सयलम्मि जीय लोयम्मि ।
सव्वो च्चिय सुयण-यणो ज भणिमो त णिसामेह ।।१५।।

सज्जण-सगेण वि दुज्जणस्स ण हु कलुसिमा समोसरइ ।
ससि मडल मज्झ परिट्ठिओ वि कसणो च्चिय कुरगो ।।१६।।

[दुज्जण सगेण वि सज्जणस्स णास ण होइ सीलस्स ।
तीए सलोणे वि मुहे तह वि हु अहरो महु सवइ ।।१७।।]

अलमवरेणासबधालाव-पग्गिहाणुबवेण ।
वाल जण विलसिएण व णिरत्थ वाया पसगेण ।।१८।।

कविउलवण्णण

आसि तिवेय तिहोमग्गि सग मजणिय तियस परिओसो ।
सपत तिवग्ग फलो बहुलाइच्चो त्ति णामेण ।।१९।।

अज्ज वि महग्गि-पसरिय धूम सिहा कलुसिय व वच्छयल ।
उव्वहइ मय कलक्च्छलेण मयलछणो जस्स ।।२०।।

तस्स य गुण रयण महोयहीए एक्को सुओ समुप्पण्णो ।
भूसणभट्टो णामेण णियय-कुल-णहयल मयको ।।२१।।

जस्स पिय वधवेहि व चउवयण विणिग्गएहि वेएहि ।
एक्क वयणारविंद ट्ठिएहि वहु मण्णिओ अप्पा ।।२२।।

तस्स तणएण एय असार मइणा वि विरइय सुणह ।
कोऊहलेण लीलावइ त्ति णाम कहा रयण ।।२३।।

त जह मियय-केसरि-कर पहरण-दलिय तिमिर-करि कु भे ।
विक्खित्त-रिक्ख मुत्ताहलुज्जले सरय-रयणीए ।।२४।।

जोण्हाऊरिय कोस कंति धवने सव्वग गधुक्कडे
णिव्विग्घ घर दीहियाए सुरस वेवतग्रो मासल ।

ग्रासाएइ मुमजु-गु जिय रवो तिगिच्छि पाणासव
उम्मिल्लत दलावली परियग्रो चदुज्जुए छप्पग्रो ॥२४॥

इमिणा सरएण ससी ससिणा वि णिसा णिसाए कुमुय वरण ।
कुमुय वरणेण व पुलिरण पुलिरणेण व सहइ हस उल ॥२५॥

णव विस कसायससुद्ध कठ क्ल मणोहरो णिसामेह् ।
मरय सिरि चलरण णेउर राग्रो इव हस-सलावो ॥२६॥

सचरइ मीयलायत-सलिल-क्ल्लोल-सग णिव्वविग्रो ।
दर दलिय मालई मुद्ध मउल गधुद्धुरो पवणो ॥२७॥

एसा वि दस दिसा वहु वयरण विसेसावलि व्व सर-सलिले ।
विम्बल तरग दोलत-पायवा सहइ वण राई ॥२८॥

एयाइ दियस सभावरणेक्क हियाइ पेच्छह घडति ।
ग्रामुक्क विरह वयणाइ चक्कवायाइ वावीसु ॥२९॥

एय उय वियसिय सत्तवत्त परिमल विलोहविज्जत ।
ग्रविहाविय-कुसुमासाय विमुहिय भमइ भमर उल ॥३०॥

चदुज्जुयावयस पवियभिय सुरहि-कुवलयामोय ।
णिम्मल-तारालोय पियइ व रयणी मुह चदो ॥३१॥

ता किं बहुणा पयपिएण—

ग्रइ रमणीया रयणी सरग्रो विमलो तुम च साहीणो ।
ग्रणुकूल-परियणाए मण्णे त णत्थि ज णत्थि ॥३२॥

कहा सरूव

ता किं पि पग्रोस विणोय मत्त सुहय म्ह मणहरुल्लाय ।
साहेह ग्रउव्व-क्ह सुरस महिला यण मणोज्ज ॥३३॥

त मुद्धमुहबुरुहाहि वयणय णिसुणिऊण णे भणिय ।
कुवलय दलच्छि एत्थ कईहि तिविहा कहा भणिया ॥३४॥

त जह दिव्वा तह दिव्व माणुसी माणुसी तह च्चेय ।
तत्थ वि पटमेहिं क्य कईहि किर लक्खण किं पि ॥३५॥

अण्ण सवक्क्य-पायय-मकिण्ण विहा सुवण्ण रइयाओ ।
सुव्व तिमहा-वई-पुगवेहिं विविहाउ सुकहाओ ।।३६।।

ताए मज्झे अम्हारिसेहिं अबुहेहिं जाउ सीसंति ।
ताउ कहाओ ण लोए मयच्छि पावंति परिहाव ।।३७।।

ता किं म उवहासेसि सुयणु असुएण सद्द सत्येण ।
उल्लविउ पि ण तीरइ किं पुण वियडो कहा-बघो ।।३८।।

भणिय च पिययमाए पिययम किं तेण सद्द-सत्येण ।
जेण सुहासिय मग्गोभग्गो अम्हारिस जणस्स ।।३९।।

उवलब्भइ जेण फुड अत्थो अकयत्थिएण हियएण ।
सो चेय परो सद्दो णिच्चो किं लक्खणम्ह ।।४०।।

एमेय मुद्ध-जुयई मणोहर पाययाए भासाए ।
पविरल-देसि-सुलक्ख कहसु कह दिव्व माणुसिय ।।४१।।

त तह सोऊण पुणो भणिय उब्बिम बाल-हरिणच्छि ।
जइ एव ता सुव्वउ सुसधि-बघ कहा वत्थु ।।४२।।

कहारम्भ

चउ जलहि-वलय रसणा णिवद्ध वियडोवरोह-सोहाए ।
सेसव सुप्परिटिठय-सव्वगुव्वूढ भुवणाए ।।४३।।

पलय वराह-समुद्धरण सोक्ख सपत्ति-गरुय भवाए ।
णाणा विह रयणालक्खियाए भयवईए पुहईए ।।४४।।

णीसेस सस्स सपत्ति-पमुइयासेस-पामर जणोहो ।
सुव्वसिय गाम गोहण भभा रव मुहलिय दियतो ।।४५।।

अइ सुहिय-पाण आवाण चच्चरी रव रमाउलारामो ।
णीसेस-मुह णिवासो आसय विसहो त्ति विक्खाओ ।।४६।।

जो सो अविउत्तो क्य जुयस्स धम्मस्स सणिवेसो व्व ।
सिक्खा ठाण व पयावइस्स सुकयाण आवासो ।।४७।।

सासणमिव पुण्णाण जम्मुप्पत्ति व्व सुह समूहाण ।
आयरिसो आयाराण सइ सुछेत्त पिव गुणाण ।।४८।।

सुसणिद्ध घास सतुट्ठ गोहणालोय मुइय गोयालो ।
गेयारव भरिय दिसो वर वल्लइ वेणु णिवहेसु ।।४९।।

दूरुण्णय गरुय-पग्रोहराओ कोमल मुणाल वाहोग्रो ।
सइ महूर वाणियाग्रो जुवईग्रो णिण्णयाउ व्व ।।५०।।

ग्रच्छउ ता णिय छेत्त सेसाइ वि जत्थ पामर वहूहिं ।
रक्खिज्जाति मणोहार-णेयारव-हरिय हरिणाहिं ।।५१।।

णयर

इय एग्सिस्स सुदरि मज्झम्मि सुजणवयस्स रमणीय ।
णीसेस सुह णिवास णयर णाम पइट्ठाण ।।५२।।

त च पिए वर णयर वण्णिज्जइ जा विहाइ ता रयणी ।
उद्देसो मखेवेण कि पि वोच्छामि णिसुणेसु ।।५३।।

जत्थ वर-कामिणी चलण णेउरारावमणुसरतेहिं ।
पडिराविज्जइ मुह मुक्क किसलय रायहसेहिं ।।५४।।

जणणिग धूम-सामालिय णहयलालोयणेक्क रसिएहिं ।
णच्चिज्जइ ससहर मणि सिलायले घर मयूरेहिं ।।५५।।

ण तरिज्जइ घर मणि किरण-जाल पडिरुद्ध तिमिर णियरम्मि ।
ग्रहिसारियाहिं ग्रामुक्क मडणाहिं पि सचरिउ ।।५६।।

साणूर थूहिया धय णिरतरत्तरिय-तरणि-कर णियरे ।
परिसेसियायवत्त गम्मइ सगीय विलयाहिं ।।५७।।

सरसावराह परिकुविय कामिणी माण मोह लपिक्क ।
कलयठि उल चिय कुणइ जत्थ दोच्च पियाण सया ।।५८।।

णिद्दय रय रहस विलत-कामिणी सेय-जल-लवुप्फुसणा ।
पिज्जति जत्थ णासजलीहिं उज्जाण गधवहा ।।५९।।

घर सिर पसुत्त कामिणि-कवोल-सक्त-ससिकलावलय ।
हसेहिं ग्रहिलसिज्जइ मुणाल-सद्धालुएहिं जहिं ।।६०।।

मरहट्टिया पग्रोहर-हलिद्द-परिपिंजरबुवाहीए ।
धुव्वति जत्थ गोला णईए तद्दियसिय पाव ।।६१।।

ग्रह णवर तत्थ दोसो ज गिम्ह-पग्रोम मल्लियामोग्रो ।
ग्रणुणय सुहाइ माणसिणीण मोत्तु चिय ण देइ ।।६२।।

[ग्रह णवर तत्थ दोसो ज फलिह सिलायलम्मि तरुणीण ।
मयण वियारा दीसति वाहिर ठिएहिं वि जणेहिं ।।६२/१।।]

अह णवर तत्य दोसो ज वियसिय कुसुम रेणु पडलेण ।
मइलिज्जति समीरण वसेण घर चित भित्तीग्रो ।।६३।।

राया

त थेरिसम्मि णयरे णीसेस गुणावगूहिय सरीरो ।
भुवण पवित्थरिय जसो राया सालाहणो णाम ।।६४।।

जो सो अविग्गहो वि हु सव्वगावयव सु दरो सुहग्रो ।
दुद्दसणो वि लोयाण लोयाणाणद सजणणो ।।६५।।

कुवई वि वल्लहो पणइणीण तह णायवरो वि साहसिग्रो ।
परलाय भीरुग्रो वि हु वीरेक्क रसो तह च्चेय ।।६६।।

सूरो वि ण सत्तासो सोमो वि कलक वज्जिग्रो णिच्च ।
भाई वि ण दोजीहा तु गो वि समीव दिण्ण फलो ।।६७।।

बहुलत दिणेसु ससि व्व जेण वोच्छिण्ण मडल णिवेसो ।
ठविग्रा तणुयत्तण-दुक्ख लक्खिग्रो रिउ जणो सव्वो ।।६८।।

णिय-तेय पसाहिय मडलस्स ससिणो व्व जस्स लोएण ।
अक्कत जयस्स जए पटठी ण परेहि सच्चविया ।।६९।।

ग्रोसहि सिहा पिसगाण वोलिया गिरि गुहासु रयणीग्रो ।
जस्स पयावाणल कति-कवलियाण पिव रिऊण ।।७०।।

ग्रालिहियइ जो वम्मह णिभेण णिय वास भवण भित्तीसु ।
लडह विलयाहि णह मणि किरणारुणियग्ग हत्थेहि ।।७१।।

हियए च्चेय विरायति सुइर-परिचितिया वि सुकईण ।
जेण विणा दुहियाण व मणोरहा कव्व विणिवेसा ।।७२।।

वसतवण्णण

इय तस्स महा पुहईसरस्स इच्छा पहुत्त विहवस्स ।
कुसुमसराउह दूग्रो व्व ग्रागग्रो सुयणु महु मासो ।।७३।।

पत्थाण पढमागय मलयाणिल पिसुणिय वसतस्स ।
बहुलच्छलत-कोइल रवेण साहति व वणाइ ।।७४।।

[गहिऊण चूय मजरि कीरो परिभमइ पत्तला हत्यो ।
ग्रोसरस सिसिर णरवइ पुहई लद्धा वसतेण ।।७४/१।।]

मउलत मउलिएसु वियसिय वियसत कुसुम णिवहेसु ।
सरिम चिय ठवइ पय वणेसु लच्छी वसतस्स ।।७५।।

बहुएहि वि किं परिवड्ढिएहि बाणेहि कुसुम–चावस्स ।
एक्केण चिय चूयकुरेण कज्ज ण पज्जत ।।७६।।

घिप्पइ कणयमय पिव पसाहण जणिय तिलय मोहेण ।
अब्भहिय जणिय सोह कणियार-वण वसतेण ।।७७।।

वियसत विविह वणराइ कुसुमगिरिपरिगया महा तरुणो ।
किं पुण वियभमाणो ज ण कुणइ मल्लियामोओ ।।७८।।

पढम चिय कामि यणस्स कुणइ मउयाइ पाडलामोओ ।
हियया इ सुह पच्छा विसति सता वि कुसुम-सरा ।।७९।।

पज्जत वियासुव्वेल्ल गुदि पब्भार णूमिय दलाइ ।
पहियाण दूरालयाइ होंति मायगहणाइ ।।८०।।

अपहुत्त वियासुड्डीण भमर विच्छाय दल उड्डुम्बेय ।
कुद लइयाए वियलइ हिम विरहायासिय कुसुम ।।८१।।

आवज्झत फलुप्पक थोय विहडत सघि बधेहि ।
मद पवणाहएहि वि परिगलिय सिंदुवारेहि ।।८२।।

थोऊससत-पकय मुहीए णिव्वण्णिए वसतम्मि ।
वोलीण-तुहिणभरसुत्थियाए हसिय व णलिणीए ।।८३।।

मलय-समीर समागम सतास-पणच्चिराहि सव्वत्तो ।
वाहिप्पइ णव किसलय कराहि साहाहि महु-लच्छी ।।८४।।

दीसइ पलास वण वीहियासु पप्फुल्ल कुसुमणिवहण ।
रत्त वर-णेवच्छा णव-वरइत्ता व्व महुमासो ।।८५।।

परिवड्ढइ चूय-वणेसु विसइ णव-माहवी-वियाणेसु ।
लुलइ व ककेल्लि दलावलीसु मुइउ व्व महुमासो ।।८६।।

अण्णण्ण-वणलया-गहिय-परिमलेणाणिलेण छिप्पती ।
कुसुमसुएहि रुयइ व परम्मुहो तरुण चूय-लया ।।८७।।

वियसिय णीसेस वणतराल परिसठिएण कामेण ।
विंधिज्जइ कुसुम सरेहि लद्ध पसरेहि कामियणो ।।८८।।

इय वम्मह बाण असोक्खयम्मि मयनम्मि जीव-लोयम्मि ।
महु सिरि-समागमरयाण मडव उवगओ राया ।।८९।।

मेवागय सय मामत-मउड-माणिक्क किरण विच्छुरिए ।
सीहासणम्मि वदिण-जय सद्द-सम समासीणो ।।९०।।

परियरिओ वार-विलासिणीहि सुर-सुदरीहि व सुरेसो ।
कणयायलो व्व आमा-नहूहि सइ वियसियासाहि ।।९१।।

अह सो एक्काए सम णर-णाहो चदेलहणामाए ।
सप्परिहास सुमणोहर च मुट्य समुल्लवइ ।।९२।।

वासभवण

अइ चदलेहे ण णियसि मलयाणिल-नुसुम-रेणु-पडहत्थ ।
कामेण भुयण-वास व विरइय दस-दिसा यक्क ।।९३।।

ता कीस तुम केणावि मयण सर वधुणा मयक मुहि ।
चिचिल्लया सि सव्वायरेण सव्वगिय अज्ज ।।९४।।

गाव चपय-णिवेसियाणणो केण तुह णिडाल-यले ।
सज्जीवो विव लिहिओ महु-पाण-परव्वसो महुओ ।।९५।।

केण वि महग्घ-मयणाहि-पक-जोएण तुह कवोलेसु ।
लिहियाओ पत्तलेहाओ मयण-सर वत्तणीओ व्व ।।९६।।

केण व कइया सहयार-मजरी तुह कवोल-पेरते ।
फर-फस-विहाविय कुसुम सचया सुयणु णिम्मविया ।।९७।।

केणज्ज तुज्झ तवणिज्ज-पुज-पीए पओहरुच्छगे ।
पत्तत्त पत्त पत्त-लच्छि पत्त लिहतेण ।।९८।।

एक्कक्कम-वयण मुणाल दाण-वलियद्ध कधरा-वध ।
चलण-कमलेसु लिहिय केणय हस मिहुण जुय ।।९९।।

इय केण णियय विण्णाण पयडणुप्पण्ण-हियय भावेण ।
अविहाविय-गुण-दोसेण पाइया सप्पिणी छीर ।।१००।।



गज्जसंगहो

१ भारियासीलपरिक्खा

अत्थि अवंति नाम जणवओ। तत्थ उज्जेणी नाम नयरी रिद्धित्थिमियसमिद्धा। तत्थ राया जिनसत्तू नाम। तस्स रण्णो धारिणी नाम देवी।

तत्थ य उज्जेणीए नयरीए दसदिसिपयासो इब्भो सागरचंदो नाम। भज्जा य से चंदसिरी। तस्स पुत्तो चंदसिरीए अत्तओ समुद्दत्तो नाम सुरूवो।

सो य सागरचंदो परमभागवउदिक्खासपत्तो भगवयगीयासु सुत्तओ अत्थओ य विदितपरमत्थो। सो य तं समुद्दत्तं दारगं गिहे परिव्वायगस्स कलागहणत्थं ठवइ "अत्रसालासु सिक्खंतो अण्णपासंडियदिट्ठी हवेज्जा"।

तओ सो समुद्दत्तो दारगो तस्स परिव्वायगस्स समीवे कलागहणं करेमाणो अण्णया कयाइ 'फलगं ठवेमि' त्ति गिहं अणुपविट्ठो। नवरं च पासइ नियगं जणणीं तेण परिव्वायगेण सद्धिं असब्भं आयरमाणीं। ततो सो निग्गओ इत्थीसु विरागसमावण्णो 'न एयाओ कुलं सीलं वा रक्खंति' त्ति चिंतिऊण हियएण निब्बंधं करेइ जहा न मे वीवाहेयव्वं ति। तओ से समत्तकलस्स जोवणत्थस्स पिया सरिसकुलरूवविहवाओ दारियाओ वरेइ। सा य ता पडिसेहेइ। एवं तस्स कालो वच्चइ।

अण्णया तस्स सम्मएण पिया सुरट्ठं आगओ ववहारेण। गिरिनयरे धणसत्थवाहस्स धूयं धणसिरिं पडिरूवेण सुंकेण समुद्दत्तस्स वरेइ। तस्स य अनायं एवं तिहिग्गहणं काऊण नियनयरं आगओ। तओ तेण भणिओ समुद्दत्तो– 'पुत्त! मम गिरिनयरे भंडं अच्छइ, तत्थ तुमं सवयंसो वच्च। तओ तस्स भंडस्स विणिओगं काहामो' त्ति वोत्तूण वयंसाण य से दारियासंबंधं सविदितं कयं।

तओ ते सविभवाणुरूवेण निग्गया, कहाविसेसेण य पत्ता गिरिनयरं। बाहिरओ य ठाइऊण धणस्स सत्थवाहस्स मणुस्सो पेसिओ, जहा ते आगओ वरो त्ति।

तओ तेण सविभवाणुरूवा आवासा कया तत्थ य आवासिया। रत्तीए आगया भोयणववएसेण धणसत्थवाहगिहे धणसिरीए पाणिग्गहणं कारिओ।

तओ सो धणसिरीए वासगिहं पविट्ठो। तओ णेण पइरिक्कं जाणिऊण तीसे धणसिरीए चम्मट्टिं दाऊण निग्गओ, वयसाण य मज्झे सुत्तो। ततो पभायाए रयणीए सरीरावस्सकहेउ सवयमो चेव निग्गओ बहिया गिरिनयरस्स। तेसिं वयसाण अदिट्ठओ चेव नट्टो।

तओ से वयसेहिं आगतूण [सागरचंदस्स] धणसत्थवाहस्स य परिकहियं 'गओ सो'। तेहिं समंततो मग्गिओ, न दिट्ठो। तओ ते दीणवयणा कइवयाणि दिवसाणि अच्छिऊण धणसत्थवाहं आपुच्छिऊण गया नियगनयरं।

इयरो वि समुद्ददत्तो देसतराणि हिंडिऊण केणइ कालेण आगओ गिरिनयरं कप्पडियवेसच्छण्णो पच्छन्नं केसु मंसु रोमो। दिट्ठो णेण धणसत्थवाहो आगमगओ। तओ तेण पणमिऊण भणिओ—'अहं तुब्भ आरामकम्मकरो होमि।"

तेण य भणिओ—"भणसु का ते भत्ती दिज्जउ" त्ति ? तओ तेण भणियं—"न मे भईए कज्जं। अहं तुज्झ पसादाभिकंखी। मम तुट्ठिदाणं देज्जह" त्ति।

एवं पडिस्सुए आरामे कम्मं आरद्धो काउं। तओ सो रुक्खाउव्वेयकुसलो तं आरामं कइवएहिं दिवसेहिं सव्वोउयपुप्फ फलसमिद्धं करेइ।

तओ सो धणसत्थवाहो तं आरामसिरिं पासिऊण परं हरिसमुवगओ चिंतियं च णेण—"किमेएण गुणाइसयभूएण पुरिसेण आरामे अच्छंतेण ? वरं मे आवारीए अच्छउ" त्ति।

तओ एट्टवियं—पसाहिओ दिण्णवत्थजुयलो ठविओ आवणे।

तओ तेण आय वयकुसलेण गंधजुत्तिणिउणत्तणेण पुरजणो उम्मत्तिं गाहिओ। तओ पुच्छिओ जणेण—'किं ते नामधेयं ?'

पभणइ य— विणीयओ त्ति मे नामधेयं।'

एवं सो विणियओ विणयसपन्नो सव्वनयरस्स वीससणिज्जो जाओ।

तओ तेण सत्थवाहेण चिंतियं—"न खेमं मे एस आवणे य अच्छतो। मा एस रायसंविदितो हवेज्ज, ततो राएण हीरड त्ति। वरमेस गिहे भंडारमालाए अच्छतो।"

तओ तेण सगिहं नेऊण परियणं च सद्दावेऊण भणियं—"एस वो विणीयओ जं देइ तं मे पडिच्छियव्वं, न य से आणा कोवेयव्व त्ति।"

तओ सो विणीयओ घरे अच्छइ, विसेसओ य धणसिरीए ज चेडीकम्म त सयमेव करेइ। तओ धणसिरीए विणीयओ सव्ववीसभट्ठाणिओ जाओ।

तत्थ य नयरे रायसेवी एक्को डिंडी परिवसइ। इओ व सा धणसिरी पुव्वावरण्हसमए सत्ततले पासाए अट्टालगवरगया सह विणीयगेण तबोल समाणयती अच्छइ।

सो य डिंडी ण्हाय—समालद्धो तस्स भवणस्स आसण्णेण गच्छइ। धणसिरीए तबोल निच्छूढ पडिय डिंडिस्सुवरि। डिंडिणा निज्झाइया य, दिट्ठा य णेण देवयभूया। तओ सो अणगवाणसोसियसरीरो तीए समागमुस्सुओ सवुत्तो। चिंतिय च णेण—"एस विणीयओ एएसि मव्वप्पवेसी एय उवतप्पामि। एयस्स पसाएण एईए सह समागमो भविस्सइ' त्ति।

तओ अण्णया तेण विणीयओ नियगभवण नीओ। पूयासक्कार च काउ पायपडिएण विण्णविओ—'तहा चेट्ठसु जेण मे धणसिरीए सह सजोग करेसि" त्ति।

तओ सो "एव होउ त्ति वोतूण धणसिरीए सगास गओ। पत्थाव च जाणिऊण भणिया णेण धणसिरी डिंडिवयण। तओ तीए रोसवसगाए भणिओ—

केवल तुमे चेव एव सलत्त, अण्णो मम ण जीवतो' त्ति। तओ सो विइयदिवसे निग्गओ, दिट्ठो य डिंडिणा भणियो णेण 'कि भो वयस! कय कज्ज?' त्ति।

तओ तेण तव्वयण गूहमाणेण भणिय—"घत्तीह' ति। तओ पुणरवि तेण दाणमाणेण सगहिय करेत्ता विसज्जिओ।

तओ सो आगन्तूण धणसिरीए पुरओ विसण्णो तुण्हिक्को ठिओ अच्छइ। तओ तीए धणसिरीए तस्स मणोगय जाणिऊण भणिओ—

"कि ते पुणो डिंडो किंचि भणइ?"

तेण भणिय— आम" त्ति। तीए निवारिओ न ते पुणो तस्स दरिसण दायव्व।'

पुणो य पुच्छिज्जमाणो तहेव तुण्हिक्को अच्छइ। तओ तीए तस्स चित्तरक्ख करेंतीए भणिओ—"वच्च, देहि से सदेस, जहा—'असोगवणियाए तुमे अज्ज पओसे आगतव्व' ति।"

तेण तहा कय । तम्रो सा असोगवणियाए सेज्ज परयरेऊण जोगमज्ज च गिण्हिऊण विणीयगसहिया अच्छइ सो आगम्रो । तम्रो तीए सोवयार मज्ज से दिण्ण । सो य त पाऊण अचेयणसरीरो जाम्रो । ताए तस्सेव य सतिय अर्सि कड्ढिऊण सीस छिण्ण । पच्छा विणीयम्रो भणिम्रो—"तुमे अणत्थ कारिया, तुज्भ वि सीस छिंदामि" त्ति ।

तेण पायवडिएण मरिसाविया । विणियगेण धणसिरिसदिट्ठेण कूव खणित्ता निहिम्रो ।

तम्रो अन्नया सुहासणवरगया धणसिरी विणीयगेण पुच्छिम्रा—"सु दरि ! तुम कस्स दिन्ना ?"

तीए भणिय—"उज्जेणिगस्स समुद्दत्तरस दिण्णा

तेण भणिय—"वच्चामि, अह त गवेसित्ता आणेमि ' त्ति भणिउ निग्गम्रो । सपत्तो य नियगभवण पविट्ठो दिट्ठो य अम्मापिऊर्हि, तेहिं य कयसुपाएहि उवगूहिम्रो । तम्रो तेहिं धणसत्थवाहस्स लेहो पेसिम्रो 'आगम्रो से जामाउम्रो' त्ति ।

तम्रो सो वयसपरिगहिम्रो मातापिईहिं य सद्धि ससुरकुल गम्रो । तत्थ य पुणरवि वीवाहो कम्रो ।

तम्रो सो अप्पाण गूहेतो धणसिरीए विणीयगवेसेण अप्पाण दरिसेइ । रयणीए य वासघर गम्रो दीव विज्भवेऊण तीए सह भोगे भु जइ । तम्रो तीए तस्स रूवदसणनिमित्त पच्छण्णदीव ठवेऊण तस्स रूवोवलद्धी कया । दिट्ठो य णाए विणीयम्रो । तम्रो तेण सव्व सवादित ।"

• •

२ गामिल्लओ सागडिओ

अत्थि कोइ कम्हिइ गामेल्लओ गहवती परिवसइ। सो य अण्णया कयाइ सगड धण्णभरिय काऊण, सगडे य तित्तिरिं पजरगय बधेत्ता पट्ठिओ नयर। नयरगतो य गधियपुत्तेहि दीसइ। सो य तेहिं पुच्छिओ—"किं एय ते पजरए" त्ति।

तेण लविय—'तित्तिरि' त्ति।

तओ तेहिं लविय—'किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ ?' तेण लविय—"आम, विक्कायइ"। तेहिं भणिओ—"कि लब्भइ ?" सागडिएण भणिय—काहावणेण' ति।

तओ तेहिं कहावणो दिण्णो, सगड तित्तिर च घेतु पयत्ता। तओ तेण सागडिएण भण्णइ—'कीस एय सगड नेहि ?' ति।

तेहिं भणिय—"मोल्लेण लद्धयं' ति।

तओ ताण ववहारो जाओ, जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरिए सम।

सो सागडिओ हियसगडोवगरणो जोग खेम-निमित्त आणिएल्लिय बइल्ल घेत्तूण विक्कोसमाणो गतु पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएण दीसइ, पुच्छिओ य—"कीस विक्कोससि ?"

तेण लविय—"सामि ! एव च एव च अइसधिओ ह।"

तओ तेण साणुक्कपेण भणिय—'वच्च ताण चेव गेह एव च एव च भणाहि' त्ति।

तओ सो त वयण सोऊण गओ गतूण य तेण भणिआ—'सामि ! तुब्भेहि मम भडभरिओ सगडो हिओ ता इम पि बइल्ल गेण्हह। मम पुण सत्तुयादुपालिय देह, ज घेत्तूण वच्चामि त्ति। न य अह जस्स व तस्स व हत्थेण गेण्हामि जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पियथरी सव्वालकारभूसिया तीए दायव्वा, तओ मे परा तुट्ठी भविस्सइ। जीवलोगब्भतर व अप्पाण मन्निस्सामि।"

तता तेहिं सक्खो आहूया, भणिय च—"एव हं उ" त्ति ।

तता ताण पुत्तमाया सत्तुयादुपालिय घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया,, घेत्तूण य त पट्ठिओ ।

तेहिं वि भणिओ—'किमेय करेसि ?"

तण भणिय—"सत्तुदापालिय नेमि ।"

ततो ताण सद्देण महाजणो समहिओ । पुच्छिया—"किमेय ?' ति । ततो तहिं जहावत्त सव्व परिकहिय । समागयजणेण य मज्झत्थेण होऊण ववहार निच्छओ सुओ पराजिया य ते गधियपुत्ता । सो य विलेसेण त महिलिय मायाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो ।

• •

३ नडपुत्तो रोहो

उज्जेणि नामेण विस्थिण्णसुरभवणा समुद्धुरधणोहा मालवमंडलमंडण-भूआ नयरी समत्थि । तत्थ जियसत्तू नामा रिउपक्खविक्खोहकारओ नयगुण-सणाहो सइ गुणी सुदप्पणआ नरनाहा आसी ।

अह उज्जेणिसमीवे सिलागामो गामो । तत्थ य भरहो नडो । सो य तग्गामे पहू, नाडयविज्जाए लद्धपसंसो य । तस्स णामेण रोहओ, गामस्स य सोहओ सुओ ।

अन्नया कयाइ वि मया रोहयमाया । तओ भरहो घरकज्जकरणकए अण्णा तज्जणणि सठवेइ ।

रोहओ य बालो । सा य तस्स हीलापरायणा हवइ । तो तेण सा भणिया—"अम्मो ज मम सम्म न वट्टसि, न त सु दर होही । एत्तो अह तह काह जह त मे पाएसु पडसि ।"

एव कालो वच्चइ । अह अण्णया कयाइ वि ससिपयासधवलाए रयणीइ सो एगसज्जाए जणगसहिओ पासुत्तो । तो रयणिमज्झभागे उट्ठित्ता उब्भएण होऊण उच्चसरेण जणओ उट्ठाविय भासिओ जहा—"ताय ! पेक्खसु एम कोइ परपुरिसो जाइ !"

स सहसुट्ठिओ जाव निद्दामोक्ख काऊण लोयणेहिं जोएइ ताव तेण न दिट्ठो कोइ पुरिसो ।

ततो रोहओ पुट्ठो—"वच्छा ! सो कत्थ परपुरिसो ?"

तेण जणओ भणिओ—"इमेण दिसाविभागेण सो तुरियतुरिय गच्छतो मे दिट्ठो ।"

तओ सो महिल नट्ठसील परिकलिय तीए सिढिलायरो जाओ । सा पच्छायावपरिगया भासइ—

"वच्छ ! मा एव कुणसु ।'

रोहओ भणइ— 'कह मम लट्ठ न वट्टसि ?'

सा वेइ—"ग्रह लटठ वट्टिस्स। तग्रो तुम तहा कुणसु जहा एसो तुह जणग्रो मज्झ ग्रायर कुणइ।"

इम रोहेण पडिवन्न। सा वि तह वट्टिउ लग्गा।

ग्रण्णया कया वि रयणिमज्झे सुत्तुटिठग्रो सो जणग भणइ—"ताय! सो एस पुरिसो! पुरिसो!"

पिउणा पुटठ—"सो कहि" ति।

तग्रो नियय चेव छाय दसित्ता भणइ—"इम पेच्छह" त्ति।

स विलक्खमणो जाग्रो, पुच्छइ—'किं सो वि एरिसो ग्रासी?"

बालेण 'ग्राम' ति भणिय।

जणग्रो चितेइ— *ग्रव्वा! बालाण केरिसुल्लावा!"* इय चिंतिऊण भरहो तीइ घणराग्रो सजाग्रो।



४ अवियारिअ्आएसे नरिंदस्स कहा

कत्थ वि नयरे एगेण नरिंदेण नियनयरे आएसो दिण्णो—"गाममज्झे एगो देवालओ अत्थि। पुरीए माहणा वा वइस्सा वा खत्तिया वा सुद्दा य वा नयर-वासिणो जे लोगा संति तेहिं देवालए पविसिअ देवं वंदित्ता गंतव्वं अन्नहा तस्स वहो भविस्सइ"।

एगो कुंभयारो तमाएसं अजाणिऊण गद्दहमारुहिय हत्थे लगुडं गिण्हित्ता महारायव्वं गच्छइ। तेण देवालए सो देवो न वंदिओ। तओ रुट्ठा सुहडा तं गिण्हिऊण नरिंदग्गओ नएइरे। नरिंदेण सो वहाइ आइट्ठो।

वहत्थमे सो नीओ। मरणकाले तत्थ मरणं विणा पत्थणातियं किज्जइ पत्थणातियं पूरिऊण वहिज्जइ, एवं नियमो निवेण कओ अत्थि। तदा सो कुंभारो वि पुच्छिज्जइ तए पत्थणातिगे किं जाइज्जइ तेण उत्तं —"अहं नरिंदस्स समीवे मग्गिस्सामि। सो तत्थ नीओ।

नरिंदेण पत्थणातिगं मग्गं त्ति कहिअ। सो कहेइ—"एगं तु मज्झ गेहे अहुणा कुडुंबभोयणत्थं पत्तरलक्खरूप्पगाइं पेसेह। बीअं तु जे जणा वंदीकया ते सव्वे मोएह। निवेण सव्वं कयं। तइअपत्थणावसरे तेण—'सहामज्झत्थि-अनरिंदपमुहसव्वजणाणं एएण लगुडेण पहारतिगकरणाय आएसो मग्गिओ।

रण्णा चिंतिअ—अहं किं करोमि ?, एसो थूलो, दंडोवि थूलो, एगेण पहारेण अहं मरिस्सामि तओ अजुत्तो एसो आएसो' इअ चिंतित्ता वंदणाएसो निवारिओ, उवरिं दाणमहिअ तस्स अप्पित्ता तस्स बुद्धीए संतुट्ठेण निवेण समाणं गिहे मोइओ। एवं अविआरिओ आएसो कयावि अप्पवहाय होइ।



५ सीलवईए कहा

कम्मि वि नयरे लच्छीदासो नाम सेट्ठी वसीवट्टइ। सो बहुधणसपत्तीए गव्विट्ठो आसि। भोगविलासेसु एव लग्गो कयावि धम्म न कुणेइ। तस्स पुत्तो वि एयारिसो अत्थि। जोव्वणे पिउणा धम्मिअस्स धम्मदासस्स जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पाणिग्गहण पुत्तस्स काराविय। सा कन्ना जया अट्ठवासा जाया, तया तीए पिउपेरणाए साहुणीसगासाओ जिणीसरधम्मसवणेण सम्मत्त अणुव्वयाइ च गहियाइ, जिणधम्मे अईव निउणा सजाया।

जया सा ससुरगेहे आगया तया ससुराइ धम्माओ विमुह दट्ठूण तीए बहुदुह सजाय। कह मम नियवयस्स निव्वाहो होज्जा ?, कह वा देवगुरुविमुहाण ससुराईण धम्मोवएसो भवेज्जा एव सा वियारेइ। एगया 'ससारो असारो लच्छी वि असारा, देहोवि विणस्सरो, एगो धम्मो च्चिय परलोगपवन्नाण जीवाणमाहारु'त्ति उवएसदाणेण नियभत्ता जिणिदधम्मेण वासिओ कओ। एव सासूसवि कालतरे बोहेइ। ससुर पडिबोहिउ सा समय मग्गेइ।

एगया तीए घरे समणगुणगणालकिओ महव्वई नाणी जोव्वणत्थो एगो साहू भिक्खत्थ समागओ। जोव्वणे वि गहीयवय सत दत साहु घरमि आगय दट्ठूण आहारे विज्जमाण वि तीए वियारिय—, जोव्वणे महव्वय महादुलह कह एएण एयमि जोव्वणे गहीय ? त्ति परिक्खत्थ समस्साए पुट्ठ—'अहुणा समओ न सजाओ, कि पुव्व निग्गया?' तीए हिययगयभाव नाऊण साहुणा उत्त — 'समयनाण—कया मच्चू होस्सइ त्ति' नत्थि, तेण समय विणा निग्गओ।

सा उत्तर नाऊण तुट्ठा। मुणिणा वि सा पुट्ठा—'कइ वरिसा तुम्ह सजाया' ? मुणिस्स पुच्छाभाव नाऊण वीसवासेसु जाएसु वि तीए 'वारसवासत्ति उत्त पुणरवि 'त सामिस्स कइ वासा जाय त्ति ? पुट्ठ। तीए पियस्स पणवीस वासेसु जाएसु वि पच वासा उत्ता एव सासूए छम्मासा कहिया'। ससुरस्स पुच्छाए सो 'अहुणा न उप्पन्नो अत्थि त्ति। एव वहू-साहूण वट्टा अतट्ठिएण ससुरेण सुआ। लद्धभिक्खे साहुमि गए सो अईव कोहाउन्नो सजाओ, जओ पुत्तवहू म उद्दिस्स 'न जाउ त्ति कहेइ। रुट्ठो सो पुत्तस्स कहणत्थ हट्ट गच्छइ। 'गच्छ त ससुर सा वएइ—भात्तूण हे ससुर ! तुम गच्छसु।' ससुरो कहेइ— जइ ह न जाओ म्हि, तया कह भोयण चव्वेमि—भक्खेमि' इअ कहिऊण हट्टे गओ।

पुत्तस्स सव्व वुत्त त कहेइ— तव पत्ती दुरायारा असब्भवयणा अत्थि, अओ त गिहाओ निक्कासय'। सो पिउणा सह गेहे आगओ। वहू पुच्छइ—'कि

माउपिउए प्रवमाण कय ? साहुणा सह वट्टाए वि प्रमच्चमुत्तर दिण्ण ? । तीए उत्त —'तुम्हे मुणि पुच्छह । सो सव्व वहिहिइ' ।

ससुरो उवस्सए गतूण सावमाण मुणि पुच्छइ—'हे मुण ! अज्ज मम गेहे भिक्खत्थ तुम्हे कि आगया ?' । मुणी वहेइ—'तुम्हाण घर न जाणामि, तुम कुत्थ वससि !, सेटठी वियारेइ 'मुणी प्रमच्च वहेइ' । पुणरवि पुट्ठ-तस्स वि गहे वालाए सह वट्टा कया वि ? । मुणी वहेइ-- सा वाला जिणमयकुसला, तीए मम वि परिक्खा कया' । तीए ह वुत्तो 'समय विणा वह निग्गप्रो सि' । मए उत्तर दिण्ण-समयस्स 'मरणसमयम्म' नाण नत्थि, तेण पुव्वयमि निग्गप्रो म्हि । मए वि परिक्खत्य सव्वेसिं ससुराईण नामाइ पुटठाइ । तीए सम्म वहियाइ ।

सेटठी पुच्छइ— ससुरो न जाप्रो इप्र तीए वह वहिय ? । मुणिणा उत्त — मा चिय पुच्छिज्जउ, जप्रो विउसीए तीए जहत्थो भावो नज्जइ' ! ससुरो गेह गच्चा पुत्तवहू पुच्छइ— तीए मुणिस्स पुरप्रा किमेव वुत्त —'म ससुरो जाप्रो वि न' । तीए उत्त —"हे ससुर ! धम्महीणमणूसस्स माणुवभवो पत्तो वि अपत्तो एव, जप्रो सद्धम्मकिच्चेहिं सहलो भवो न कप्रो सो मणूसभवो निप्फलो चिय । तप्रो तुम्ह जीवण पि धम्महीण सव्व गय" तेण मए वहिप्र—'मम ससुरस्स उप्पत्ती एव न । एव सच्चत्थनाणे तुटठो सो सेट्ठी धम्माभिमुहो जाप्रो ।

पुणरवि पुटठ—'तुमए सासूए छम्मासा वह वहिप्रा ? । तीए उत्त — 'सासु पुच्छह' । सेटिठणा सा पुटठा । ताए वि वहिप्र— 'पुत्तवहूए वयण सच्च, जप्रो मम जिणधम्मपत्तीए छम्मासा एव जाया । जप्रा इप्रो छम्मासाप्रो पुव्व कत्थ वि मरणपसगे अह गया । तत्थ थीण विविहगुणदोसवट्टा जाया । एगाए वुड्ढाए उत्त —'नारीण मज्झे इमीए पुत्तवहू सेटठा, जा वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्म कज्जमि सएव अपमत्ता, गिहकज्जेसु वि कुसला नम्रा एरिसा । इमीए सासू निब्भग्गा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तवहूए वि धम्मकज्जे पेरिज्जमाणावि धम्म न कुणेइ । इम सोऊण व गुणरंजिप्रा ह तीए मुहाप्रो धम्म पावित्था । धम्मपत्तीए छम्मासा जाया, तप्रो पुत्तवहूए छम्मासा वहिया, त जुत्त " ।

पुत्तो वि पुटठो तेण वि उत्त —"रत्तीए सययधम्मोवएसपराए भज्जाए 'ससारासारदसणेण भोगविलासाण च परिणामदुहदाइत्तणेण, वासानईपूरतुल्ल-जुव्वणेण य देहस्स खणभगुरत्तणेण जयमि धम्मो एव सारत्ति' उवदिट्ठो ह जिणधम्माराहगो जाप्रो, अज्ज पच वासा जाया । तप्रो वहूए म उद्दिस्स पचवासा वहिया, त सच्च एव कुडु वस्स धम्मपत्तीए वट्टाए विउसीए पुत्तवहूए जहत्थवयण सोऊण लच्छीदासो वि पडिबुद्धो वुड्ढत्तणे वि धम्म आराहिप्र सग्गइ पत्तो सपरिवारो ।



६ चउजामायराण कहा

कत्थ वि गामे नरिंदस्स रज्जसति- कारगो पुरोहिओ आसि। तस्स एगो पुत्तो पंच य कन्नगाओ संति। तेण चउरो कन्नगाओ विउसमाहणपुत्ताण परिणाविआओ। कयाई पंचमीकन्नगाए विवाहमहूसवो पारद्धो। विवाहे चउरो जामाउणो समागया। पुण्णे विवाहे जामायरेहिं विणा सव्वे सबंधिणो नियनियघरेसु गया। जामायरा भोयणलुद्धा गेहे गंतु न इच्छंति। पुरोहिओ विआरेइ—'सासूए अईव पिया जामायरा, तेण अहुणा पंच छ दिणाइं एए चिट्ठंतु पच्छा गच्छेज्जा।

ते जामायरा खज्जरसलुद्धा तओ गच्छिउं न इच्छेज्जा। परप्पर ते चिंतेइरे—"ससुरगिहनिवासो सग्गतुल्लो नराण" किल एसा सुत्ती सच्चा एवं चिंतिऊण एगाए भित्तीए एसा सुत्ती लिहिआ। एगया एयं सुत्तिं वाइऊण ससुरेण चिंतिअ—"एए जामायरा खज्जरसलुद्धा कयावि न गच्छेज्जा, तओ एए बोहियव्वा एवं चिंतिऊण तस्स सिलोगपायस्स हिट्ठमि पायत्तिग लिहिअं—

'जइ वसइ विवेगी पंच छव्वा दिणाइं,
दहिघयगुडलुद्धो मासमेगं वसेज्जा।
स हवइ खरतुल्लो माणवो माणहीणो।।१।।

ते जामायरा पायत्तिगं वाइऊण पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतुं नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ—'कहं एए नीसारियव्वा?', साउभोयणरया एए खरसमाणा माणहीणा तेण जुत्तीए निक्कसाणिज्जा'। पुरोहिओ निय भज्जं पुच्छइ—'एएसिं जामाऊणं भोयणाय किं देसि'?। सा कहेइ अइप्पियजामायराण तिक्काल दहिघय गुडमीसिअमन्न पक्कन्न च सएव देमि'। पुरोहिओ भज्जं कहइ—'अज्जदिणाओ आरब्भ तुमए जामायराण वज्जकुडा विव थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो।

पियस्स आणा अणइक्कमणीअ त्ति चिंतिऊण,
सो भोयणकाले ताण थूल रोट्टग घयजुत्त देइ।

त दट्ठूण पढमो मणीरामो जामाया मित्ताण कहेइ—'अहुणा एत्थ वसणं न जुत्तं, नियघरंमि अओ वि साउभोयण अत्थि तओ इओ गमणं चिय सयं ससुरस्स पच्चूसे कहिऊण हं गमिस्सामि'। ते कहिंति—"भो मित्त! विणा मुल्लं भोयणं कत्थ सिया, एसो वज्जकुडरोट्टगो साउत्ति गणिऊण भोत्तव्वो, जओ—'परन्नं दुल्लहं लोगे' इअ सुई तए किं न सुआ? तव इच्छा सिया तया गच्छसु, अम्हे उ जया ससुरो कहिही तया गमिस्सामो" एवं मित्ताण वयण साच्चा

पभाए ससुरस्स अग्गे गच्छित्ता सिक्ख आणं च मग्गेइ। ससुरो वि तं सिक्खं दाऊण पुणावि आगच्छेज्जा एवं कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्णं देइ। एवं पढमो जामायरो 'वज्जकुडेण मणीरामो' निस्सारिश्रो।

पुणरवि भज्जं कहेइ—अज्जपभिइ जामायराणं तिलतेल्लेण जुत्तं रोट्टगं दिज्जा। सा भोयणसमए जमाऊणं तेल्लजुत्तं रोट्टगं दइ। तं दट्ठूण माहवो नाम जामायरो चिंतेइ—घरमि वि एयं लब्भइ, तम्रो इम्रो गमणं सुहं। मित्ताणं पि कहेइ—हं कल्ले गमिस्स, जम्रो भोयणे तेल्लं समागयं। तया ते मित्ता कहिंति—'अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि, जेण सीयाले तिलतेल्लं चिअ उयरग्गि दीवणेण सोहणं न घयं, तेण तेल्लं देइ अम्हे उ एत्थ ठास्सामो'। तया माहवो नाम जामायारो ससुरपासे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गेइ। तया ससुरो 'गच्छ गच्छ' त्ति अणुण्णं देइ, न सिक्खं। एवं। 'तिलतेल्लेण माहवो' बीग्रो वि जामायरो गग्रो।

तइअचउत्थजामायरा न गच्छंति। 'कहं एए निक्कासणिज्जा' इअ चिंतित्ता लद्धबाग्रो ससुरो भज्जं पुच्छेइ—'एए जामाउणो रत्तीए सयणाय कया आगच्छंति ?'। तया पिया कहेइ—'कयाइ रत्तीए पहरे गए आगच्छेज्जा, कया दुतिपहरे गए आगच्छंति। पुरोहिग्रो कहेइ—'अज्ज रत्तीए तुमए दारं न उग्घाडियव्वं, अहं जागरिस्सं'। ते दोण्णि जामायरा सभाए गामे विलसिउं गया, विविहकीलाओ कुणंता नट्टाइं च पासंता, मज्झरत्तीए गिहद्दारे समागया। पिहिअ दारं दट्ठूण दारुग्घाडणाए उच्चयरेण रविंति– 'दारं उग्घाडेसु,' त्ति। तया दारसमीवे सयणत्थो पुरोहिग्रो जागरंतो कहेइ—'मज्झरत्तिं जाव कत्थ तुम्हे थिग्रा ?', अहुणा न उग्घाडिस्सं जत्थ उग्घाडिग्रद्दारं अत्थि, तत्थ गच्छेह' एवं कहिऊण मोणेण थिग्रो।

तया ते दुण्णि समीवत्थियाए तुरगसालाए गया। तत्थ अत्थरणाभावे अईवसीयवाहिया तुरगमपिट्ठच्छाइअवत्थं गहिऊण भूमीए सुत्ता। तया विजयरामेण चिंतिअ— एत्थ सावमाणं ठाउं न उइअं। तम्रो सो मित्तं कहेइ— हे मित्त ! कत्थ अम्ह सुहसेज्जा ? कत्थ य इमं भूलोट्टणं ?, अग्रो इग्रो गमणं चिअ वरं'। स मित्तो बोल्लेइ—'एआरिसदुहे वि परं न कत्थ, ? अहं तु एत्थ ठास्सं। तुमं गंतुमिच्छसि जइ, तया गच्छसु'। तम्रो सो पच्चूसे पुरोहियं समीवे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गीअ। तया पुरोहिग्रो सुट्ठु त्ति कहेइ। एवं सो तइग्रो जामाया 'भूसज्जाए विजयरामो' वि निग्गग्रो।

अहुणा केवलं केसवो जामायरो तत्थ थिग्रो संतो गंतुं नेच्छइ। पुरोहिग्रो वि केसवजामाउणो निक्कासणत्थं जुत्तिं विआरिऊण नियपुत्तस्स कण्णे किंचि वि कहिऊणगग्रो। जया केसवजामायरो भोयणत्थं उवविट्ठो, पुरोहिअस्स य पुत्तो समीवे वट्टइ तया सो समागग्रो समाणो पुत्तं पुच्छइ— वच्छ ! एत्थ मए

रुवगो मुक्को सो य केण गहिश्रो ?' । सो कहेइ—'ग्रह न जाणामि' । पुरोहिश्रो वाल्लेइ—'तुमए च्चिय गहिश्रो, हे ग्रसच्चवाइ ! पाव ! धिट्ठ ! देहि मम त, अन्नह त मारइस्स' ति कहिऊण सो उवाणह गहिऊण मारिउ धाविश्रो । पुत्तो वि मुट्ठि बधिऊण पिउस्स सम्मुह गग्रो । दोण्णि ते जुज्भमाणे दट्ठूण केसवो ताण मज्भे गतूण मा जुज्भह मा जुज्भह त्ति कहिऊण ठिग्रो । तया सो पुरोहिग्रो हे जामायर ! ग्रवसरसु ग्रवसरसु त्ति कहिऊण त उवाणहाए पहरेइ । पुत्तो वि केसव ! दूरीभव दूरीभव त्ति कहिउग्राण मुट्ठीए त केसव पहरेइ । एव पिग्रर पुत्ता केसव ताडिति । तग्रो सो तेहि धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घ भग्गो । एव 'धक्का मुक्केण केसवो' सो चउत्थो जामायरो ग्रकहिऊण गग्रो ।

तद्दिणे पुरोहिग्रो निवसहाए विलबेण गग्रो । नरिदो त पुच्छइ—' कि विलबेण तुम ग्रागग्रो सि । सो कहेइ—विवाहमहूसवे जामायरा समागया । ते उ भोयणरसलुद्धा चिर ठिग्रावि गतु न इच्छति । तग्रो जुत्तीए सव्वे निक्कासिग्रा । त एव—

> "वज्जकुडा मणीरामो, तिलतेल्लेण माहवो ।
> भूसज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो ।।

तेण सव्वो वुत्त तो नरिदस्स ग्रग्गे कहिग्रो । नरिदो वि तस्स बुद्धीए ग्रईव तुट्ठो । एव जे भविग्रा कामभोगविसयवामूढा मय चिय कामभोगाइ न चएज्जा, ते एवविहदुहाण भायण हुति ।



७ पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा

कम्मिवि नयरे एगवुड्ढस्स चउरो पुत्ता संति। सो थविरो सव्वे पुत्ते परिणाविऊण नियवित्तस्स चउब्भागं किच्चा पुत्ताण अप्पेइ। सो धम्माराहणतप्परो निच्चिंतो कालं नएइ। कालंतरे ते पुत्ता इत्थीण वेमणस्सभावेण भिन्नघरा संजाया। वुड्ढस्स पइदिणं पइघरं भोयणाय वारगो निबद्धो। पढमदिणम्मि जेट्ठस्स पुत्तस्स गेहे भोयणाय गओ। बीयदिणे बीयपुत्तस्स घरे जाव चउत्थदिणे कणिट्ठस्स पुत्तस्स घरे गओ। एवं तस्स सुहेण कालो गच्छइ।

कालंतरे थेराओ धणस्स अपत्तीए पुत्तवहूहिं सो थेरो अवमाणिज्जइ। पुत्तवहूओ कहिंति—'हे ससुर! अहिलं दिणं घरम्मि किं चिट्ठसि?, अम्हाणं मुहाइं पासिउं किं ठिओ सि?, थीणं समीवे वसणं पुरिसाणं न जुत्तं, तव लज्जावि न आगच्छेज्जा, पुत्ताण हट्टे गच्छिज्जसु" एवं पुत्तवहूहिं अवमाणिओ सो पुत्ताणं हट्टे गच्छइ। तया पुत्तावि कहिंति—"हे वुड्ढ! किमत्थ एत्थ आगओ?, वुड्ढत्तणे घरे वसणमेव सेयं, तुम्ह दंता वि पडिआ, अक्खितेयं पि गयं, सरीरं पि कंपिरमत्थि, अत्थ ते किंपि पओयणं नत्थि, तम्हा घरे गच्छाहि" एवं पुत्तेहिं तिरक्करिओ सो घरं गच्छेइ तत्थ पुत्तवहूओ वि तं तिरक्करंति।

पुत्तपुत्ता वि तस्स थेरस्स कच्छुट्टियं निक्कासेइरे कयाई मंसु दाढियं च करिसिंति। एवं सव्वे विविहप्पगारेहिं तं वुड्ढं उवहसिंति। पुत्तवहूओ भोयणे वि रुक्खं अपक्कं च रोट्टगं दिंति। एवं पराभविज्जमाणो वुड्ढो चिंतेइ—किं करामि, कहं जीवणं निव्वहिस्सं?' एवं दुहमणुभवंतो सो नियमित्तसुवण्णगारस्स समीवे गओ। अप्पणो पराभवदुहं तस्स कहेइ, नित्थरणुवायं च पुच्छइ।

सुवण्णगारो बोल्लेइ—"भो मित्त! पुत्ताणं वीसासं करिऊण सव्वं धणमप्पिअं, तेण दुहिओ जाओ, तत्थ किं चोज्जं?। सहत्थेण कम्मं कयं तं अप्पणा भोत्तव्वं चिअ'। तह वि मित्तत्तेण हं एवं उवायं दंसेमि—तुमए पुत्ताणं एवं कहिअव्वं—"मम मित्तसुवण्णगारस्स गेहे रुवग दीणार—भूसणेहिं भरिआ एगा मंजूसा मए मुक्का अत्थि, अज्ज जाव तुम्हाणं न कहिअं अहुणा जराजिण्णो ह, तेण सद्धम्म-कम्मणा सत्तक्खेत्ताईसु लच्छीए विणिओगं काऊण परलोगपाहेयं गिण्हिस्सं' एवं कहिऊण पुत्तेहिं एसा मंजूसा गेहे आणावियव्वा। मंजूसाए मज्झे हं रुवगसमं मोइस्सं तं तु मज्झरत्तीए पुणो पुणो तुमए सद्दं च रणरणयारपुव्व

गणेयव्व, जेण पुत्ता मन्निस्सति— अज्जावि बहुधणं पिउणो समीवे अत्थि,' तओ धणासाए ते पुव्वमिव भत्ति करिस्सते। पुत्तवहूओ वि तहेव सक्कार काहिंति। तुमए सव्वसिं कहियव्व—'इमीए मजूसाए बहुधणमत्थि। पुत्तपुत्तवहूण नामाइ लिहिऊण ठवियमत्थि। त तु मम मरणते तुम्हेहिं नियनियनामेण गहिअव्व'। धम्मकरणत्थ पुत्तेहिंतो धण गिण्हिऊण सद्धम्मकरणे वावरियव्व। मम रूवगसय पि तुमए न विस्मारियव्व, एय अवसरे दायव्व।

सो थेरो मित्तस्स बुद्धीऐ तुट्ठो गेह गच्चा पुत्त हि मजूस आणाविऊण रत्तीए त रूवगसय सय सहस्स दससहस्साइगुणणेण पुणो पुणो गणेइ। पुत्ता वि विआरिति—पिउस्स पासे बहुधणमत्थि त्ति, तआ ते वहूण पि किहिति। सव्वे ते थेर बहु सक्कारिंति सम्माणिंति य। अईवनिब्बधेण त पुत्तवहूआ वि अहमहमिगयाए भोयणाय निंति, साउ सरस भोयण दिति तस्स वत्थाइ पि सएव पक्खालिति, परिहाणाय धुविआइ वत्थाइ अप्पिंति, ऐव वुडढस्स सुहेण कालो गच्छइ।

एगया आसन्नमरणो सो पुत्ताण कहइ—"मज्झ धम्मकरणेच्छा वट्टइ, तेण सत्तखेत्तेसु किंचि वि धण दाउमिच्छामि'। पुत्तावि मजूसागयधणासाए अप्पिंति। सो वुड्ढो जिण्णमदिरवसयसुपत्ताईसु जहसत्ति दव्व देइ। अप्पणो परममित्त-सुवण्णगारस्स वि नियहत्थेण रूवगसय पच्चप्पइ, ऐव सद्धम्मकम्ममि धणव्वय किच्चा मरणकालमि पुत्ताण पुत्तवहूण च वोल्लाविऊण कहेइ—'इमीए मजूसाए सव्वेसि नामग्गहणपुव्वय मए धण मुत्तमत्थि। त तु मम मरणकिच्च काऊण पच्छा जहनाम तुम्हेहिं गहिअव्व ति कहिऊण समाहिणा सो वडढो काल पत्तो।

पुत्तावि तस्स मच्चुकिच्च किच्चा नाइजण पि जेमाविऊण बहुधणासाइ जया सव्वे मिलिऊण मजूस उग्घाडिंति, तया तम्मज्झमि नियनियनाम जुत्तपत्तेहिं वेटिऐ *पाहाणखडे त च रूवगसय पासित्ता अहो वुडढेण अम्हे वचिआ* वचिअ त्ति जपति किल अम्हाण पिउभत्तिपरमुहाण अविणयस्स फल सपत्त। एव सव्वे ते दुहिणो जाया।



८ अमगलियपुरिसस्स कहा

एगम्मि नयरे एगो अमगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि। सो एरिसो अत्थि, जो को वि पभायम्मि तस्स मुहं पासेइ, सो भोयणं पि न लहेज्जा। पउरा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुहं न पिक्खंति। नरवइणा वि अमगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ। परिक्खत्थं नरिंदेण एगया पभायकाले सो आहूओ, तस्स मुहं दिट्ठं।

जया राया भोयणत्थमुवविसइ कवलं च मुहे पक्खिवइ, तया अहिलम्मि नयरे अकम्हा परचक्कभएण हलबोला जाओ। तया नरवई वि भोयणं चिच्चा सहसा उत्थाय ससेण्णो नयराओ बाहिं निग्गओ। भयकारणमदट्ठूण पुणो पच्छा आगओ समाणो नरिंदो चिंतेइ—'अस्स अमगलिअस्स सरूवं मए पच्चक्खं दिट्ठं तओ एसो हतव्वो" एवं चिंतिऊण अमगलियं बोल्लाविऊण वहत्थं चडालस्स अप्पेइ।

जया एसो रुयंतो, सकम्मं निंदंतो चडालेण सह गच्छेइ। तया एगो कारुणिओ बुद्धिनिहाणो वहाइ नेइज्जमाणं तं दट्ठूण कारणं णच्चा तस्स रक्खणाय कण्णे किंपि कहिऊण उवायं दसेइ। हरिसंतो जया वहत्थंभे ठविओ तया चडालेण सो पुच्छिओ—जीवणं विणा तव कावि इच्छा सिया, तया मग्गसु त्ति।

सो कहेइ—"मज्झ नरिंदमुहदसणेच्छा अत्थि'। जया सो नरिंदसमीवमाणीओ तया नरिंदो तं पुच्छइ—"किमेत्थ आगमणपओयणं ?'। सो कहेइ—"हे नरिंद! पच्चूसे मम मुहस्स दसणेण भोयणं न लब्भइ, परंतु तुम्हाणं मुहपेक्खणेण मम वहो भविस्सइ तया पउरा किं कहिस्संति ?। मम मुहाओ सिरिमंताणं मुहदसणं केरिसफलयं संजायं, नायरा वि पभाए तुम्हाणं मुहं कहं पासिहिरे'। एवं तस्स वयणजुत्तीए संतुट्ठो नरिंदो वहाएसं निसेहिऊण पारितोसिअं च दच्चा तं अमगलिअं संतोसीअ।



९ सिप्पिपुत्तस्स कहा–

अवतीए पुरीए इददत्तो नाम सिप्पिवरो अहेसि। सो सिप्पकलाहिं सव्वमि जयमि पसिद्धो होत्था। इमस्स सरिच्छो अन्नो को वि नत्थि। एयस्स पुत्तो सोमदत्तो नाम। सो पिउस्स सगासमि सिप्पकल सिक्खतो कमेण पिअराओ वि अईव सिप्पकलाकुसलो जाओ।

सोमदत्तो जाओ पडिमाओ निम्मवेइ, तासु तासु पिआ कपि कपि भुल्ल दसेइ, कया वि सिलाह न कुणेइ। तओ सो सुहमदिट्ठीए सुहुम सुहुम सिप्पकिरिय कुणेऊण पियर दसेइ, पिया तत्थ वि कपि खलण दरिसेइ, 'तुमए सोहणयर सिप्प कय' ति न कयाई त पससेइ।

अपससमाणे पिउम्मि सो चिंतेइ—'मम पिआ मज्झ कल कह न पससेज्जा ?, तओ तारिस उवाय करेमि, जओ पियरो मे कल पससेज्ज। एगया तस्स पिआ कज्जप्पसगेण गामतरे गओ, तया सो सोमदत्तो गिरिगणेसस्स सुदरयम पडिम काऊण, तीए हिट्ठमि गूढ नियनामकियचिह्न करिऊण, त मुत्ति नियमित्तद्दारेण भूमीए अतो ठवेइ। कालतरे गामतराओ पिआ समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एव कहेइ—'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए पहावसालिणी गणेसस्स पडिमा अत्थि।

तया लोगेहिं सा पुढवी खणिआ तीए पुहवीए सुदरयमा अणुवमा गणेसस्स मुत्ती निग्गया। तद्दसणत्थ बहवो लोगा समागया, तीए सिप्पकल अईव पससिरे।

तया सो इददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। सो गणेसपडिम दट्ठूण पुत्त कहेइ—"हे पुत्त ! एसच्चिअ सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मवगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्ल खुण्ण च अत्थि ?। जइ तुम एआरिसिं पडिम निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकल पससेमि, नन्नहा।

पुत्तो वि कहेइ—'हे पियर ! एमा गणेसपडिमा मए चिय कया। इमाए हिट्ठमि गुत्त मए नामपि लिहिअमत्थि" । पिआवि लिहिअनाम वाइऊण खिन्नहियओ पुत्त कहेइ—"हे पुत्त ! अज्जदिणाओ तु एरिस सिप्पकलाजुत्त सुदरयम पडिम काउ कया वि न तरिस्ससि। जया ह तव सिप्पकलासु भुल्ल दसतो, तया तुम पि सोहणयरकज्जकरणतल्लिच्छो सण्ह सण्ह सिप्प कुणतो आसि, तेण तव सिप्पकलावि वड्ढती हुवोअ। अहुणा 'मम सरिच्छो नन्नो' इह मदूसाहेण तुम्हम्मि एआरिसो सिप्पकला न सभविहिइ" ।

एव सो सरहस्स पिउवयण सोच्चा पाएसु पडिऊण पिउत्तो पससाकरावण-सह्वनिआवराह खामेइ, परतु सो सोमदत्तो तओ आरब्भ तारिसि सिप्पकल काउ असमत्थो जाओ।



१० उज्जमस्स फल

एगया भोयनरिंदस्स सहाए दुण्णि विउसा समागया। तेसु एगो नियइवाई—'ज भावी त न नहा होइ' अग्रो सो उज्जम विणा भावि चिय मन्नेइ। अन्नो पडिग्रो—'उज्जममेव फलदाणे पमाणेइ,' जग्रो अलसा क पि फल न लहति, जग्रो वुत्त —

"उज्जमेण हि सिज्झति, कज्जाइ न पमाइणो
न हि सुत्तस्स सिंघस्स, पविसंति मिगा मुहे ॥"

एव वोग्रो उज्जमेण फलवाई अत्थि। भोयनरिंदेण ते दोवि आगमणपग्रो यण पुट्ठा, ते कहिंति—'विवायनिण्णयत्थ तुम्हाणमतिए अम्हे आगया'। रण्णा वुत्त —'तुम्हाण जो विवाग्रो अत्थि त कहेह'। तया ते दुण्णि वि निय मय जुत्तिपुरस्सर निवइणो पुरग्रो ठवेइरे। राया विग्रारेइ—'एत्थ कि परमत्थग्रो सच्च ?, त च कह जाणिज्जइ' तया निण्णेउमसमत्थो कालीदासपडिग्र पुच्छइ—'एएसि नाग्रो कह किज्जइ ? किं व उत्तर दिज्जइ ?

कालीदासो कहेइ— हे नरिंद ! जह दक्खाए रसो चक्खिज्जमाणा महुरो खट्टो वा नज्जइ, तह य एयाण विवाग्रो कसिज्जइ, तेण सच्चो असच्चो वा जाणिज्जइ'। राया कहेइ—'कसणकिरियाए अत्थि को वि उवाग्रो ?, जइ सिया, तया कसिज्जउ

कालीदासो तया ते दुण्णि विउसे वोल्लाविऊण तेसिं नेत्ताइ पडेण बधित्ता, दुवे य हत्थे पिट्ठस्स पच्छा बधिग्र पाए गाढयर निग्रतिग्र अधयारमए अववरगे ठवेइ, कहेइ य "जो दइव्ववाई सो दइव्वेण छुट्टउ, जो उज्जमवाई सो उज्जमेण छुट्टज्जा" एव कहिऊण सो पच्छा नियत्तो। तग्रो जो नियइवाई सो 'ज भावि त होहिइ' त्ति मन्नमाणो निच्चितो समाणो सुहेण तत्थ सुत्तो। उज्जमवाई जो, सो छुट्टणाय वहु उज्जम कुणेइ। हत्थे पाए ग्र भूमीए उवरिं इग्रो तग्रा घसेइ, परतु गाढयरवधणत्तणेण जया सो न छुट्टिग्रो, तया त नियइवाई विउसो कहेइ—"किं मुहा उज्जमकरणेण, एसो निविडो वधो कया वि न छुट्टिहिइ ? निप्फलेण

वलहाणिकारणायासेण किं ?, खुहापिवासापीलिआए पि अम्हाण नियईए सरण चिअ वर"।

एव सोच्चा वि उज्जमवाइपडिओ छुट्टणपयास न चएइ। छुट्टणाय अईव पयास कुणेइ। एव तेसिं दुवे दिणा अइक्कता। भोयणाभावेण सरीर पि ताणमईव भीण सजाय, कज्जकरणे वि असमत्थ जाय तह वि उज्जमवाई पयासहीणाववरगे इओ तओ भममाणो बधणाओ मोअणाय जत्त न मुचेइ। नियइवाई त वएइ—'अहुणा परमेसरस्स नाम गिण्हसु, किमायासकरणेण फलरहिएण ?'। तया सो उज्जमवाई कहेइ—"समावन्ने वि मरणे उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो, सया वि उज्जमसीलेण जणेण होयव्व"। नियइवाई वोल्लेइ—'जइ एव ता अधारिए एयमि अववरगे पाए हत्थे अ घसमाणा भमता चिट्ठेह, उज्जमो फल दाही ?'

तह वि सो उज्जमवाई पडिओ खीणसरीरबलो तइअदिणमि भित्तिनिस्साए भमतो हत्थे पाए य घसमाणो पडतो पुणरवि घसतो भमतो दइववसाओ अववरगस्स कोणगे तत्थ पडिओ, जत्थ उदुरस्स बिल वट्टइ। तस्स हत्था बिलोवरिं समागया। तओ रधमज्झटिठओ मासूओ बाहिर निग्गतुमचयतो दतेहिं तस्स हत्थबधण छिदेइ तया सो छुट्टिओ समाणो नेत्तपड पायबधण च अवसारेइ। सो तया अववरगे गाढयरतमेण किमवि न पासेइ। अस्स अववरगस्स दार कत्थ अत्थि त्ति भित्तिफासणेण निरिक्खतेण तेण कमेण दार लद्ध। बाहिरओ पिणद्ध त पासिऊण कट्ठेण त दार मूलाओ उत्तारिअ बाहिर सो निग्गओ। पच्छा देव्ववाइ पडिअ पि बधणाओ मोएइ।

पच्छण्णठाण ठिओ कालीदासो सव्व निरुवेइ। जया ते दुवे बाहिरनिग्गए पासेइ, पासित्ता ते घेत्तूण नियघरमि गओ। सम्म अन्नपाणेहिं सक्कारित्ता सम्माणत्ता य निवसहाए ते विउसे गहिऊण समागओ। भोयनरिंद—कहेइ—उज्जमेण जिअ, नियईए पराइअ 'ति, जओ उज्जमवाई पडिओ उज्जमेण छुट्टिओ अवरो उज्जमाभावाओ न छुट्टिओ। 'जो नियइमेव पहाण मन्नेइ सो पमाई कहिज्जइ' जत्थ पमाओ तत्थ खुहा पिवासा दुक्कर मरण च अवस्स सभवेइ। जो उज्जम कुणइ सो कयाइ दुक्खाओ मुच्चइ, किं पि य फल पावेइ। नियइवाई उज्जमेण विणा फल न लहेज्जा। तओ उज्जमो पहाणो णायव्वो। तओ भोय नरिंदो उज्जमवाइपडिअ दव्ववत्थाहूसणेहिं सम्माणेइ। नीइसत्थे वि—'उज्जमे नत्थि दालिद्द'। अओ उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो।



शब्दार्थ

पद्य-संकलन

पाठ १ अंजना-पवनजय कथा

(गाथा १-३०)

प्राकृत शब्द	अर्थ	प्राकृत शब्द	अर्थ
विद्दाणलोयणा	= निस्तेज नेत्रवाली	पलवइ	= प्रलाप करती थी
नवर	= बाद में	आसासिज्जइ	= सान्त्वना प्राप्त करती थी
वायाए	= वाणी से	अइतणुओ	= अतिसूक्ष्म
सवडहुत्तो	= सामने	अब्भिट्टा	= भिड़ गये
जोह	= योद्धा	ओसरिय	= भागती हुई
समय	= साथ	सिग्घ	= शीघ्र
पडियागओ	= वापिस आया हुआ	वीसज्जिओ	= भेजा गया हूँ
वीसत्थो	= विश्वस्त	साहीण	= समय

(३१-६०)

प्राकृत शब्द	अर्थ	प्राकृत शब्द	अर्थ
उल्लोल्लो	= शोर	थम्भल्लीणा	= खंभे से टिकी हुई
तिप्पइ	= तृप्त होती है	उव्वियणिज्जा	= उद्वेगयुक्त
उवट्ठिया	= उपस्थित हुई है	चलणपणाम	= चरण प्रणाम
आयत्त	= अधीन	सरेज्जासु	= याद किये जाओगे
वियम्भन्ती	= जंभाई लेती हुई	उड्डाई	= ऊँचे जाती है
उप्पयइ	= उड़ जाती है	सरिया	= याद की गयी
अकण्णसुह	= सुनने में अप्रिय	पसयच्छी	= विशाल नेत्रवाली

(६१-९०)

प्राकृत शब्द	अर्थ	प्राकृत शब्द	अर्थ
अग्गीवए	= बरामदे में	ओणमिय	= प्रणाम कर
उब्भिन्नंगी	= रोमांचित अंगवाली	सासिया	= दण्डित की गयी
वहेज्जासु	= प्रदान करें	पम्हुससु	= भूल जाओ

ग्रावडिय	= सम्बद्ध हुए	निव्वविय	= व्यतीत किया
पवन्नाइ	= प्राप्त की	रयणीमुह	= प्रभात
निसामेहि	= सुना	उदुसमग्रो	= ऋतु-समय
वयणिज्जग्ररो	= निन्दनाव	समुज्जमह	= उद्यमशील बनो

पाठ २ श्री श्रीपाल कथा

गाथा (१-४०)

तिजय	= तीन जगत	समोसरिग्रो	= उपस्थित हुए
ग्रभिगमण	= नमस्कार	तिपयाहिणाउ	= तीन प्रदक्षिणा
परोवयारिक्क-तल्लिच्छो	= परोपकार में लीन	सव्वनु	= सर्वज्ञ
निरुत्त	= वर्णित	चाग्रो	= त्याग
नवर	= तदन्तर	ग्रक्सायताव	= बुरे विचारों से रहित
ग्राउत्तो	= यत्नपूर्वक	चुज्जकर	= आश्चर्यजनक
सव्विड्ढि	= सभी ऋद्धियां	सुगुत्तिगुत्ता	= अच्छे रक्षकों से रक्षित (संयमित)
ग्रगजणीया	= पार करने में कठिन	रसाउलाग्रा	= जल (प्रेम) से परिपूर्ण
सवाणियाणि	= पानी (बनिया) से युक्त	सगोरसाणि	= दूध दही (वाणी) से परिपूर्ण

(४१ ५०)

दुकालडमरेहिं	= अकालरूपी लुटेरे के	ग्रकयपवेसे	= प्रवेश से रहित
पयापईग्रो	= प्रजा जनक	नरोत्तम	= कृष्ण, श्रेष्ठ पुरुष
महेसर	= शिव, धनाढ्य	सचीवरा	= इन्द्राणी, वस्त्र-युक्त स्त्रियां
गोरी	= पार्वती, किशोरी	सिरिग्रो	= लक्ष्मी सम्पत्ति
रभा	= अप्सरा कदली	रई-पीई	= रति एवं प्रीति (कामदेव-पत्नियां)
सड्हदेहा	= सुन्दर शरीर वाली	रइतुल्ला	= रति के समान
मिच्छादिट्ठि	= मिथ्या विश्वासी	सम्मदिट्ठि	= तत्त्वदर्शी
मावत्ते वि	= सौत होने पर भी	पाय	= प्राय

(५१-६१)

थोवतरमि	= थोडे समय मे	सगब्भाउ	= गभयुक्त
विऊण	= विद्वानो को	अज्भावयाण	= अध्यापको को
समिईओ	= स्मति शास्त्र	तिगिच्छ	= चिकित्साशास्त्र
हूर मेहल	= चित्रकला के भेद	कु डलविटलाइ	= जादू इन्द्रजाल
करलाघवाइ	= हस्तकला आदि	चमुक्कार	= चमत्कार
पन्नाग्रभिओग	= प्रज्ञा के सयोग स	वियड्ढा	= चतुर
उक्किट्ठदप्पा	= अधिक घमडी	लीलमित्तेण	= सरलता से

(६२-१०४)

जीसे	= जसा	तस्सीला	= वस आचरण वाली
अणाविआओ	= बुलवाया	विणओणयाउ	= विनम्र स नम्र
गव्वगहिलाए	= घमड से पूण	मेलावडउ	= मिलाप
परिसा	= परिषद्	आइट्ठा	= आदश प्राप्त
परमप्पह	= परम पथ (माग)	दमिआरी	= शत्रु को दमन करने वाला
पूरणपवणो	= पूण करन म तत्पर	नाय	= जानकर
अहिवल्ली	= पान की बेल	पूगतरुण	= सुपारी क वक्ष
ईसि	= थोडा	उवज्जिय	= उपाजित
जुज्जए	= उचित है	पुन्नबलिओ	= पुण्यशाली
दुम्मिओ	= नाराज	इतो	= आय हुए
खलिज्जइ	= हटाया जा सकता है	मुहप्पिय	= मुख पर प्रिय बोलना

(१०५-१२५)

रइवाडिया	= क्रीडा उद्यान	धमधमन्तो	= जलते हुए
पिच्छइ	= देखता है	साडवरमियत	= आडवरपूवक आते हुए
ससोडीरा	= परास्मपूण	तयदोसी	= दूपित घमडी वाला
मडलवइ	= मडल कोढ स पीडित	दद्दुल	= ददु र कोढी
यइआइत्तो	= पानदान धारण करन वाला	पसूइयवाया	= वातरोग से पीडित
कच्छादद्वोंह	= खुजली राग स पीडित	विउचिअपामा	= पामा नामक खुजली से
समन्निया	= समन्वित	पेडएण	= समूह से
महीवीढे	= पृथ्वी क छोर मे	पजिअदाण	= भेंटदान
वलिओ	= घूमा	विअप्पुत्ति	= विकल्प (इच्छा)

(१२६-१६७)

इत्तियमित्तेण	= इतने मात्र से	अरिभुय	= शत्रु बनी हुई
वोलेमि	= नष्ट करूँ	रुयइ	= रोता है
वलेइ	= लौटता है	जंति	= जाती हुई
वावाहणत्थ	= विवाह के लिए	पहिट्ठेहिं	= आनंदित
ऊसिअतोरण	= तोरण सजाये गये	पयडपडाय	= ध्वजा लगायी गयी
घट्ट	= समूह	ओलिज्जमाल	= मंडप सजाया गया
मद्दलवाय	= मदंग बजा	चउप्फललोय	= लोक को चौगुना कर दिया
हथलेवइ	= पाणि ग्रहण	दूहवेइ	= दुख देता है

(१६८-१९५)

कजिअ	= व्यथ (भाड की तरह)	कुहिअ	= विनष्ट
तसि	= तुम हा हा	थोउ	= स्तुति
मोहावहील	= मोह का त्याग दिया	भावलय	= प्रभा का घेरा
नाहत्तणु	= प्रभुता	फिट्टिस्सइ	= नष्ट हो जायेगा
ससंति	= प्रशंसा करते हैं	कप्पए	= कहते हैं
सावज्ज	= पाप युक्त	पयनवग	= नौ पद

पाठ ३ लीलावती कथा

(१-१०)

हिरणक्ख	= हिरण्याक्ष	वियड उरत्थल-अट्ठिदल	= विकट वक्षस्थल की हड्डियों का समूह
सच्चविय	= देख गये	तइय-वय	= तीन पैर
तइया	= उस समय	अणायारे	= निराकार में (आकाश में)
सायार	= स्वयं	अपहुत्त	= असमर्थ
णिहुय	= निःशब्द	सठिय	= रखे गए
अद्धवह	= आधा मार्ग	करणी	= समान
उप्पाय	= उत्पत्ति के समय	महोवहि	= समुद्र
सिहणोत्थय	= स्तनों पर अच्छादित	वलन	= मग्न करना
जमलज्जुण	= दो अर्जुन नामक वृक्ष	कयावेसो	= लपेटने वाले
कोप्पर	= मध्य	मोसावणि	= तुलना करना

गब्भिय	= सज्जित
सीसट्ठि	= सिर पर स्थित
सलिलुल्लो	= जल से गीला
मसिणिम	= घिसे गये
कुसुं भुप्पीलो	= केशर का रस
वो	= आपकी

(११–२०)

जलुप्पीला	= जल स भरी हुई
वियारणो	= विचारक (आकाशगामी)
अइट्ठ	= रहित (रात्रि)
भसण सहावा	= प्रलाप करने वाले
सवइ	= भरता है
फुर त	= चमकीले
सुवण	= अच्छे अक्षर (पत्ते)
परिहाव	= गुणोत्कर्ष
परम्मुहा	= न देखने वाले
महग्गि	= मख यज्ञ की अग्नि

(२१–३०)

असार मइणा	= तुच्छ बुद्धि वाले
चदुज्जए	= कुमुद म
छप्पओ	= भ्रमर
पाणासव	= पीने की मद्य
णिव्वविओ	= शीतल
मालई	= चमेली
विसेसावलि	= तिलक-पंक्ति
घडति	= मिलते हैं
विलोहविज्जत	= आकर्षित
रिक्ख	= आकाश
वेवतओ	= झूमता हुआ
तिगिच्छि	= मकरद
सहइ	= शोभित होता है
दर-दलिय	= थोड़ी खिली हुई
उद्धुरो	= उत्कृष्ट
विम्वल	= निमल
उय	= देखो
अविहाविय	= अनजान

(३१–४०)

पवियभिय	= उल्लसित
साहीणो	= स्वाधीन (प्राप्य)
णे	= उसके द्वारा
सव्वति	= सुनी जाती ह
जाउ	= जो
मयच्छि	= मृगाक्षि
अल्लविउ	= कहने के लिए
वियडो	= विस्तृत श्रेष्ठ
अक्कयत्थिएण	= सरलता से
तारालोय	= तारा से भरा आकाश (स्नेह मे भरी आखें)
साहेह	= कहो
एत्थ	= यहा
विविहाउ	= विविध
ताउ	= वे
असुएण	= बिना पढे हुए
तीरइ	= सभव है
भग्गो	= प्रारम्भ हो
परो	= श्रेष्ठ

(४१-५०)

उव्विग्ग = डरे हुए
सुव्वउ = सुनो
पामरजणोहो = किसान समूह
अविउत्तो = सहित
वरवल्लई = श्रेष्ठ वीणा
पओहराओ = स्तन
(पानी से भरी हुई)
वाणियाओ = वाणी वाली
(पानी वाली)
पविरल = श्रेष्ठ
वियडोवरोह = विस्तृत नितम्ब
सुव्वसिय = बसे हुए
सइ = सदा
दुरुण्णय = ऊंचे उठे हुए
(दूर तक फले हुए)
वाहीओ = बाहु वाली
(बहाव वाली)
णिण्णाउव्व = नदियों की तरह

(५१-६०)

अच्छउ = हैं
विहाइ = बीत जाती है
पडिराविज्जइ = प्रतिध्वनि की जाती है
साणूर = देवघर
तरणि = सूर्य
परिसेसिय = छोड़कर
विलयाहि = वनिताओं द्वारा
दोच्च = दूतकर्म
लपिवक = दूर करने वाला
णासजलीहि = नयनों के द्वारा
सेसाइ = शेष लोगों के (खेत)
बोच्छामि = कहता हूँ
जण्णग्गि = यज्ञ की अग्नि
थूहिया = स्तूप
णिरतरतरिय = हमेशा छाये हुए
आयवत्त = छाते को
कलयठि उल = कोकिल-समूह
सरसावराह = ताजे अपराध
लुवप्फुसणा = बूंदों को सोखने वाला
सद्धालुएहि = रसिकों के द्वारा

(६१-७०)

घुव्वंति = घुल जाते हैं
भोत्तु = अनुभव करने हेतु
अविग्गहो = शरीर रहित
(युद्ध रहित)
विष्णु की तरह
शरीर वाला
दुद्दसणो = दुष्ट दर्शन वाला
(दुर्लभ दर्शन वाला)
णयवरो = नम्र, शत्रुओं को
झुकाने वाला,
परायेपन से रहित
तद्दियसिय = उस दिन के
मइलिज्जति = मैले हो जाते हैं
सव्वग = समस्त अंग
(राज्य के सात
अंगों से युक्त)
कुवई = कुपति (पृथ्वीपति)
साहसिओ = साहसी
दान, धर्म करने वाला

सत्तासो	= सात अश्व वाला (निभय)	सोमो	= चद्रमा सौम्य
भोई	= सप भोग करने वाला	दोजीहो	= दो जीभवाला (दुजन)
तु गो	= ऊँचा स्वाभिमानी	समीव	= पास से (सेवको को)
वहुलतदिएोसु	= अमावस्या के दिनो मे	वोच्छिएए	= रहित
मडन	= राज्य (घेरा)	तणुयत्तण	= दुबल (क्षीण)
पट्ठी	= पीठ (पीछे का भाग)	जए	= जग म
परेहि	= दूसरा (शत्रुग्रो) के द्वारा	सच्चविया	= देखी गयी है
पिसगाण	= पील रग वाले (भय से पीले)	वोलिया	= व्यतीत होती है

(७१-८०)

वम्मह णिमेण	= कामदेव के वहान	लडह् विलयाहि	= प्रधान नायिकाग्रो द्वारा
विरायति	= विलीन हो जाते है	पहुत्त	= प्राप्त
मल्लियामोग्रो	= चमेली का खिलना	विसति	= प्रवेश करते हैं
गु दि	= मजरी	णूमिय	= झुकी हुई
मायद गहणाइ	= आम्र वन	पहियाएा	= पथिको के लिए

(८१-९०)

फलुप्पक	= फल समूह	थोऊससत	= थोडा सास लेती हुई
पणच्चिराहि	= नृत्य करती हुई	वाहिप्पइ	= बुला रही है
णवच्छो	= नपथ्य	णववरइत्ताॅव	= नये वर की तरह
वकेलि	= अशोक वृक्ष	लुलइ	= लोटता है
छिप्पती	= छुये जाने पर	विवसिज्जइ	= वश म किया जाता है
विच्छुरिए	= प्रकाशमान	सम	= साथ

(९१-१००)

कणयायलो	= सुमेरु पवत	णियसि	= देखती हो
पडिहत्थ	= परिपूण	चिचल्लिया	= रचना विशेष (सुशोभित)
णिडाल	= ललाट	वत्तणीग्रो	= माग
पत्तत्त	= पात्रता	पत्त	= पत्रलेखा (प्राप्त)
ग्रविहाविय	= अज्ञात	पाइया	= पिला दिया है

पाठ १ भार्या की शील-परीक्षा

इब्भो	= सेठ	अण्णपासंडियदिट्ठी	= अन्य पाखंडी मत को मानने वाला
असब्भ	= अश्लील	ववहारेण	= व्यापार के कारण
सुंकेण	= मूल्य द्वारा	भंड	= माल
विणिओग	= लेन देन	वोत्तूण	= कहकर
वासगिह	= शयनकक्ष	पइरिक्क	= एकान्त
धम्मद्दि	= भुलावा (?)	मग्गिआ	= खोजा गया
अच्छिऊण	= रहकर	कप्पडिय	= कपट
वेसछण्णो	= वेष धारण किए हुए	भईए	= मजदूरी से
तुट्ठीदाण	= इनाम कृपा	पडिस्सुए	= स्वीकार कर
रक्खाउव्वेय		सव्वोउय	= सब ऋतुओं के
कुसलो	= बागवानी मे कुशल		
आवारीए	= दुकान मे	उम्मत्ति	= प्रशंसा (उन्माद)
वीससणिज्जा	= विश्वसनीय	छोरइ	= छुडा लिया जायेगा
पडिच्छियव्व	= स्वीकार किया जाना चाहिए	डिंडी	= राज्याधिकारी
निच्छूड	= पान की पीक (थूक)	निज्झाइया	= देखी गयी
उवतप्पामि	= संतुष्ट करता हूँ	पत्थाव	= प्रस्ताव
घत्तीह	= तलाश करूंगा	जोगमज्ज	= मिलावट वाली शराब
मरमाविया	= क्षमा करा ली गयी	वयसुपाएहिं	= आंसू गिराने के साथ

पाठ २ ग्रामीण गाडीवान

तविय	= बड़ा	विक्कायइ	= बिकाऊ है
पट्ठावणो	= मुद्रा (रुपया)	पत्तुं पयत्ता	= ले जाने लगे
गीम	= वस्त्र	ववहारो	= झगड़ा
मामिएल्लिय	= साथ हुए	विवरोगमाणो	= चिल्लाते (रोते) हुए

अइसधिओ	= ठगाया गया	जीवलोगभतर	= जीव लोक से भरा हुआ
मन्निस्सामि	= मानूँगा	सक्खी	= गवाह
किलेसेण	= कठिनाई से	महिलिय	= महिला को

पाठ ३ नटपुत्र रोह

हीलापरायणा	= तिरस्कार करने वाली	काह	= करूंगा
उब्भएण	= खडे होकर	परिकलिय	= जानकर
सिढिलायरो	= कम आदर करने वाला	लट्ठ	= प्रेम (प्रियवचन)
पडिवन्न	= स्वीकार कर लिया	सुत्तुट्ठिओ	= सोकर उठा हुआ
दसित्ता	= दिखाकर	विलक्खमणो	= लज्जित मन वाला

पाठ ४ विचारहीन राजा की कथा

माहणा	= ब्राह्मण	वइस्सा	= वैश्य
लगुड	= लट्ठ (डंडा)	नएइरे	= ले गये
वहाइ	= वध के लिए	पत्यणातिय	= तीन इच्छाएं
जाइज्जइ	= मांगता है	मोएह	= छोड दिये जाय
निक्कासिओ	= खारिज कर दिया	अप्पित्ता	= अर्पित कर

पाठ ५ शीलवती की कथा

वरीवट्टइ	= रहता था	सगासाओ	= पास से
अणुव्वयाइं	= अणुव्रत	विणस्सरो	= नाशवान
पवन्नाण	= प्राप्त कराने वाला	जीवाणमाहारु	= जीवो का आधार
वासिआ	= वश मे	मग्गेइ	= खोजने लगी
महव्वई	= महाव्रती	समयनाण	= आत्मा को जानकर
अतट्ठिएण	= भीतर छुपे हुए	चव्वेमि	= चबाता हूँ

उवस्सए	= उपासरे म	पुव्ववयमि	= यथाथ
विउसीए	= विदुषी के	जहत्थो	= यौवन म
नज्जइ	= जाना जा सकता है	सच्चत्थनाणे	= सच्चे ग्रथ का जानकर
थीण	= स्त्रियो की	नत्ता	= ऐसी दूसरी नही है
निब्भग्गा	= ग्रभागन	वासानईपूरतुल्ल	= पीव की नदी से भर हुए के समा
सारुत्ति	= सार है	पडिवुद्धो	= प्रतिबोधित हुआ
उद्दिस्स	= उद्देश्य करके	वट्टाए	= वार्ता द्वारा
वुड्ढत्तणे	= बुढ़ापे म	सग्गइ	= सद्गति का

पाठ ६ चार दामादो की कथा

पारद्धो	= प्रारम्भ हुआ	जामाउणो	= ामाद
खज्जरसलुद्धा	= भोजन रस के लाभी	वोहियव्वा	= समझाना चाहिए
हिट्ठमि	= नीचे	पायतिग	= तीन पाद
नीसारियव्वा	= निकालना चाहिए	साऊ	= स्वाद युक्त
भज्ज	= भार्या	ग्रइप्पिय	= ग्रत्यन्त प्रिय
मिसिग्रमन्न	= मिश्रित ग्रन्न	पक्कन्न	= पक्वान
थूलो	= मोटी	रोट्टगो	= रोटी
ग्राणा	= ग्राना	ग्रग्रो	= यहा से
सेय	= ग्रच्छा	सिक्ख	= सीख (ग्रशीप)
ग्रणुण्ण	= ग्रनुमति	ग्रम्हकेरा	= हमारी
सीयाले	= शीतकाल म	लद्ध ुवाग्रो	= उपाय प्राप्त कर
जागरिम्म	= जागूँगा	विलसिउ	= मनोरजन के लिए
पिहिग्र	= बन्द	उच्चसरेण	= ऊँचे स्वर से
रविति	= चिल्लाते हैं	थिग्रा	= ठहरे
मोणेण	= मौन रूप से	ग्रत्थरणाभावे	= बिस्तर के ग्रभाव म
तुरगमपिट्ठ	= घोडे की पीठ	च्छाइग्रवत्य	= बिछाने वाला वस्त्र
सावमाण	= ग्रपमानपूवक	उइग्र	= उचित
मारइस्स	= मारूँगा	मा जुज्मह	= मत लडा
धक्कामुक्केण	= धक्का मुक्त से	ताडिज्जमाणो	= पीटा जाने पर
चएज्जा	= त्यागते हैं	हु ति	= होते हैं।

पाठ ७ पुत्रों से अपमानित पिता की कथा

थविरो	= बूढा	परिणाविऊण	= विवाह करके
वेमणस्सभावेण	= वैमनस्य भाव के कारण	भिन्नघरा	= अलग अलग घरवाले (चार)
वारगो	= बारी	निबद्धो	= बांध दी गयी
अपत्तीए	= प्राप्ति न होने से	अहिले	= अखिल (पूरे)
तव	= तुम्हें	हट्टे	= दुकान में
अक्खितेय	= आंखों की रोशनी	कंपिर	= कांपता है
तिरक्करिओ	= तिरस्कृत होकर	कच्छुट्टिय	= लंगोटा
निक्कासेइरे	= निकाल देते	करिसिंति	= खींचते हैं
उवहसंति	= मजाक बनाते	निव्वहिस्स	= व्यतीत करूँ
नित्थरणुवाय	= छुटकारे का उपाय	चोज्ज	= आश्चर्य
जराजिण्णो	= बुढ़ापे से कमजोर	सत्तक्खेत्ताइसु	= सात क्षेत्र आदि में
पाहेय	= पाथेय	आणावियव्वा	= मंगवा लेना चाहिए
मोइस्स	= रख दूँगा	रणरणायारपुव्व	= झनकार पूर्वक
काहिंति	= करेंगे	वावरियव्व	= खर्च कर देना चाहिए
विस्सारियव्व	= भूलना	अईवनिव्वंधेण	= अत्यन्त प्रेम के साथ
निंति	= ले जाती हैं	परिहाणाय	= पहिनने के लिए
घुविआइ	= धुले हुए	जहसत्ति	= यथाशक्ति
पच्चप्पइ	= लौटा देता है	मच्चुकिच्च	= मृत्यु के कार्य को
नाइजण	= रिश्तेदारों को	जेमाविऊण	= भोजन खिलाकर
वेढिए	= लिपटे हुए	पाहाणखंडे	= पत्थर के टुकड़े

पाठ ८ अमांगलिक आदमी की कथा

मुद्धो	= भोला	नहेज्जा	= प्राप्त होता था
पउरा	= नागरिक	वट्टा	= वार्ता
अकम्हा	= अकस्मात्	परचक्कभएण	= आक्रमण के भय में
समाणो	= भोजन करता हुआ	नेइज्जमाण	= ले जाते हुए
चिच्चा	= छोड़कर	दच्चा	= देकर
पासिहिरे	= देखेंगे	वयणजुत्तीए	= वचन के उपाय में

पाठ ९ शिल्पीपुत्र की कथा

अहेसि	= था	सरिच्छो	= समान
सगासम्मि	= पास म	निम्मवेइ	= निर्माण करना
भुल्ल	= भूल	सिलाह	= प्रशसा
सुहुम	= सूक्ष्म	खलण	= त्रुटि
अमुगाए	= अमुक	निम्मवगो	= निर्माता
सलाहणिज्जो	= प्रशसनीय	खुण्ण	= खडित
नन्नहा	= अन्यथा नही	गुत्त	= गुप्त रूप से
वाइऊण	= बाबर	तरिस्ससि	= समय नही होने
		कज्जकरण	= काय करने म
सोहणयर	= अच्छे से अच्छे	तल्लिच्छो	तल्लीन होकर
सण्ह	= बारीक	हुवीअ	= गयी (हुई)
मदूसाहेण	= उत्साह कम हो जाने से	खामेइ	= क्षमा मागता है

पाठ १० उद्यम का फल

विउसा	= विद्वान्	अलसा	= आलस से
नाओ	= न्याय	नज्जइ	= जाना जाता है
कसिज्जइ	= परखना होगा	निअतिअ	= जकडकर
अववरगे	= जेल म	छुट्टउ	= छूट जाओ
नियत्तो	= लौट गया	घसेइ	= घिसता है
मुहा	= व्यथ	पीलिआए	= पीडिना के लिए
जत्त	= यत्न	आयास	= प्रयाम
कोणगे	= कौने म	रंध	= छिद्र
अचयतो	= न त्यागता हुआ	कट्ठेण	= कप्ट पूवक
पमाई	= प्रमादी	पहाणो	= प्रधान



सन्दर्भ-ग्रन्थ

१ सिद्ध हेमशब्दानुशासन—ग्राचाय हेमचन्द्र
२ प्राकृत भापाग्रो का व्याकरण—डॉ पिशेल
३ प्राकृतमार्गोपदेशिका—प बेचरदास दोसी
४ प्राकृत प्रबोध—डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री
५ पउमचरिय—स हमन जकोबी
६ सिरिसिरिवालकहा—स वादीलाल जीवाभाई चोक्सी
७ लीलावईकहा—स डॉ ए एन उपाध्ये
८ पाइग्रविन्नाणकहा—श्री विजयकस्तूरसूरि
९ जिनागमकथासग्रह—प बेचरदास दोशी
१० पाइय गज्ज-सगहो—स डॉ राजाराम जैन



शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
५	४	जाते	जानते
६	२३	दाए	दाणि
१२	१६	झति	झत्ति
१२	२८	पासन्ति	पासमो
१२	३१	रूप	एक रूप
१४	११	तुम्ह	तुम्हे
१४	२५	क्द	कद
१५	७	गाता	गीन
१८	४	अम्ह	अम्हे
२१	२१	जिणहिमि	जिणिहिमि
२४	२६	चिच्छिऊण	पुच्छिऊण
३०	३०	विनय	विणय
३२	२३	वुह	वुह
३७	४	फलाणि	फलाणि
३८	२८	चमग्रक्कीज	चमक्कीअ
४०	२४	वुहा	वुहा
४३	४	ताग्रा	ताग्रा
४४	१६	पुरिगोत	पुरिमो त
४६	६	कुलवईहि	कुलवईहि
५०	२१	हत्यी	इत्थी
५५	१४	पुप्फ	पुप्फ
६१	७	खेत्ताणि सन्ति	खेत्ताण अत्थि
६२	२८	घणए	घणूए
६२	३०	घग	घेणु
६३	१३	फल	फल
६४	१४	पुरिसतो	पुरिमत्तो
६६	२२	विन	बिल

पृष्ठ सख्या	पक्ति सख्या	अशुद्ध	शुद्ध
७६	२४	ववहारो	वावार
८१	६	कुलपईसु	कुलवईसु
८१	१६	वभयारि	वभयारि
८६	२७	घेणए	घेणूए
८६	१६	भक्ति	भत्ति
६१	नीचे से ३	सन्ति	म्हो
६३	१३	जुवईश्रो	जुवईश्रो
६३	नीचे से २	साहुसु	साहूसु
६४	२०	वीहइ	वीहइ
६६	३	घावण	धावण
६६	१०	धामण	नमण
६६	१३	विशेपण	विशेष्य
१००	१२	खत्ति खन्ति	खती
१००	नीच से ३	सरी रे	सरीरे
१००	नीचे से २	बाणरेग	वाणरेण
१०१	नीचे से ३	जेटठयमो	जेटठयरो
१०२	५	इम	इद
१०५	नीचे से १०	तिथ्ययरो	तित्थयरो
१०५	नीचे से ८	पचम	पचम
१०६	६	लज्जणो	लज्जमाणो
१०८	६	विम्रसम्र	विम्रसिम्र
१०८	नीचे से ११	देन्ति	देन्ति
१०६	४	देह	देइ
११०	७	पूज्यनीय	पूजनीय
११०	नीचे से ५	पूज्यनीय	पूजनीय
११६	नीचे से ४	हसिज्इ	हसिज्जइ
१२२	१	वाच्च	वाच्य
१३०	२०	पोथ्थम्र	पोत्थम्र
१३१	नीचे से ३	पत + श्रा +	पढ + श्राव +
१७५	१	भारिया सोल	भारियासील
१८५–२०७ तक		खण्ड २	खण्ड १